जानकी सहस्रनाम

जानकी देवी बजाज द्वारा सहस्र सुपरिचित सुजनों का स्मरण

जानकी सहस्रनाम

जानकी देवी बजाज द्वारा

सहस्र सुपरिचित सुजनों का स्मरण

ज्ञान की- सहस्त्राब्द के

लेखन और

प्रकाशन के लिये

डाबर की

शुभकामना

राम हरि

जानकी सहस्रनाम

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

प्रकाशकीय

विनोबा की प्रेरणा तथा जानकीदेवी बजाज की तीव्र भावना, लगन और अखंड स्मरण से यह मूल्यवान कृति पाठकों के लिए सुलभ हुई है। इसमें सहस्र सुजनों के नाम-स्मरण के साथ उस युग की मधुर झांकी भी है, जो आत्मीयता से परिपूर्ण था और जिसमें छोटे-बड़े सबका वात्सल्य छलकता था।

पुस्तक के पूर्ण होने पर विनोबाजी ने विभोर होकर कहा था, "आज एक बहुत बड़ा संकल्प पूरा हो गया।" और अब इसके लिए अपनी शुभ-कामना भी भेज दी है।

श्री श्रीमन्नारायणजी और मदालसा बहन ने 'पार्श्वभूमि' में पुस्तक के विषय में संक्षिप्त जानकारी दी है।

हर्ष है कि पुस्तक का प्रकाशन स्वाधीनता के ऐतिहासिक राष्ट्रीय पर्व के अवसर पर हो रहा है। इन सुजनों के स्मरण के अन्तर्गत वास्तव में अपने राष्ट्र का ही दर्शन समाया हुआ है।

—मंत्री
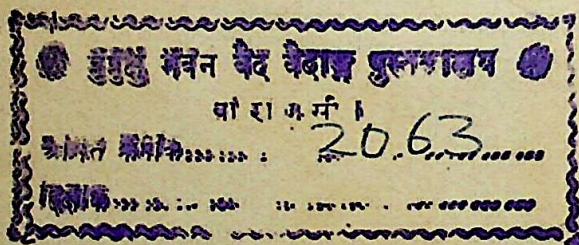
प्रकाशक : यशपाल जैन, मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; प्रथम संस्करण : १९७६;
मुद्रक : रूपक प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२।

ब्रह्मविद्यामंदिर
पवनार | 10-7-1976

नाग की माताजी ने बाबा के सुझाव पर उनके परिचित सहस्र सज्जनों की नामावली पेश की — यह बहुत खुशी की बात है। यही सुझाव बाबा ने दिवंगत जमनालालजी को दिया था, तो उन्होंने वर्धा-नागपुर के छोटे से क्षेत्र में से सहस्र नाम पेश किये थे! सारे भारत के विचार कितने होते — भगवान् जाने।

राम हरि { बाबा की
शुभकामना
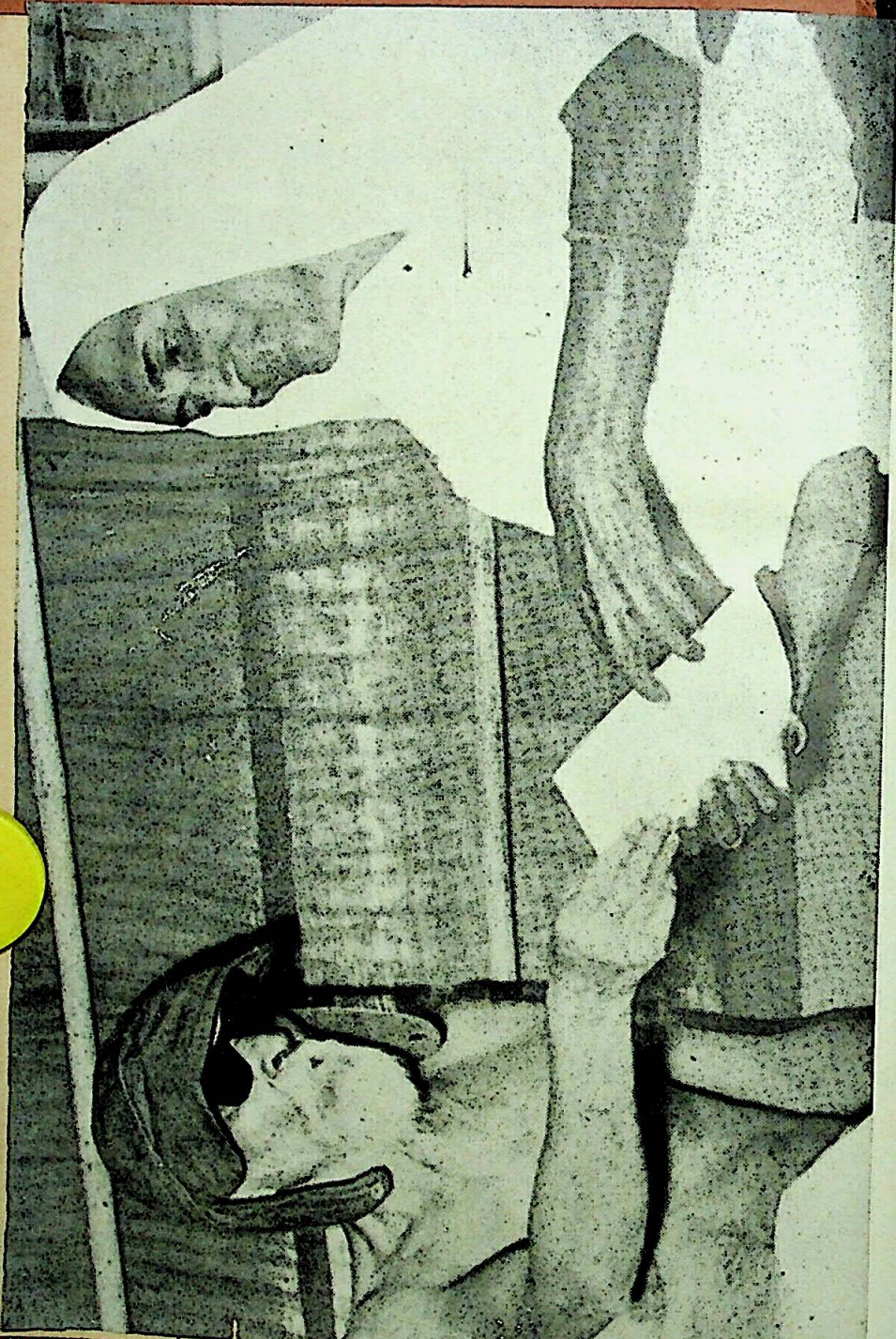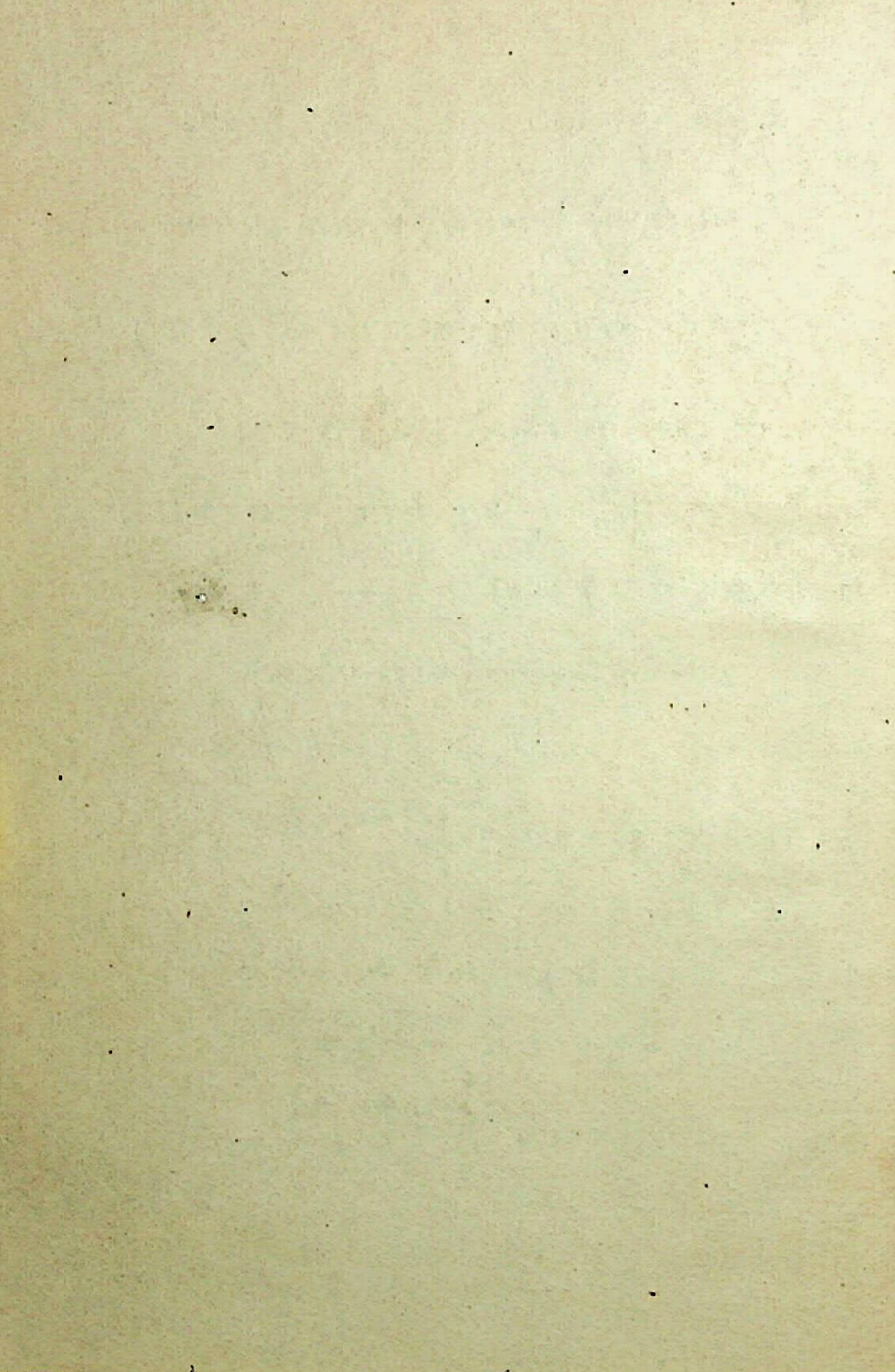
पार्श्व-भूमि

कई वर्ष पहले ऋषि विनोबा ने माताजी जानकीदेवी बजाज से एक दिन अचानक कहा, "तुम हजार नाम लिख डालो।" पूज्य माताजी ने पूछा, "जो अभी जीते हैं उनके नाम, या जो स्वर्गवासी हो गये हैं उनके भी ?" विनोबाजी बोले, "हां, सभी के, किंतु उनके संस्मरण भी होने चाहिए।" फिर कई बार विनोबाजी पूछते रहे, "हजार नाम पूरे हुए क्या ?" तब माताजी को लगा कि यह काम तो करना ही होगा। आखिर एक दिन विनोबा ने माताजी से कह दिया, "तुम्हारे एक हजार नाम 'जानकी-सहस्रनाम' होंगे।"

शुरू से ही श्रद्धेय माताजी को पूज्य जमनालालजी के साथ बहुत से लोगों के संपर्क में आने का अवसर मिला। जो लोग गांधीजी और विनोबाजी की संस्थाओं में काम करते थे, उनसे भी माताजी का सहज परिचय होता गया। बजाजवाड़ी में तो देश-भर से और दुनिया के अनेक राष्ट्रों से मेहमान आते ही रहते थे। माताजी ने इन हजार नामों में उन सभी नामों का समावेश करने का प्रयत्न किया है। उनके चित्त में छोटे-बड़े, गरीब-अमीर का कोई द्वैत नहीं है। नामों का स्मरण करते समय एक बड़े नेता के बाद तुरंत ही एक छोटे सेवक या सेविका का क्रम 'जानकी-सहस्रनाम' की विशेषता है। महात्मा गांधी के परिवार के लगभग सभी स्वजनों का तो इन हजार नामों में उल्लेख है ही, साथ ही बजाज-परिवार और उनकी व्यापक मित्र-मंडली का भी समावेश हुआ है। माताजी छोटे कार्यकर्ताओं, धर्म-सम्प्रदायों और सभी प्रकार की सेवा करनेवालों को भूली नहीं हैं, यहां तक कि उस भोलानाथ बैल की भी याद की है, जो पूज्य बापूजी के साथ जुहू लाया गया था और यह पूछे जाने पर कि गांधीजी को कौन-सा नेता सबसे प्रिय है, फौरन घूमकर पंडित जवाहरलालजी के सामने खड़ा हो गया था।

इन संस्मरणों की भाषा और शैली सरल-सहज है। जहां तक संभव हुआ है, मूल भाषा के शब्द माताजी के ही रखे गए हैं। प्रारंभ में तो हम लोगों को यह

भरोसा नहीं हो रहा था कि माताजी एक हजार नाम याद कर सकेंगी, लेकिन लगभग एक महीने तक वे एक हजार नाम लिखाती गईं, और वाद में धीरे-धीरे उनके साथ अपने संस्मरण जोड़ती गईं। इतनी वड़ी उम्र में भी माताजी की स्मरण-शक्ति सचमुच बहुत ही आश्चर्यजनक है, और उनका छोटे-वड़े के वीच अद्वैत भाव और भी विलक्षण है।

पूज्य विनोबाजी सरसरी निगाह से 'जानकी-सहस्रनाम' को देख चुके हैं और उन्होंने इन हजार नामों के संग्रह को पसंद भी किया है। अब उन्हीं के आशीर्वाद से यह पुस्तक 'सस्ता साहित्य मंडल' द्वारा प्रकाशित की जा रही है।

आशा है, यह पाठकों को रुचेगी।

जीवन कुटीर
वर्धा

श्रीमन्नारायण
मदालसा नारायण

जानकी-सहस्रनाम

१. श्री मोहनदास करमचंद गांधी : महात्मा गांधी

श्री जमनालालजी के जनम-पिता श्री कन्हीरामजी, मेरे श्वसुरजी, कहते थे, "गांधी की आंधी ऐसी आई कि जमनालाल तो उसमें वह रहा है। बहू विचारी क्या करे ?"

जमनालालजी वापूजी के 'पांचवें पुत्र' वने तव मैं उनकी पंचम पुत्रवधू वन गई। मेरी धार्मिक वृत्ति में खादी ने क्रांति कर दी, स्वदेश की भक्ति भर दी। तव से खादी और गाय माता मेरे जीवन का आधार वने हैं। गाय से बैल, बैल से खेती और खेती से प्राणिमात्र का पोषण; खादी और आजादी। यही मेरे जीवन की सार्थकता है।

महात्मा गांधी के, जो अपने देश के राष्ट्रपिता कहलाते हैं, नाम से दुनिया आश्चर्य-चकित होती है। उनको मैंने पहली वार वंबई के मणिभवन में चर्खा कातते हुए देखा था, तो मुझे वड़ा आश्चर्य हुआ कि पुरुष भी चर्खा कातते हैं। वे नोआखाली गये तवतक गांधीजी के निकट सहयोग में रहने का सौभाग्य मिला। जिस तरह कोई नदी समुद्र में मिले, उस तरह हम उनमें लीन होते गये, जैसे गांधी में कोई जादूगर हो ! लोह-चुंबक के जैसे उन्होंने हमें चिपका लिया और वे हमसे चिपक गये। यही उनकी मोहिनी माया थी। नाम भी उनका मोहनदास था।

२. कस्तूरबा गांधी

कस्तूरवा सचमुच मां का अवतार थीं—दया, प्रेम से भरी हुईं। आगाखां महल में वापू ने उपवास किये। गांधी-परिवार को उनसे मिलने की इजाजत दी थी। उनके साथ वजाज-परिवार के नाते हम भी मिलने गये। वा कहती थीं, "वापू तो

जन्मभर उपवास करेंगे, जन्मभर जेल में रहेंगे, पर लाखों लोगों को जेल में डाला, स्वराज्य तो कौन जाने कब मिलेगा, लेकिन उनके घर-परिवार का, स्त्री-बच्चों का क्या होता होगा ?" दया और प्रेम की कितनी अद्‌भुत मूर्ति !

सन् १९४२ में 'भारत छोड़ो' आंदोलन के समय गांधीजी को पूना के आगाखां महल में नजरबंद रखा था। वहां फरवरी १९४३ में उन्होंने उपवास किये थे। कमलनयन, मदालसा और मैं वर्धा से तुरंत पूना पहुंचे। आगाखां महल की जेल में बा-बापूजी से मिलने गये। वह उपवास का दसवां दिन था। बापूजी की हालत बहुत नाजुक थी। हमने दूर से ही प्रणाम किया। बापूजी ने कमलनयन को देखा तो इशारे से नजदीक बुलाया। उसने पलंग पर झुककर प्रणाम किया। बापूजी ने बड़ी मुश्किल से माथे पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिये, पर वे कुछ बोल नहीं पाये। ऐसी उनकी हालत उस दिन हो गई थी !

हम सभी बड़े चिंतातुर हो गये। सरोजिनी नायडू के कमरे में पूज्य बा के पास जाकर सब बैठ गये। बा बिलकुल शांत और निश्चिंत दिखाई दीं। सरोजिनीजी ने घबराते हुए कहा, "बा, अब क्या होगा ?" बा ने बड़े शांत भाव से कहा, "बापूजी किसी की सुनते कहां हैं ! सुबह से जी मचला रहा है, पानी पी नहीं सके हैं। डाक्टरों ने, हम सबने, समझाया कि पानी में जरा-सी नीबू की बूंदें डाल लें तो जी मचलाना ठीक हो जावेगा; पर बापू किसी की सुनें तब तो ! इसी से आज तकलीफ बहुत बढ़ गई है, पर चिंता की बात नहीं है। बापूजी की तबियत धीरे-धीरे संभल जायगी। जबतक मैं हूं तबतक बापूजी को कुछ होनेवाला नहीं है, इतना आप भरोसा रखें।"

बा की यह शांत, गंभीर और श्रद्धाभरी बात सुनकर हम सब स्तब्ध रह गये। फिर उठकर बापू के कमरे की ओर गये तो देखा कि बापूजी की तबियत संभलना शुरू हो गई है। ऐसी सती-साध्वी थीं माता कस्तूरबा ! ऐसी अटल सिद्धता थी उनमें !

३. हरिलाल गांधी : बापू के प्रथम पुत्र

इनके दो लड़के, दो लड़कियां थीं। इनकी स्त्री का स्वर्गवास हो गया था।

बापू ने इन्हें दूसरी शादी करने से रोक दिया तो वे किधर-के-किधर बह गये। बच्चों को बा ने ही संभाला।

४. मणिलाल गांधी : बापूजी के द्वितीय पुत्र

श्री किशोरलालभाई मश्रुवाला के बड़े भाई नानाभाई इच्छाराम मश्रुवाला की बेटी सुशीला इन्हें ब्याही थी। इन्होंने अपना सारा जीवन दक्षिण अफ्रीका में बापू ने जो पहला आश्रम स्थापित किया, उसी में समर्पित कर दिया।

५. सुशीला गांधी : मणिलाल गांधी की पत्नी

जैसा नाम वैसा ही शील स्वभाव। इन्होंने बापूजी के सिद्धांतों को जी-जान से अपना लिया। मणिलालभाई के स्वर्गवास के बाद भी दक्षिण अफ्रीका में ही रह रही हैं। तन-मन से वहीं सेवा में लगी हैं। यही सच्चा स्वधर्म, यही देश-भक्ति !

६. रामदास गांधी : बापूजी के तीसरे बेटे

बड़े नाजुक और सरल स्वभाव के। आखिर के दिनों में अधिकतर सेवाग्राम में ही रहे। इनके दो बेटी और एक बेटा है। कान्हा, जो सेवाग्राम में मां-बापू के सान्निध्य में ही पला था, बचपन में दादाबापू की लकड़ी पकड़कर आगे-आगे चलता था। वह तस्वीर बहुतों ने देखी होगी।

७. निर्मला गांधी : रामदास गांधी की पत्नी

आज भी सेवाग्राम में दिन-रात मेहमानों की आवभगत में लगी रहती हैं। बापू-कुटी और आश्रम के दर्शनार्थियों को बा-बापू के जीवन की बातें समझाती

हैं और गांव के बालकों को अच्छे संस्कार देती हैं। गांववालों के सुख-दुःख में शामिल होती हैं। हम भी देरानी-जिठानी की तरह मिलते-मिलाते हैं और आनंद मनाते हैं।

८. देवदास गांधी : बापूजी के छोटे बेटे

सबके प्यारे, सबसे न्यारे। चक्रवर्ती राजगोपालाचार्यजी के लाड़ले जंवाई। शुरू में गांधीजी ने इनको हिंदी प्रचार के लिए दक्षिण भारत में भेजा था, तब जमनालालजी ने अपने बड़े लड़के कमलनयन को भी इनके साथ भेजा था। साबरमती आश्रम में सरलाबहन चौधरानी टाइफाइड से बीमार थीं। बापू देखने को जाते तो वे बापू से सेवक की शिकायत करतीं। बापू ने सेवक बदलकर जमनादास गांधी को रखा। दूसरे दिन उनकी भी शिकायत आई तो बापू ने पूछा, "देवा, काल थी तू आवशे ?" देवदास बोले, "परम दिवसे मारी शिकायत थसे, एटले न आवउं सारुं।"

९. लक्ष्मी गांधी : चक्रवर्ती राजाजी की द्वितीय कन्या

देवदास गांधी के साथ पूना में लेडी ठाकरसी की 'पर्ण कुटी' में इनका विवाह हुआ। जमनालालजी ने इन्हें बड़े प्रेम से अपना लिया। तब से इनके हमारे बच्चों में भी खूब प्यार है।

१०. राजमोहन गांधी

देवदास गांधी का बड़ा बेटा। इनके नाम में नाना और दादा दोनों शामिल हैं। राजाजी का राज और महात्मा गांधी का मोहन मिलकर 'राजमोहन'। दिल्ली में मिला तब मैंने कहा, "भैया ! तुम सेवा तो बहुत अच्छी करते हो, लेकिन तुम्हारे दादाजी बापूजी ने तो हिन्दुस्तान में सेवा की। उसी को तुम शोभाओ। विदेश में

तो करनेवाले बहुत हैं।" चि० गोपू के पत्र से यह जानकर खुशी हुई कि दिल्ली में अपने देश की कन्या से ही राजमोहन की शादी हो गई है। दोनों सुखी हों। सबका सुख देखें !

११. रामू गांधी

देवदास गांधी का बीच का बेटा। बड़ा गंभीर प्रोफेसर है। शांत और संतोषी जीवन। खादी का सादा पहनावा देखकर मुझे बड़ा सुख मिलता है।

१२. तारा

देवदास गांधी की बेटी। देवदास के सामने ही शादी हो गई थी। बड़े लाड़-प्यार से पली। बापू का खेल-खिलौना।

१३. गोपू गांधी

देवदास गांधी का छोटा बड़ा प्यारा बेटा। नाना राजाजी तथा सभी का लाड़ला। दादाजी की राजघाट, दिल्ली की प्रार्थना में मां लक्ष्मीबहन के साथ नियमित आया करता था। अब तो सुना कि वह बड़ा कलक्टर हो गया है। सुनकर मुझे बड़ा अचरज होता है।

१४. मगनलाल गांधी : बापू के भतीजे

साबरमती आश्रम के प्राण थे। बापूजी के बाद आश्रम को ये ही निभायेंगे, ऐसी आशा थी। खेती में कपास के अनेक प्रयोग किये। अनेक प्रकार के चर्खे बनवाये। उनमें सबसे बड़े चक्र का चर्खा 'मगन चर्खा' कहलाया। चलते-फिरते कातने के लिए तकली का भी मान बढ़ाया। विनोबाजी से उनकी बड़ी घनिष्ठता

हो गई थी। भोजन में हमेशा दूध, भाखरी और सब्जी, ये तीन चीजें ही खाते थे। एक दिन खाकर ही उठे थे, बोले, "खाने के बाद पहला कुल्ला निगल लेना चाहिए, उसमें भोजन का काफी तत्व रहता है।" यह बात मुझे हमेशा याद रहती है।

भगवान् की लीला अपार है ! विहार में भयंकर भूकंप के समय सेवा करने गये, निमोनिया हो गया और वहीं से वे देवलोक चले गये। उनकी बड़ी बेटी राधा ने "मंगल मंदिर खोलो दयामय ! मंगल मंदिर खोलो !" यह भजन गाते हुए पिता को विदाई दी। यह खबर साबरमती में पहुंची तो मानो व्रजाघात ही हो गया। बापू का सोमवार का मौन था। वे अपने 'हृदय-कुंज' से मगन-निवास में आये। उनके हाथ में 'हरिजन' था। वाहर के छोटे कमरे में मगनलालभाई की पत्नी संतोकबहन बैठी थीं। बापू ने मौन तोड़कर इतना ही कहा, "संतोक ! आज तू नहीं, मैं विधवा हो गया !" उस समय हम सब वहीं थे। माता कस्तूरबा का दुःख देखा नहीं जाता था।

जमनालालजी को भारी आघात लगा, पर वे कर ही क्या सकते थे! मगनलाल-भाई का स्मारक कहीं बनना चाहिए ऐसा मन में आ गया। उन्होंने एक दिन की अपनी डायरी में लिखा है—"पवनार में मगनलाल स्मारक के लिए जमीन देखकर आया, बापू को बताया। बापू ने कहा—'ठीक है।' बाद में बापूजी जब अपने बगीचे में ठहरे थे तब काकाजी जमनालालजी ने सोचा कि बापूजी बगीचे में ठहरे ही हैं, तो यहीं मगनलालभाई का स्मारक बन जाय तो अच्छा होगा, और कुमारप्पाजी को ग्रामोद्योगों के प्रयोग के लिए बगीचा दे दिया। वही आज 'मगनवाड़ी' कहलाता है। वहां 'मगन संग्रहालय' बना है। मगनलालभाई, जमनालालजी और बापूजी तीनों का वह स्मारक समझो।

१५. संतोकबहन गांधी

मगनलाल गांधी की पत्नी। कस्तूरबा के साथ-साथ सदा बहू की तरह रहीं। राधा, केशव और रुखी—तीन संतान। तीनों पर जमनालालजी का बड़ा प्यार। मेरा राधा से अब भी बड़ा स्नेह है। वह मुझे अपनी मां ही समझती है।

संतोकबहन अपने बच्चों के साथ द्वारका की यात्रा करने गई थीं। वहां के

समुद्र में जब ज्वारभाटा आता है तब यात्रियों के सामान आदि की बड़ी फेंका-फेंकी होती है। उसमें संतोकबहन का पौत्र गिर गया। उसको बचाने के लिए वे झुकीं तो खुद ही सागर में गिर गईं। मछुवों ने बाहर तो निकाल लिया, पर वे बच नहीं सकीं। बड़ी वेदना से उनके प्राण छूटे। ऐसा राधा बेटी ने बताया। भगवान् की माया !

१६. राधा गांधी

मगनलाल गांधी की बड़ी बेटी। सब बातों में बड़ी कुशल, बड़ी शौकीन। साबरमती आश्रम के विद्यालय में बालकों को बड़े प्रेम से पढ़ाती थीं। बचपन से बड़ी साधनावान रही हैं।

बंगाल की सरला देवी चौधरानी के बेटे दीपक चौधरी से विवाह करने की राधा के जंच गई। पंद्रह साल दोनों को प्रतीक्षा करनी पड़ी। राधा ने जप-तप-साधन किया। नमक नहीं खाया। आखिर सबकी रजामंदी से दीपक के साथ ही राधा की शादी हो गई। बाद में तो उसकी कार्य-कुशलता, सेवा-भावना और उसके संस्कारी बर्ताव से दीपक की माता भी बहुत खुश रहीं।

१७. रुखी गांधी

बाद में इसे 'रुक्मणी' कहने लगे। राधा की छोटी बहन। बड़ी मिहनती और बड़े मीठे स्वभाव की है। आश्रम की कन्याओं पर बड़ा स्नेह रखती थी। सबके साथ सब तरह के कामों में लगी रहती। पानी के घड़े-पर-घड़े माथे पर रखकर बिना हाथ से पकड़े लेकर आती। नदी पर से ढेरों कपड़े धोकर लाती। संयुक्त रसोड़े में भी खूब मजे से काम करवाती और आश्रम के सब कामों में, उत्सवों में, भी आगे-आगे रहती। इसका व्याह जमनालालजी ने हमारे ही खानदान के बनारसीदास बजाज के साथ करवाया। आश्रम के खुले वातावरण में पली हुई रुक्मणी को मारवाड़ी समाज के घरेलू बंधनों में बड़ी क्रांति करनी पड़ी। पर बड़े धीरज से उसने सबका मन जीत लिया।

१८. छगनलालभाई गांधी

गांधीजी के भतीजे। गांधीजी के साथ दक्षिण अफ्रीका में थे और कई वर्षों तक सेवाग्राम आश्रम में भी रहे।

१९. काशीबहन गांधी

छगनलाल गांधी की पत्नी। प्रभुदास, कृष्णदास गांधी की माता। शुरू से गांधीजी के सत्य के प्रयोगों में ही सब-के-सब लगे रहे। काशीबहन बड़ी भक्तिमान, श्रद्धालु। खादी के शुभ्र वस्त्रों में सदा सती-साध्वी-सी लगती थीं। विनोबाजी की माता अन्नपूर्णा देवी की पूजा किया करती थीं। अपनी माता के स्वर्गवास के बाद विनोबाजी अन्नपूर्णाजी की मूर्ति को अपने साथ ले आये। काशीबहन ने उसकी स्थापना घर में कर ली। जीवन भर उसी आराधना में लीन रहीं। वे माता अन्नपूर्णा की भक्त, विनोबाजी में उनकी भक्ति, उनमें विनोबाजी की भक्ति।

काशीबहन का कंठ बड़ा मधुर था। साबरमती आश्रम की प्रार्थना में बापूजी कभी-कभी उनसे भजन गवाते थे। बहनों का वर्ग बापू खुद लेते थे, उसमें हम सभी जाती थीं। महिलाओं के लिए ब्रह्म विद्या का उत्तम प्रबंध होना ही चाहिए, ऐसा ध्यान-चिंतन काशीबहन सदा करती ही रहती थीं। वे १९५५ में दिल्ली में मदालसा के पास काफी दिनों तक रहीं। तब श्रीमनजी के पिताजी धर्मनारायणजी के पास नियमित रूप से 'विनय-पत्रिका' का गहरा अध्ययन उन्होंने किया था। उसमें कभी-कभी मैं भी शामिल हो जाती थी।

२०. कृष्णदास गांधी

इन्हें 'कचाभाई' कहते थे। साबरमती आश्रम में सितार का वर्ग लेते थे। उसमें कमला, कमलनयन भी सितार सीखने जाते थे। उनके साथ एक सितार

लेकर मैं भी रोज चली जाती थी। मेरा सीखना ऐसा था कि आगे पाठ, पीछे सपाट। फिर भी धन्य है कचाभाई को, कुछ-न-कुछ रोज बताते जाते थे, यहां तक कि मैं बैंड की धुन भी बजाने लग गई थी। पर सितार मिला हुआ है कि नहीं, यह मैं क्या जानूं ! मेरी लगन के कारण उन्होंने पीछे का पाठ कभी पूछा नहीं। आश्रम की बहनें बड़ा आश्चर्य करतीं कि जानकीबहन सितार सीखने जाती हैं ! पर उन्हें क्या पता, मुझे आता कितना है !

बाद में 'अखिल भारत चर्खा संघ' की स्थापना हुई। वर्धा के गांधी चौक में दफ्तर खुला। जमनालालजी शुरू से खजांची रहे। जाजूजी के साथ कचाभाई मंत्री का काम संभालने लगे। सारा जीवन खादी के काम में और चर्खे के सुधार में ही लगा दिया। जमनालालजी का उन पर पुत्रवत् प्यार था और मेरा भी उन पर गहरा प्यार रहा। यह उसी की खासियत थी।

२१. मनोज्ञा गांधी

कृष्णदास गांधी की पत्नी। निष्ठावान, कार्यकुशल और बड़ी होशियार, पर कचाभाई तो कच्चे ही रहे और दुनियादारी के व्यवहार से बचे रहे। लेकिन मनोज्ञा ने उनके सब कामों में निष्ठापूर्वक सहयोग दिया।

२२. कनु गांधी

बापूजी के भतीजे नारायणदास गांधी का छोटा बेटा। बड़ा चतुर सेवक और भक्त। अपनी चतुराई से बा-बापू की बड़ी सुंदर तस्वीरें कनु ने खींची हैं। राजकोट के निकट त्रंबा ग्राम में माता कस्तूरबा को नजरबंद रखा गया था। कनु और आभा वहीं रहते हैं। वह अब 'कस्तूरबाधाम' बन गया है।

२३. आभा

कलकत्ते के एक गांधीभक्त परिवार की बंगाली कन्या। बचपन में वर्षों तक सेवाग्राम में रही। घुंघराले बाल, सरल और सुंदर। खादी की सफेद कमीज और घुटन्ना पहनती। भरत उसे 'चाचाबाबू' कहता। बा को वह बहुत प्यारी थी। बड़े होने पर बा ने कनु के साथ आभा का विवाह सेवाग्राम में ही करवाया।

बापूजी को दिल्ली में गोली लगी तब उनके एक तरफ मनु और एक तरफ आभा थी। उनके कंधों पर हाथ रखकर ही बापूजी बिड़ला हाउस से प्रार्थना की जगह आ रहे थे।

२४. मनु गांधी

बापू के कंधे का सहारा। परिवार में बापू की पोती। तन, मन से बा-बापू की सेवा में लगी रही। नोआखाली में और आगाखां महल की जेल में भी साथ ही रही। मनु ने बापू के संबंध में बहुत अच्छी किताबें लिखी हैं। वे घर-घर में पढ़ने लायक और स्कूल, कालेजों में पढ़ाने लायक हैं।

गांधी शताब्दी की स्पेशल रेलगाड़ी में बा-बापू के जीवन की प्रदर्शनी दिखाते और भाषण देते-देते मनु उन्हीं में समा गई।

२५. जयसुखलालभाई गांधी

मनु गांधी के पिताजी। इनका जमनालालजी के पास काफी आना-जाना था। इनकी बड़ी लड़की उमिया जमनालालजी के सेक्रेटरी शंकरलालजी को ब्याही है। ये कई साल अपनी गोला शुगर मिल में रहे। अब उदयपुर में रहने लगे हैं। इनके बच्चे सब अच्छे हैं।

२६. कांति गांधी

बापूजी के बड़े बेटे हरिलालभाई गांधी का बड़ा बेटा। दक्षिण भारत की कन्या सरस्वती से विवाह हुआ। वह वीणा बहुत अच्छी बजाती है। खादी के काम में लगी है। कांतिलाल डाक्टर बनकर अब बड़ी लगन से लोगों की सेवा करता है।

२७. रसिक गांधी

हरिलाल गांधी का छोटा बेटा। बा-बापू का नटखट पोता। बापूजी प्रार्थना में जाते तब वह पीछे से अपने दादाजी की चप्पल पकड़ता। बा कहती, "अरे, दीकरा ! बापूजी पड़ी जसे रे!"[1] साबरमती आश्रम में हम थे, तब शायद १९२७ की बात है। गांधी-जयंती को बापू ने 'चर्खा-जयंती' नाम दिया। उस दिन आश्रम के भाई-बहनों ने चर्खा कातने का नियम लिया। कई अखंड कताई में शामिल हुए। कइयों ने एक-एक गुंडी का नियम लिया तो किसी ने ६ घंटे, किसी ने १२ घंटे, तो गुलाबचंद बजाज ने २४ घंटे कातने का निश्चय किया। उनमें रसिक गांधी ने २४ घंटे लगातार रुई धुनने का नियम लिया। यह बड़ा अनोखा नियम था, बड़ा कठिन प्रयोग था। रसिक बड़ा उत्साही नवयुवक था। उसने अपना संकल्प पूरा तो किया, पर बाद में वह बहुत बीमार हो गया और छोटी-सी उम्र में ही चल बसा। सबको भारी आघात लगा। आश्रम की वह रौनक था।

२८. नारायणदासभाई गांधी

बापूजी के भतीजे। राजकोट में राष्ट्रीयशाला की स्थापना करके वहीं रहे। गणेशजी के समान विराजमान। श्रीकृष्ण भगवान् के सुदर्शन-चक्र की तरह चर्खे

---

१. "अरे बेटे ! बापूजी गिर जायेंगे।"

को अखंड रूप से चलाया। 'सूतरने तांतणे स्वराज' के मंत्र को इन्होंने जी-जान से अपनाया। इनके सांस-सांस में सूत कातना समाया। खादी-कार्य से ही देश की गरीबी दूर हो सकती है, यह बापूजी की बात नारायणदासभाई के मन में पक्की ज़म गई थी। इसलिए राष्ट्रीयशाला में बैठे-बैठे खुद सूत कातते थे और बालकों से भी कतवाते थे। उनके वहां जब जाओ, ढेरों सूत दिखाई देता। खादी के थान-के-थान तैयार होते थे। सूत की रंगाई और बुनाई भी बढ़िया-से-बढ़िया होती थी।

सफेद खादी को ब्लीचिंग करने से खादी कमजोर हो जाती है। इसलिए 'राष्ट्रीय-शाला' में कोरी-की-कोरी खादी रंगी जाती है। कपड़ा ब्लीचिंग से बच जाता है।

२९. पुरुषोत्तम गांधी

नारायणदास गांधी के बड़े बेटे। अब राष्ट्रीयशाला का कार-भार उन्होंने और उनकी पत्नी विजयाबहन ने संभाल लिया है। पति-पत्नी दोनों संगीत के साधक हैं। पुरुषोत्तमभाई तंबूरे के साथ प्रार्थना में भजन गाते हैं, तब सुननेवाले मुग्ध हो जाते हैं।

३०. प्रभुदास गांधी

छगनलालभाई के बड़े पुत्र। हमेशा सरल और सीधे ही रहे। बापू, विनोबा के भक्त, ग्राम-सेवा में तल्लीन। चालीस वर्ष की उम्र में शादी के फंदे में फंसा दिया। 'वर्धा शिक्षा मंडल छात्रालय' के आंगन में १९३३ के हरिजन-दौरे के पहले दीवाली के दिन बापूजी की उपस्थिति में सूर्योदय के समय विवाह हो गया।

३१. अंबा गांधी

प्रभुदास गांधी की पत्नी। बड़ी सादी और सेवाभावी। यह जोड़ी भी जमनालालजी ने ही जुड़ाई। उनकी बेटियां भी सब बापू के रचनात्मक सेवा-कार्यों में लगी हैं।

३२. बेला बहन

साबरमती आश्रम में मेरी बहुत मदद करती थीं। हम 'जमना कुटीर' में रहते थे तब वे मेरी रोटी पका जातीं। कभी उनके पीछे मैं भी चली जाती तो मेरे वापस आने तक कुत्ते रोटी खा जाते थे। अब क्या हो ? तब ऊपर-नीचे की हटा कर बची हुई हम खा लेते थे।

जब किशोरलालभाई के गुरु नाथजी को हमारी परेशानी मालूम हुई तब उन्होंने चुन-चुनकर छोटे पत्थर ला कर रखे। इन पत्थरों के फेंकने से कुत्ते डर जाते थे। उन्हें डराना ही तो था, मारना थोड़े ही था।

३३. लक्ष्मीदासभाई आसर

बेलाबहन के पति। बापू के पास आश्रम में इनका सारा परिवार रहता था। इनकी बेटियों लक्ष्मी, आनंदी, मणी के साथ कमला, मदालसा, उमा पढ़ती थीं और खेला करती थीं। बिजौलिया में इनके दामाद, लक्ष्मी के पति, खादी का काम करते थे।

३४. मणी

बेलाबहन और लक्ष्मीदासभाई आसर की बेटी। साबरमती आश्रम की छात्रा। पढ़ने-खेलने में मस्त, मिलनसार। कद में ऊंची होने से घूमते समय बापू की लकड़ी बनने में सुविधा रहती।

मणी की बड़ी बहन आनंदी बा-बापू की सेवा में अधिक रहती। सुबह-शाम घूमते समय दूसरों को बापू की लकड़ी बनने का मौका कम देती। बापू का हाथ खुद पकड़े रहती।

३५. सरस्वतीदेवी गाड़ोदिया

सेठ लक्ष्मीनारायण गाड़ोदिया की पत्नी। दिल्ली में चांदनी चौक की गली में ऊँचा चार मंजिल का मकान। इनके घर पर देश के नेताओं का सदा आना-जाना रहता। बापूजी और अन्य नेता भी वहीं ठहरते थे। जमनालालजी और उनका परिवार उन्हीं के वहां ठहरा करते थे। धर्म-बहन के समान मानते थे। खाना खिलाने-पिलाने में बड़ी चतुर और मुस्तैद। बापू के विचारों में बड़ी आस्था। घर में हाथपीसे आटे की मोटी रोटी का सादा पौष्टिक खान-पान। उनका प्यार-भरा व्यवहार मन को मोह लेता था। प्राकृतिक चिकित्सा में सरस्वतीबाई की अडिग श्रद्धा देखकर बीमारी भी उनसे कोसों दूर भागती। गोद का इकलौता बेटा गोपाल। उसके छोटे-छोटे बच्चों को भर जाड़ों में जमनाजी में निहलाकर ले आती। इतना प्रकृति से प्यार है उनको।

मेरी तो गाड़ोदणी गुरु भी है और वैद्य भी। कुओं के लिए कूपदान मांगने जाते थे तब वह सेठानी लगती, मैं उनकी दाई जैसी। पर कहीं वे मेरी दाई बन जाती थीं। ऐसी हमारी आज भी पक्की दोस्ती है। हम लोग फोन पर बात करते हैं तो बच्चों की आफत आ जाती है। पर क्या करें, बातों से जी भरता ही नहीं !

३६. लक्ष्मीनारायणजी गाड़ोदिया

ये दिल्ली में मारवाड़ी समाज के प्रमुख कर्ताधर्ता और प्रतिष्ठित व्यापारी थे। बापूजी के पास हमेशा आते-जाते थे। दिल्ली के चांदनी चौक की संकरी-सी गली में इनका मकान था, फिर भी बापूजी और अपने देश के बड़े नेतागण इनके यहां इनके प्रेम के वश होकर ठहरते थे। जमनालालजी के साथ मैं भी बाल-बच्चों सहित इनके यहां ठहरती थी। बहुत मोहब्बत मानते थे।

३७. गाड़गेजी महाराज

महाराष्ट्र के बड़े सुधारक संत। मिट्टी की हंडिया के नीचे के पैंदे में खाते, उसी में पानी पीते, बाद में उसी को टोपी की तरह सिर पर पहन लेते। इसी से गाड़गेजी कहलाये। जब वर्धा आते तो अपने गांधी चौक में भी हजारों की पंगत लगवाते, खुद खड़े होकर व्यवस्था जमाते, रस्सी बंधवाकर चूने से सीधी लकीर डलवाते। उसी तरह बिठाकर सबको खूब अच्छी तरह खाना खिलवाते। बाद में भीड़ में खड़े होकर रात-रात भर खुद कीर्तन करते। उसी में सारा समाजशास्त्र समझा देते। लोग मंत्र-मुग्ध की तरह बैठे रहते। कीर्तन समाप्त होते ही एकदम भीड़ में से किधर-के-किधर निकल भाग जाते कि जिससे कोई पांव छूने न पाये।

३८. डा० दिनशा मेहता

इनकी प्राकृतिक चिकित्सा में पूना सभी जाते थे। बापू ने आगाखां महल में उपवास किये थे। उसी समय बड़ी बेटी कमला को दिनशा मेहता ने अपने चिकित्सालय में उपवास कराये थे। मैं आगाखां महल में बापू के पास गई और कहा, "बापू, कमला के उपवास को १७वां दिन है। आज उसकी उल्टी में सूखा-सूखा खून आया, मैं घबरा गई।" दिनशा मेहता वहीं बापू की मालिश कर रहे थे। बापू ने उनसे कहा; "डाक्टर, देख लेना, बेटी को गंवा मत देना।"

३९. गुलबहन मेहता

डा० दिनशा की पत्नी। जमनालालजी बेटी की तरह मानते थे। हमारे परिवार के बहुत लोग उनके प्राकृत-चिकित्सालय में रहे हैं। और भी सभी रोगियों को गुलबहन बड़े प्रेम से खिलाती-पिलातीं, सब प्रकार की सेवा करतीं और सबका जी बहलाती रहतीं। चिकित्सालय के पीछे ही उनका घर था। वहां बापूजी रहे हैं। जहां उनकी बैठक थी, वह स्थान अब भी वैसा ही सजा रखा है। इससे वहां

सदा रौनक रहती है। गुलबहन खादी पहनतीं और सर्वोदय के काम में लगी रहतीं। बड़ा प्यारा मिलनसार उनका स्वभाव था।

४०. गीगाजी

वर्धा में सबको साक्षात्कार कराते थे। विनोबाजी के पास गोपुरी आये। कहने लगे, मुझे एक महीना हुआ नहाये हुए। मुझे पच्चीस रुपये दो। विनोबाजी ने कहा, "भाई, हमारे पास पैसे की बात कहां !" फिर पूछा, "तुम साक्षात्कार कराते हो ना ?" बोले, "हां, कराता हूं, पर साक्षात्कार भी अपरिचित को होता है।"

४१. गोदावरी

कहने को गरीब पगारदार नौकरानी। पर उसका शील, स्वभाव और व्यवहार बड़े साफ-सुथरे और खानदानी रहे। हमारे बच्चों के कई बेटों को इसी ने पाला और संभाला। मदालसा के पास ज्यादा रही। काकाजी की अंतिम सेवा उसके भी हाथ से हुई। कमलनयन गया तब मैं तो शून्यवत बैठी थी। काशी, गोदावरी को छाती फाड़-फाड़कर रोते देख मुझे भी रोना आया। गोदावरी के बेटी-दामाद सब होशियार हैं। खुद वर्धा के पास बोरधरण का बांध बंधा है, वहां होटल चलाती थी। बाद में गाय-भैंस पालकर बेटे की गृहस्थी चलाती रही।

४२. डा० गिल्डर

बम्बई के मशहूर डाक्टर। मिनिस्टर भी रहे। आगाखां महल की जेल में बापू के साथ थे। सेवाग्राम भी आते-जाते थे। इन्हीं की वजह से आश्रम की प्रार्थना में पारसी-प्रार्थना भी शामिल हो गई।

४३. आबिदअलीभाई

कांग्रेस और मजदूरों के नेता, मिनिस्टर। इन पर जमनालालजी का बहुत प्यार था। इन्हें अपने कुटुंब का ही समझते थे। व्यापार में, खाने-पीने में, हँसने-खेलने में और सुख-दु:ख में सदा इनका साथ रहा। पर थे तो ये मुसलमान, इसलिए मैं तो थोड़ा परहेज करती थी, लेकिन आपस में गहरा स्नेह था। कमलनयन की वेटी सुमन की शादी दिल्ली में इन्हीं के घर से हुई।

४४. जोहरा आबिदअली

उसके चार बच्चे हुए—सोफिया, जाफर, आजाद और इकवाल। जुहू पर ये और हमारे बच्चे सब समुद्र में घंटों एक-साथ नहाते, एक-साथ खाते-पीते और खेलते रहते थे। उनकी अम्मा जोहरा काकाजी को खूब हँसाती थी और मुझे भी वह बड़ी प्यारी लगती थी। उसकी मृत्यु जल्दी हो गई। तब आविदअली को चिंता होना स्वाभाविक था। काकाजी ने मुझसे पूछा, "तुम इन बच्चों को संभालोगी?" मैं क्या जवाब देती ? आविदअली को सब मालूम ही था। बाद में उन्होंने दूसरी शादी की। उसने बच्चों को खूब प्यार किया और सबको सुख दिया।

४५. उमा

मेरी छोटी वेटी। उसका नाम रखा था 'ओम्'। वह सबको हँसाने, चिढ़ाने में और नकल करने में कुशल रही है। वचपन में बड़ी मस्त लड़की थी। मुझे किसी पर भी गुस्सा आता तो उसी पर निकलता था। एक बार साबरमती आश्रम में ऐसा ही हुआ। तब दु:खी होकर जमनालालजी ने बापू से पूछा कि क्या करें ? बापू ने उनसे कहा, "तुम उपवास करो, उसका असर होगा।" जमनालालजी ने उपवास किया। उसका असर क्या हुआ, यह तो बच्चे ही बता सकते हैं।

१९३३ का हरिजन-दौरा वर्धा से शुरू हुआ, तब गांधीजी की टोली में ओम्

भी शामिल हो गई। बापूजी ने उसे 'सोती सुंदरी' और 'जागती जोगण' का सर्टि-फिकेट दिया। वह दिल्ली में रहती है। राजघाट की प्रार्थना में नियमित जाती है। घर में सब खादी पहनते हैं।

४६. राजनारायण अग्रवाल

हमारे छोटे जंवाई, बेटी उमा के पति। बड़े सीधे और भले हैं। उतने ही व्यावहारिक भी हैं। इनका बरफ का कारखाना है। घर के लोग चिढ़ाते हैं, "ये तो पानी से पैसा बनाते हैं।" इनका सभी बच्चों पर बड़ा प्यार है। सबके साथ मिलकर निभा लेते हैं। बड़े धीरजवाले और संतोषी हैं। इनकी डिग्रियां बिना देखे यह लगता ही नहीं कि ये इतने पढ़े-लिखे होंगे।

४७. बैरिस्टर अभ्यंकर

नागपुर के शेर थे। मीटिंग में बड़े जोर की आवाज से बोलते थे। एक दिन बजाजवाड़ी में आये। उनके पांव में कुछ तकलीफ थी। कुर्सी पर पांव ऊंचा करके बैठे। बाद में पता चला कि उनके पांव में तकलीफ है। इलाज के लिए बंबई ले गये। वहां उनकी मृत्यु हो गई। नागपुरवालों ने उनका शव नागपुर ले जाना चाहा, परंतु जमनालालजी ने कहा, "यहां की मिट्टी यही समाप्त करनी चाहिए", और नागपुर ले जाने से रोक दिया। जमनालालजी का यह विचार अभी कमल-नयन तक चला आया कि जहां शरीर छूटे, उसका अंतिम संस्कार वहीं कर देना चाहिए।

४८. अच्युत स्वामी

जमनालालजी के मामा श्री बिरधीचंदजी पोद्दार के ये गुरु थे। प्राकृतिक चिकित्सा को इतना मानते थे कि केले के पत्ते पर सोते थे। गर्मी में डूमस (गुज-

रात) चले गये। तब जमनालालजी ने भी वहां जाने का इरादा किया और अच्युत स्वामी से 'पंचदशी' सुनने की इच्छा की। उस समय मदालसा मेरे पेट में थी। 'पंचदशी' में 'घटाकाश', 'मठाकाश' शब्द मैंने तभी सुने। प्राणी जनमता है तब वह कहता है; मैं याद करूंगा, परंतु दुनिया की भूल-भूलैया में भूल जाता है। इन सब बातों का पेट के बालक पर असर पड़े, इसलिए मैं ध्यान से सुनती थी।

४६. अनंताचार्यजी

इनको सब स्वामीजी कहते थे। ये रामानुज के साम्प्रदायिक गुरु थे। मेरे माता-पिता उन्हें बहुत मानते थे। एकादशी के दिन रुक्मणी, सत्यप्रभा, वेणी गोपाल की धातु की मूर्तियां बाहर निकाल लाती थीं। दूध, दही, शहद से अभिषेक होता था। हमारे मंदिर रामानुज कोट कहलाते हैं। मेरा जन्म जावरे का है। मैं ६ साल की थी तब की याद है। मैं अपनी मां के साथ अपने रामानुज कोट के मंदिर में जाया करती थी। वहां की नित-नैमित्तिक पूजा और अभिषेक देखकर मैं तो गद्‌गद् हो जाती थी। उसी उम्र में 'विष्णु-सहस्रनाम' की याने हजार नाम की बात सुनी। तब से मैं 'विष्णु-सहस्रनाम' के श्लोक याद करने लगी। एक श्लोक कागज पर लिखवाती। दिन-भर घोटती रहती। कागज खीसे में रखती। कहीं भूलती तो देख लेती। ऐसे एक-एक श्लोक कंठस्थ कर लेती। दूसरे दिन दूसरा श्लोक लिखवा लेती। इस तरह पूरा विष्णु-सहस्रनाम कंठस्थ हो गया। बाद में सुबह-शाम दोनों वक्त बिना पुस्तक के ही पूरा पाठ करके खाना खाती।

अब यहां ८३ बरस की उम्र में परंधाम के ब्रह्म विद्या मंदिर में जाती रहती हूं। यहां विनोबाजी के साथ रोज सुबह साढ़े दस बजे सब बहनें मिलकर एक स्वर से 'विष्णु-सहस्रनाम' का पाठ करती हैं। उसमें मुझे बड़ा रस आता है।

५०. अर्जुनलालजी सेठी

राजस्थान के थे। दो-चार मित्रों के साथ वर्धा आये थे। नागपुर झंडा सत्याग्रह के समय की १९२३-२४ की बात होगी। तब ये मारवाड़ी महिलाओं का सम्मेलन

कराना, घूंघट हटवाना, यह सब हमसे करवाते और सत्याग्रह की बातें समझाते थे।

५१. कमलाबाई अजमेरा

यह धुलिया की बहन बड़ी उत्साही थीं। कांग्रेस के सब कामों में भाग लेती थीं।

५२. अनन्तरामजी

पक्के गोसेवक। बापू के सेवाग्राम आश्रम के निवासी हैं। इन्होंने वर्धा में वर्षों तक गोरस भंडार चलाया। अब सेवाग्राम की खेती और सहयोगी भंडार संभालते हैं। बड़े निष्ठावान हैं। अपने सिद्धांतों में पक्के हैं।

५३. राजकुमारी अमृतकौर

ये पंजाब के बहुत बड़े घराने की थीं। बापूजी से प्रभावित होकर सेवाग्राम रहने आईं। इनके साथ खासतौर से एक सेवक को रखने की इजाजत बापू को देनी पड़ी।

१९४१ की बात है। व्यक्तिगत सत्याग्रह के समय जमनालालजी को अस्वस्थ होने के कारण जेल से एक महीने पहले रिहा कर दिया। आते ही उन्होंने बापूजी से कहा, "मैं जेल से एक महीने पहले छूट गया हूं। आप मुझे काम बताइये।" बापू ने कहा, "तुम बहुत कमजोर हो गये हो। अभी तुम्हें आराम की जरूरत है।" और उन्हें बापूजी ने स्वास्थ्य सुधारने के लिए राजकुमारी अमृतकौर के पास शिमला भेज दिया। वहां से जमनालालजी ने बापू को लिखा कि यहां तो राजकुमारी का बड़ा आलीशान महल है। पैंतीस नौकर-चाकर हैं। यहां एक कुत्ते की भी सार-संभाल बड़ी अच्छी तरह होती है और मेरी तो इतनी आवभगत बहन

करती है कि मैं कैसे सहन करूं ?

जमनालालजी शिमला गये तो थे एक महीने के लिए, पर पंद्रह दिन में ही लौट आये। आते समय श्रीमां आननंदमयी मां के आश्रम में गये तो अचानक वहीं पंद्रह दिन रुक गये। उनको श्रीमां का इतना आकर्षण हुआ मानो उन्हें आध्यात्मिक मां ही मिल गई। मां की गोद में उन्हें बड़ी शांति मिली।

५४. डॉ० अंसारी

बहुत वर्षों पहले सन् १९२४ में दिल्ली में बापूजी ने २१ दिन का उपवास किया था। तब इन्हीं के घर पर रहे थे। महादेवभाई ने घबड़ाकर वर्धा कमलनयन को फोन किया कि "बापू के उपवास में विनोबजी यहां आ जायं तो बापू को आध्यात्मिक खुराक मिलेगी और प्रार्थना में भीड़ रहती है तो बापू का भार हल्का हो जायगा।" इतना सुनकर कमलनयन के साथ धोत्रेजी, मैं और राधाकिसन बड़े उत्साह से विनोबाजी के पास पवनार आश्रम जा पहुंचे। पहले तो विनोबाजी ने देखा ही नहीं, ध्यान में मगन ही रहे। फिर उठकर अपने भवन में ही टहलने लगे। तब कमलनयन ने हिम्मत करके कहा, "दिल्ली में बापू ने उपवास किया है। महादेवभाई ने कहा है, "आप आ जायं तो बापू को आध्यात्मिक खुराक मिलेगी और प्रार्थना में भी मदद मिलेगी।" विनोबाजी ने सुन लिया और कहा, "बापू को कोई खतरा नहीं है। उनके साथ भगवान् है।" और चुप हो गये। अधिक आग्रह करने पर पूछा, "बापू ने बुलाया है क्या ?" इसका हम क्या जवाब देते ? मन मसोसर लौट आये।

वर्धा आकर दिल्ली फोन से महादेवभाई से पूछा कि विनोबा कहते हैं, "बापू ने बुलाया है क्या ?" इससे महादेवभाई भी उलझन में पड़ गये। उन्होंने तो अपने ही मन से फोन किया था। आखिर बापू से पूछना पड़ा। तब बापू ने कहा, "विनोबा आना चाहते हैं क्या ?" बात वहीं खत्म हो गई। संतों की महिमा अपार है।

५५. सुशीला अग्रवाल

ये अपने कॉमर्स कॉलेज के प्रोफेसर श्रीनारायण की पत्नी है। वर्धा के महिला समाज में इसका मान है। सब काम में होशियार है। जहां भी कोई काम होता है, उत्साह से साथ देती है।

५६. डा० विजयालक्ष्मी

ये डाक्टर बेंकटराव की पत्नी हैं। दोनों मिलकर हैदराबाद का प्राकृतिक चिकित्सालय चलाते हैं। विजयालक्ष्मी को वहां सब 'डाक्टर अम्मा' ही कहते हैं। इनके चिकित्सालय में मैं भी रही थी। गरीब, अमीर, छोटे, बड़े सबकी ये समान भाव से सेवा करती हैं। सचमुच अम्मा ही हैं।

५७. आसफअली

बहुत वर्ष कांग्रेस वर्किंग कमेटी के मेंबर रहे। जमनालालजी से इनकी बंधुता थी। बापू के पास वर्धा आते-जाते थे, तब बजाजवाड़ी की अपनी पंगत में शामिल होते थे। सेवाग्राम में बा इन्हें बड़े मान से कुछ-न-कुछ खिलाया करती थीं। दुबले-पतले थे, लेकिन चुस्त और बुद्धिमान।

५८. अरुणा आसफअली

बंगाल की हैं, लेकिन आसफअलीजी से शादी की। बापूजी के, जमनालालजी के और कांग्रेस के बड़े सभा-सम्मेलनों में मंच के पास मैं इन्हें हमेशा देखती थी। जोशीले भाषण भी करती थीं। सन् १९४२ के आंदोलन में इन्होंने छिपकर काम किया और अंग्रेज सरकार इन्हें गिरफ्तार न कर सकी। अब दिल्ली में काम कर रही हैं।

५९. मौलाना शौकतअली

मोहम्मदअली और शौकतअली दोनों भाई खूब लंबे-चौड़े और बड़े रुआबी थे। दोनों की जोड़ी थी। बजाजवाड़ी में इनके लिए कभी बेसन की पकौड़ी बनती तो खड़े-खड़े थाली में से ही उठाकर खाने लग जाते। उनके साथ सरोजिनी नायडू, कृपालानीजी आदि भी जुड़ जाते थे।

६०. मौलाना मुहम्मदअली

सदा श्री शौकतअली के साथ आते। गांधी चौक में इनका बड़ा रुआबदार भाषण होता। जमनालालजी दोनों का बड़ा मान करते। वे भी बड़ा स्नेह मानते। सन् १९२४ की बेलगांव कांग्रेस में ज्यादातर हम सब साथ ही रहे थे।

६१. शेख अब्दुल्ला

काश्मीर के नामी नेता। जेल में बहुत दिनों तक रहे। छूटने के बाद विनोबाजी से मिलने आते तब बजाजवाड़ी में ही उतरते और वहीं बातचीत होती थी। बजाजवाड़ी में हम उनका अक्षत-रोली लगाकर और सूत की माला पहनाकर स्वागत करते। साथ में उनके लड़के को भी टीका लगा देते। मुझे 'माताजी' कहते और बड़ा मान देते। जमनालालजी की बहुत याद करते। आज-कल तो फिर जम्मू-काश्मीर के मुख्यमंत्री हैं।

६२. गुलाम मुहम्मद बख्शी

श्रीनगर में एक बार ढेबरभाई और श्रीमन्जी के साथ मैं भी इनके घर गई थी। तब हमें काश्मीर की भारत-पाकिस्तान सीमा पर दिखाने ले गये थे। उन्होंने

कहा, "यहां हम महिलाओं को सीमा पर नहीं ले जाते, आपको ही ले जा रहे हैं।" मैंने कहा, "हम तो अपवाद हैं, भाई।" भूदान पद-यात्रा करते हुए १९५९ में विनोबाजी काश्मीर पहुंचे तब बख्शीजी ने उनका बड़ा सम्मान किया। मदालसा और उसके बच्चे कई दिनों तक उनके घर पर रहे।

ये कई वर्ष काश्मीर के मुख्यमंत्री रहे। भारत और काश्मीर की एकता को मजबूत किया।

६३. बंशीधर अग्रवाल

हमारे मुनीम थे। हिंगनघाट की दूकान भी देखते। उनके हाथ से हमेशा घाटा लगता था। अपना पुराना रसोइया, छोटू, कहा करता, "बंसीधरलालजी, आओ, कलेवो करल्यो। पर ये बताओ कि तुम मालिक को हमेशा घाटा क्यों दिखाते हो?" बेचारे क्या कहते!

६४. सीता झुंझुनवाला

मेरे देवर गंगाबिसनजी की बेटी। बहुत उत्साह से बहनों में काम करती है। दिल्ली की कई महत्वपूर्ण बैठकों में प्रतिनिधि होकर भाग लेती है। ये खामगांव में रहती है। इसके पति पुरुषोत्तमजी की समाज में अच्छी प्रतिष्ठा है।

६५. लाला लाजपतराय

पंजाब के मशहूर नेता। जमनालालजी उनका बड़ा मान करते थे। मैंने शायद उन्हें कभी नहीं देखा। उनके वर्धा आने की भी याद नहीं है। पर उनके गुणों की खुशबू तो सारे देश में फैली ही थी।

६६. गोपबन्धुदास

ये उड़ीसा के वकील थे। धारा सभा के सदस्य भी। गांधीजी का काम करनेवालों में प्रमुख थे। उड़ीसा की जनता उन्हें 'उत्कल-मणि' नाम से पुकारती थी।

६७. डा० एन्डरसन

नागपुर में सिविल सर्जन थीं। सोलह रुपये की फीस छोड़कर भी केवल दो रुपये लेकर अपनी मोटर में गरीबों के यहां बच्चा जनाने को जाती थीं। कमलनयन पेट में था तब मुझे जमनालालजी इनके पास ले गये थे। लोग डरते थे कि फिरंगणी पेट चीर देगी। पर वह तो बहुत सेवाभावी और गरीबों का विशेष ध्यान रखनेवाली थीं। इनके परिवार वालों ने इनको वापस विलायत बुलाना चाहा, पर इन्होंने जवाब भेज दिया, "तुम हिंदुस्तान आओ, यहां मेरे हज़ारों बेटे हैं।" मुझपर उनका बड़ा असर पड़ा। उनकी सरलता और सेवाभावी स्वभाव मुझे अब भी बड़े आदर्श प्रतीत होते हैं।

६८. डा० एनी बेसेंट

श्रीमन्‌जी के पिता श्री धर्मनारायणजी इनके बड़े भक्त थे। ये कांग्रेस की अध्यक्षा भी रहीं। उस जमाने में स्त्री-समाज में अध्यक्ष होना कितनी बड़ी बात थी!

जमनालालजी भी इनको बहुत मानते थे। उनके साथ मैंने अड्यार की संस्था देखी है, जिसे डॉ० बेसेंट ने बड़े सुंदर ढंग से बनाया था।

६९. आर्यनायकम्‌जी

आशादेवी और आर्यनायकम् दोनों बापूजी के मार्गदर्शन में सेवाग्राम में 'नई तालीम' का काम करते थे। ये गुरुदेव टैगोर के भक्त थे। एक बंगाली, एक श्रीलंका के।

७०. आशादेवी आर्यनायकम्

इन्हें जमनालालजी लाये थे। दोनों पति-पत्नी नयी तालीम—बुनियादी शिक्षा—का काम करते थे। बापूजी के बाद सब रचनात्मक संघों का एक 'सर्व सेवा संघ' बना, तब 'तालीमी संघ' भी उसी में शामिल हो गया और सब भूदान के काम में लग गये।

७१. आनन्द

श्री आर्यनायकम्‌जी का एक लड़का और एक बड़ी लड़की थी। लड़के का नाम आनन्द रखा था। उसकी चार साल की उम्र में ही अचानक सेवाग्राम में मृत्यु हो गई। उसने गलती से कुनेन की गोलियां एक साथ बहुत-सी खा ली थीं। उसका सभी को अफसोस हुआ। पापू को भी बड़ा सदमा लगा।

आनन्द की बड़ी बहन मित्तु बहुत होशियार थी। सेवाग्राम में बापूजी और राजेन्द्रबाबू को भारत की झांकी दिखाई थी। उसमें मित्तु ने मीरा का बड़े भाव-पूर्ण ढंग से अभिनय किया था। अब वह अमरीका में अच्छा काम कर रही है।

७२. मंगतूरामजी जैपुरिया

कलकत्ते के नामी व्यापारी और उद्योगपति। आजकल कानपुर में रहने लगे

हैं। आनन्दमयी मां के भक्त हैं। हर साल उनको बुलाते हैं और कथा-कीर्तन कराते हैं। उसमें हज़ारों लोग शामिल होते हैं।

७३. श्रीमां आनन्दमयी

जमनालालजी राजकुमारी अमृतकौर के पास शिमला में रहकर वापस लौट रहे थे तब बापू ने कहा था, देहरादून में कमला नेहरूजी की गुरुमां आनन्दमयी हैं, उनसे मिलते आना। जमनालालजी मां आनंदमयीजी के दर्शन करने के लिए गये। वहां जाकर इतने मुग्ध हो गये कि १५ दिन वहीं रह गये।

आनंदमयीमां से जमनालालजी को मां का प्यार मिला और वे उनकी गोद में पुत्र की भांति सोये। एक दिन उन्होंने पूछा, "मां, मेरी मौत बताओ।" मां ने कहा, "मां से पुत्र की मौत पूछते हो?" फिर आग्रह किया तो उन्होंने कहा, "छः महीने मान लो।" बस, जमनालालजी ने तभी से अपनी तैयारी कर ली। मोटर में बैठना, वर्धा से बाहर जाना, बन्द कर दिया। गोसेवा में तल्लीन हो गये। १५ फरवरी को छः महीने का समय पूरा होनेवाला था, पर वे ११ फरवरी को ही गोलोकवासी हो गये।

७४. दीदी मां

श्रीमां आनंदमयी की मां। जब जहां रहतीं, सब बड़ा सम्मान करते। ये शांत भाव से कुर्सी पर बैठे-बैठे सबको दर्शन और प्रसाद देतीं। भक्तगण आशीर्वाद पाकर प्रसन्न हो जाते।

७५. गुरुप्रियादीदी

श्रीमां आनंदमयी मां की बचपन की साथी सेविका और भक्त। सदा सब जगह मां के साथ ही रहती हैं। इन्हें सब 'दीदी' कहते हैं। जमनालालजी देहरादून

में श्रीमां के आश्रम में रहे थे तब वहां सब लोग उन्हें प्यार से 'भैया' कहने लगे थे। 'दीदी' सदा उनकी बहुत याद करती हैं। हम सबसे भी बहुत प्रेम रखती हैं।

७६. सर दातारसिंह

दिल्ली की सरकार में बड़े अफसर थे। गायों के बड़े भक्त थे। जमनालालजी ने गोपुरी में 'गोसेवा का सम्मेलन' बुलाया था। उसमें ये पहली बार वर्धा आये थे और बापू-विनोबा को देखकर बहुत आकर्षित हुए। मुझे भोपाल में उनके फारम के मकान में आने का आग्रह करते ही रहे। श्रीमां आनंदमयी मां के सभी भक्त हैं।

७७. कृपाल

सर दातारसिंह की बेटी। मां आनंदमयी मां के पास बड़ी श्रद्धा-भक्ति से रहती हैं। अपनी लड़की को भी बनारस में मां के आश्रम में ही रखा है। वहीं वह संस्कृत पढ़ती और पढ़ाती है। उसका गुणिता नाम है; वैसी ही गुणवान है।

७८. कन्हैयालालजी खादीवाले

ये इंदौर के रहनेवाले, कांग्रेस के उत्साही कार्यकर्ता हैं। खादी पहनते हैं। इंदौर में 'खादीवाले' ही कहे जाते हैं। इंदौर में जब सन् १९५७ में कांग्रेस हुई तब ये ही स्वागताध्यक्ष थे।

७९. इमामसाहब

ऊंचा पूरा कद। खादी का चुस्त पाजामा, अचकन और पगड़ी का रुआबदार पहनावा। शुरू से बापूजी के दक्षिण अफ्रीका के साथी। बाद में साबरमती आश्रम में

ही आकर बस गये। इनके घर हम सभी का आना-जाना था। इमामसाहब की बेटी अमीना मुझे बड़ी प्यारी लगती थी। कमला से तो उसकी दोस्ती थी। वह अब नहीं रही, पर उसके पति कुरेशीभाई खूब अच्छी तरह परंपरा निभा रहे हैं। बेटी सुल्ताना सारे घर-परिवार को संभाल रही है। एक भाई को शारदाबहन कोटक की बेटी ब्याही है। इन सभी से जमनालालजी की कौटुम्बिकता थी।

नमक-सत्याग्रह के समय गुजरात के बलसाड़ जिले में धारासणा नाम की जगह में जोरदार सत्याग्रह हुआ था। उसका आरंभ सरोजिनी नायडू के भाषण से हुआ। तब इमामसाहब ने स्वयंसेवकों को सफल होने का आशीर्वाद दिया था। उसी समय मेरी ननद केशरबाई, मैं और मदालसा वहां पहुंचे थे। सूर्योदय के समय का वह प्रसंग बड़ा अद्भुत और रोमांचकारी था।

८०. मौलाना अबुल कलाम आजाद

कई वर्ष कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। बजाजवाड़ी में आते थे। सिगरेट के बड़े शौकीन थे। बापू कुटी में भी सिगरेट पीने की इनको इजाजत देनी पड़ी। इनके बैठने के लिए थोड़ी ऊंची जगह रखनी पड़ती थी। ये कुरान-शरीफ के बड़े प्रेमी थे। एक बार सेवाग्राम में विनोबाजी से शुद्ध उच्चारण में कुरान की आयतें सुनकर चकित हो गये।

८१. हीरालालजी ओसवाल

जमनालालजी को दत्तक लेनेवाले दादा बच्छराजजी के विश्वासपात्र साथी। वर्धा-निवासी। जमनालालजी की दादी सद्दीबाई धर्मात्मा थीं। वे मरते वक्त कह गईं कि मेरे पैसों से मंदिर बना देना। जब जमनालालजी समझदार हुए तब दादाजी से कहा कि दादी मंदिर बनवाने की कह गई थीं, तो अब बनावें? बच्छ-राजजी पलंग पर लेटे रहते थे, उन्होंने सम्मति दे दी। तब वर्धा के गांधी चौक के निकट यह लक्ष्मीनारायण का मंदिर बना। इसके बनाने में हीरालालजी की पूरी मदद मिली।

यह मंदिर बन जाने पर उन्होंने जैनों का मंदिर भी सामने ही बनवा लिया। भानक में ओसवालों का बड़ा तीर्थ है। वहां भी इन्होंने यात्रियों के लिए सुविधा-जनक व्यवस्था बना दी। वे ऐसी धार्मिक वृत्ति के थे।

८२. काकासाहेब कालेलकर

इनको तो सभी जानते हैं। १९२५ में हम सपरिवार साबरमती आश्रम में रहने गये तब ये वहां के शिक्षक निवास की चाली (लाइन) में ही रहते थे। तभी से इनके साथ काफी मिलना-जुलना रहा है। इनकी पत्नी को सभी 'काकी' कहते थे। बापूजी और काकासाहब भी काकी के नाम से ही बात करते। काकासाहब विद्यार्थियों को संस्कृत सिखाते। वे दुनिया की कोई भी बात इतनी अच्छी तरह समझाते हैं कि वह मेरी समझ में भी आसानी से आ जाती है। ये ज्ञानी-ध्यानी, विद्वान और बड़े साहित्यिक हैं। कई साल राज्यसभा के मेंबर भी रहे। हाल ही में ९० वर्ष पूरे करने पर इंदिराजी ने दिल्ली में इनका सम्मान किया।

८३. सतीश कालेलकर

काकासाहब का बड़ा बेटा। विलायत में सन् १९३६ में कमलनयन पढ़ाई में सतीश से मदद लेता था। यह पढ़ने-पढ़ाने में बहुत होशियार है। आखिर तक दोनों में दोस्ती बनी रही। इसने सरकारी काम से विदेशों में भी अच्छा नाम कमाया।

८४. बाल कालेलकर

काकासाहब का छोटा बेटा। इतना मीठा लड़का कि जब मैं देखती तब लगता कि इसे देखती ही जाऊं। इसकी मीठी-मीठी बातें बहुत अच्छी लगतीं। इसने उद्योगों की लाइन में बहुत उन्नति की। दिल्ली सरकार में भी ऊंचा पद पाया।

८५. भागीरथजी कानोड़िया

जमनालालजी के स्नेही स्वजन। कलकत्ते के बड़े प्रतिष्ठित व्यापारी। किसी भी सामाजिक कार्य के लिए उत्साह से चंदा देते हैं। खादी पहनते हैं। बड़े सज्जन हैं। मुझसे बड़ा स्नेह मानते हैं। बाल-बच्चे सभी पारिवारिक भावना से मिलते हैं।

८६. गंगाबाई कानोड़िया

भागीरथजी की पत्नी। मेरे साथ कूपदान के लिए चन्दा मांगने फिरती थी। एक दिन एक बहन झाड़ू लेकर मारने आई कि रोज-रोज चन्दा मांगने आ जाती है। घर आकर गंगाबाई बोली, "सच्चे स्वागत का मजा तो आज ही आया।"

८७. कन्हैयालालजी दूगड़

राजस्थान के सरदारशहर वाले। बापूजी के सिद्धान्तों पर गोशाला से लेकर सब प्रकार की शिक्षण-संस्थाएं बना रखी हैं। सबका स्वागत करते हैं। घर पर ही एक पेड़ के ऊपर घास-फूस की कुटिया बना रखी है। वहीं से समाज-सेवा के काम करते रहते हैं। पूरे परिवार में गहरी धार्मिक भावना है।

८८. कृष्णाचारी

जावरे के हमारे 'रामानुज कोट' के मंदिर में पूजा करनेवाले पुजारी। बचपन में मैं अपनी मां के साथ इस मंदिर में हमेशा जाया करती थी। भगवान् की विधिवत् पूजा, आरती देखने में और वहां के कीर्तन, प्रवचन में मेरा खूब मन रमता था। एकादशी के दिन अभिषेक और शृंगार देखते-देखते तो मैं आत्म-

विभोर हो जाती थी। उस समय की याद आ जाने से अब भी मेरा मन रोमांचित हो उठता है।

हाँ, हमारे पुजारीजी द्राविड़ी थे। ये लोग ऊँचे स्वर से संस्कृत के श्लोक बोलते हैं तब लगता है, जैसे लोटे में कंकड़ बज रहे हों।

८६. कोरड़े गुरुजी

ये जमनालालजी के बड़े प्रेमी थे। अपने जीवन के अंतिम वर्षों में ज्यादातर गोपुरी में ही रहे, जहां जमनालालजी की 'शांति कुटीर' है। सामने उनके समाधि-स्थान पर मोलसिरी का घेर-घुमेरदार हरा-भरा वृक्ष मन को आकर्षित करता है। उसी के नजदीक प्राकृतिक चिकित्सालय चलता है। वहां का जलवायु आरोग्य-दायी है।

गांधी-शताब्दी में जब बादशाह खानसाहब सेवाग्राम में आये थे तब विनोबा-जी उनसे मिलने के लिए वर्धा आये। बजाजवाड़ी के गेस्ट हाउस में दोनों बाद-शाहों का मिलन हुआ। कुछ समय सेवाग्राम में दोनों साथ-साथ रहे। उसके बाद विनोबा गोपुरी की 'शांति कुटीर' में स्थिर होकर रहने लगे। वहां जमनालालजी की याद करते ही रहते थे और उनके स्मृति-वृक्ष के आसपास टहला करते थे। कभी-कभी उनके मुख से ऐसे उद्‌गार निकलते—"मुझे यहीं समाना है।" तब मैं कहती; "आप मुझसे छोटे हैं; मैं आपसे तीन साल बड़ी हूं। इसलिए पहले मैं, पीछे आप।"

६०. पू० कनीरामजी

जमनालालजी के जन्मपिता। ये तीन भाई थे। गंगाबिसनजी के पिता भगतरामजी थे।

परिवार में कनीरामजी का ही रुआब रहता था। इन्होंने सयोगवश होकर पांच वर्ष की अवस्था में ही जमनालालजी को गोद तो दे दिया। परन्तु इनकी

सब तरह से कड़ी परीक्षा ही हुई। जमनालालजी को गोद दे देने के बाद ठेठ उनकी शादी में बड़े मानपान से पूरे परिवार के साथ कनीरामजी वर्धा आये। बच्छराजजी ने बड़ी आवभगत की। पर शादी के चन्द दिनों बाद ही जमनालालजी के छोटे भाई बदरीदासजी अचानक चल बसे। मां-बाप रोते-बिलखते अपने देश में सीकर लौट आये। बोले, "गोडा भी टूट्या और बेटी भी गयो।" रास्ते में गहना भी सब चोरी चला गया।

जमनालालजी के बड़े भाई चि० राधाकिसन के पिता माधोजी का देहान्त भी वर्धा में ही हुआ। भगवान् ने राजशाही तीन बेटे दिये। तीनों ही उनसे छिन गये। इधर जमनालालजी भी निराधार हो गये। मेरी ननद केशरबाई के पति जोरावरमलजी बड़े शोभावान थे। भगवान् ने उनको भी उठा लिया। जमनालालजी पर दुःख का मानो पहाड़ ही टूट पड़ा। इधर गोद लेनेवाले दादा-दादी, विधवा माता सब-के-सब चले गये। रह गया एक आधार लक्ष्मीनारायण के अपने मंदिर का।

बाद में सीकर से कनीरामजी, दादाजी और बिरदीदेवी दादीजी को वर्धा ही बुला लिया। पर तब गांधी की आंधी चल पड़ी और जमनालालजी के पिता-माता जीवन भर दुःख ही झेलते रहे।

८१. मां बिरदीदेवी

जमनालालजी की मां। बड़ी सीधी, सरल और दयालु थीं। माता कस्तूरबा जैसी लगती थीं। बड़ी ध्यानी-मानी और भक्तिमान थीं। देवी-सा सुन्दर सुरूप, गोरा रंग, रेशम-सा मुलायम बदन। चेहरे पर प्यार-भरी मिठास और आंखों की चमक सबको मोह लेती थी। बचपन से घर का काम किया। सुबह दो-तीन बजे से उठकर मनों आटा पीसा। चर्खे पर ढेरों सूत काता। खेतों में काम और गायों की सेवा-पूजा तो घर-घर में होती ही थी।

स्वराज्य आंदोलन के समय माजी कहतीं, "गांधीजी केवे है कि सूत कातणसं स्वराज्य आवगो तो चर्खो तो म्हें घणोई कातल्यां और रेजी (खादी) तो म्हें सदा ही परी और भी परल्यां। स्वराज बेगो आणो चिय।"

एक दिन बड़े मजे की बात हुई। वर्किंग कमेटी के लिए गांधीजी अपने बजाज-वाड़ी के बंगले पर आये। बरामदे में माजी खड़ी थीं। बापूजी ने झुककर उनको प्रणाम किया। उसी तरह माजी ने उनको प्रणाम किया। बाद में बापूजी ने माजी से कुशल-मंगल पूछी और उनके कानों में सोने की बाली थी तो दोनों कान मुट्ठी में पकड़ कर कहा कि ये मुझे दे दो। तब माजी ने बापू के दोनों कान अपनी मुट्ठी में पकड़ लिये और कहा, "पहले मेरे बेटे जमन को और राधाकिसन को जेल से लाकर दो।"

दादीजी और बापूजी का वह च्याऊं-म्याऊं का-सा खेल देखकर बच्चों को बड़ा मजा आया।

८२. काशीबाई

बूढ़ी मां। बजाजवाड़ी के बंगले के नजदीक वाले गिरजाघर का चौकीदार था इसका पति। दोनों भक्तिभाव-भरे भजन-अभंग गाते और चौकीदारी करते। तीस रुपये महीने में गृहस्थी चलाते। हर साल बच्चे होते। कोई जल्दी, कोई देर में मर जाते। एक लड़का शंकर बड़ा सुंदर सदा सजा-धजा रहता। मैट्रिक तक पढ़ने के बाद टाइफाइड से वह भी अस्पताल में मर गया। काशी ने खूब सेवा की, पर जब भगवान् ने ले ही लिया तब उसी समय भक्तिभाव भरे भजन गाने लग गई। मोघे बाबाजी उसके पास में थे। यह बात उन्होंने जमनालालजी से कही। तब से आजतक करीब चालीस वर्षों से काशीमां बजाजवाड़ी के बंगले पर ही रहती है। उसी को अपनी काशी कांची अवन्तिका सब तीर्थों का तीरथ मानती है। जमनालालजी कहते थे, यह कोई सती है। अपनी डायरी में भी उन्होंने ऐसा लिखा है।

हमारे बच्चों-के-बच्चों को इसने पाला है। सभी पर इसका प्यार है और सभी इसका मान करते हैं। 'बूढ़ीमां' ही कहते हैं। काशी की इकलौती एक बेटी चि० राधा नागपुर में रहती है। सुखी है।

९३. शंकरनजी

ये मद्रास के कार्यकर्ता हैं। बहुत वर्षों से सेवाग्राम आश्रम में रहते हैं। बापूजी के सामने ही आर्यनायकम्‌जी के साथ 'तालीमी संघ' में काम करते रहे। अब भी आश्रम का हिसाब-किताब देखते हैं। तमिल भाषा की छोटी-छोटी पुस्तकें नागरी लिपि में छापने का काम भी करते रहते हैं।

हाल ही में इनकी बहन कमला का स्वर्गवास आश्रम में हो गया। बड़े प्रेमल स्वभाव की थीं। सबकी सेवा करती रहती थीं।

९४. पूर्णिमाबहन पकवासा

श्री मंगलदासजी पकवासा की पुत्रवधु। जैसा नाम वैसी ही अनेक कलाओं से पूर्ण। संगीत-प्रेमी, गृह-कार्य में कुशल, सेवाभावी और शक्तिमान। बहनों में संरक्षण की तेजस्विता बढ़े, इसके लिए 'शक्तिदल' चलाती हैं। योगासन और ध्यान-योग भी करती है। गुजरात में 'ऋतंभरा' के नाम से महिलाओं के लिए अध्यात्म-साधना का केंद्र खड़ा कर रही है।

९५. धर्मानन्दजी कौसम्बी

इन्हें मैं विनोद में 'मोसम्बी' कहती थी। ये बड़े विद्वान और धार्मिक थे। नमक-सत्याग्रह के समय विलेपार्ले की सत्याग्रह छावणी में भी रहे थे। इनके शरीर में ऐक्जिमा की तरह की बीमारी फैल गई। तब यरवदा जेल में इन्होंने बापूजी से पूछा, "बापूजी, मैं मरने के लिए सेवाग्राम जाऊं?" बापूजी ने कह दिया, जाओ। ये वहां पहुंच गये। जमनालालजी का अतिथि-घर, जो बाद में बापू का 'अंतिम निवास' बना, उसी में रहे। धर्मानंदजी ने आखिर में सेवाग्राम में ही जीवन समर्पण कर दिया।

९६. के० वी० कामत

बम्बई के अपने बच्छराज कंपनी के आफिस में कमलनयन के सेक्रेटरी का काम वर्षों से करते आये। अब भी वहीं हैं। उन्हें बहुत जानकारी है।

९७. कपिलभाई

वर्षों से 'चर्खा संघ' में रहे। सभी सेवा-कार्यों में बहुत चतुर। विनोबाजी के पास आते-जाते रहते थे।

९८. करणभाई

राघवदास बाबाजी के साथी। बनारस में 'सर्व सेवा संघ' के प्रमुख कार्य-कर्ता। विनोबाजी के पास सलाह के लिए आते रहते हैं। भूदान-यात्रा में काफी काम किया है।

९९. पृथ्वीराज कपूर

अद्भुत आदमी। इनका चेहरा भी अद्भुत और अभिनय भी अद्भुत। किसी भी नाटक की रचना भी खुद करते और उसमें मुख्य अभिनय भी खुद करते। देखकर लोग आश्चर्य-चकित और मुग्ध हो जाते। किसी भी सार्वजनिक कार्य के लिए वे झोली पसारते थे। लोग खुशी से उनकी झोली भर देते थे। सिनेमा के नामी अभिनेता। इनका बेटा राजकपूर भी पिता का अनुकरण करने वाला है। अच्छा कलाकार और देशप्रेमी है।

१००. स्वामी कृष्णाश्रमजी

बारहों महीने गंगोत्री में रहते थे। जाड़ों में बर्फ पर आते-जाते। बोलते नहीं थे। नंगे रहते थे। उनके दर्शन के लिए जो लोग आते थे, उन्हें अपने आश्रम से रोटी-साग खिला देते थे। मदनमोहन मालवीयजी ने बनारस में हिन्दू विश्व-विद्यालय की स्थापना इन्हीं के हाथों से करवाई थी।

१०१. आचार्य कृपालानी

कांग्रेस की वर्किंग कमेटी में सदा वर्धा आया करते और बजाजवाड़ी में अपने पास ही ठहरते थे। हम लोग घर में कोई भी चाय नहीं पीते, परन्तु मेहमानों के लिए सब व्यवस्था रहती थी। एक दिन कृपालानीजी ने मुझसे चाय मांगी। शायद और कोई नहीं दीखा होगा। मैंने गुस्से में चाय की पूरी केतली ही सामने धर दी। चाय ठंडी हो गई थी, पर मुझे क्या पता? उन्होंने बड़ी नम्रता से कहा, "जानकीबहन, चाय ठंडी थोड़े ही पी जाती है। चाय तो गरमागरम पीते हैं।" हे भगवान्!

१०२. सुचिता कृपालानी

बड़ी अच्छी और सच्ची महिला। इसने स्वेच्छा से अपने से काफी बड़ी उम्र के आचार्य कृपालानीजी से शादी की और आखिर तक बड़ी खुश रही। जमना-लालजी ने काफी समझाया था कि कृपालानीजी काफी ज्यादा उम्र के हैं। तुम्हें शादी करनी हो तो अच्छा लड़का मिल सकता है। पर भारत की महिलायें तो अपनी ही भावना में डूबी रहती हैं। उनकी अपनी अलग ही एक अनोखी दुनिया रहती है।

भगवान् ने सुचिता का मान रख लिया। उसने जीवन भर जीभरकर सबकी सेवा की और कृपालानीजी के सामने ही वह सीतामाता की तरह धरती में समा गई।

१०३. गिरधारी कृपालानी

साबरमती आश्रम में रहा है, गुजरात विद्यापीठ में पढ़ा है। आचार्य कृपालानीजी का भतीजा। जमनालालजी का सेक्रेटरी भी रहा। जमनालालजी स्टेशन पर अपना थैला उठाकर उतर जाते थे। सामान उतरवाने की जिम्मेवारी इनकी रहती थी, पर इन्हें ऐसा काम अच्छा नहीं लगता था। कहता, क्या हमाली का काम भी करना पड़ेगा ?" जमनालालजी ऐसा ही आदमी चाहते, "ला कोई बांदी ऐसा नर, पीर, बवर्ची, भिश्ती ख़र।"

गिरधारी अब भी एक परिवार की तरह ही मिलते-जुलते हैं।

१०४. किसनदादा

श्रीकृष्णदासजी जाजू का बड़ा बेटा। इसकी पीठ में जरा कूबड़ है। फिर भी सेवाग्राम, गोपुरी, वर्धा की बैठकों में पैदल ही जाया करता। समय का बड़ा पाबंद। इनकी घड़ी से घड़ी सदा मिली रहती। कहीं सामने से आते-जाते दिखाई देते तो लोग इनसे अपनी घड़ी मिला लेते। आगे चलकर तो लोग इन्हीं को 'घड़ियाल' कहने लग गये।

१०५. मणिलालजी कोठारी

ये चन्दा इकट्ठा करने में होशियार थे। इनके भाषण जोरदार और प्रभावशाली होते थे। जमनालालजी के साथ हम लोग १९३०-३१ में रंगून गये थे, तब ये हमारे साथ थे। इनके भाषण देने के जोश से मैं भी भाषण देने लगी। इस दौरे में एक लाख रुपये का चन्दा इकट्ठा हुआ। ये धुलिया जेल में विनोबाजी और जमनालालजी के साथ रहे थे। आपस में प्रेम था।

१०६. सीतारामजी कारेमोरे

ये तुमसर के रहनेवाले, विनोबाजी के बड़े भक्त हैं। आश्रम में सदा आते रहते हैं। अपने बेटे और बेटी को यहीं रखा था। अब बुढ़ापे के लिए परमधाम आश्रम से लगी हुई जमीन भी ले रखी है।

आजकल नागपुर जेल में गीताई का प्रचार करते हैं।

१०७. डा० कर्णसिंह

बड़े प्रतिभाशाली और संस्कृत के प्रेमी हैं। काश्मीर के युवराज रहे। युवरानी नेपाल की हैं। हम कश्मीर गये थे, तब बहुत श्रद्धा और प्रेम से हमारा स्वागत किया था। भोजन के लिए अपने राजमहल में बुलाया था। अब तो दिल्ली में केन्द्रीय सरकार में बड़े मंत्री हैं।

१०८. शान्ता केजड़ीवाल

बड़ा सरल स्वभाव, चेहरा बिलकुल शान्त और मन प्रसन्न। बनारस के बनारसीदास बजाज की बहन। जमनालालजी बेटी की तरह मानते थे। बड़ी कुशल गृहिणी थी। शायद इसी से भगवान् ने जल्दी बुला लिया होगा।

१०९. लालबाग

इसको काले पानी की सजा हुई थी। माथे पर एक अठन्नी जितना जलाने का गोल निशान था। पहचान के लिए लगाते होंगे। जेल में जमनालालजी से परिचय हुआ। छूटकर कहां जायगा, यह सवाल था। जमनालालजी ने अपनी दूकान के पहरे पर रखवा दिया। वर्षों तक अपने यहीं रहा। खूब ऊंचा पूरा

रुआवदार मुस्तैद और ईमानदार था।

११०. जे० सी० कुमारप्पा

ये दक्षिण भारत के थे। सनत्कुमार की तरह कुंआरे ही रहे। बापूजी के पास आये और उन्हीं के विचारों में और रचनात्मक कार्यों में तन्मय होते गये। अपने देश के गरीबों का रहन-सहन कैसे सुधरे इसका गांधीजी ने रात-दिन ध्यान-चिंतन किया। उसमें से 'ग्रामोद्योग संघ' का जन्म हुआ। वह लेख 'हरिजन' में छपा, उसका शीर्षक 'प्रसव-वेदना' रखा गया। इस तरह बापूजी अखिल भारत के सभी रचनात्मक कार्यों की जन्मदाता माता थे तो जमनालालजी बापूजी के 'पांचवें पुत्र' के नाते अपने आप सब कार्यों के भ्राता बनते गये। इसलिए 'ग्रामोद्योग संघ' के फलने-फूलने के लिए वच्छराजजी, दादाजी और सद्दीबाई दादीजी की समाधि के नजदीक का शंतरे का अपना बड़ा बगीचा जमनालालजी ने कुमारप्पाजी को ग्रामोद्योग के कार्य के लिए सौंप दिया। उन्होंने वहां ग्रामोद्योगों का खूब काम किया और प्रयोग किये। आज वहां सुन्दर 'मगन संग्रहालय' बना है और वह सारा बगीचा अब 'मगनवाड़ी' कहलाने लगा है।

१११. भारतन कुमारप्पा

जे० सी० कुमारप्पा के छोटे भाई। इनकी पत्नी सीतादेवी भी पढ़ी-लिखी बड़ी चतुर थी। उससे बापू ने कहा, "तुम भी ग्रामोद्योग का काम करो।" 'मगन-संग्रहालय' उन्हीं का सजाया हुआ है। ग्रामोद्योगी वस्तुओं के कई नमूने उनके बनाये हुए हैं। ये दोनों ही पति-पत्नी वर्षों तक मगनवाड़ी में रहे और ग्रामोद्योग के काम में तन्मय हुए।

११२. सोहनलाल दूगड़

कलकत्ते के बड़े व्यापारी। इन्होंने मुझे कूपदान-यज्ञ में बहुत सहायता दी।

तीन कुओं के लिए पन्द्रह सौ रुपये भी दान दिये थे। समाज-सेवा के कामों में मुक्त हस्त से सहायता देते थे।

११३. पं० हृदयनाथजी कुंजरु

बड़े विद्वान। इनका पहनावा बहुत व्यवस्थित रहता—चूड़ीदार पजामा, अचकन और गोल टोपी। अंग्रेजों के जमाने से पार्लियामेंट में रहे। भारत भर में बालकों को व्यायाम और शिस्त का पालन करना सिखाने के लिए खूब काम किया, स्काउटिंग का। बापूजी से मिलने के लिए कई बार वर्धा आये। जमनालाल-जी के तो मित्र समझो, वे इनका बड़ा मान करते थे। मुझे भी बड़े बुजुर्ग के समान लगते। उनका रंग-रूप और चेहरा बड़ा प्रभावशाली लगता था। ये बहुत वर्षों तक गोखलेजी की सोसाइटी के सभापति रहे। श्रीमन्‌जी के पिताजी से इनका बहुत दोस्ताना था।

११४. केशरीमलजी

वर्धा में रहनेवाले एक साधारण ब्राह्मण थे। बच्छराजजी दादाजी के पास इनका आना-जाना था। इन्होंने अपनी जमीन और खेती की कमाई से लड़कियों के लिए एक पाठशाला बनवाई। वह अब 'केशरीमल कन्याशाला' के नाम से अच्छी तरह फल-फूल रही है।

एक दिन अपनी ऊंची-सी धोती और कमीज, कंधे पर ब्राह्मणी लाल गमछा और माथे पर काली गोल टोपी पहने श्रीमन्‌जी के घर जा पहुंचे। एक मिनट का समय मांगा और करीब पचास हजार की कीमत के अपने मकान का दान-पत्र उनके हाथ में दे दिया। फिर इतना ही कहा, "जबतक मैं जीऊं, तबतक ७० रुपया महीना मेरे खाने-पीने के लिए मुझे मिलते रहेंगे तो मेरा गुजारा हो जायगा।" इतना कहकर वे बाहर आ गये। बेटी मदालसा को धीरे से इतना कहा कि "नेरी गांव में मेरे पास करीब ६०० एकड़ जमीन और है। वह भी मैं बाबूसाहब (श्रीमन्‌जी) को ही अर्पण करना चाहता हूं। कारण, इनके द्वारा समाज

की बड़ी सेवा हो रही है। पर नेरी की खेती अभी दान देने लायक नहीं है। उसे सुधार रहा हूं। फिर आपको ले जाकर दिखाऊंगा। अभी आप बाबूसाहब को कुछ न कहना।" वह दान भी केशरीमलजी अपने जीते-जी दे गये। आज अपने शिक्षा मंडल की ओर से ग्रामीण महाविद्यालय की देखरेख में नेरी की खेती अच्छी तरह फल-फूल रही है। 'केशरीमल छात्रालय' भी ठीक चल रहा है।

यह आज के जमाने में एक साधारण ब्राह्मण का असाधारण दान है।

११५. राधाबाई कुलकर्णी

अपने महिलाश्रम के संगीत-शिक्षक श्यामरावजी की निष्ठावान पत्नी। बच्चों को अच्छे संस्कार दिये।

११६. रावराजा कल्याणसिंहजी

सीकर के राजा। इनके पहले के रावराजा माधोसिंहजी बड़े मानी-धनी और रुआबदार थे। एक बार लड़ाई में शत्रु की तलवार से इनका माथा फट गया था, तब फेंटे से खूब कसकर बांध लिया और लड़ते रहे थे। उन्हीं की गद्दी पर कल्याणसिंहजी आये। ये बड़े भगवद्भक्त थे। रोज पैदल मंदिर जाते थे। सीकर में कल्याणजी का मंदिर भी है। सीकर के अपने 'कमरे' पर आप कई बार पधारे। लालबहादुरजी का सीकर में शुभागमन हुआ था तब वयोवृद्ध रावराजा कल्याणसिंह-जी ने खुद उपस्थित रहकर हम सबका पारिवारिक रूप से स्वागत-सत्कार किया था। इनके बेटे युवराज हरिसिंगजी का विवाह नेपाल नरेश श्री महेन्द्र राजा की बहन के साथ हुआ था।

श्रीमन्‌जी नेपाल में राजदूत थे तब मैं वहां गई थी। उस समय भारतीय राजदूतावास में नेपाल के राजा-रानी पधारे, तब मैंने उनसे कहा था कि राजा साहब, आप और हम तो समधी हैं। आप बेटीवाले हैं और हम बेटेवाले हैं। यह सुनकर वे मुस्कराये।

११७. विजया पोद्दार

भाई सीतारामजी सेकसरिया की छोटी बेटी और महावीरप्रसाद पोद्दार की पुत्र वधु। इसके पैदा होने के समय मैं अस्पताल में रही तब मेरी बड़ी भारी परीक्षा हुई। विजया मुझे बड़ी मां ही कहती है। मुझे भी वह बहुत प्यारी लगती है।

११८. मैथिलीशरणजी गुप्त

ये राष्ट्र-कवि थे। मुझे भी कविता का बड़ा शौक था, पर तुक मिलाना मुझे क्या आवे ? न पढ़ी, न लिखी। फिर भी इनकी राष्ट्रीय भावना से भरी कविताएं मुझे अच्छी लगती थीं और भीतर से मन होता कि मैं भी कुछ गाऊं, कुछ सुनाऊं।

११ सितम्बर, १९५१, विनोबाजी का जन्म-दिन। पंडित जवाहरलालजी के निमंत्रण पर प्लानिंग कमीशन से मिलने के लिए दिल्ली जाने को बाबा तैयार हो गये। परमधाम पवनार के भरत-राम मंदिर से बिदा हुए तब मैं वहीं गुनगुनाने लगी :

"विनोबा की वाणी
उड़ गई आकाशांताणी
दुनिया उठाई स्याणी स्याणी
भूमि मिलै हरियाणी
खेती खिलेगी मोतियाणी
गायां जीवगी ब्याणी ब्याणी
अब ल्याणी है विनोवाणी
जी विनोबा भावे !
बातां तो थान म्हारी मानणी।"

भूमि माता अरज करे है
बाबा थे रुक जाओ
चाल चाल म्हारी छाती छुल गई

अब तो थोभ्यां सरसीजी
विनोबा भावे ।
बातां तो थान म्हारी भावसी ।

भूमिदानी बाबा अब तो
आकाशां मं चढ़णो
चील गाड़ी मं उड़तां उड़तां
चंद्रलोक मं जाणो जी
विनोबा भावे
बातां तो थान म्हारी भावसी ।"

११९. टेहरी-गढ़वाल की राजमाता

दिल्ली में पार्लियामेंट देखते समय मिली थीं । हम साथ ही बैठी थीं । खूब बातें हुईं । बहुत अच्छा लगा । मुझे वे बड़ी धार्मिक, व्यवहार-कुशल और राज-नीतिज्ञ जान पड़ीं । बापूजी के अस्थि-कलश के साथ मैं भी बदरीनारायणजी गई थी, तब इनके वहां कलश का खूब स्वागत-सम्मान हुआ था ।

१२०. राजमाता गायत्रीदेवी

ये हमारी जयपुर की राजराणी हैं । चक्रवर्ती राजाजी की स्वतंत्र पार्टी की नेता रही हैं । बंबई में चौपाटी पर भाषण हुआ था तब बहुत लोग उनको देखने और भाषण सुनने गये थे । मैं भी वहीं थी । देख-सुनकर मन में अपनेपन का भान उपजता था ।

१२१. जयपुर के महाराजा

इनको अपने राजस्थान के नाते जानते थे । हवाईजहाज की दुर्घटना हो गई ।

अस्पताल में जमनालालजी देखने गये थे। तब मुझे भी साथ ले गये। उनको ड्रेसिंग करके सुलाया था। देखकर बड़ा रंज हुआ कि देखो विधि का विधान कैसा है— दु:ख-दर्द में क्या राजा, क्या प्रजा, सबको एक-सा ही भुगतना पड़ता है।

१२२. रामनाथजी गोयनका

मारवाड़ी समाज के साहसी व्यापारी। मद्रास में रहते हैं। हमारा बहुत वर्षों से परिचय और पारिवारिकता है। चि० कमलनयन से इनकी बड़ी दोस्ती थी। आवड़ी-कांग्रेस के समय इन्होंने एक तरह से सहायता की थी।

१२३. केसरपुरीजी गोस्वामी

भीलवाड़े के सर्वोदयी नेता। मैं विनोबाजी के साथ भीलवाड़ा की भूदान-पदयात्रा में थी। कूपदान का काम करती थी। मेरे पूछने पर केसरपुरीजी ने बताया कि यहां कुएं तो हैं; पर बहनों के लिए नहाने का घाट बनवाया जाय तो अच्छा हो। मैंने कहा, "हां, ठीक बात है। तालाब में घाट बन जाय तो बहनों को नहाने-धोने की अच्छी सुविधा हो जाय।"

१२४. गोस्वामी गणेशदत्तजी

ये बिड़ला मंदिर के ऊपर की टेकड़ी पर बनी एक कुटिया में रहते थे। वहां उनसे मिलने का मुझे भी मौका मिला। एक तपस्वी, सज्जन और विद्वान। मुझे तो दिन-रात कूपदान की और गोसेवा की धुन लगी रहती थी। मैंने वही बातें उनसे भी कीं।

१२५. राधादेवीजी गोयनका

अकोला में अनेक संस्थाएं चलाती हैं। अब तो स्कूल और कॉलेज भी चल रहे हैं। उन विद्यार्थियों को अच्छे संस्कार मिलें, यही प्रयत्न करती हैं। योग-विद्या का अभ्यास और प्रचार भी करती रहती हैं। बड़ी भक्तिमान भी हैं। विधान सभा की वर्षों सदस्या रहीं। अनेक प्रकार के सामाजिक सेवा-कार्यों में सदा लगी रहती हैं। इन्होंने अपने मारवाड़ी समाज में अनेक सुधार करवाये हैं। हमारा घर-जैसा ही संबंध है। विनोबाजी के पास इन्होंने वर्षों पहले एक लाख 'गीता-प्रवचन' बिकवाने का और वितरण करवाने का संकल्प लिया था। वह पूरा करके ही रहीं।

१२६. सेठ गोविंददासजी

जबलपुर में इनका बड़ा भारी पुश्तैनी महल है। वहां मैं रही हूं। एक कमरे में बड़ा-सा पलंग रखा था। उसमें बड़े कीमती जवाहरात जड़े थे। वह भी देखा। कुछ दिनों बाद ही सुनने में आया कि वह पलंग चोरी चला गया। शायद रत्न-जड़ित हिस्सा काट-काटकर ले गये होंगे।

स्व० गोविंददासजी की पत्नी सीकर की बेटी हैं। बड़े ठाठ-बाट से शादी हुई थी। उस समय रावराजा माधोसिंह ने खुद खड़े होकर ब्याह की तैयारियां करवाई थीं और बारात का आगत-स्वागत भी स्वयं सामने उपस्थित होकर किया था। सीकर की बेटी के नाते जमनालालजी की बहन और मेरी ननद। यह मान्यता और स्नेह सदा बना रहा।

१२७. गोविंदा पेंटर

वर्धा के अपने लक्ष्मीनारायण मंदिर की चित्रकारी सब इसी के हाथ की है। जमनालालजी ने बंगाल से चैतन्य महाप्रभु का बहुत बड़ा चित्र मंगवाया था। उस

समय ८०० रुपये लगे थे। हू-ब -हू उसी की नल गोविंदराव पेंटर ने १०० रुपये में ही वना दी। जमनालालजी जिस स्कूल में पढ़े थे, उसी में यह भी पढ़ता था।

१२८. गोरुभाई

सूरजमलजी रुइया के यहां राजस्थान का पुराना सेवक था रुग्गा। उसका वेटा गोरु। वचपन से सूरजमलजी के घर में ही रहा। सूरजमलजी की वेटी शांता-वाई रानीवाला महिलाश्रम वर्धा की संस्थापिका हैं। उनकी मां छोटेपन में चली गई थीं। तवसे गोरुभाई ने ही शांतावाई को पाला है और वुढ़ापे तक उनकी सेवा की है। अव गोरुभाई का वेटा इन्हीं के वच्चों की सेवा में है।

१२९. गौरीशंकरभाई

वंवई के सरकारी दफ्तर में काम करनेवाले एक साधारण गृहस्थी। शांता क्रूज़ में जमनालालजी की अपनी कॉलोनी जैसी थी। ये वहां रहते थे और दूध का प्रयोग नर्मदा, मदालसा और राधाकिसन को करवाया। मैंने भी इनकी देखरेख में एक वार दूध का प्रयोग किया था।

१३०. पं० गोविंदवल्लभ पंत

उत्तर-प्रदेश के वहुत वर्षों तक मुख्यमंत्री रहे। वर्किंग कमेटी के लिए अपने यहां हमेशा आते थे। नैनीताल में सात-तलाई और नवकुचिया ताल दिखाने जमनालालजी को और मुझे ले गये थे। चांदनी रात में नाव में हँसते-हँसाते खूब सैर हुई और सवको वड़ा आनंद आया।

एक दफा दिल्ली में मैं इनके दफ्तर में गई और कूपदान के लिए कहा तो इन्होंने अपने सेक्रेटरी को नोंध करने के लिए कह दिया। मैंने सोचा कि अव काम हो जायगा। पर मुझे क्या पता कि यह तो केवल टालने की वात हो सकती है !

१३१. गणेशशंकरजी विद्यार्थी

हिंदू-मुसलमानों के भड़कते हुए दंगे को शांत करने में देश के लिए बलिदान हो गये। जमनालालजी को इतना धक्का लगा कि अल्मोड़ा से आते समय कानपुर इनके घर गये। मैं कानपुर में गंगा नहाने गई तो वह गई। मेरे साथ मेरी ननद की बेटी नर्मदा भी वह गई। पुरुषों के घाट से दादा धर्माधिकारी आये और हम दोनों को बचा लिया। उस समय मैं केशरबाई के हाथ की कती कोरी धोती पहने थी। वह फूलती रही और पानी के ऊपर-ही-ऊपर उठती रही। मुझे भी सहारा रहा और बाहरवाले देख सके। उसी ने हमें बचा लिया। घर आकर जमनालाल-जी को बताया तो जमनालालजी कहने लगे, "क्या बात है, गणेशशंकर विद्यार्थी की जगह कानपुर में जानकीदेवी स्मारक हो जाता।"

१३२. गुलजारीलालजी नंदा

अहमदाबाद के नामी मजदूर नेता। शंकरलाल बेंकर के साथ अकसर बापू के पास आते थे। बजाजवाड़ी में कुकर का बनाया हुआ खाना खाते थे। साधु-संतों के प्रति बड़ी श्रद्धा रखते हैं।

ये दिल्ली में केन्द्रीय सरकार में मंत्री रहे हैं। अब कुरुक्षेत्र के विकास में लगे हैं।

१३३. शांतिलाल त्रिवेदी

बापूजी के भक्त। वर्षों से अल्मोड़ा में सर्वोदय कुटीर में रहते हैं। स्वतंत्रता-संग्राम के सेनानी हैं। इनकी पत्नी का नाम भक्तिबहन है। दोनों पर बापूजी का स्नेह था। कमलनयन अल्मोड़ा में रहा तब इन दोनों का प्यार और सहारा उसको मिलता रहा।

१३४. हंसराजजी

जयपुर के थे। जमनालालजी के कहने से हंसराजजी ने जयपुर में गायों के दूध की डेरी वनवाई। शहर में गाय का दूध हो जाय, यही कोशिश करते थे।

हंसराजजी की पत्नी श्यामा जयपुर सत्याग्रह के समय जेल में जमनालालजी से मिलने जाया करती थी। वे इसे वेटी की तरह मानते थे।

१३५. गोपीकिसन

हमारे मुनीम राठीजी के पुत्र। इनकी मां छोटी उम्र में गुजर गई थीं। अंत-काल में जमनालालजी उनसे मिलने गये और कहा कि तुम अच्छी हो जाओगी, वरना चिंता न करना, ये बच्चे मेरे हैं।

१३६. भगवानदासजी बजाज

रामेश्वर बजाज के पिताजी। शांत स्वभाव से ज्यादातर घर पर ही बैठे रहते हैं। इनके घर के सभी लोग सीधे, भले हैं।

भगवानदासजी के बड़े भाई गौरीलालजी थे। दोनों अपनी दूकान पर मुनीम रहे हैं। ये राजस्थान के रामधनदासजी के परिवार के थे।

गौरीलालजी की पत्नी निःसंतान होने पर भी घर में बड़ी मां की तरह मानी जाती थीं। बहुत संतोषी थीं। इन्होंने घर में ब्राह्मण भोजन की रसोई बनाकर, सबको खिलाने के बाद चूल्हे के पास बैठे-ही-बैठे प्राण छोड़ दिये।

१३७. भाई ढवण

बंबई के समुद्र में स्टीमर में बिठाकर सासवने ले जाते थे। आम और कच्चे

नारियल खूब खिलाते थे। वहां उनका अच्छा आश्रम था। धारासणा में १०-१० की टुकड़ी जाती थी। उसमें ये भी गये थे। पुलिस के डंडे से इनके सिर पर चोट लगी। मैंने पानी से धो दिया। कहने लगे, "जानकीबहन, मेरी पत्नी को संभालना।" ये फिर अच्छे हो गये थे।

१३८. नीलकंठराव घटवाई

हिंगणघाट में कांग्रेस के निष्ठावान कार्यकर्ता। यहां हनुमान टेकड़ी पर परांजपे साधु थे। वे चालीस-चालीस दिन का अनुष्ठान करते थे। लोग इन्हें बहुत मानते थे। बाद में एक राजा की लड़की आई। उसने इनसे शादी कर ली। बच्चे हुए। उनमें से एक लड़की घटवाईजी को ब्याही गई।

१३९. श्रीअरविंद घोष

पांडेचेरी में इनका बड़ा भारी आश्रम है। इनके जन्म-दिन पर सैकड़ों लोग दर्शन करने जाते थे। एक बार हम भी गये थे। १४०० की लाइन थी। उसी में हम भी शामिल हो गये। किसी ने कहा कि उनकी आंख में आंख मिलाओ तो अपने में ज्योति आ जाती है। जमनालालजी तो लाइन में दर्शन करके आगे बढ़ गये, पर मैं वहीं एक ओर बैठ गई। उनकी दाढ़ी से भरी भव्य मूर्ति की तरफ देखते-देखते उनकी नजर से नजर मिल गई। मेरी आंख मिलते ही वे जरा झिझके। उनके पास 'मां' भी बैठी थीं।

१४०. श्रीमां

फ्रेंच महिला, पर श्री अरविंदजी की अनन्य भक्तिमान साधिका। आश्रम में मां का भी उतना ही प्रभाव था। वे ऊपर रहती थीं और लोग नीचे। रसोई में इतनी सफाई रखते थे कि जैसे मां ऊपर से देख रही हों। किसी के घर में कोई

बच्चा बीमार हो तो मां को खबर मिलते ही बच्चा ठीक हो जाता था। ऐसी लोगों की श्रद्धा थी।

१४१. बंसीधरजी धेलिया

बंसीधरजी बच्छराजजी दादाजी के मुनीम थे। चूंकि मैं उन दिनों घूंघट में रहती थी, इसलिए उन्हें दूर से ही देखा था।

१४२. घासीरामजी

अपने लक्ष्मीनारायण मंदिर के पुजारी। ये और लादूरामजी जुड़वां भाई। इनको देखकर लोग भ्रम में पड़ जाते कि घासीराम कौन है और लादूराम कौन? लादूरामजी राजस्थान के अपने सीकर जिले में कांग्रेस के निष्ठावान कार्यकर्ता रहे हैं।

१४३. दीपक चौधरी

सरलादेवी चौधरी के पुत्र और चि० राधा गांधी के पति। बैरिस्टर हैं और कांग्रेस में भी हैं। इनसे काफी गहरा पारिवारिक संबंध रहा है।

१४४. सरलादेवी चौधरी

दीपक चौधरी की मां। कुछ समय साबरमती आश्रम में थीं। वहां बापूजी के पास एक तरफ सरोजिनी नायडू बैठतीं और दूसरी तरफ सरलादेवी चौधरी बैठतीं। उस समय जब तीनों आपस में हँसते-हँसाते थे तो आश्रम की बहनें कहतीं, ये बापू की सखियां हैं।

एक बार सरलादेवी को आश्रम में टाइफाइड हो गया। बापू रोज सुबह घूमते हुए बीमारों को देखने उनके घरों में जाया करते, तब इनकी खबर पूछने भी जाते थे और किसी-न-किसी को उनकी सेवा में रख देते थे। ये रोज बापू से सेवक की शिकायत करती थीं।

एक दिन बापू ने मुझे इनकी सेवा में रख दिया। मैं डर-डरकर काम करती थी। मुझे कमोड उठाने के लिए कहतीं तो मैं धीरे से उठाती। बालों की चुटिया बनाने को कहा तो मैंने धीरे से चुटिया भी बना दी। टाइफाइड के जंतु मेरे मुंह में न चले जायं, इसलिए मैं मुंह में कपड़ा ढककर रहती थी। ये मुझे कोई नौकरानी समझकर ही काम कराती रहतीं। बाद में इन्हें मालूम हुआ कि मैं जमनालालजी की पत्नी हूं तो बिचारी क्या करतीं! बड़ा आश्चर्य हुआ और कमोड उठाने-रखने का काम कम कर दिया। इन्होंने मुझे अच्छे काम करने का सार्टिफिकेट भी दिया था, अंग्रेजी में। पर सार्टिफ़िकेट का क्या करना; सोचकर मैंने वह फाड़कर फेंक दिया। यह सुनकर उनके बेटे दीपक चौधरी की बहू राधा ने कहा कि मेरे सासजी के हाथ का लिखा मैं देखती!

१४५. राधा चौधरी

मगनलाल गांधी की बेटी। यह सरलादेवी चौधरी के बेटे दीपक से शादी करना चाहती थी। लेकिन दीपक की मां बंगाली लड़की लाना चाहती थीं। उनके मना करने पर बापू ने भी राधा को मना कर दिया। तब करीब १५ साल तक दोनों एक-दूसरे के लिए टिके रहे। राधा ने वर्षों तक नमक नहीं खाया। दीपक अपनी मां के वचन को टाल नहीं सकता था। आखिर जब सरलादेवी की सम्मति मिली, उसके बाद दीपक ने राधा से शादी की और खूब अच्छी गृहस्थी जमाई।

१४६. संतानम्‌जी

साबरमती आश्रम में रहते थे। सेवाग्राम में भी बापू के पास आते-जाते थे।

इनकी पत्नी मेरे पास आती रहती थीं।

दिल्ली में 'हिंदुस्तान टाइम्स' के संपादक रहे और बाद में ये केंद्रीय सरकार में मंत्री भी रहे।

साबरमती आश्रम में बापूजी ने श्रीमती संतानम को सरलादेवी की बीमारी में उनके पास बैठने को भेजा। ये उनके पास जातीं और पढ़ी-लिखी होने से अखबार पढ़ने लग जातीं। बाद में सरलादेवी ने बापूजी से कह दिया कि ये तो अखबार पढ़ती हैं, उसकी आवाज़ से मेरी नींद खुल जाती है।

उस समय बापूजी के साथ मैं भी थी। मैंने बापूजी से पूछा, "मैं इनकी सेवा में रहूं क्या?" बापू को तो किसी-न-किसी को सेवा में भेजना ही था। उन्होंने मुझे सम्मति दे दी और मैं जाने लग गई। मैं बड़ी सावधानी रखती क्योंकि मैं जानती थी कि इनकी अखबार की आवाज़ से ही नींद खुल जाती है। धीरे-धीरे संभालकर सब काम करती।

१४७. सत्यनारायणजी

हिन्दी के अनन्य सेवक। जब हम लोग मद्रास गये थे तो गिरि बालाजी के दर्शन कराने के लिए अपने साथ ले गये थे। उनकी हिंदी को सुनकर मुझे कविता लिखने की इच्छा होती थी और कुछ कविताएं मैंने लिखीं भी।

१४८. मार्जरी साइक्स

ये अंग्रेज महिला बापूजी के प्रति आकर्षित होकर भारत आई। बुनियादी तालीम में बराबर योगदान देती रहीं। भारतीय पोशाक और भारतीय आचार-विचार को अपनाकर बापूजी की रचनात्मक प्रवृत्तियों में निष्ठा के साथ लगी हुई हैं।

१४९. शारदा

चिमनलालभाई की बेटी। यह एक ही लड़की हुई और फिर वे संयमी बन गये, पर व्यवहार के अनुसार पत्नी से सलाह-मशविरा करना चाहिए था। शारदा हमेशा नाजुक रहती थी। जब शादी करने का तय हुआ तो जमनालालजी को चिंता हुई कि इतनी नाजुक लड़की के लिए लड़का कहां से लायें? तब सरस्वती-देवी गाड़ोदिया ने दिल्ली ले जाकर प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा शारदा का वजन बढ़ा दिया और जमनालालजी ने गुजरात के गोवर्धनदासजी चोखावाला से शारदा की शादी करा दी। अब इसके एक बेटा और एक बेटी है।

१५०. गोपबन्धु चौधरी

बापू के पुराने भक्तों में थे। जमनालालजी को भाई की तरह प्यार करते थे। ये जज थे। जमनालालजी के प्रोत्साहन से बापू के काम के लिए जजी छोड़ दी।

१५१. रमादेवी

गोपबन्धुबाबू की पत्नी। अत्यंत निष्ठावान और सेवाभावी। दिन-रात दीन-दुखियों की सेवा ही इनका जीवन बन गया है। एक बार 'सर्वोदय सम्मेलन' की अध्यक्षा बनी थीं। तब बहुत अच्छा लगा था।

विनोबाजी अकसर कहा करते हैं कि मुझपर भारतवर्ष के चार परिवारों का बड़ा प्रभाव रहा है। एक, गांधी-परिवार, दो, दास्तानेजी का परिवार, तीन, जमनालालजी का परिवार और चार, गोपबन्धुबाबू या रमादेवी का परिवार। इसलिए हमारा आपस में भी खूब प्यार है।

१५२. मनमोहन

गोपबन्धु चौधरी के पुत्र। विनोबाजी के भक्त। सर्वोदय का काम करते हैं। उस नाते वर्धा आते-जाते रहते हैं। एक बार 'सर्व सेवा संघ' के अध्यक्ष भी हुए थे।

१५३. बृजकृष्णजी चांदीवाला

बापू के पास आते-जाते थे। उनकी सेवा में भी रहे। बापू के बाद उनकी भस्मी लेकर चारों धाम गये। मुझे भी साथ ले गये। मैंने पूछा, "भीड़ होगी ?" कहने लगे, "आप तो गांधी-परिवार की हैं, इसलिए आपको तो ले ही जाना है।" आचार-विचार में और खान-पान में बड़े सात्विक और दृढ़ हैं। इसी से मुझे उनके साथ यात्रा में जाने का आकर्षण हुआ। यात्रा बहुत अच्छी हुई।

वापूजी की स्मृति में दिल्ली में जितने कार्यक्रम होते थे, उन सबमें ये प्रायः शामिल होते थे।

१५४. मधुकरराव चौधरी

वर्धा के कॉमर्स कॉलिज में ही शिक्षण पाया। वैसे तो घर के बच्चों की तरह हैं, अब मंत्री हो गये हैं। एक बार मैंने उनसे कहा कि स्कूल-कॉलिजों में शाकाहारी लड़कियों को अंडे पकाना क्यों सिखाते हैं ? कहने लगे, "यह अनिवार्य नहीं है।" फिर मैंने कहा कि बच्चियां शुरू में परीक्षा के लिए सीखती होंगी, लेकिन बाद में उन्हें चखते-चखाते खाने की आदत पड़ जाती है, तो शिक्षण में पाकशास्त्र रखना ही क्यों ? और रखना ही हो तो शुद्ध आहार की चीजें सिखाना चाहिए, बाकी सीखें अपने घरों में।

१५५. सोनीराम जोशी

अपने छोटू रसोइया का भतीजा था। उसके मां-बाप की मृत्यु हो गई थी।

जमनालालजी उसे अपने पास ही रखते थे। वड़ौदा में माणिकराव के पास हड्डी के इलाज का काम सिखाया। वड़ा होशियार था। वाद में मदालसा के पैर का इलाज भी इसने किया था।

१५६. वसंतरावजी नाईक

काफी वर्ष महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री थे। इनके हाथ में सिगरेट की डंडी हर समय रहती थी। मैंने इनकी पत्नी से कहा कि आप सिगरेट की ऐसी आदत कैसे सहन करती हैं? उन्होंने वताया कि डाक्टर भी मना करते हैं। कुछ कम भी करते हैं, पर आदत छूटती नहीं। मुझे ताज्जुव हुआ कि ये वापू के पास आते-जाते हैं, फिर ऐसी आदत कैसे लगी? पर कहावत है कि 'आदत वड़ी वलाय है।

१५७. मोहनलाल सोनी

इन्होंने उदयपुर में आयुर्वेद सेवाश्रम का काम जमाया था। सिगरेट पीते थे। यह उनकी स्त्री को अखरता था। वह इससे वार-वार छोड़ने को कहती रहतीं। एक दिन स्वयं इनको ही गुस्सा आ गया और पूरी सिगरेट की डब्बी चूल्हे में फेंक दी। इसी तरह एक वार मेरे आग्रह पर इन्होंने खादी पहनना भी शुरू किया था।

१५८. विरधीचन्द चौधरी

हैदराबाद के व्यापारी हैं। इनसे हमारा पारिवारिक संवंध है। 'विश्वनीडम्' का काम भी देखते हैं। विनोबाजी की प्रेरणा से कमलनयन ने वंगलौर के पास 'विश्वनीडम्' संस्था को जमाया था। वहां गायों की नसल सुधारने का काम जोरों से चला। ये प्राकृतिक चिकित्सा के प्रेमी और विनोबाजी के भक्त हैं। गाय के दूध का प्रचार करते हैं।

१५९. डा० चेरियन

महाराष्ट्र के गवर्नर रहे। बंबई में कमलनयन, रामकृष्ण के घर आये थे। सभी कुर्सी पर खाने पर बैठे। इन्होंने कुछ अंग्रेजी भाषा मिलाकर कहा—आप मेरी बहन हो। जाते समय मुझे अपने घर खाने पर बुलाया। वहां उन्होंने अलग से ब्राह्मण बुलाकर इडली-डोसा बनवाया था। पर मैंने खाने में संकोच ही किया।

१६०. श्रीमती चेरियन

मद्रास की मेयर रहीं। बंगाल के शरणार्थियों के लिए बंबई से खूब कपड़ों के ढेर एकत्र किये थे। मुझे भी सब दिखाया। अब मद्रास में समाज-सेवा का अच्छा काम करती हैं।

१६१. कमलादेवीजी चट्टोपाध्याय

सरोजिनी नायडू के साथ बापू के पास अकसर आती थीं। बजाजवाड़ी में ही खाना-पीना होता था। ये बड़ी कलाप्रेमी और लेखिका हैं। केरल की हैं। समाज-सेवा के क्षेत्र में बड़ा काम किया।

१६२. बालारामजी चूड़ीवाले

फूलचंदजी के बेटे। सद्दीबाई के भतीजे। हमेशा लाल पगड़ी पहनते थे। वर्धा के पंचायती गोशाले में नियम से जाते थे। इनके साथ जमनालालजी का गोशाला में जाते-जाते गायों से प्रेम हो जाना स्वाभाविक था। इनके कोई संतान न होने से इनकी स्त्री निराधार-सी ही रही।

मेरी दादीसास सद्दीबाई तो मेरी शादी के दो साल पहले ही गुजर गई थीं।

मेरी गोद लेनेवाली सास वसंतीबाई मेरी शादी के दस महीने बाद गुजर गईं। मैं तो दस बरस की बच्ची ही थी। घूंघट में ऊपर रहती और बच्छराज दादाजी नीचे के घर में रहते थे। बोला-चाली, मिलने-जुलने की बात ही नहीं थी। नौकर-नौकरानी के द्वारा ही सारा कारभार चलता। न तो मैं दादाजी के सामने जाती, न वे सामने आते। मेरे ब्याह के समय कुआं था। मंदिर तो बाद में सद्दीबाई की याद में हीरालालजी ओसवाल की देखरेख में जमनालालजी ने बनवाया। उसके कोई पांच महीने बाद बच्छराजजी दादाजी का भी देहान्त हो गया।

दादाजी के दमा था। उन्हें वसंत मालती वगैरे दवाइयां भातीं। आनी रामजी रसोइया फतेपुर का बांट-बांट कर देते रहते थे। उनको अन्त में जोर की हुचकी आई तब माधोजी उनके नजदीक थे। जमनालालजी तो मंदिर में अनाज बंटवा रहे थे, वहां से बुलवाया। उनके आते-आते बच्छराजजी चल बसे। अपने बगीचे में जहां दादीजी का दाग लगा था वहीं इनका भी दाह हुआ। वहां छत्री बनी है, अब बाल-मंदिर चल रहा है।

मंदिर की प्रतिष्ठा के दस महीने पहले ही जयपुर से मूर्तियां आई थीं। नीचे दादाजी सोते थे, वहीं उनके सामने रखी रहती थीं। पोशाक बनाने के लिए बंबई के कारीगर आये। चार भुजा की पोशाक सलमा-सितारा ढाई रुपये तोले का सोना चढ़ा हुआ आया था। बाद में ये सारे सुन्दर सजीले वस्त्र विदेशी वस्त्र की बड़ी भारी होली में 'ॐ नमः स्वाहा इद न मम' ही हो गये थे।

गांधी चौक के दो चबूतरे। उनमें मंदिर की तरफ मंदिर की पोशाक और खादी भंडार की ओर घर के वस्त्रों की होली हुई। इसके पहले बैलों के गाड़े पर खूब ऊपर तक रथ की तरह सब कपड़े सजाकर गांव में से घुमाकर लाया गया था। उस पर रास्ते में लोगों ने अपने घर के विदेशी वस्त्र भी फेंके, पर भारी-भारी वस्त्रों को देखकर उनका जी भी बड़ा दुःख पाता था।

१६३. रामनारायणजी चौधरी

राजस्थान के पुराने कार्यकर्ता। कई वर्ष सेवाग्राम में बापू के पास रहे थे। 'गोसेवा संघ' का बापू ने मुझे अध्यक्ष और इन्हें उपाध्यक्ष बनाया था। मैं इनको

भाई की तरह मानती रही हूं।

अंजना देवी रामनारायणजी चौधरी की पत्नी। जमनालालजी और राम-नारायणजी बड़े सुंदर थे। मैं और उनकी पत्नी एक सरीखे चेचक के दाग वाली थीं। हम दोनों को शरम आती थी, पर करें क्या ?

१६४. अन्नपूर्णा

एक अन्नपूर्णा है रमादेवी चौधरी और गोपबन्धुबाबू की बेटी। जीवन भर उड़ीसा की गरीब जनता की सेवा में ही लगी रही है। संस्कृत अच्छी जानती है। मां के साथ करीब हर साल वर्धा विनोबाजी के पास आती है तो उनको देखकर श्रद्धा बढ़ती है।

दूसरी अन्नपूर्णा है गुजराती कुमारी कन्या। अब तो वह बेडछी के पास मढ़ी नाम के गांव में देहाती बालिकाओं का कन्या आश्रम बहुत अच्छा चला रही है और सैकड़ों कन्याओं की वह आज प्यारी माता बन बैठी है।

१६५. मदनमोहन चतुर्वेदी

कई साल जमनालालजी के सेक्रेटरी रहे। इनका मुंह बांका था। इसलिए लोग उन्हें 'बांकेबिहारी' कहते थे। जमनालालजी ने बड़ी उम्र में इनका विवाह करा दिया था। इनकी स्त्री सुंदर है।

१६६. गजानन्द चौबे

इनके तीन भाई थे। सभी को जमनालालजी ने सम्हाला। मारवाड़ी विद्यालय में नौकरी की जन्मभर। शारदाबाई बिड़ला को गाना सुनाकर खुश कर दिया। उन्होंने इनको अपने साथ चलने को कहा। तब ये कहने लगे कि मैं तो जन्मभर

जमनालालजी की ही सेवा करूंगा।

१६७. सुभद्राबाई चौबे

गजानन्द चौबे की पत्नी। ये शरीर से बड़ी लाचार रहीं। कई बार इनका पेट का ऑपरेशन हुआ। फिर भी बड़ी हिम्मत वाली हैं। कला-प्रेमी, मिलनसार और भजन-कीर्तनों में मगन रहनेवाली।

१६८. ईश्वरदीन

मारवाड़ी विद्यालय में शुरू से ही चपरासी था। जब श्रीमन्‌जी ने 'शिक्षा मंडल' का काम सम्हाला तब भी कॉलिज में बड़ी सावधानी से सेवा करता था। अब भी उसे पेंशन मिलती है।

१६९. रामप्यारी चौबे

इनको 'छोटी चौबन' कहते थे। सीताराम चौबे की मृत्यु हो जाने के कारण किसी के शादी-विवाह में जाकर काम करके अपना निर्वाह चलातीं। इनके पिताजी बड़े विद्वान थे।

१७०. चांदकरण शारदा

इनके बड़े भाई हरविलासजी का 'शारदा बिल' निकला था, जिसमें कानून था कि लड़की की शादी १४ वर्ष की उम्र के बाद करनी चाहिए। हमने कमला की शादी १३ वर्ष में नेवटिया परिवार में ठहराई थी। पर जमनालालजी ने कहा कि शारदा नियम को तो मानना ही पड़ेगा और विवाह की तिथि एक वर्ष और

सरका दी। कमला की दादीसास बोलीं, "य तो मांड थोड़ो ब्याव सरका दीयो है तो के मुसलमानी रिवाज सें ब्या करसी ?"

१७१. घासीराम (सीकर वाले)

विनोबाजी के साथ सीकर पदयात्रा में मैं भी गई थी। वहां ये मिले थे। बाद में वर्धा के अपने लक्ष्मी नारायण मंदिर में कई वर्षों तक ये पूजा करते रहे। इनके जुड़वां भाई लादूरामजी आज भी सीकर में कांग्रेस के निष्ठावान कार्यकर्ता हैं।

१७२. खुर्शेद बहन

दादाभाई नौरोजी की लड़की। यह कुंवारी होते हुए भी सरहद में काम करने जाती थीं। वहां इनको ऐसी जगह मिली, जहां ऊंटों को बांधते थे। उसी गंदी जगह में उनको कई रात रहना पड़ा। बड़ी कठिन हालत में इन्होंने समाज की सेवा की।

जमनालालजी को सदा भाई की तरह माना और उसी प्रकार सब बच्चों से स्नेह रखा। जमनालालजी की समाधि पर मोलसिरी का वृक्ष इन्हीं की श्रद्धा से लगाया गया है।

१७३. पेरिनबहन केप्टिन

गोशीबहन की छोटी बहन। बंबई में हिंदुस्तानी प्रचार का काम बड़ी लगन से करती थीं। बीच-बीच में हिंदुस्तानी प्रचार सभा की मीटिंगों के लिए वर्धा भी आती रहती थीं।

१७४. नरगिसबहन

दादाभाई नौरोजी की लड़की। विधवा थीं। हमेशा काली साड़ी पहनती थीं। पूना में रहती थीं।

१७५. माणकबाई डाक्टर

दादाभाई नौरोजी की लड़की। जब कमला हुई थी तब जमनालालजी ने बंबई से इनको तीन महीने के लिए वर्धा बुलाया था। ८०० रुपए महीना देना तय हुआ था और भोजन इत्यादि का प्रबंध अलग। बाद में इन्होंने दोनों लड़कों को भी वर्धा बुला लिया था। गांधी चौक के मकान में ही इन्होंने कमला के समय मेरी जचकी कराई। बड़ी चतुर बहन थीं।

१७६. दादाभाई नौरोजी

कांग्रेस के बहुत बड़े नेता। इनकी चार बेटियां थीं। बंबई में जमनालालजी इनसे मिलने गये तब मैं भी साथ थी। तभी इन्होंने अपनी लड़की डाक्टर माणकबाई से परिचय कराया था।

बंबई में जुहू के समुद्र-किनारे पर इनका बहुत बड़ा बंगला था। वहां हम मिलने गये थे। वृद्ध तपस्वी की तरह बैठे थे। किसी ने कहा था, ये हरी छाल के दो केले नाश्ते में लेते हैं। तबसे हरे केले में मेरी श्रद्धा हो गई।

१७७. अलाउद्दीन खोजा

वर्धा में होमियोपैथी दवा करते थे। उनकी औषधि रामबाण होती थी। लोगों की लेने में और उनको देने में श्रद्धा थी। उनकी पेटी में कोई कितना भी

डाल दे, उन्हें संतोष था। रोज गरीबों को पैसा बांटते थे। जमनालालजी की मृत्यु के समय आये थे। उन्होंने होमियोपैथी की गोलियां भी दीं, लेकिन गले से उतरतीं तो कुछ काम होता।

१७८. कुरेशीभाई

इमामसाहब के दामाद। ये बापूजी के पास साबरमती आश्रम में रहे। अभी भी वहीं रहते हैं। बापू इन्हें अपने कुटुंब की तरह मानते थे। इनका स्वभाव बहुत मिलनसार है। जब श्रीमन्जी गुजरात में थे तब ये अकसर राजभवन के जलसों में शरीक होते थे।

१७९. डा० खानसाहब

बादशाह अब्दुल गफ्फार खान साहब के भाई। बादशाह खान से १४ वर्ष बड़े थे, पर उनसे छोटे दीखते थे। इनकी दो पत्नियां थीं। ये बहुत हँसते थे। अपने घर के बरामदे में ही वे गोली से मारे गये और सुनते हैं कि गोली लगने के बाद भी काफी चलते रहे।

इनके बेटे सादुल्ला खान से सोफियासोमजी का विवाह काकाजी ने कराया था। हमारे बच्चे इनको बड़े स्नेह से 'जीजाजी' ही कहते थे।

१८०. बादशाह अब्दुल गफ्फार खान

जिन्हें 'सरहदी गांधी' कहते हैं और ये 'खुदाई खिदमतगार' भी कहलाते हैं। बापू के पास ये अक्सर वर्धा आते थे। बजाजवाड़ी में काफी दिनों तक रहे हैं। साथ में एक बार उनके बच्चे भी रहे हैं। हमारा एक कुटुंब ही हो गया था। इनका लड़का लाली और लड़की महरा हमारे बच्चों के साथ ही खाते-पीते और खेलते थे।

गांधी-शताब्दी के समय जब ये वर्धा आये तो बजाजवाड़ी में ही ठहरे। इनसे मिलने के लिए ही पूज्य विनोबाजी बिहार से ट्रेन में वर्धा आये थे। गेस्ट हाउस के राजेन्द्रबाबूजी के कमरे में खानसाहब और विनोबाजी का राम-भरत भेंट के समान मिलन हुआ। तब जमनालालजी की याद से दिल भर आये।

१८१. लालीखान

बादशाह खान का लड़का। यह जमनालालजी के साथ बंबई जाता तो लोग इन्हें जमनालालजी का लड़का ही समझते। जमनालालजी भी इसे अपने पुत्रों की तरह मानते थे।

१८२. ख्यालीरामजी

ये इन्दौर के बड़े वैद्य माने जाते थे। विनोबाजी जब इन्दौर गये तब इन्होंने अपना दवाखाना दिखाया था। मैं भी साथ थी। इनकी सफेद मूंछें थीं। इनकी लड़की की शादी नागपुर में शुक्लजी के लड़के से हुई। शुक्लजी की मूंछें भी सफेद थीं। समधी-समधी दोनों की जोड़ी बढ़िया थी।

१८३. शांति बहन खन्ना

इनके पति, खन्नाजी, रामेश्वरजी नेवटिया के पास काम करते थे। शांतिजी की उम्र छोटी थी और खन्नाजी काफी बड़ी उम्र के थे। इनका एक लड़का बिल्लू था। पढ़ा-लिखा कर विलायत भेज दिया और पांच साल बाद लड़का वापस आया। ये अपने लड़के की शादी अपने देश में ही अच्छी जगह करना चाहते थे। पर बाद में पता चला कि लड़के ने विलायत में ही शादी कर ली।

१८४. बालासाहब खेर

वंबई के नामी लीडरों में थे। इन्होंने पहले आदिवासी क्षेत्रों में काम किया। मुझे भी दिखाने ले जाना चाहते थे। वाद में तो ये बहुत बड़े हो गये—बंबई के मुख्य मंत्री। फिर 'गांधी स्मारक निधि' के अध्यक्ष भी रहे।

१८५. मंगलाबाई खेतान

कानपुर के कैलाशपतजी सिंहानिया की बेटी। तेजनारायणजी खेतान को ब्याही है। वंबई में महिला-समाज में अच्छा काम करती है।

१८६. कालीप्रसादजी खेतान

ये मारवाड़ी समाज में पहले वैरिस्टर होकर आये थे। इनका जाति से वहिष्कार कर दिया था। जमनालालजी ने वंबई में मीटिंग बुलाकर इनका स्वागत किया और वर्धा ले आये। जमनालालजी का जाति-बहिष्कार करने की बात चली। जमनालालजी ने कहा कि समाज के सामने आपको मेरा जाति-बहिष्कार करने में शर्म आती है तो जो कोई कार्य हो, मुझे निमंत्रण भेजते रहना। मैं शामिल नहीं होऊंगा। फिर कलकत्ता में जमनालालजी के साथ मैं भी इनके घर गई थी।

१८७. भगवतीप्रसादजी खेतान

कालीप्रसाद खेतान के भाई। मैं कलकत्ते में इनके घर गई थी। लक्ष्मीनिवास नेवटिया को इनकी बेटी ब्याही है। पुलगांव में 'ललिता' नाम की संस्था में काम करती हैं।

१८८. जानकीबाई खेतान

कालीप्रसादजी खेतान की बहन। मुझे दस बहनों के साथ बापूजी ने कलकत्ता पर्दा-निवारण कार्य के लिए भेजा था। मैं अध्यक्ष थी। जानकीबाई खेतान उपाध्यक्ष। यह बहुत रुआवदार और सुंदर थीं। कलकत्ता में महिलाएं हमारा स्वागत करतीं और फूल-मालाएं पहनातीं। पर अध्यक्ष की लाज उपाध्यक्ष रख देतीं।

१८९. देवीप्रसादजी खेतान

कालीप्रसादजी खेतान के बड़े भाई। ये बंबई में रहते थे। अपने यहां आना-जाना तो था ही। इनकी बेटी त्रिवेणीबाई का विवाह गौरीशंकरजी नेवटिया के साथ हुआ। ये बड़े कुशल व्यापारी हैं।

१९०. डेडराजजी खेतान

जमनालालजी की छोटी बहन गुलाबबाई के पति। लोसल के रहनेवाले थे। जैसा जमनालालजी ने वर्धा को बनाया, वैसा ही डेडराजजी ने लोसल को बनाने की कोशिश की। सभी नेताओं को वहां ले जाते थे। श्रीमन्‌जी का वहां बहुत स्वागत हुआ। डेडराजजी रंग के सांवले थे। एक बार रामकृष्ण कासी का बांस से लोसल गया और वहां से आकर कहने लगा कि काकाजी ने अपने संबंध तो चुन-चुनकर किये हैं। जब इनकी मृत्यु हुई तब लोसल में सारे हिंदू-मुसलमानों ने बाल दिये थे।

१९१. गुलाबबाई खेतान

जमनालालजी की छोटी बहन और डेडराजजी की पत्नी। इनके कोई संतान

न थी। लेकिन दूसरे के बच्चों को बहुत प्रेम से पाला करती थीं। जयपुर-सत्याग्रह के समय जमनालालजी जेल में थे। मेरे कमर का बिजली का इलाज बंबई में हो रहा था। गुलाबबाई इन दिनों मेरे पास थीं। जयपुर जेल से जमनालालजी की सूचना आई कि जानकीदेवी को जयपुर भेजो। मुझे जोश तो आया, पर कमलनयन ने कहा, "कमर तो टूटी जा रही है। वहां जाकर मरेगी क्या ?"

फिर वह मुझे लेकर सेवाग्राम बापू के पास गया और उन्हें बताया। बापू ने जयपुर के लिए आठ रुपये खर्च करके तार भेजा कि जानकीबाई नहीं आ सकती है।

१९२. मुखालालजी खेतान

डेडराजजी खेतान के बड़े भाई। साधारण व्यापारी थे। ये कमाते थे और डेडराजजी खर्च करते थे।

१९३. हरगोविन्द खेतान

खेतान-कुटुम्ब के हैं। गुलाबबाई ने ही इनको पाला और फिर गोद ले लिया। अच्छे विचारवाले होशियार हैं। अपने व्यापार में ही पटना में काम करते हैं।

१९४. छगनलालजी भारुका

ये निःसंतान थे। नागपुर-कांग्रेस में इन्होंने बहुत काम किया। घर में इनकी स्त्री ने भी बहुत सेवा की।

१९५. छोटू रसोइया

सौ-सौ आदमियों का खाना अकेला बनाता था। दो तवों पर रोटी पकाकर

सबको एक साथ खिलाता था। रोटी अच्छी चुपड़ी, दाल-भात अच्छी तरह देता था; पर सब्जी चटनी की तरह देता था। कहता, "घी खाओ, खीर खाओ, दही-बड़ा खाओ; पर साग क्या खाना !" लोग कहते, "इसकी बनाई हुई कढ़ी का स्वाद कहीं और जगह नहीं मिलता है।"

१९६. लक्ष्मण रसोइया

बहुत होशियार था। नागपुर-झण्डा-सत्याग्रह में जमनालालजी पकड़े गये थे। उनकी जगह सरदार पटेल ने काम संभाला। रोज दस सत्याग्रही भेजे जाते थे। सरदार के साथ खाना बनाने के लिए लक्ष्मण को नागपुर भेजा था। उसने सरदार से पूछा, "रसोई कच्ची बनाऊं या पक्की ?" सरदार ने कहा, "कच्ची क्यों, पक्की बनाओ।" लक्ष्मण ने पक्की रसोई के हिसाब से पूरी, साग, बूंदी, मिठाई इत्यादि बनाईं। जब सरदार खाने बैठे तो उन्होंने दाल, चावल मांगा। लक्ष्मण ने कहा, "साहब, आपने तो पक्की रसोई बनाने को कहा था।" तब सरदार को पता चला कि मारवाड़ में कच्ची रसोई में ही दाल-चावल पकता है। दूसरे दिन जब लक्ष्मण फिर पूछने गया तो सरदार ने कहा, "कच्ची, पक्की दोनों बना लो।"

१९७. जगदेव

रसोइया था। बजाजवाड़ी के 'अतिथि-गृह' में वर्षों खाना बनाया। सफाई का दुश्मन था, पर सेवाभावी था। स्वतंत्रता-संग्राम में जेल भी गया था। जमनालालजी ने इसकी ४० वर्ष की उम्र में शादी करवाई थी।

१९८. जनार्दनजी

जावरे के पंडित थे। मेरी सगाई में जन्मपत्री इन्होंने मिलाई थी। इन्होंने

कहा था कि जमनालालजी को ५२ वर्ष की उम्र में संकट आयेगा। यदि वह टल जाय तो ६० वर्ष की छूट हो जायगी। जमनालालजी की मृत्यु ५२ वर्ष की उम्र में ही हुई।

१९९. गिरधारीलालजी जाजोदिया

मेरे पिताजी। हम उन्हें 'काकाजी' कहते थे। बड़े कुटुंबपाल थे। घर में पूजा-पाठ करवाते थे। रामानुजकोट (मंदिर) रोज जाते थे। रास्ते में लोगों की कुशल पूछते जाते और मदद करते थे। अफीम का व्यापार चलता था। हर बात में 'नारायण' का उच्चारण करते थे।

२००. मैनाबाई

मेरी मां। वड़ी सेवाभावी थीं। जाड़ों में मैथी के लड्डू बना-बनाकर बुड्ढों को, हिंदू-मुसलमान सभी को, बांटती रहतीं। रुई के अंगरखे और कान-टोपा बनाकर ठंडी में लोगों को पहना देतीं। रामानुजाचार्य संप्रदाय के आचार्यों का खूब सम्मान करती थीं।

मेरी मां को साफ-सफाई का बहुत ध्यान था। नहाने के पहले घर के पेशाव-घर, पनाले आदि खुद साफ करतीं। नौकरों का काम बंटाती रहतीं। इसलिए परिवार के लोग कहते थे कि दादी के पास रहा हुआ नौकर हमारे काम का नहीं रहता, आलसी हो जाता है।

२०१. शांतिबाई जालान

कमलनयन के छोटे पुत्र शिशिर की सास। बड़ी सरल और संस्कारी। संयुक्त कुटुंब में बड़े मान-सम्मान से रह रही हैं।

२०२. नंदकिशोर जालान

चि० शिशिर के ससुर। बंबई में बीमार थे। कमलनयन बंबई से आबू आनेवाला था। तब शांतिबाई ने कहा कि आप यहां रुक जायें तो अच्छा है। नंदकिशोरजी ने सोचा कि मेरे लिए उनको रोकना ठीक नहीं। कमलनयन को जाने के लिए कहा। कमल तो आबू आ गया, पर पीछे से जालानजी की मृत्यु हो गई। जैसे अपने पिताजी की मृत्यु के समय कमल नहीं रह पाया, उसी प्रकार जालानजी की मृत्यु के समय वह एक दिन के लिए आबू आ गया। इसका उसके मन में सदा अफसोस रहा।

२०३. चिरंजीलालजी जाजोदिया

मेरे बड़े भाई। जमनालालजी कहते थे कि ये बड़े होशियार हैं। बड़े-बड़े काम के साथ छोटे-छोटे काम भी याद रखते थे। जमनालालजी जब जेल गये तो बंबई दूकान पर इन्हें रख गये थे।

रामकिसनजी डालमिया, हनुमानप्रसादजी पोद्दार और मेरे भाई चिरंजीलालजी तीनों ने मिलकर बंबई में दूकान लगाई। जमनालालजी ने लगवा दी थी। इनमें रामकिसनजी, चिरंजीलालजी सौदे के बड़े शौकीन थे। कभी सध जाता तो कभी खो बैठते। उसमें मेरे भाई को दिवाला खोल देना पड़ा और बंबई छोड़नी पड़ी। ये सदा पगड़ी पहनते हैं और श्रीवैष्णवों की तरह खड़ा तिलक लगाते हैं।

२०४. सुव्रताबाई जाजोदिया

मेरे बड़े भाई चिरंजीलालजी की पत्नी। उनकी मैं एक ही ननद थी। वे मुझे बहुत प्यार करती थीं। बड़ी धर्म-भावना वाली थीं। सब कामों में चतुर थीं। बड़ी ही सेवापरायण थीं। किसी की भी सेवा घरवालों के जैसे ही पर बड़ी शुद्धता और सफाई से करतीं। आप भी नहा-धोकर फिर पानी पीतीं। परिवार की

खींचातानी से बुढ़ापे में अपंग हो गई थीं और दिमाग से भी कमज़ोर। जमनालाल-जी का स्वर्गवास हुआ तो वे कहतीं, "मेरी ननद विधवा हो गई तो मैं भी विधवा जैसी ही हो गई हूं।" इतनी वे दुःखी हो गईं। तबसे खादी पहनने लगीं और श्रृंगार त्याग दिया।

२०५. कृष्णा बजाज

मेरे बड़े भाई की बेटी। वेदांत-शास्त्रों में पंडितों से शास्त्रार्थ करती थी। भक्तों में मीरा जैसी थी। जमनालालजी ने उसकी शादी हरिकिसन बजाज से कर दी। कृष्णा ने कहा भी था कि इसके साथ मेरी कैसे निभेगी ? पर जमनालालजी ने सोचा, यहां करने से लड़की अपने ही घर रह जायगी। यहां आकर भी वह भगवद्-भजन में ही लगी रही। आखिरी दिनों में हरकिसनजी कृष्णा को लेकर चित्रकूट गये थे, वहीं कृष्णा का स्वर्गवास हो गया। वह हरकिसन को छोड़कर हरिमय हो गई।

२०६. रमा जैन

रामकृष्णजी डालमिया की लड़की। मदालसा, रमा और ओम महिलाश्रम में पढ़ती थीं। बचपन में रेवाड़ी के भगवद्भक्ति आश्रम में भी रही थी। रमा साहित्य की बड़ी सेवा करती रही। उसके स्वर्गवास से हम सभी को बहुत रंज हुआ।

२०७. शांतिप्रसाद जैन

रमा के पति। व्यावहारिक एवं चतुर व्यापारी। पति-पत्नी दोनों साहित्य-प्रेमी और समाजसेवी रहे।

२०८. श्रेयांसप्रसाद जैन

बंबई के सुयोग्य व्यापारी। कमलनयन का तो रोज का ही साथ में मिलना-रहना था। दोनों घनिष्ठ प्रेमी थे। बड़े मिलनसार सैद्धांतिक सज्जन हैं।

२०९. डा० जस्सावाला

डा० दीनशा मेहता के बहनोई। बंबई में प्राकृतिक चिकित्सा करते हैं। अपने यहां परिवार में इनका उपचार चलता है। डाक्टरों की दवाइयों से तो हम लोग बचना ही चाहते हैं।

२१०. श्रीकृष्णदासजी जाजू

आर्वी के माहेश्वरी वकील थे। इतने गंभीर रहते कि हँसना तो जानते ही नहीं थे। गांधीजी ने कहा था कि हँसने से आदमी का दिल खिलता है। उनके पास आने-जाने से जाजूजी भी कुछ हँसना सीख गये। गांधीजी के संपर्क में आने से घर का हिस्सा और वकालत छोड़ दी और समाज-सेवा करने लग गये। पहले-पहल जमनालालजी को १९०६ की कलकत्ता कांग्रेस में जाजूजी ही ले गये थे। बच्छराजजी से कलकत्ते घूम-फिरकर आने की इजाजत ली थी। तबतक गांधीजी तो मिले ही नहीं थे। लेकिन वहीं से राष्ट्रीय संस्कार लेकर आये। उसी से आज वर्धा राष्ट्रीय प्रवृत्तियों का केंद्र बना है।

२११. कस्तूरीदेवी

श्रीकृष्णदासजी जाजू की पत्नी। जाजूजी कहते थे, "मेरी पत्नी सीधी है, इसलिए मेरी त्याग-लीला चल रही है।" जाजूजी जितना देते थे उतने में ही

सारा घर चलाती थीं, बाद में कर्जा हो गया तब जाजूजी ने अपनी पत्नी के सारे सोने के आभूषण बेच डाले। कस्तूरीदेवी बहुत ही सरल व सीधी स्त्री थी। उन्होंने कहा, "इन्होंने बनाकर दिया तो ये ही ले जाओ।" उस समय १६०० रुपये का सोना बेचा गया होगा। उस समय मुश्किल से २४ रुपये का भाव होगा।

२१२. नारायण जाजू

श्रीकृष्णदासजी जाजू का बेटा। खादी ग्रामद्योग महाविद्यालय में काम करता था। सिद्धांत का पक्का है। अभी अपने कॉमर्स कॉलिज में काम करता है। कृपि-गोसेवा संघ का मंत्री भी बना है और श्रीमन्जी को मदद देता है।

२१३. जीवनलालभाई

साबरमती आश्रम से बापूजी 'हरिजन' निकालते थे। ये उसमें काम करते थे। दिल्ली में 'हरिजन सेवक संघ' के मंत्री भी रहे हैं। बापू के पास बड़ी श्रद्धा से काम करते थे। अभी तक वही भाव निभाते चल रहे हैं।

२१४. घीसूलालजी जाजोदिया

कनीरामजी जाजोदिया के बेटे। मेरे भतीजे। अजमेर में रहते थे। इन्होंने कांग्रेस में जोरदार काम किया, जिससे सारा अजमेर हिल गया था।

कनीरामजी जाजोदिया का पत्र मेरे पिताजी के पास आया था। मेरे काकाजी ने मेरी मां को पढ़कर सुनाया। मुझे अचरज हुआ कि यह कागज बोलता कैसे है। दूसरे ही दिन में पट्टीपेन लेकर जोशीजी के पास गई कि मुझे भी कागज से बात करना सिखा दो। बिचारे समझ गये कि इनको अक्षर-ज्ञान सिखाना ही होगा और पट्टी पर पांच अक्षर लिख दिये—'क, ख, ग, घ, ङ'। मैं योंही काकाजी का 'क', काकाजी का 'क' करते-करते बाजार में से आई तो काकाजी दूकान के चोंतरे

पर खड़े थे। मेरी पट्टी देखकर बोले, "ओ जानू बेटा, कठ गया हो ?" और घर में आकर मेरी मां से कहा, "भैया की मां, जानू के लिए तो जोशी रखना पड़ेगा। और बुला ही दिया। बाराखड़ी सीखते ही तो दादा, नाना, बाबा, काका सब आ गया। मैं खुश हो उठी।

२१५. कुम्भारामजी आर्य

ये जब राजस्थान के मंत्री थे तब मैं इनके घर गई थी। इसके साथ चक्की में बाजरे का आटा पीसा और बाद में इनकी पत्नी ने उस आटे की रोटी बनाकर मक्खन लगा-लगाकर खिलाईं।

२१६. डा० जाकिर हुसैन

जब मैं श्रीमन्‌जी के यहां अहमदाबाद के राजभवन में थी, उन दिनों ये भी वहां आये थे। मैंने इनसे कहा, "दिल्ली में जामिया मिलिया आप जमनालालजी को दिखाने ले गये थे तब मैं भी साथ थी। बाद में आपने मोटर में बिदा किया और आप बड़े अदब के साथ झुकते हुए कदमों से पीछे हटे, पर पीठ नहीं दिखाई। आजकल के विद्यार्थी तो सामने ही सिगरेट का धुंआ छोड़ते हैं।" उन्होंने इतना ही उत्तर दिया, "जमाना बदल रहा है।"

२१७. डा० जाकिर हुसैन की पत्नी

डा० जाकिरहुसैनकी मृत्यु के बाद मैं श्रीमन्‌जी के साथ इनसे मिलने जामिया मिलिया गई। बता रही थीं, "हमारे दो-चार बच्चे हुए, वे मर गये। तब डाक्टर साहब मुझे कहते कि तू मेरे सामने मत चली जाना। अब वे खुद ही मुझसे पहले चले गये।"

२१८. जठार सुपरिन्टेन्डेन्ट

ये नागपुर जेल के सुपरिंटेंडेंट थे। शुरू में मैं नागपुर जेल में रही। १०० बहनें मेरे साथ थीं। सब 'सी' क्लास में थीं। अकोला की ४० बहनें 'बी' क्लास में और माखनलाल चतुर्वेदी की बहन और मुझे 'ए' क्लास दिया था। मैंने सोचा; मैं ही अकेली 'ए' क्लास में क्यों रहूं ? मैं भी 'बी' क्लास में चली गई। वहां सुपरिंटेंडेंट जठार रोज आता था और बहनें शिकायत करतीं। वे कहतीं, "जानकीबाई कभी कोई शिकायत नहीं करती हैं।" जब ये जेल में गश्त लगाने आते तो गुस्से से इनकी जबान थरथर कांपती थी। बहुत तेज स्वभाव था।

२१९. जंगलू हमाल

अगस्त १९४२ में गांधी चौक में बड़ी सभा हुई थी। मंदिर में भूकंप से पत्थर गिरकर पड़े हुए थे। सभा में जनता ने पत्थर फेंकना शुरू कर दिया। एक कोई अफसर था, जिसे बचाने के लिए रामकृष्ण अपनी दुकान के अंदर ले गया। लेकिन उसने सोचा, मुझे मारने ले जा रहे हैं और उसने पुलिस को गोली चलाने का इशारा कर दिया। एक गोली जंगलू हमाल को लगी, वह तत्काल मर गया। बापू ने उसकी समाधि पर माला पहनाई थी। बाद में उस अफसर को असली स्थिति का पता लगा तो वह बहुत पछताया।

२२०. मिस्टर जिन्ना

इनका नाम काफी सुनते रहते थे। बापूजी से मिलने आते तब इनके साथ इनकी बहन भी आती थी। बाद में तो यह मुसलमानों के बड़े नेता बने और देश का बंटवारा भी करा डाला।

२२१. अनन्तराय जोशी

अहमदाबाद राजभवन में श्रीमन्‌जी के सेक्रेटरी थे। श्रीमन्‌जी जब बदरीनाथ गये थे तब इन्होंने मंदिर के सामने बैठकर विष्णु-सहस्रनाम का पाठ ११ बार किया। बहुत श्रद्धालु भक्त हैं। सप्ताह में कई दिन व्रत रखते हैं।

२२२. जैनेन्द्रकुमारजी

हिंदी के बड़े लेखक हैं। गांधीजी और सर्वोदय पर कई पुस्तकें लिखी हैं। दिल्ली में सभाओं के समय मिलते हैं। वर्धा भी आते-जाते रहते हैं। इनकी पत्नी भगवतीजी भी साथ आती हैं।

२२३. मदनलालजी जालान

बंबई के मारवाड़ी समाज में प्रमुख व्यापारी थे। इनका जमनालालजी से काफी मिलना-जुलना रहता था।

२२४. श्रीनिवासजी बगड़का

बंबई के मारवाड़ी समाज के व्यापारियों में इनका बड़ा मान था। समाज-सुधार के काम में मदद करते थे। मदनलालजी और इनकी जोड़ी थी, सदा साथ ही रहते थे।

२२५. बगड़ के महाराजा

बगड़ राजस्थान में एक जगह है। वहां के महाराजा से मिलने के लिए

जमनालालजी गये थे। लोगों ने कहा कि वहां पगड़ी पहनकर जाना होगा, तभी महाराजा मिल सकते हैं। पर जमनालालजी ने कहा, "मेरी जो पोशाक है, उसीमें जाना होगा तो जाऊंगा। पगड़ी पहले पहनता था, अब तो टोपी पहनता हूं।" राजा को जब यह पता लगा तो उन्होंने कहला भेजा कि जमनालालजी जैसे आना चाहें, आ सकते हैं।

२२६. सत्यप्रभा व्यास

अपने लक्ष्मीनारायण मंदिरमें वैद्य का काम करती थीं। वड़ी सेवाभावी और श्रद्धावान् थीं। जमनालालजी जयपुर राजा से मिलने गये, तब सत्यप्रभा ने शुभ-कामना के शब्द वोले थे। जमनालालजी खड़े होकर सुनते रहे। उसके बाद ही उन्होंने उसे वर्धा बुला लिया।

२२७. जंवाईराज बिजौलिया

वेलाबहन की बेटी लक्ष्मी इन्हें ब्याही है। इन्होंने बिजौलिया में खादी का वहुत काम किया। जमनालालजी बड़े खुश थे और हरदम इनकी पूछताछ करते रहते।

२२८. द्रौपदीबाई

श्री सत्यनारायण बजाज वर्धावालों की बहन। मैं बांकुड़ा में इनके यहां विनोबाजी को ले गई थी। मैंने इनसे कहा कि दान दो तो इन्होंने अपने सोने का 'टड्डा' इत्यादि जेवर दिया और मैं सभा में ही विनोबाजी को पहनाती गई।

२२९. जयनारायणजी व्यास

ये राजस्थान के नेता थे। मुख्य मंत्री भी रहे। जमनालालजी इन्हें भाई की तरह मानते थे। बड़े सरल स्वभाव के थे।

इनकी पत्नी बड़ी सीधी, भली महिला थीं। इनके बेटी, बेटा, जंवाई अच्छे-भले हैं।

२३०. दत्तूरामजी जाजोदिया

ये बच्छराजजी के पास वर्धा में खूब आते-जाते थे। मेरी सगाई इन्होंने ही करवाई थी। बच्छराजजी से बोले, "जावरा के गिरधारीलालजी जाजोदिया की बेटी है। घर धार्मिक और खानदानी है। पर लड़की के अभी माता निकली है और रंग सांवला है।" बच्छराजजी की पत्नी सद्दीबाई बोलीं, "सोवणी तो हम सभी हैं। अब चेचकवाली भले आवे, हमारा वंश तो चले।"

२३१. जयरामदासजी दौलतराम

ये कांग्रेस वर्किंग कमेटी में वर्धा आते थे। इनकी एक ही बेटी थी, प्रेमा। बड़े लाड़-प्यार में पली थी। उसके लिए लड़का ढूंढ़ने की समस्या थी। जमनालालजी पर ही सबकी आशा रहती थी। वे लड़के और लड़की दोनों के बाप के जैसे संबंध करवाते थे। पर प्रेमा की सगाई न हो सकी।

२३२. डा० जीवराज मेहता

अक्सर सेवाग्राम में बापू की तबीयत पूछने आते थे। बा उन्हें बापू के लिए बनाई गुड़पापड़ी वगैरह प्रसाद देती थीं। खाने की पंगत में सब बैठे रहते तब

जीवराजभाई कहते, "बापू, आप सादा खाना खाते हैं। सारा विटामिन तो आपके खाने में होता है। हमारे विटामिन तो कागजों में ही लिखे हैं और हमें वे इंजेक्शन से लेने पड़ते हैं।" बापू कहते, "तुम भी सादा खाना खाओ।"

२३३. आरती झुनझुनवाला

अपनी कमलाबाई की बेटी। हमेशा शांत रहती थी। बहुत बड़े खानदान में ब्याही गई। उसका मान खूब रखते थे। पर देवयोग से कपड़ों में आग लग जाने के कारण छोटी उम्र में चल बसी। डाक्टर लोग इसकी सहनशीलता और धीरज देखकर दंग रह गये। प्रत्येक आने-जानेवाले से उनकी कुशलता पूछती रही। लगता था कि जमनालालजी का ही अंश उसमें आया होगा।

२३४. झब्बूजी महाराज

भगवान् श्रीराम की ज्यादा भक्ति थी। संत तो थे ही। इनका अच्छा प्रभाव था।

२३५. लोकमान्य तिलक

छोटेपन से उसका नाम सुनते थे। एक बार गांधी चौक में आये थे। बड़ी भारी सभा हुई। लाल गोल पैंठणी पगड़ी पहने थे। उनका खूब जोरदार भाषण हुआ। उस समय तो मैं क्या जानती ? बाद में सुना कि जमनालालजी ने हाथ खर्च के लिए जो एक-एक, दो-दो आना मिलता था, उसे ही जमा करके (हिंदी) 'केसरी' के लिये एक सौ रुपया दिया। तिलक महाराज को जब छः वर्ष की कैद सुनाई गई थी तो उन्हें सवारी पर बिठाकर जेल ले जा रहे थे। उसीमें वे निश्चित होकर सो गये। उन्हें तो जेल और बाहर एक समान ही था। जेल में ही उन्होंने 'गीता रहस्य' पुस्तक लिखी।

२३६. केजाजी महाराज

जमनालालजी छोटेपन से साधु-संतों का सत्संग ढूंढ़ते रहते थे। एक वार केजाजी महाराज के दर्शन के लिए गये। वे जमनालालजी को देखते ही बोले, "हीरा तो गया तेसा कचड़े में।" यह वात उनको लग गई और तबसे जमनालालजी तो धन से अलग ही रहे। इस प्रसंग की याद विनोबाजी बार-बार किया करते हैं और उनकी आंखें भर आती हैं।

२३७. रेहानाबहन तैयबजी

वड़ौदा के बड़े नामी मुस्लिम घराने में इनका जन्म हुआ। बचपन से कृष्ण की भक्ति में लीन होती गईं, मानो साक्षात् मीरा की अवतार। अपने खुद के वनाये हुए भजन इतने मधुर कंठ से गाती थीं कि लगता, जैसे कहीं दूर कृष्ण की बांसुरी ही बज रही हो। इनके भजनों की किताब भी छपी है। उसका नाम है, 'गोपी का हृदय।'

भगवान् की भक्ति के साथ ही इनमें राष्ट्र-भक्ति भी भरी थी। इसलिए सावरमती आश्रम में और सेवाग्राम आश्रम में वापूजी के पास भी रही थीं। वर्धा में काकासाहब कालेलकर के साथ काकावाड़ी में भी कई साल रहीं। जमनालालजी इनको वहन मानकर इनसे राखी बंधवाते थे। इस नाते ये मुझे भाभी की तरह मानतीं और बच्चे इनको फूफी कहते। उतना ही प्यार उनसे हम सबको सदा मिलता रहा।

बीस-पच्चीस वर्षों से काकासाहव दिल्ली रहने लगे। राजघाट में गांधी संग्रहालय के पास गांधी हिंदुस्तानी साहित्य सभा के एक मकान में ही वे रहते हैं। वहीं एक छोटे-से कमरे में रेहानावहन भी रहती थीं। वड़ी सिद्धयोगिनी थीं। वहां दिन-रात वड़ा सेवामय सत्संग चलता रहता था। उनके पास छोटे-वड़े सभी तरह के सुखी-दुःखी लोग आते और बड़ा संतोष पाते थे।

'जय भगवान्' कहते और कहलाते हुए हाल ही में भगवान् में लीन हो गई हैं।

२३८. अब्बास तैयबजी

रैहानावहन के पिता। ये जज थे। सावरमती आश्रम में बापू के पास रहे थे। जमनालालजी से बड़ी घनिष्ठता थी। नमक सत्याग्रह के समय विलेपार्ले की छावनी से चेंबूर में हम इनके घर पर जाते, तब ये बड़ा मान करते थे। ऊंचा कद, लंबी दाढ़ी और नीचे तक के पहनावे में बड़े रुआवदार लगते थे।

२३९. आचार्य तुलसी

तेरा पंथ जैन-संप्रदाय के आचार्य। पद-यात्रा में विनोबाजी से मुलाकात के लिये आये थे। फिर बाद में गोपुरी भी आये। इनसे कई बार सम्मेलनों में मिलने का मौका मिला है। इनके हजारों भक्त हैं, जो अणुव्रतों का प्रचार करते हैं। उनमें बड़े विद्वान लोग भी हैं। अनेक साध्वी महिलाएं भी बड़ी विद्यावान् और कलावान् हैं।

२४०. तेंदुलकर

गांधीजी के बारे में वहुत पुस्तकें लिखी हैं। वंबई में कमलनयन के पास आते-जाते थे। विद्वान् पत्रकार थे।

२४१. महावीर त्यागी

ये बापू से मिलने आते रहते थे। विनोदी स्वभाव के हैं। जमनालालजी और कमलनयन से घनिष्ठता रही। इन्होंने चुनाव में बहुत भागा-दौड़ी की थी। दिल्ली में काफी साल मंत्री भी रहे। अपने सिद्धांत के बड़े पक्के हैं।

२४२. सुगनचन्दजी तापड़िया

जमनालालजी के साथ गहरा संबंध था। व्यक्तिगत सत्याग्रह में नागपुर जेल में रहे थे। अकोला में रहते हैं। शिक्षा मंडल की सभा में आते रहे हैं। इन्हें गो-सेवा की लगन है।

२४३. काशिनाथ त्रिवेदी

ये इंदौर में सर्वोदय-कार्य करते हैं। कस्तूरबा ट्रस्ट की मीटिंगों में मिलते हैं। अच्छे लेखक और विद्वान हैं। पहले सपरिवार वर्धा के महिलाश्रम में भी रहे हैं। कुछ दिन मंत्री रहे।

२४४. डा० मनुभाई त्रिवेदी

इनके पिता जयशंकरभाई पूना में बड़े लोकप्रिय थे। वहां कॉलेज में प्रोफेसर थे। उनके घरका वातावरण बड़ा शुद्ध, पवित्र, स्नेह और श्रद्धा से भरा हुआ रहता था। घर में सदा अतिथितयों का आना-जाना और स्वागत-सत्कार होता रहता था। यह देख जमनालालजी को बड़ी प्रसन्नता हुई। वे इन्हें सपरिवार वर्धा ले आये। तबसे ये यहीं बस गये। सारा परिवार गांधी-भक्त और खादीधारी है। डा० मनुभाई भी वर्धा में लोकप्रिय हुए। वे बड़े मिलनसार थे। वैसी ही उनकी पत्नी तनुबहन है।

मनुभाई की मां हीरागौरीबहन का कस्तूरबा के साथ बहुत प्रेम था। बड़ी श्रद्धालु महिला थीं।

डॉ० मनुभाई की बेटी आरती का विवाह सेवाग्राम के चिमनलालभाई की लड़की शारदा के बेटे आनंद से हुआ है। ये दोनों परिवार बापूजी के भक्त हैं।

२४५. रामनरेश त्रिपाठी

पुराने लेखक थे। इनके घर जमनालालजी के साथ मैंने भी भोजन किया था। इन्होंने जमनालालजी के बारे में एक सुंदर पुस्तक लिखी है।

२४६. दास्तानेजी

अण्णासाहब जलगांव के रहनेवाले खानदेश के बड़े नामी नेता थे। जमनालालजी को श्रद्धापूर्वक भाई मानते थे। विनोबाजी ने हाल ही में कहा, "मैं घर से सबकुछ छोड़कर आया था, पर बजाज-परिवार और दास्ताने-परिवार तो मुझसे छूट नहीं सकता।

२४७. वारुताई दास्ताने

दास्तानेजी की पत्नी। इनके द्वारा जमनालालजी ने महिलाश्रम में कन्याश्रम शुरू किया। उसमें मदालसा, ओम्, नर्मदा, वत्सला पढ़ती थीं। रमाजैन भी वहां रहती थीं। ये योग्य माता ओर अच्छी संस्कारदाता थीं।

२४८. दत्तोबा दास्ताने

दास्तानेजी का पुत्र। कमलनयन-जैसा विनोबाजी का भक्त है। उन्होंने उसे शिक्षा-दीक्षा दी है। अब 'गांधी सेवा संघ' में पुस्तक लिखने-लिखाने का काम करता है।

इसकी पत्नी मालुताई महिलाश्रम के माध्यमिक विद्यालय में शिक्षिका है। इनकी बेटी की शादी में विनोबाजी को आना ही पड़ा था।

२४९. सौभाग्यवतीबहन दानी

बंबई में वल्लभदास दानी जमनालालजी के मित्र थे। छोटी उम्र में चले गये थे। उनकी पत्नी सौभाग्यवती बहन दानी को जमनालालजी ने धर्मबहन मानकर सब तरह की जिम्मेदारी ले ली। इनके तीन बच्चे थे। बंबई में इनके वालकेश्वर के बंगले में हम कई साल रहे।

२५०. धन्नू दानी

दानीजी का बड़ा बेटा। जमनालालजी के सेक्रेटरी का काम करता था। इनकी चर्चा बढ़ गई थी। जमनालालजी इनको अल्मोड़ा ले गये थे और अपने साथ पैदल खूब घुमाते थे।

दानीजी का छोटा बेटा था पन्नू। शादी होने के बाद छोटी उम्र में ही उसका स्वर्गवास हो गया।

दानीजी की बड़ी बेटी का नाम था माणकबाई। अजमेर के अच्छे खानदान में रामरिछपालजी श्रिया के साथ ब्याही है।

२५१. डा० दामले

अपने साइंस कॉलेज के प्रिंसिपल हैं। बहुत कम बोलते हैं, लेकिन विद्यार्थियों को बहुत अच्छा पढ़ाते हैं। इनकी पत्नी श्रीमती दामले अच्छी श्रद्धालु महिला हैं। विज्ञान की प्रोफेसर भी हैं। इनका सरल स्वभाव है और इनको बाग-बगीचों का बड़ा शौक है।

२५२. डा० दोशी

इन डाक्टर बहन ने बम्बई में मेरा बिजली से इलाज किया था। उसके बाद

कमर में इतनी कमजोरी आई कि मैं जमनालालजी के बुलाने पर भी जयपुर सत्याग्रह में नहीं जा पाई।

विजली वगैरह से कृत्रिम इलाजों से नसों में कमजोरी आ जाती है।

२५३. डा० दातार

ये पूना में रहते थे। गांधीजी के पूरे भक्त थे। जो भी रोगी आते या बापू भेजते, उनका सेवाभाव से इलाज करते व अपने घर पर ही आप्रेशन किया करते थे।

२५४. डा० दलाल

बम्बई में वहुत वड़े डाक्टर माने जाते थे। मेरे मस्सों का इलाज कराने वापू ने मुझे इनके पास भेजा था। देवदास गांधी का अपेंडिसाइटिस का इलाज भी इन्होंने किया था। इनके अस्पताल में एक कम्पाउंडर मेरी ड्रेसिंग के लिए आता था। उसके हाथ इतने मोटे थे कि उसको देखकर मरीज डरते थे। मैंने डाक्टर दलाल से कहा तो उन्होंने उसको बदलकर एक सिस्टर को रख दिया। इससे और रोगी भी खुश हो गये।

२५५. शंकररावजी देव

कांग्रेस वकिंग कमेटी के मेम्बर थे। जीवन भर सर्वोदय का ही काम किया। सन् १९५७ में सेवाग्राम में तालीमी संघ का सम्मेलन हुआ। तब शंकररावजी विनोवाजी से बोले, "हमारे सामने अंधेरा है। आप शिवरामपल्ली के सर्वोदय सम्मेलन में आकर रास्ता बतायें।" विनोवाजी ने कहा कि यह आपका काम है। शंकररावजी बोले, "बिना वर के बरात कैसे होगी ? आपको आना ही पड़ेगा।" विनोवाजी ने सबका प्रेमभाव देखकर सम्मेलन में आना कबूल किया, पर पैदल

ही गये। इसी पदयात्रा से भूदान की गंगा बही।

२५६. तेजबहादुर सप्रू

इलाहावाद के प्रसिद्ध वकील थे। बापू के पास सेवाग्राम में आते थे। जमनालालजी से अच्छा संपर्क था। जब भी आते, मिलते थे। बजाजवाड़ी में भोजन भी करते थे।

२५७. कटेली साहब

'यरवदा मंदिर' जेल में जेल-सुपरिंटेंडेंट थे। जमनालालजी से मिलने जाते थे तो पहले इनसे मिलना पड़ता था।

सन् १९४२ के आंदोलन में आगाखां महल जेल के भी यही सुपरिंटेंडेंट थे। इनके मन में बापूजी के लिए बड़ा आदर था।

२५८. नागिनीदेवी

साबरमती आश्रम में बापू के पास आती थी। विदेशी महिला थी। उनके लिए आश्रम-जीवन तो एक प्रकार की तपश्चर्या ही थी। वे जूते छोड़कर चप्पल पहनकर घूमती थी।

२५९. नंदलाल बोस

अच्छे चित्रकार थे। शांति-निकेतन में आचार्य थे। कांग्रेस अधिवेशन में दरवाजे सजाने के लिए विशेष रूप से जाते थे। खादी-ग्रामोद्योगों से प्रेम था।

२६०. आगाखान

पूना में 'आगाखां महल' है। जमनालालजी आगाखान साहब से बंबई में मिले थे। इनका नाम मशहूर था। अब इन्होंने यह महल गांधी निधि को दे दिया है। 'भारत छोड़ो' आंदोलन के समय गांधीजी को यहीं नजरबंद रखा था। माता कस्तूरबा और महादेवभाई की यहीं समाधि है।

२६१. यंगसाहब

सीकर, जयपुर में ये एक आंखवाले अफसर थे। सन् १९३९ में प्रजा मंडल का प्रतिबंध हटवाने के लिए जमनालालजी राजस्थान गए थे। वहां जयपुर-सीकर स्टेशन के बीच इन्होंने जमनालालजी को रोक दिया था। जमनालालजी ने कहा, "राजस्थान तो मेरा है, यह अंग्रेज मुझे रोकता है।" गांधीजी से पूछा तो बताया, "इसके लिए सत्याग्रह करना पड़ेगा।"

इतना संकेत मिलते ही वहां सत्याग्रह शुरू हो गया। जमनालालजी को घसीटा गया। चोट भी आई। उन्हें कर्णावतों के बाग में काफी दिनों तक नजरबंद भी रखा गया था। वहां कभी-कभी शेर भी आ जाते थे।

२६२. महादेवभाई देसाई

रामचंद्रजी के जैसे हनुमान दूत थे, वैसे ही ये गांधीजी के भक्त थे। मगनवाड़ी में टपाल लिखकर पैदल बापू के पास सेवाग्राम जाते थे। जमनालालजी कहते, "महादेवभाई सवारी ले जाओ।" महादेवभाई कहते, "सेवाग्राम में बूढ़ा पूछेगा कि कैसे आये ?"

एक दिन मैंने उनसे कहा, "महादेवभाई, जमनालालजी की एक बगलबंडी है आप पहनोगे ?" झट से बोले, "हां, मैं पहनूंगा। जमनालालजी तो मेरे भाई

हैं।" आगाखां महल में ही महादेवभाई का स्वर्गवास हो गया था। वाद में जव वापू सेवाग्राम आते तो महादेवभाई की कुटिया में वैठकर चरखा कातते थे।

२६३. दुर्गाबहन

महादेवभाई की पत्नी। सेवाग्राम में वापू की कुटिया के सामने इनकी झोंपड़ी थी। दिन भर कातती और रोटी बनातीं। इसलिए वैठे रहने से इनका शरीर भारी हो गया था। पर इनका स्वभाव बड़ा सरल और प्रेमल था।

२६४. नारायण देसाई

महादेवभाई का इकलौता वेटा। वचपन में हम इसे 'वावला' कहते थे। अगस्त, १९४७ में वापू के साथ महादेवभाई भी वम्वई जा रहे थे। जाते समय 'वावला' का एक गाल पकड़कर प्यार करके चले गये। वम्वई से वापू को आगाखां महल में ले गये। वहां छठे दिन महादेवभाई का दिल का दौरा पड़ने से मृत्यु हो गई। उनके बेटे और पत्नी को खवर भी नहीं मिली। वे मुख-दर्शन से भी वंचित रहे। सरकार को शव तो वाहर देना ही नहीं था।

२६५. दिलीप राठी

वजाजवाड़ी के वंगले में आने-जानेवाले मेहमानों की कई साल तक देखभाल करता रहा। बड़े प्रेम से सव काम कर लेता था। पहले विनोबाजी के पास रह कर ग्राम-सेवा का काम किया। सुरगांव में भी काफी रहा। पुराने लोग अव भी उसकी याद करते हैं।

२६६. यशोधराबहन दासप्पा

बापूजी की बड़ी भक्त। मैसूर में 'कस्तूरबा ट्रस्ट' का बहुत काम किया है। वर्धा आती रहती थीं। जमनालालजी बड़ा मान करते थे। अब भी महिलाओं की अनेक संस्थाएं चलाती हैं।

२६७. ज्ञान दरबार

बुधसेन की पत्नी। बुधसेन विनोबाजी के पास नालवाड़ी में रहता था। कमलनयन और बुधसेन कुआं खोदते थे। बुधसेन को 'दरबार' कहकर चिढ़ाते थे। इस पदवी के उपयोग का अधिकार ज्ञान को मिला और वह ज्ञानवती दरबार हो गई। अपनी तो बहू जैसी ही है। कई साल तक राजेन्द्रबाबू की सेक्रेटरी रही, जब वे राष्टपति थे।

२६८. भूलाभाई देसाई

वर्किंग कमेटी के सदस्य थे। बजाजवाड़ी में आते रहते थे। इनको संकोच होता था कि जमनालालजी के यहां हम रोज ही आते-जाते हैं और वे नौकर-चाकरों को कुछ देने से रोकते हैं; बम्बई से फल वगैरह भी लाने नहीं देते हैं। बहुत मिलनसार और व्यवहार-कुशल थे।

२६९. लक्ष्मीनारायणजी अग्रवाल

श्रीमन्‌जी के बीच के चाचाजी। नागपुर में बड़े सरकारी इंजीनियर थे। बजाजवाड़ी के सामने 'गांधी ज्ञान मंदिर' की इमारत उन्हींकी देख-रेख में

बनी। पवनार का गांधी-घाट और छतरी भी उन्हीं के जमाने में बनाई गई। बड़े ईमानदार और मेहनती थे। सभी घरवालों का बहुत ख्याल रखते थे।

२७०. खंडूभाई देसाई

गुजरात के मशहूर मजदूर नेता। बापू से मिलने कई बार वर्धा आते। तब बजाजवाड़ी में ही ठहरते। १९३२ में धुलिया जेल में विनोबाजी और जमनालालजी के साथ भी रहे थे। बाद में तो आन्ध्र के गवर्नर बने।

२७१. गंगाधररावजी देशपांडे

ये कर्नाटक के बुजुर्ग नेता थे। बेलगांव में जमनालालजी इनके घर जाते थे। बजाजवाड़ी में इनका आना-जाना रहता था। इनका लड़का मोहन भी वर्धा में काफी समय रहा है।

२७२. गणेशमलजी दूगड़

ये रविशंकर महाराज की सेवा तन-मन-धन से करते रहे। अहमदाबाद में मदालसा से काफी मिलना-जुलना रहता था। इनकी पत्नी भी बड़ी सेवाभावी और भक्तिमान हैं। व्यापार के साथ-साथ समाज-सेवा का काम करते थे। इनके घर पर सदा जैन साधु-साध्वी रहते। कथा, कीर्तन, सत्संग चलता ही रहता।

२७३. दूधीबहन

वालजी भाई देसाई की पत्नी। ये साबरमती आश्रम में रहती थी। इनके छः लड़के हुए। कहती थीं कि छोटे में लड़के अच्छे लगते हैं; पर बुढ़ापे में एक

लड़की भी चाहिए, नहीं तो कौन सेवा करेगा ?

वालजीभाई विद्यार्थियों को अंग्रेजी वहुत अच्छी तरह पढ़ाते थे। नैनीताल के पास ताकुला आश्रम में कमलनयन काफी दिन इनके पास रहकर अंग्रेजी पढ़ा था। ये बापू के पास वर्धा में भी रहे थे। 'सेवाग्राम' का नाम इनका ही सुझाया हुआ है।

२७४. काशीबाई देशमुख

सेगांव पहले इनका था और अपने कर्जे में था। इनके पति पटेल की मृत्यु होने पर जमनालालजी ने उसे छोड़ दिया था। पर काशीबाई ने कहला भेजा, "मेरे पति का कर्ज तो चुकाना ही है।" और सेगांव पूरा दे दिया। बाद में गांधीजी के वहां बसने के बाद उसे 'सेवाग्राम' नाम दे दिया गया।

२७५. कादरभाई

बम्बई में अपनी जुहू की झोंपड़ी में रहते थे। कमलनयन से अच्छी दोस्ती थी।

२७६. वासन्ती देवी

चितरंजनदासजी की पत्नी। मैं इनके पास कलकत्ता गई थी। मैंने कहा, "आप जेल जाओ तो और स्त्रियों पर असर पड़ेगा।" उन्होंने बड़ी सहजता से कहा, "मेरी बहू विधवा है, उसे अकेले कैसे छोड़ सकती हूं ?" इसमें तो मेरी ही 'छोटे मुंह बड़ी बात' जैसी हो गई। वे मुझसे ज्यादा होशियार थीं, पर मुझे तो अपनी ही धुन थी।

२७७. दुर्गाबाई देशमुख

चिन्तामणि देशमुख की पत्नी। स्त्रियों में बहुत अच्छा काम करती हैं। बजाजवाड़ी के तालाब में इन्होंने वृक्ष लगाये थे। हिन्दी प्रचार के काम में और अपनी उन्नति करने में इन्हें जमनालालजी ने बड़ा प्रोत्साहन दिया था। उनकी बहुत याद करती हैं।

२७८. दीनबन्धु एन्ड्रयूज

कई दिनों बजाज़वाड़ी में रहे। जमनालालजी की इनमें बड़ी श्रद्धा थी। बच्चे इन्हें 'एन्ड्रयूज चाचा' कहते थे। इन्हें प्रकृति से बड़ा प्रेम था। रोज सुबह और शाम सूर्योदय और सूर्यास्त देखते थे और हम सभी भारतवासियों के भाग्य की बड़ी सराहना करते थे। गांधीजी ने इनको 'दीनबंधु' की पदवी दी थी। 'ज्ञान मंदिर' में इनकी और गांधीजी की भरत-मिलाप के समान तस्वीर टंगी है।

२७९. रघुनाथ श्रीधर धोत्रे

वड़ौदा में विनोबाजी के सहपाठी थे। विनोबाजी के साथ ही वर्धा आये। जमनालालजी के सेक्रेटरी भी रहे। सेक्रेटरियों में ये अच्छे व्यावहारिक थे। बजाजवाड़ी में रहते थे। कमलनयन को भी पढ़ाया था। दास्तानेजी के दामाद हुए, तो दुहरी घनिष्ठता हो गई। वर्षों तक 'गांधी स्मारक निधि' के मंत्री रहे। 'गांधी सेवा संघ' के मंत्री तो थे ही।

२८०. आक्का धोत्रे

दास्तानेजी की पुत्री। धोत्रेजी क्लास लेते थे। आक्का भी पढ़ने जाती थी।

जमनालालजी बेटी की तरह मानने थे। बाद में धोत्रेजी से शादी हो गई तो और भी प्यार बढ़ गया।

धोत्रेजी का इकलौता बेटा मोहन धोत्रे। पूरा गांधी-भक्त है। खादी का काम करता है।

२८१. हरजीवनलाल भाई

इन्होंने चर्खा संघ की ओर से बहुत साल तक कश्मीर के खादी भंडार में बड़ी लगन से काम किया। इनकी पत्नी शारदाबहन कोटक बड़ी नाटी-सी, गोरी-सी, नाजुक-सी बहन हैं। अब वर्षों से साबरमती आश्रम में ही रहती हैं। इनकी बेटी कुरेशीभाई के बेटे से ब्याही है। गुजरात विद्यापीठ में पढ़ाती है।

२८२. धनंजयबाबू

राजेन्द्रबाबू के पुत्र। हम जब छपरा गये थे तब इन्होंने हमारी बहुत खातिर-दारी की थी। परिवार में सबका मान करते हैं। इनकी पत्नी भी भली हैं।

२८३. धर्मनारायणजी

श्रीमन्जी के पिताजी। बड़े विद्वान एडवोकेट थे। गीता पर अंग्रेजी में भाषण देते थे। वे जब हिंदी में गीता का अर्थ समझाते, तो बहनें मुग्ध हो जाती थीं। दिल्ली में कई बार साथ रहने का मौका मिला तो वे बड़े प्रेम से कहते, "आओ, माताजी।" और मैं कहती, "हां, आई पिताजी।" वे एक-एक बात इतनी अच्छी तरह से समझाते कि हरएक के मन में बैठ जाती थी।

२८४. राधादेवीजी

श्रीमन्जी की माताजी । एक योगिनी थीं । ध्यान करने बैठती थीं तो जैसे कोई शांति की मूर्ति हो । अपने बेटों के जन्म-दिन पर कविता बनाती थीं । वर्धा में भी रहीं । एक दिन सहज भाव से बोलीं, "माताजी, आजकल के बच्चे करेंगे तो अपने मन की, तो वे जितना पूछे उतना बता देना, बाकी अपने मन से क्या कहना !"

२८५. पुरुषोत्तमजी धानुका

चि० शेखर की सगाई हुई तब राम ने पूछा था, "लड़की को देखोगी क्या?" मैंने कहा, "लड़की को तो तुम देख लो, पर लड़कीवाले कौन हैं ?" राम ने कहा, "धानुकाजी वृन्दावन के प्रेमी हैं। बहुत अच्छे संस्कारी हैं।" मैंने कहा, "तब तो वे तुम्हारे काकाजी (जमनालालजी) के मित्र के समान ही हैं।"

२८६. दादा धर्माधिकारी

बजाजवाड़ी में रहते थे । जमनालालजी इन्हें बहुत मानते थे । अपने परिवार जैसे रहते थे और बच्चों को ऊंचा संस्कार सिखाते थे। कानपुर में गंगा नहाते समय मुझे और नर्मदा को इन्होंने ही बचाया था। अब तो वे सर्वोदय के बड़े आचार्य माने जाते हैं।

२८७. रामेश्वरजी पोद्दार

गांधी, विनोबाजी और जमनालालजी के पूरे भक्त हैं। इनके नेत्र गये, फिर भी चिट्ठी-पत्री द्वारा इनके उपदेश चलते रहते हैं। इसलिए मैं इन्हें 'धुलिया

नरेश' कहती हूं। कहते हैं, "वर्धा के कंकर, सभी शिवशंकर।" इतनी इनकी श्रद्धा है।

२८८. गंगूबाई

रामेश्वरजी पोद्दार की पत्नी। जीवन-भर केवल कर्त्तव्य-भाव से पति की सेवा कर रही हैं। गंगूबाई को धन्य है, जो पति के साथ धीरज से निभ रही हैं। जमनालालजी, बापूजी और विनोवाजी के परिचित सभी को स्वजन मानती हैं। अतिथि-सेवा में दिन-रात लगी रहती हैं।

विनोवाजी के छोटे भाई शिवाजी का करीब ४० वर्ष से रहन-सहन, खान-पान और उनसे मिलने आनेवालों को वही संभालती हैं। निःसंतान तो रही हैं न? अपनी संतान की अभिलाषा सबको रहती है, पर इन्होंने सबको अपना लिया।

२८९. मोतीलालजी नेहरू

मोतीलालजी वर्धा भी आये थे। जमनालालजी ने उनके ठहरने का पूरा इंतजाम किथा। उन्हें दमे की बीमारी थी, इसलिए चौकीदार आदि को रात में आवाज देने से मना कर दिया, ताकि उन्हें ठीक से नींद आये। सुबह उठे तो पूछा, "रात को नींद ठीक आई न?" मोतीलालजी विनोदी थे, बोले, "एक बांसुरी की सुरीली आवाज और भी चलती थी।" सुनकर जमनालालजी दंग रह गये। तहकीकात की, कुछ पता नहीं चला। फिर मोतीलालजी ने कहा, "नीचे किसी के दमे का सुर और ऊपर मेरे दमे का सुर मिलता था।" तब ख्याल आया कि नीचे कनीरामजी थे। वे भी दमे से पीड़ित थे। किंतु जल्दी में ख्याल नहीं रहा कि इनकी आवाज भी ऊपर जायेगी।

एक बार मोतीलालजी की बीमारी में जमनालालजी के साथ मैं इलाहाबाद गई थी। उस वक्त मैं तो घूंघट में रहती थी। इसलिए मैंने उनके दर्शन दरवाजे की

ओट से किये। बाद में जब मैं विदेशी वस्त्र-बहिष्कार-आंदोलन के समय कलकत्ता गई तब मोतीलालजी से मिलने गई थी। मुझे तो धुन लगी हुई थी, इसलिए मैंने उनसे कलकत्ते में विदेशी वस्त्र छुड़ाने का काम कैसे किया जाय, इसी की चर्चा की। वे समझ गये और बोले कि तुम कुछ करोगी, तो जेल में ले जायेंगे। इस पर से मेरा उत्साह तो और भी बढ़ गया।

२९०. स्वरूपरानी नेहरू

मोतीलालजी की पत्नी। बड़ी नाजुक, सुंदर और दयालु। इनके साथ रहने का बहुत मौका मिला। ये बजाजवाड़ी, वर्धा में भी कई दिन रहीं। इनकी एक विधवा बहन थी। इलाहाबाद के 'आनंद भवन' में भी इनके साथ रहने का अवसर मिला। नागपुर कांग्रेस में पहली बार आई थीं। ऊंचे-ऊंचे रेशमी गद्दों पर बैठी थीं। वे जितनी सुखी थीं, उतनी ही उनके पीछे चिंताएं थीं। उनको जीवन भर बहुत तपना पड़ा।

कलकत्ते में मैं स्वरूपरानीजी को बुलाने गई तो वे मेरे साथ आ भी गईं। मारवाड़ी व्यापारी और महिलाओं की रात में सम्मिलित सभा थी। वे आते ही बोलीं, "सारे लाल जेलों में गये हैं। स्वराज्य के लिए हम ये जो दरियां बिछी हैं, इन्हें भी पहन सकती हैं; खादी की तो बात ही क्या !" ऐसे त्याग और तप की भावना उनमें भरी थी, तभी जवाहरलाल जैसा अलबेला और इकलौता बेटा इतना महान् बना।

एक समय की बात है, हम लोग गर्मियों में भुवाली गये थे। कमला नेहरू वहां पर बीमार थीं। इसलिए जमनालालजी ने वहीं जाने का तय किया था। स्वरूपरानीजी भी एक मकान लेकर वहीं रही थीं। जवाहरलालजी अल्मोड़ा जेल में थे। वहां से हर हफ्ते कमलाजी से मिलने भुवाली के सेनिटोरियम में आया करते थे तो मां से भी मिलते थे। वे डोली में बैठकर चौराहे पर आ जाती थीं।

जवाहरलालजी की मौसीजी ने बहुत तरह के खाने बनाकर थाल सजाया और जवाहरलालजी के सामने रखा। उनको जो चीजें पसंद थीं वे बनाईं।

मां तो चाहती कि जवाहर खाना शुरू करे, और जवाहर को जो भी चीज अच्छी लगे, वह जरा-सा टुकड़ा लेकर मां के मुंह में देना चाहे। तब मां की आंखों से आंसू की धारा बहने लग जाती। कारण, जेल के अधिकारी साथ में खड़े थे। वे जरा-सी देर में ही इनको ले जायेंगे और वे आंखों से ओझल हो जायेंगे। यह दर्दभरा दृश्य देख कर ऐसा लगता कि धरती माता फट जाय तो मैं उसी में समा जाऊं।

२९१. जवाहरलालजी नेहरू

जवाहरलालजी बापू के पास वर्धा आते रहते थे। बजाजवाड़ी की पंगत में रंगत हो जाती थी। एक दिन वर्किंग कमेटी की बैठक के बाद नीचे आये और खाने की पंगत से उठे तो बोले, "चलो, बीच के कमरे में मगज हल्का करें। जवाहरलालजी घोड़ा बने, सरोजिनी नायडू सवार बनीं। घोड़ा तो रेस के घोड़ा जैसा पक्का था, पर सवारी तो गणेशजी की तरह लुढ़क जातीं। फिर कृपालानाजी और सुचिताबहन सरोजिनी को पकड़े रहते और सरदार के हाथ में चाबुक रहता। इस प्रकार वे सबको हँसाते थे। जमनालालजी के जाने के बाद जवाहरलालजी बजाजवाड़ी आये। मैंने वह जगह दिखाई और पुरानी बात याद दिलाई तो बोले, "वे दिन अब कहां! वे दिन भी थे जब मैं साल में तीन बार यहां आता था।" और उनकी आंखों में आंसू आ गये।

२९२. कमलाजी नेहरू

शरीर से बड़ी नाजुक थीं। जवाहरलालजी की तपश्चर्या के पीछे उनको भी तपना पड़ा। आखिर डाक्टरों ने टी. बी. बताई और उन्हें भुवाली सेनिटोरियम में रख दिया। भुवाली से उन्होंने बापू को पत्र लिखा, "बापू, मैं आपसे मिलने कैसे आऊं? आप मुझसे मिलने आयें।" बापू बड़े धर्म-संकट में पड़ गये। जायें भी कैसे और ना भी कैसे कहें। उन्होंने जमनालालजी को भुवाली भेजा। हम

सभी भुवाली गये। इधर एक तरफ जमनालालजी का परिवार रहता, दूसरी तरफ नेहरूजी का परिवार। जवाहरलालजी को कमलाजी से मिलने की दृष्टि से अल्मोड़ा जेल में रखा था। वहां से वे हर हफ्ते मिलने के लिए आते थे। जमनालालजी रोज कमलाजी से मिलने जाया करते थे। वहां के डाक्टरों ने कह दिया कि कमलाजी का इलाज तो अब विलायत में ही हो सकेगा।

उनको विदा करने सब आये। जवाहरलालजी ने सेनिटोरियम की डांडी पर से कमलाजी को गोद में उठाकर कार में लिटाया। तब ऐसा लगा कि कौन जाने, अब ये फिर कब मिलेंगे! कमलाजी की कार स्टेशन की ओर, जवाहरलालजी की कार जेल की ओर तथा स्वरूपरानीजी की कार उनके निवास-स्थान की ओर। विदाई का वह करुण दृश्य पत्थर को भी पिघला देनेवाला था।

२९३. इंदिरा गांधी

इंदिरा बहुत छोटी थी। जमनालालजी के साथ मैं भी इलाहाबाद के आनंद भवन में मिलने गई थी। मोतीलालजी बीमार थे। कमला नेहरू एक पलंग पर लेटी थीं। इंदिरा खेल रही थी। वह दस-बारह वर्ष की थी, तब बापू से मिलने वर्धा आई थी। बजाजवाड़ी में ठहरी थी। जमनालालजी उसे अपनी बैलगाड़ी की टमटम में सेवाग्राम ले जाते थे। इंदिरा जैसे जवाहरलालजी को वैसे ही जमनालालजी को भी मानती थी। जब बजाजवाड़ी के अपने बंगले में रहीं तब जमनालालजी बेटी की तरह कभी पीठ थपथपाते, तो कभी इंदिरा उनके हाथ पकड़ कर खेलने लग जाती।

पूना में वकील के स्कूल में इंदिरा और कमलनयन एक साथ पढ़ते थे।

आगे के जीवन में इंदिराजी की कड़ी-से-कड़ी कसौटी होती रही। जैसे आग में तपकर सोना चमकने लगता है, वैसे ही आज जीवन भर तपी हुई इंदिरा दुनिया में चमक रही है।

२६४. फिरोज गांधी

इंदिराजी के साथ इनकी शादी की बात चल रही थी तब ये दोनों अक्तूबर १६४१ में वर्धा आये थे। बजाजवाड़ी में ही ठहरे थे। जमनालालजी ने दोनों को ही समझाया और बापू से मिलाया था। इतना उनका प्यार था। शादी के बाद इनके दो बेटे हुए—राजीव और संजय। उन बच्चों पर नाना जवाहरलालजी का गहरा प्यार होना स्वाभाविक था। अपने नन्हे-नन्हे दोहितों के साथ हँसते-खेलते हुए जवाहरलालजी की कई तरह की तस्वीरें देखकर बड़ा सुख मिलता है।

२६५. शिवदत्त उपाध्याय

पंडित जवाहरलालजी के सेक्रेटरी। उनके साथ अकसर वर्धा आते थे। अपने काम में बड़े चुस्त थे। थोड़ी फुरसत मिलने पर हम लोगों से मिलने-जुलने आ जाते थे। उनका स्वभाव बड़ा मिलनसार रहा। बाद में वे कई साल पार्लियामेंट के सदस्य भी रहे। दिल्ली में राष्ट्रपति भवन के अहाते की एक कोठी में रहते हैं।

२६६. सरोजिनी नायडू

कांग्रेस की वर्किंग कमेटी में हमेशा वर्धा आया करती थीं। बजाजवाड़ी के बंगले में अक्सर जमनालालजी के ही कमरे में ठहरती थीं। जमनालालजी को लिखतीं, "मेरा कमरा खाली है न ?" जमनालालजी अपना छोटा-सा कमरा खाली करके उन्हें ठहराते थे। सरोजिनीजी घर आते ही उमा से कहतीं, "देखो, मेरी तबियत ठीक नहीं है, इसलिए डाक्टर ने भारी खाने का मना किया है। तुम महाराज से कह देना, 'मेरे लिए जरा हरी मिर्च तल दे और थोड़े गरम-गरम पकोड़े भी बना दे। ओम्, खादी भंडार में साड़ी आई होंगी तो एक-दो मेरे लिए देख लेना। तकिये के गिलाफ भी तुम्हें जैसे पसन्द हों, बनवा लेना।…"

इस प्रकार पारिवारिक संबंध रखती थीं। बच्चे भी उन्हें दादी मां की तरह प्यार करते थे।

२९७. पद्मजा नायडू

सरोजिनी नायडू की बेटी। इनका पत्र जमनालालजी को आया था, "मैं वर्धा आ रही हूं। स्टेशन पर वेटिंग रूम में ठहरूंगी।" वे अपना बिस्तर और सब सामान अपने साथ रखती थीं। फिर भी जमनालालजी ने मेहमानों की सेवा-सत्कार करनेवाले सेवक दिलीप राठी से कहा, "पद्मजाजी के लिए यहां बंगले पर भी बिस्तर तैयार रखना और एक बिस्तर स्टेशन के वेटिंग रूम में भी ले जाना।" बाद में रेलगाड़ी आने के समय खुद स्टेशन से उन्हें बंगले पर लिवा लाये थे।

आगे चलकर कलकत्ते में जब ये गवर्नर बनीं तब मैं वहां गई थी। उस समय मुझे उन्होंने बड़े आदर-सत्कार और प्यार के साथ अपने पास बैठाया। देश-दुनिया की खबरें सुनाईं। फिर वर्धा की और बालकों की कुशल-खबर पूछी थी।

२९८. सुशीला नायर

दिल्ली के कालेज में डाक्टरी पढ़ती थी तभी से जमनालालजी का उस पर प्यार था। डाक्टर होकर वह बापूजी की सेवा में लग गई।

१९४५ में मदालसा के रजत हुआ। उसे देखने बापूजी 'जीवन कुटीर' आये। मदालसा को बुखार आ रहा था, यह देखकर तुरंत सेवाग्राम बुलवा लिया। वहां 'रुस्तम भवन' में रखा और सुशीलाबहन का इलाज शुरू करवा दिया। अब तो सेवाग्राम में बहुत बड़ा अस्पताल बनवा लिया है। सारे देश के विद्यार्थी पढ़ाई करने आते हैं। सुशीला सभी की सेवा का पूरा ख्याल रखती है। ज्यादातर वर्धा में ही रहती है। इसी में काकाजी और बापू के आशीर्वाद हैं।

२९९. रामेश्वरजी नेवटिया

सबसे बड़े जंवाई। नेवटिया-परिवार खानदानी माना जाता है। रामेश्वर-जी आठ वर्ष के बालक थे तभी जमनालालजी ने अपनी चार साल की बेटी कमला से इनकी सगाई कर दी। बाद में उन्हें गुजरात विद्यापीठ में पढ़ने के लिए दाखिल करवा दिया। ये व्यापार में कुशल हैं और नियमित खादी पहनते हैं। गोला शुगर मिल की स्थापना कोई चालीस साल पहले रामेश्वरजी ने ही की थी। तबसे ये ही उसके कर्ताधर्ता हैं। गन्ना और चीनी के व्यापार के संबंध में आज सरकार में भी इनकी बड़ी मान्यता है।

इन पर जमनालालजी का गहरा प्यार और बड़ा विश्वास था। इन्होंने व्यापार में सदा सचाई रखी।

३००. केशवदेवजी नेवटिया

रामेश्वरजी के चाचा। सभी उनको चाचाजी कहते थे। बम्बई की अपनी दुकान वे ही संभालते थे। जमनालालजी के सिद्धान्तों के अनुरूप ही उन्होंने बच्छराज कंपनी का कार्य-भार सदा संभाला। बड़े प्रेमल, निष्ठावान और व्यवहार-कुशल थे। उनकी देखरेख में व्यापार की उन्नति और देश-सेवा भी होती रही। जमनालालजी को सगे भाई की तरह उनका सहारा था।

३०१. कमला नेवटिया

जमनालालजी की बड़ी बेटी। सात पीढ़ी में पहली संतान। इसका जन्म दादाभाई नौरोजी की बेटी डाक्टर माणकभाई के हाथों हुआ था। आगे चलकर १९२६ में कमला का विवाह रामेश्वरजी के साथ साबरमती आश्रम की 'जमना-कुटीर' में बापूजी के हाथों खादीमय सादाई से लेकिन वैदिक विधि से सम्पन्न

हुआ। यह देख सभी सगे-संबंधी बहुत खुश हो गये।

कमला पर बापूजी के समान राजगोपालाचार्यजी का भी बहुत प्यार था।

३०२ श्रीगोपालजी नेवटिया

जब हम लोग साबरमती आश्रम में रहते थे, इनका तार आया कि हम अहमदाबाद स्टेशन पर आ रहे हैं। मैंने सोचा, पूरी-साग बनाकर ले चलूं; पर मुझे रसोई बनाना तो आता नहीं था। कच्ची रसोई बनाकर स्टेशन गई। आश्रम से बैलगाड़ी मांगी थी, उसमें से भी लुढ़क गई और सारा सामान बिखर गया। स्टेशन में मैंने और वेलाबहन ने कई गाड़ियां देखीं, पर ये आये नहीं। सोचा होगा कि इनको क्या तकलीफ दूं ? कुछ समय पहले मैंने यह बात श्रीगोपालजी से कही तो बोले, "आप यह बात अभी तक भूली नहीं !"

३०३. मदालसा नारायण

जमनालालजी की बेटी। मेरी मां श्रीविष्णु थी, सुबह 'श्रीमन्नारायण, श्रीमन्नारायण' जप करके काम करती थीं। फिर हमें श्रीमन्नारायण ही मिल गये। श्रीमन्‌जी की वजह से मदालसा भी नारायण बन गई।

३०४ श्रीमन्नारायण

इनके साथ मदालसा का विवाह वर्धा के गांधी चौक में सूर्योदय के समय हुआ। तब बा, बापूजी और विनोबाजी भी आये थे। इससे दादाजी को बहुत खुशी हुई। मैं जमनालालजी से कहती थी, ये श्रीमन्‌जी अद्‌भुत प्राणी हैं। स्थित प्रज्ञ की तरह बड़े शांत रहते हैं।

३०५. भरत नारायण

मदालसा का बड़ा बेटा। कलकत्ता के खादी संस्थान शोधपुर में बापू कई दिनों तक भरत के साथ 'अग्रवाल, पीछेवाल' का खेल खेलते रहे। भरत के जन्म-दिन पर मैंने एक कविता बनाई थी :

"बापू के प्यारे रसगुल्ले, भरत तुम अमर रहो !
सेवाग्राम की कुटिया में तुम ठुमठुम करके आते थे,
'आओ, आओ रसगुल्ला' कह बापू तुम्हें बुलाते थे।
बापू ने ले लिया गोद में कनु ने फोटो खींच लिया,
सरकारी पोस्टकार्डों में वह प्यारा फोटो छप भी गया।"

चि० भरत की बहू मधुलिका बड़ी अच्छी लड़की है। मैं चाहती हूं कि यह बच्चों के साथ वर्धा में ही रहे तो शुद्ध खान-पान और गाय के पौष्टिक दूध से सबका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और वर्धा से आकर्षण बढ़ेगा।

भरत की बेटी का जन्म नेपाल में हुआ था। उसका नाम महारानी रत्ना ने 'हिमानी' रखा। उसके छोटे भाई का नाम अनन्य है।

३०६. रजत नारायण

बापू को गोली लगने की खबर आई। मदालसा बारह दिन तक खाना खाये बिना घूमती रही। रजत को कौन संभाले ? बचपन में मैंने ही इसको पाला है। रजत मेरा ही बेटा है।

अब सरकारी अफसर के नाते, सचाई के पीछे, उसने छुरों के गहरे घाव भी सहे, पर बड़ों के आशीर्वाद से भगवान् ने उसे बचा लिया।

रजत की बहू अमला संस्कारवान है। अहमदाबाद में इसकी मां सावित्री-बहन के बनाये हुए कलापूर्ण झूले पर बैठी थी।

रजत के बेटे का नाम श्री आनंदमयी मां ने 'विश्वरूप' रखा है। पर मैं तो उसे 'गोदू' याने 'गाय का बछड़ा' ही कहती हूं।

३०७. सुभद्रकुमार पाटनी

कपूरचन्द पाटनी के बड़े लड़के। जमनालालजी के सेक्रेटरी रहे। आदतन खादी पहनते हैं। बहुत-सी समाज-सेवी संस्थाओं में इनका सहयोग है।

३०८. आनन्द कौसल्यायन

बौद्ध भिक्षु। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के कई वर्ष मंत्री रहे। अच्छे वक्ता और लेखक हैं।

३०९. नरसिंगम्

राजगोपालाचार्यजी के बेटे। राजाजी गवर्नर-जनरल बने तब एक दिन दिल्ली में नरसिंगम् मोटर में बैठकर रास्ते से जा रहे थे। उनके पीछे भी दो सरकारी पट्टेवाले थे। मैंने विनोबाजी को बताया कि ये राजाजी के पुत्र हैं। विनोबाजी बोले, "इस गरीब के पीछे पुलिसवाले क्यों ?"

३१०. मंगलाबहन

नन्दलालभाई की पत्नी। पति के साथ दिल्ली में राजघाट पर शुक्रवार को प्रार्थना में आती थी। मैं बापू की भस्मी के साथ चारों धाम गई थी तब मंगला-बहन भी साथ में थीं। ये गुजराती, बड़ी कुशल बहन हैं। मैं इन्हें 'चतुरबाई' कहती थी, तो नन्दलालजी हँसते थे कि माताजी तेरा कितना लाड़ करती हैं।

३११. जयप्रकाश नारायण

बापूजी के पास इन्हें सदा ही देखते आये। अमरीका से लौटने के बाद प्रभावती के पति के नाते ये परिवार के सदस्य भी बन गये। दोनों के पिताजी से जमनालालजी की घनिष्ठता थी।

भूदान पद-यात्रा करते हुए विनोबाजी का बंगाल में प्रवेश हुआ तब बिहार से विदाई का भाषण देते हुए जयप्रकाशजी गद्‌गद् हो गये थे।

३१२. प्रभावती बहन

माता कस्तूरबा और बापूजी की सेवा में दिन-रात तन्मयता से लगी रहती थीं। उनकी वे मानसपुत्री के समान ही थीं। पूना के आगाखां महल में बा का स्वर्गवास बापू के सान्निध्य में हुआ; तब पीठ के पीछे से प्रभावती ने सहारा दे रखा था। उनके साथ बापूजी के भतीजे मगनलालभाई की पत्नी संतोकबहन भी थीं। उस समय की तस्वीर में वे दोनों दिखाई देती हैं।

३१३. विचित्रनारायण शर्मा

खादी के निष्ठावान कार्यकर्ता। उत्तर प्रदेश में खादी के काम को बड़ी अच्छी तरह चलाया और फैलाया। खादी संबंधी मीटिंगों में सदा वे वर्धा आते-जाते रहे हैं। मैं उनसे कहती हूं, "विचित्रभाई! तुम्हारी लीला बड़ी विचित्र है", तो वे हँस देते है। उत्तर प्रदेश में काफी समय तक मंत्री रहे।

३१४. कृष्ण नायर

बापूजी के आश्रम में ये पहले से थे। बापूजी की भस्मी के साथ गंगोत्री,

जमुनोत्री और वदरी-केदार की यात्रा में हमारे साथ थे। आगे मानसरोवर तक भी ये भस्मी लेकर गये थे।

३१५. नरहरिभाई पारीख

साबरमती आश्रम में सपरिवार जीवन भर रहे। १९३० में नमक-सत्याग्रह के समय १०-१० स्वयंसेवकों की टुकड़ी धारासणा भेजी जाती थी। उसमें नरहरिभाई अध्यक्ष थे। इनके सिर में वहुत चोट आई थी। धारासणा की छावनी में घायल होकर सफेद चद्दर ओढ़े लेटे थे। उस हालत में उन्हें देखकर मुझे वड़ी व्यथा हुई।

३१६. मोहन पारीख

नरहरिभाई का पुत्र। महादेवभाई देसाई का बेटा नारायण और मोहन दोनों सर्वोदय का अच्छा काम कर रहे हैं। दोनों का बचपन साबरमती आश्रम और सेवाग्राम में वीता है। इनका विकास अच्छा हुआ है।

३१७. महाराजा महेन्द्र

श्रीमन्‌जी नेपाल के राजदूत थे तब मैं भी वहां रही थी। उस समय भारतीय राजदूतावास में महाराजा महेन्द्र और महारानीजी से कई बार मिलना हुआ। उनका रूप-रंग आकर्षक था। महारानीजी आंखों में काले कांच का चश्मा लगाती थीं। नेपाल नरेश की वहन का विवाह सीकर के अपने रावराजा कल्याणसिंहजी के बेटे से हुआ था।

भारत-दर्शन की यात्रा के समय श्रीमन्‌जी के साथ वे १९६६ में वर्धा आये थे। वजाजवाड़ी में ही ठहरे थे। उनका स्वागत अच्छी तरह से किया गया। मैं बाहर खड़ी थी। उन्होंने मुझे देखा और बुलाकर अपने पास बिठा लिया। उनके

लिए बंगले में खाने की बड़ी पंगत लगी। सदा की भांति जमीन पर सफेद खादी की बिछायत बिछी। आगे थाली रखने की जगह पाटे पर हरी खादी बिछाई गई। उसके ऊपर थाली, थाली के ऊपर केले के हरे पत्तों पर भोजन परोसा गया। महाराजा महेन्द्र और महारानी रत्ना प्रसन्न हुए। बोले, "जमीन पर बैठकर इतनी सुंदरता से ऐसा स्वादिष्ट खाना तो हमने आज ही खाया।"

वर्धा आकर और सेवाग्राम में बापू की कुटिया की सादगी देखकर वे बड़े प्रभावित हुए। बोले, "हमने सुना था कि जिस कुटिया में गांधीजी रहते थे वह सादी है, लेकिन देखने पर आश्चर्य हुआ कि इतनी छोटी कुटिया में इतने बड़े-बड़े काम कैसे हो गये ?"

३१८. महारानी रत्ना

महाराजाधिराज महेन्द्रजी के साथ वर्धा आई थीं। उनकी सरलता और सादगी देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई।

३१९. दादाभाई नायक

इन्दौर के विसर्जन आश्रम में रहते हैं। इन्दौर में मेरा पीहर है। 'गेहूं सोना जैसा, पानी चांदी जैसा' ऐसी मालवे की कहावत है। 'माली भूमि हरी-भरी, पग-पग रोटी डग-डग पानी', ऐसी भूमि और जलवायु है वहां की। दादाभाई सर्वोदय का अच्छा काम करते हैं।

३२०. मल्लीबाबू डालमिया

गया में मैं एक महीना खादी वगैरा के प्रचार के लिए मल्लीबाबू के घर में रही। बड़े सेवाभावी और लगन के कार्यकर्ता थे। कुछ समय अपने बगीचे में भी हमें रखा।

३२१. गौरीशंकर नेवटिया

रामेश्वरजी नेवटिया के चाचा। कलकत्ता में रहते हैं। व्यापार, व्यवहार में बड़े कुशल हैं।

गौरीशंकरजी की पत्नी—त्रिवेणीबाई। घर चलाने में बड़ी कुशल और मिलनसार हैं। देवीप्रसादजी खेतान की बेटी होने से अधिक अपनापन है।

३२२. आनन्दकिशोरजी नेवटिया

गोला की अपनी शुगर मिल में काम देखते थे। ये रामेश्वरजी नेवटिया के चचेरे भाई हैं—श्रद्धावान और संतोषी।

३२३. रामकुमारजी नेवटिया

श्रीगोपालजी के बड़े भाई। नासिक में एक बार आये थे। कई दिनों तक हमारे साथ रहे। जमनालालजी छोटे से बेटे कमल को बाल्टी में बैठाकर कुएँ में उतारते, तब रामकुमारजी कहते, "यह क्या जमनालालजी ! बच्चा डर जायेगा।" ये बड़े हँसमुख और विनोदी स्वभाव के थे। बच्चों को नई-नई कहानियां सुनाते, उन्हें खूब हँसाते और उनके साथ तरह-तरह के खेल खेलते। इसलिए बच्चे भी उन्हें घेरे रहते। ऐसी ही मिलनसार इनकी पत्नी थीं।

३२४. श्रीप्रकाशजी

बनारस के विद्वान डाक्टर भगवानदासजी के बड़े बेटे। ये भी उतने ही

संस्कारवान, विद्वान और सज्जन थे। जमनालालजी इनको बड़े भाई के समान मानते थे और मिलने के लिए इनके घर पर जाया करते थे। इनके घराने से हमारी आत्मीयता शुरू से रही। श्रीप्रकाशजी पहले मद्रास में और पीछे बम्बई में कई साल गवर्नर रहे। अपने देश की गिरती हुई हालत को देखकर बड़े दुःखी हो जाया करते थे।

३२५. सरोजबहन नानावटी

इनमें और भक्तिमान रेहानाबहन में सगी बहनों से बढ़कर प्यार था। ये जेल में भी साथ ही गईं और साथ ही रहीं। दिल्ली में राजघाट के पास 'हिन्दुस्तानी प्रचार सभा' में काका साहब रहते हैं। सरोजबहन वर्षों से उनकी सेवा में बड़ी भक्ति-भावना से लगी हुई हैं। ये कुमारिका हैं।

३२६. नर्मदाप्रसादजी लाट

कलकत्ता में सीतारामजी सेकसरिया आदि से इनकी घनिष्ठता रही। प्राकृतिक चिकित्सा में विश्वास रखनेवाले हैं। खादी का काम वर्षों तक बड़ी लगन से करते रहे हैं।

३२७. अनुग्रहबाबू

इनका पूरा नाम अनुग्रहनारायण सिन्हा था। ये बिहार के मंत्रिमंडल में रहे थे। शुरू से कांग्रेस में थे। जब विनोबाजी की भूदान-पदयात्रा बिहार में चल रही थी, तब ये उनके पास आते रहते थे।

३२८. नानू जाट

जमनालालजी का बड़ा सेवाभावी सेवक। बचपन से ही साथ रहा। देश के

नेताओं की भी सेवा की। बहुतों को पहचानता था और नेता लोग भी उसकी पूछताछ किया करते थे। अब अपनी ओर से ही पेंशन पाता है। राजस्थान में अपने बेटे-पोतों के बीच में सुख से रहता है।

३२९. गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर

करीब चालीस साल पहले जमनालालजी के साथ मैं शांतिनिकेतन गई थी। उस दिन हमें अच्छा सुयोग मिला। बड़े से हॉल में हम लोग प्रतीक्षा में बैठे थे। तब गुरुदेव स्वयं भजन गाते हुए भवन में आये। उनका बड़ा भव्य स्वरूप था। माथे पर सफेद बाल चमक रहे थे। वे बड़ा लंबा चोगा पहने हुए थे। अपनी धुन में गुनगुनाते गाते हुए आ रहे थे। मैं बैठी-बैठी देखती रही…।

कलकत्ते आकर यह बात मैंने भाई सीतारामजी को बताई तो वे कहने लगे, "यह तो बहुत बड़ी बात है। गुरुदेव का गाना उन्हीं के मुख से सुनना भगवद्-कृपा ही है।"

३३०. नन्दिता कृपालानी

गुरुदेव की पौत्र-वधू। सेवाग्राम आया करती थीं। इनके साथ एक सहयोगी भाई भी आते थे। प्रायः ये हर कांग्रेस में मंडप सजाने का काम करती थीं। सादी और सुंदर कला में प्रवीण थीं।

३३१. संत तुकड़ोजी

ये तो वर्धा हमेशा आते थे। बजाजवाड़ी में कई बार आये। सेवाग्राम में बापूजी के पास कई महीने रहे। खंजरी बजाते हुए ये बड़े मगन होकर भजन गाते थे। इनके भजन सुनने के लिए लाखों लोग जमा हो जाते थे। मैं उनको कभी कहती, "बाबाजी, मोहन को फिर बुलाओ न!" तब वे "मोहन एक बार

फिर आओ" वाला भजन तुरंत सुनाने लग जाते थे।

अमरावती जिले में 'मोझरी' नाम के गांव में तुकड़ोजी महाराज का बड़ा आश्रम है। उसे देखने के लिए एक वार राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबू भी गये थे। उनके साथ मैं भी थी। स्वागत में हाथकते सूत की मालाओं का ढेर लग गया। सामूहिक वंदना और प्रार्थना हुई। हजारों की संख्या में कतारबंध सूत-कताई का दृश्य बड़ा अद्‌भुत था। अनुशासन की हद थी। हजारों लोगों को पंगत में एक साथ भोजन करते हुए देखकर बड़ा आश्चर्य हो रहा था। शांति, स्वच्छता और खाने-परोसने की सुघड़ता सभी मन को मोह लेनेवाली थी।

सन् १६५१ में १२ फरवरी के दिन परंधाम में गांधी मेला भरा था। गांधी-घाट पर कलश-स्तंभ के समीप तुकड़ोजी महाराज के देर तक भजन हुए। ठीक १२ बजे राष्ट्रपिता बापूजी को श्रद्धांजलि देने के समय भूदानी बाबा विनोबाजी भी वहां आ गये। मेरी झोली में मेरे हाथ से तकली पर काते हुए सूत का हरे रंग की खादी का दुपट्टा था। मैंने खड़े होकर दो बड़े राष्ट्र-संतों के कंधे पर वह दुपट्टा उढ़ा दिया और दोनों का गठबंधन कर दिया। तब तुकड़ोजी महाराज ने कहा, "यह तो बहुत अच्छा हुआ। हमको हमारी माताजी का आज आशीर्वाद मिल गया। अब विनोबा विचारक और तुकड़ोबा प्रचारक ! ऐसे गठबंधन से खूब काम चलेगा।"

३३२. बनारसीबाई

अमलनेर के प्रताप सेठ की पुत्रवधू। विधवा हो जाने से दुःखी हो गईं। धुलिया में इनका बहुत काम चलता था। इनके पति का देहांत हो जाने से सारा काम बिखर गया। तब ये कमलनयन के पास आई थीं। फिर यहां से आदमी भेजकर सारा कारोबार जमाया।

३३३. लेडी ठाकरसी

पूना में ऊंची टेकड़ी पर इनका बड़ा भारी महल-सा मकान है। नाम है

'पर्णकुटी'। वहां गांधीजी ने हरिजनों के उद्धार के लिए २१ दिन के उपवास किए थे। बापूजी का 'यरवदा मंदिर' (जेल) और 'आगाखां पैलेस' पर्णकुटी से नजदीक ही है। इसलिए जेल में नजरबंद हुए बा-बापू और उनके साथी-सहयोगियों की ये पूरी सार-संभाल रखती थीं।

इनके अपने बच्चे नहीं हैं। पर अनेक शिक्षण-संस्थायें चलाकर ये हजारों बच्चों की माता बनी हैं।

लेडी ठाकरसी का नाम प्रेमलीलाबहन है। ये कस्तूरबा ट्रस्ट का काम शुरू से ही करती आ रही हैं। कुछ साल पहले शांताक्रूज में इनके पति के नाम से बड़ी कॉलोनी बनी है। उसमें श्रीकृष्ण का बड़ा सुंदर मंदिर बनवाया है। वहां भजन, पूजन, शृंगार समारोह होते ही रहते हैं।

३३४. विमला ठकार

बचपन से ही भक्तिमान हैं। पहले संत तुकड़ोजी महाराज के पास रहीं। बाद में दादा धर्माधिकारी के साथ सर्वोदय का काम किया। विनोबाजी के भूदान आदि विचारों का भारत भर में वर्षों तक प्रचार करती रहीं। अब तो देश-विदेशों में भी आती-जाती हैं। आबू में रहकर ध्यान-साधना सिखाती हैं। युवकों के सम्मेलनों में और महिलाओं के शिविरों में जा-जाकर व्याख्यान देती हैं।

३३५. ठक्कर बापा

इनका नाम था अमृतलाल वि० ठक्कर। बापू के पास सेवाग्राम आते तब बजाजवाड़ी में ठहरा करते थे। हरिजनों में इन्होंने बहुत काम किया। भारत भर में कितनी ही संस्थाएं हरिजनों के लिए खुलवा दीं। इन्होंने एक बार जमनालालजी से कहा, "जानकीदेवी को 'हरिजन सेवक संघ' का अध्यक्ष बना दो।"

जमनालालजी ने राधाकिसन को कहा, "ठक्कर बापा जानकीदेवी को 'हरिजन सेवक संघ' का अध्यक्ष बनाने को कह रहे हैं। यहीं बजाजवाड़ी में दफ्तर खोल देंगे।" सुनकर मैं तो ठंडी ही पड़ गई कि 'हे भगवान्! मैं हरिजन

मुहल्ले में जाकर बच्चों की सफाई कैसे करूंगी ?"

३३६. रामकिसनजी डालमिया

हम दानापुर में इनके घर गये थे। ये खादी का कुर्ता पहने थे। एक बटन खुला था। बिलकुल सादे थे। इनकी पहली स्त्री रमाबाई की मां बड़ी भली थीं। उनके रमा एक ही लड़की थी। पिता ने उसे घोड़े पर सवारी करना, साइकल-मोटर चलाना, तैरना सब बचपन में ही सिखा दिया था। ये भगवद्-भक्ति आश्रम, रेवाड़ी में परिवार सहित बहुत दिन रहे थे। तब वहां नर्मदा, रमा, मदालसा पढ़ती थीं। जमनालालजी भी रेवाड़ी आश्रम देखने गये थे। वहां बहुत बड़ा तालाब खोदा जा रहा था। मेहमानों को भी उसमें श्रमदान करना होता था। वहां की गोशाला बड़ी सुंदर और गायें बड़ी प्यारी थीं।

३३७. जयदयालजी डालमिया

रामायण और भागवत के बड़े भक्त हैं। घर में मंदिर है। पूजा-प्रार्थना, कथा-कीर्तन और सत्संग होते रहते हैं। इनके बच्चे भी खड़े होकर मौन से माला जपते हैं। जयदयालजी गोसेवा का काम भी लगन से करते हैं। मुझे बड़ी बहन की तरह मानते हैं। कमला, कमलनयन, मदालसा, उमा, रामकृष्ण सभी इन्हें 'चाचाजी' कहते हैं और इनकी पत्नी को चाचीजी। वे राधारानी की बड़ी भक्त हैं।

३३८. दुल्या जाट

जमनालालजी जब रायबहादुर थे तब दुल्या उनका अर्दली था। उसे सर-कारी पट्टा और चाँदी का बिल्ला पहनकर उनके साथ रहना पड़ता था।

३३९. सिद्धराजजी ढड्ढा

सर्वोदय के प्रमुख कार्यकर्ता। कई साल 'सर्व सेवा संघ' के अध्यक्ष रहे हैं। विनोवाजी के भक्त और जयप्रकाशजी के साथी हैं। उनके कार्यों में उनकी पत्नी का पूरा साथ रहा है। कुछ समय राजस्थान में मंत्री रहे।

३४०. ढेबरभाई

सन् १९५५ में अखिल भारतीय कांग्रेस का अधिवेशन मद्रास से १० मील दूर आवड़ी नामक स्थान में हुआ। कांग्रेस की हीरक जयंती मनाई गई। पंडित जवाहरलालजी प्रत्यक्ष रूप में कांग्रेस के अध्यक्ष-पद से विमुक्त हुए। तब ढेवर-भाई कांग्रेस के अध्यक्ष वने। बाद में इन्हें गोसेवा का और खादी का काम भी सौंपा गया था। हमेशा गांधीजी के विचार और आदर्शों पर चलने का प्रयत्न करते आये हैं।

३४१. पारनेरकरजी

शुरू में सपरिवार साबरमती आश्रम में रहे। बाद में बापू के साथ सेवाग्राम में भी रहे। गोप विद्यालय चलाया। गो-सेवक तो थे ही।

३४२. रणजीत पंडित

इनका नाम था रणजीत। जवाहरलालजी के बहनोई। विद्वान तो थे ही, पर वहुत भले थे। अल्मोड़ा में कपड़खान से ऊपर 'खाली' स्टेट में वड़ा सुंदर बंगला बना हुआ है। वह जमनालालजी से इन्होंने लिया था।

वहां एक रात को देवदार के एक वहुत ऊंचे पेड़ पर भारी विजली गिरी।

सुबह देखा तो उस हरे-भरे पेड़ के सैंकड़ों टुकड़े चारों ओर छितराये हुए थे। यह देखकर रणजीतजी रघुवंश का एक सुंदर श्लोक समझाने लगे—'इमं पुरः पश्यसि देवदारुम् पुत्री कृतो सौ वृषभध्वजेन' इत्यादि। इतना प्रकृति से उन्हें प्यार था और साहित्य का उनके पास भंडार था।

वे लखनऊ के पास हरदोई जेल में रहे थे, तब कमलनयन भी उनके साथ था।

३४३. विजयालक्ष्मी पंडित

पंडित जवाहरलालजी की बहन। इलाहाबाद के आनंद भवन में इन्हें अपनी माता स्वरूपरानीजी के पास हँसते-खेलते पहले-पहल देखा था। तबसे कांग्रेस के सभा-सम्मेलनों में बराबर देखते ही आये हैं। वर्धा कई बार आई हैं।

ये 'संयुक्त राष्ट्र संघ' की अध्यक्षा भी बनीं और अपने देश का मान बढ़ाया।

३४४. सरदार वल्लभभाई पटेल

साबरमती आश्रम में और सेवाग्राम में बापूजी के पास आते रहते थे। वर्धा में अपने साथ बजाजवाड़ी में ही ठहरते थे। १९४० में उमा की शादी में खुद होकर आये थे। इनसे बोलने की हिम्मत नहीं होती थी। एक दिन राधाकिसन ने कहा, "डालडा में रंग मिलाने के बारे में जवाहरलालजी से पूछना है, पर पूछे कौन ?" तब मैं पूछने के लिए वर्किंग कमेटी में चली गई। सरदार देखते ही बोले, "आओ जोग माया ओ !" उनके कहने का मतलब था कि "माताजी यहां भी आ गईं।" इस प्रकार वे स्त्रियों से दूर ही रहते थे। वर्धा के अपने महिलाश्रम को 'बहनों का पिंजरापोल' कहकर जमनालालजी को चिढ़ाया करते थे। बंगले की पंगत में उनकी वजह से बड़ी रौनक रहती थी।

३४५. विट्ठलभाई पटेल

सरदार वल्लभभाई के बड़े भाई। उनकी सफेद दाढ़ी और वाल ऐसे लगते थे जैसे कोई मूर्ति खड़ी हो। सन् १९३९ में नमक-सत्याग्रह के समय वे धारासणा आये थे। हमारे देखते-ही-देखते स्वयं-सेवकों से जगमगाती छावनी घायलों का अस्पताल वन गई। शुद्ध सफेद खादीधारी करीव सात सौ सत्याग्रही घायल होकर धरती पर विछे अपने विस्तरों पर लेटे थे। उनके सारे वदन और माथे पर जगह-जगह से खून वह रहा था। मरहम-पट्टी की जा रही थी। सेविकाएं, माताएं और हम वहनें उनका मुंह पोंछकर पानी पिला रही थीं। पर उनमें इतना जोश भरा था कि वे वार-वार उठकर नमक उठाने के लिए फिर जाने को तड़प रहे थे। यह सब देखकर दादा के समान वयोवृद्ध विट्ठलभाई के हृदय पर वड़ा आघात लगा। वे छावनी के वीच में आकर एकदम व्याकुल होकर खड़े-के-खड़े रह गये। उनकी आँखें भर आईं।

३४६. मणिबहन पटेल

सरदार वल्लभभाई की वेटी। सावरमती आश्रम में साइकल पर रोज वापू के पास आती थीं। वचपन से ही अपने आचार-विचार और सिद्धान्तों की वड़ी पक्की रही हैं। लोग इनसे वात करने में घवड़ाते थे। मणिवहन ने अपने पिता सरदार वल्लभभाई की जीवन भर वड़ी सजगता से सेवा की।

एक वार मैंने उनकी घड़ी की खादी की पट्टी अच्छी तरह सीकर दी। तव उन्हें पता चला कि जानकीवहन भी सिलाई जानती हैं।

३४७. केशरबाई पोद्दार

जमनालालजी की वहन। मैं छोटी थी तव मेरे पास रहने के लिए इन्हें

बच्छराजजी दादाजी ने राजस्थान से बुला लिया था। इनके पति का नाम जोरावरमलजी था। बच्चे छोटे-छोटे थे तभी वर्धा में जोरावरमलजी का स्वर्गवास हो गया। बच्चों को वे जमनालालजी को सौंप गये। तबसे बच्चों की ब्याह-शादी होने तक हम सब एक साथ ही रहे।

३४८. जोरावरमलजी पोद्दार

केशरबाई के पति। इनके तीन सन्तानें हुईं—प्रह्लाद, नर्मदा और श्रीराम। बाद में वर्धा में हमारे पास रहते हुए ही इनका देहान्त हो गया। जमनालालजी को गहरा धक्का लगा। केशरबाई के तीन और मेरे पांच बच्चे सब साथ-ही-साथ पढ़े और पले।

३४९. प्रह्लाद पोद्दार

केशरबाई का बड़ा बेटा। जैसी मेरी कमला हुई वैसे केशरबाई को प्रह्लाद हुआ। बड़ा शान्त और होशियार है। कलकत्ते में व्यापार करता है। बीच-बीच में मुझसे मिलने वर्धा आ जाता है।

३५०. शांताबाई पित्ती

इनको घर-परिवार में सभी 'बड़ी बाई' कहते हैं। शांताबाई पित्ती, शारदादेवी बिड़ला, सरस्वतीदेवी गाड़ोदिया और जानकीबाई बजाज—ये चारों सखियां थीं। चारों खूब हिल-मिलकर रहती थीं। इन सभी की खादी और गोसेवा के प्रचार-कार्य में गहरी निष्ठा रही।

चि० रामकृष्ण कहता था, "इन चार 'सखियों' के बिना बम्बई सूनी है।"

३५१. महावीरप्रसादजी पोद्दार

कलकत्ते के 'बड़े बाजार' में हरीसन रोड पर एक बड़ा खादी भण्डार चलाते थे। सीतारामजी सेकसरिया के साथी थे। उनकी बेटी विजया से इनके बेटे परमा की शादी हो गई। ये जमनालालजी के बड़े भक्त थे। आगे चलकर महावीर-प्रसादजी पक्के प्राकृतिक चिकित्सक बन गये। तब से मैंने इन्हें अपना धर्मभाई मान लिया है। मेरी कोई भी बीमारी होती तो इन्हीं का इलाज चलता था।

३५२. हनुमानप्रसादजी पोद्दार

'कल्याण' पत्रिका के वर्षों तक सम्पादक रहे और गीता प्रेस, गोरखपुर में तो उन्होंने अपना जीवन ही समर्पित कर दिया। वे बहुत विद्वान, भक्तिमान और साधनावान थे। वैसी ही निष्ठावान उनकी पत्नी हैं। गर्मियों में ऋषिकेश के 'गीता भवन' में इनका बड़ा भारी सत्संग जमता था।

शुरू में जमनालालजी ने बम्बई में हनुमानप्रसादजी, रामकिसनजी डालमिया और चिरंजीलालजी जाजोदिया को दुकान खुलवा दी थी। उसी से वे आगे बढ़ते गये।

३५३. पुरुषोत्तमजी पंडित

जावरे में मेरे पीहर में पंडित थे। शालिग्रामजी की पूजा करते थे। मैं बहुत छोटी पांच-छः साल की ही थी, तब मैंने इनसे प्रश्न पूछा था, "जोशीजी ! शरीर पर गोदना गोदने से भगवान के पास जाते हैं ?" उन्होंने समझाया, "नहीं, बाई, शरीर तो शुद्ध है, उसे गोदकर क्यों दाग लगाया जाय !" एक बार मैंने उनसे पूछा कि "भगवान का सबसे बड़ा नाम कौन-सा है," तो उन्होंने कहा, "ॐ।"

३५४. परांजपेजी

वर्धा में हनुमानगढ़ की टेकड़ी पर ये सपरिवार रहते थे। लोगों में इनकी बड़ी मान्यता थी। वहां समर्थ रामदास स्वामी का सुन्दर मंदिर था। हर साल बड़ा उत्सव होता, दही हांडी होती। तब जमनालालजी हम सबको वहां ले जाते थे। बच्चे बड़े खुश हो जाते। उसीके पास की एक टेकड़ी को विनोबाजी ने 'जानकी टेकड़ी' का नाम दिया है।

३५५. डा० पुरंदरे

बम्बई में स्त्री-रोगों के विशेषज्ञ, बड़े नामी डाक्टर। बेटी कमला का भी इन्होंने इलाज किया था। सबकी इन पर गहरी श्रद्धा थी।

३५६. गौरीबाबू

इन्होंने बिहार में विनोबाजी के भूदान-यज्ञ आन्दोलन में बहुत काम किया। बड़ा सादा रहन-सहन है। भूदान-पदयात्रा में मेरा भी बड़ा ख्याल रखते थे।

३५७. मुरलीधर पटवारी

गंगाबाई पोद्दार के भाई। धुलिया में रहते हैं। वे मुझे अपने घर लिवा ले गये। पूरा परिवार भक्तिभाव वाला है। मेरे साथ कमलनयन के बच्चे थे। उन सबको इन्होंने कैरी का पना पिलाया। बच्चों को वह पसन्द आया।

३५८. आर० के० पाटील

जमनालालजी से इनकी घनिष्ठता थी। उस नाते सदा हमारे यहां आते-

जाते रहे। अच्छे जमींदार घराने के अनुभवी विद्वान हैं। पहले कलेक्टर थे। अब विनोबाजी के भूदान, ग्रामदान आंदोलन में वर्षों से लगे हैं। ये सब तरह के कायदे कानून जाननेवाले माने जाते हैं।

३५९. सुशीला पै

कस्तूरबा ट्रस्ट की सेक्रेटरी रही हैं। कई वर्षों तक इनका दफ्तर बजाजवाड़ी, वर्धा में ही था, तब मिलना होता रहता था। ट्रस्ट की बैठकों में मिलती रही हैं। बहनों में अच्छा काम किया है। चर्खा चलाती हैं, खादी नियमित पहनती हैं। स्वतंत्र स्वावलम्बी आश्रमवासिनी की तरह अब पूना में रहती हैं।

३६०. गोपालस्वरूपजी पाठक

अपने देश के ये उपराष्ट्रपति रहे हैं। श्रीमन्‌जी के साथ मैं बदरीनाथ गई थी तब वहां वेदभवन का उद्‌घाटन करने आये थे। बड़े भक्तिमान हैं। इनकी दो बेटियां श्री आनन्दमयी मां के आश्रमों में रहती हैं।

३६१. दामोदर पंत

बच्छराज दादाजी के समय गांधी चौक के ऊपर अपनी दुकान के मकान में हम लोग रहने लगे तब ये अपने सामने सड़क के उस पार रहते थे। अब भी उनके बेटे बाबूराव, बहू और नाती, पोते वहीं रहते हैं।

कमलनयन जन्मा था, तब दुकानदारों ने खुशी के मारे बन्दूकें छुड़ाई थीं। उस समय दामोदर पन्त ने कहा, "खुशी मनाने के लिए बन्दूकों की इतनी आवाज क्यों कर रहे हो ! जच्चा-बच्चा के कानों का ख्याल तो करो !"

पहले के लोगों में कितना अपनापन था !

३६२. अप्पा पंत

औंध के राजासाहब के, जिन्होंने समाज में 'सूर्य नमस्कार' का बड़ा प्रचार किया, सुपुत्र। वर्धा कई बार आये हैं। जमनालालजी उन्हें बहुत प्यार करते थे। वे भी अपने बच्चों के साथ खूब हिल-मिल गये हैं। वर्षों से विदेशों में भारत के राजदूत का काम बड़ी अच्छी तरह संभालते रहें। विनोबाजी पर इनकी बड़ी श्रद्धा है।

३६३. अप्पासाहब पटवर्धन

अत्यन्त संस्कारी ब्राह्मण-कुल में जन्म हुआ। गांधीजी का रंग चढ़ा, तबसे कांग्रेस अधिवेशनों में पाखाने-सफाई का काम बड़ी निष्ठा से संभालते थे। ग्राम-सफाई के लिए तरह-तरह के पाखाने बनवाते रहे। शहरों में भंगी-कष्ट-मुक्ति के प्रयोग करते ही रहते थे।

३६४. परमानन्दजी जोगाणी

जमनालालजी के साथ बचपन में एक ही स्कूल में पढ़ते थे। इनकी बेटी बहुत जल गई थी, यह याद करके अब भी दुःख होता है।

सन् १९२३ में नागपुर के झण्डा-सत्याग्रह में जमनालालजी के साथ सैकड़ों लोग पकड़े गये। उनको १८ महीने की सजा होने की बात सुनकर तो नगर में हाहाकार मच गया था। लेकिन दो महीने में ही सब छूट गये। वर्धा में खूब खुशियां मनाई गईं, जुलूस निकाला गया, जेल जाकर आये हुए सत्याग्रहियों का जोरदार स्वागत हुआ। तब परमानन्दजी और कइयों को लगा कि दो महीने में ही छूट जायेंगे, यह ख्याल होता तो हम भी जेल चले जाते !

३६५. अम्बालाल पटेल

कमलनयन के पुराने साथी। साबरमती आश्रम में रहे। विद्यापीठ में साथ पढ़े। एक बार जब मैं मदालसा के पास अहमदाबाद के राजभवन में ठहरी थीं तब ये मुझसे मिलने आये थे।

३६६. जहांगीरभाई पटेल

बम्बई में जुहू पर समुद्र के किनारे इन्होंने 'गांधीग्राम' बसाया है। ये शांति-कुमार मोरारजी के दोस्त हैं। कस्तूरबा ट्रस्ट के मेम्बर के नाते बैठकों में मिलते रहे हैं। कभी मुझे भी अपने यहां बुलाते हैं।

आगाखां महल से छूटने के बाद बापूजी कुछ दिन जुहू में इनके यहां भी ठहरे थे।

३६७. जगन्नाथ पंडित

जावरे में इनका बड़ा मान था। मैं छोटी थी तब मंदिर जाते समय इनके घर भी जाया करती थी। पंडितजी को मेरी मां बहुत मानती थीं।

३६८. पन्नालालजी पित्ती

बम्बई के राजा गोविन्दलालजी पित्ती के छोटे भाई। हैदराबाद में रहते हैं। समाज में अच्छा मान है। इनके यहां मेरा काफी आना-जाना रहा है।

३६९. गोविन्दलालजी पित्ती

ये बम्बई में ही रहे। मारवाड़ी समाज में 'समाज-सुधार' का बहुत काम किया। दक्षिण अफ्रीका से गांधीजी हिन्दुस्तान आये तब इन्होंने मारवाड़ी विद्यालय में उनका सम्मान किया था। तबसे जमनालालजी के साथ इनकी घनिष्ठता बढ़ती गई। मलाबार हिल पर इनके बंगले में हम सपरिवार काफी दिनों तक एक साथ रहे। गोविन्दलालजी को घर में सब लोग 'साहबजी' ही कहते थे। हैदराबाद में राजा की पदवी होने से इन्होंने राज भी भोगा और साहबी भी।

इनकी पत्नी शान्तीबाई से मेरा अब भी गहरा आंतरिक प्यार है।

३७०. प्रभाकरजी

मैं तो इन्हें 'छोटा गांधी' कहती हूं। वैसी ही धोती, वैसा दुपट्टा और कमर में घड़ी भी उसी तरह लटकाते हैं। वर्षों से सेवाग्राम में आश्रमवासी होकर रह रहे हैं। प्राकृतिक चिकित्सा के काम में लगे रहते हैं। सन् १९४२ के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के समय बजाजवाड़ी में भंसालीभाई ने आष्टी-चेमूर के अत्याचारों को रोकने के लिए ६० दिन के उपवास किये थे। तब प्रभाकरजी उनकी दिन-रात बड़ी लगन से सेवा करते थे। भंसालीजी के उपवास छुड़ाने में कमलनयन ने रात-दिन एक कर दिया था।

प्रभाकरजी आन्ध्र के हैं। पहले क्रिश्चियन थे। अब गांधियन हो गये हैं।

३७१. प्रह्लादजी वैद्य

बड़े सरल स्वभाव के हैं। जमनालालजी ने इनको वैद्यकी सीखने के लिए भेजा, तब पांच रुपये हाथ में दिये थे। जब वैद्य-विद्या सीखकर आये तब वही

पांच रुपये वापस लाये। आजकल के लड़के तो हजारों रुपये खर्च करते हैं तव कहीं वैद्यकी सीखते हैं। प्रह्लादजी को सीकर में अपने 'कमरे' के साथ ही घर बनवा दिया था, वहीं रहते हैं। सबकी सेवा करते हैं। संतोषी हैं।

प्रह्लादजी वैद्य की वेटी लक्ष्मी। इसके पति की रेलगाड़ी में इंजन का काम करते हुए कटकर मृत्यु हो गई थी। इसकी वेटी वनस्थली में पढ़ती है।

३७२. चंद्रशंकर शुक्ल

महादेवभाई देसाई की तरह ये भी कई वर्षों तक बापूजी के सेक्रेटरी रहे। इनके अक्षर सुन्दर थे। पत्र देखकर खुशी होती थी।

३७३. प्रेमाबहन कंटक

शुरू में बापूजी के साबरमती आश्रम में रहीं। बाद में सासवड़ में शंकररावजी देव के साथ सेवा का काम करती रहीं। अब भी वहीं रहती हैं। सेवाग्राम पर किताब लिखी है। सिद्धान्तों की पक्की हैं। कुमारिका हैं। शुद्ध, सात्विक जीवन है।

३७४. डा० प्रफुल्लचन्द्र घोष

कांग्रेस वर्किंग कमेटी में वर्धा आया करते और बजाजवाड़ी में ही ठहरते थे। सबके साथ पंगत में बैठते थे। इनका छोटा कद और घुंघराले बाल अच्छे लगते थे। इनको सब 'प्रफुल्लबाबू' कहते थे। बाद में ये बंगाल के मुख्यमंत्री भी रहे। अच्छा नाम कमाया।

३७५. ओमप्रकाश जी त्रिखा

विनोबाजी के पास 'सर्व सेवा संघ' के सभा-सम्मेलनों में और अब परमधाम

में आते रहते हैं। बड़े सेवाभावी हैं। पट्टीकल्याणा में इनका आश्रम है। मैं वहां गई थी। इनके कुएं का पानी इतना मीठा है कि मैं कहती, "इसमें शक्कर डाली है क्या ?"

३७६. विद्या दीदी

पंजाब की रहनेवाली दुबली-पतली, ऊंचे कद की खादी की सफेद साड़ी में बड़ी प्यारी लगती थीं। जमनालालजी ने 'गोसेवा संघ' में लिया था तबसे गाय का घी-दूध ही लेती थीं। सबकी सेवा करनेवाली अच्छी बहन थीं। विनोबाजी के छोटे भाई शिवाजी धुलिया में बहुत बीमार हो गये थे, तब शिमला में इनके आश्रम में काफी दिन रहे थे।

३७७. बिरदीचन्दजी पोद्दार

जमनालालजी के मामा। गोद के दादा बच्छराजजी की साख के बड़े वेदान्ती थे। वर्धा में अब जहां मगनवाड़ी है वहां पहले अपना बगीचा था। तब शिवजी की पूजा करने मामाजी वहां नियमित आया करते थे। जमनालालजी पर उनका बहुत स्नेह था।

वे पहले वर्धा में ही रहा करते थे। बाद में नागपुर में रहने लगे। इनकी पत्नी—मामीजी—भी अपने भानजे पर बड़ा प्यार करती थीं। नागपुर में अपने रिश्ते में ही एक जमनादासजी रहते थे। दोनों नाम एक जैसे होने के कारण जमनालालजी को मामीजी 'जगनलाल' कहा करती थीं। ये प्यार से उनको 'भाभी' कहते।

शादी के बाद मैं बड़े तिथि-त्यौहारों पर इन्हीं के घर मिलने और पांव लगने जाया करती थी। बहू-बेटी से भरे-पूरे घर में बड़ा मन लगता था।

३७८. जमनालालजी बजाज

छोटी उम्र में हमारी शादी हो गई। न जमनालालजी मुझे जानते थे, न मैं

उन्हें पहचानती थी। मैं घूंघट में रहती। सबने सुना था कि मैं सुंदर नहीं हूं। लोग पूछते, "जमनालाल कैसी बहू लाया है?" जमनालालजी कहते, "हमने कोई देखा थोड़े ही था।"

एक बार एक ब्राह्मणी आई। उसने बड़-सावित्री की पूजा करने की बात बताई। मैंने सोचा, बड़-सावित्री की पूजा करने से क्या होगा? मैं सती हो जाऊं तो लोग मेरी पूजा करेंगे। पर सती होना तो मेरे हाथ की बात थोड़े ही थी। मेरे सामने सवाल यही था कि पति के जीते-जी सती कैसे हुआ जाय? यह बात मैंने एक दिन विनोबाजी को सुनाई तो वे चौंक पड़े और ऐसे हँसे कि मुंह का दही न अंदर जाय, न बाहर आये।

जमनालालजी बापू के 'पांचवें पुत्र' बने। मैं भी उनकी पुत्रवधू बनी। हमें बापू का अनमोल प्यार मिलता रहा। आज भी वही हमारी धरोहर है।

३७९. बालुभाई मेहता

खानदेश में धुलिया के रहनेवाले हैं। गांधीजी और विनोबाजी के विचारों में गहरी श्रद्धा रखते हैं। अब कई वर्षों से पवनार के ब्रह्म विद्या मंदिर में 'बानप्रस्थ आश्रम' का जीवन बिता रहे हैं। विनोबाजी उनको कसरत सिखाते तो उनकी हड्डियां कांपने लगती थीं। कभी-कभी बाबा इनके साथ सतरंज का खेल खेलने लगते हैं। सीधे-सादे संत ही हैं।

३८०. सुभाषचन्द्र बोस

कांग्रेस वर्किंग कमेटी में वर्धा आते थे, तब बजाजवाड़ी के बंगले में ऊपर ठहरते थे। एक बार वे बीमार हो गये और हफ्ते भर रहे उस समय हम कोई नहीं थे। अकेले ओम् ने ही उनकी सार-संभाल की थी। विलायती कपड़ों के बहिष्कार के लिए सत्याग्रह करने मैं कलकत्ते गई थी, तब बालीगंज में भाई सीतारामजी सेकसरिया के घर ठहरी थी। वहां सुभाषबाबू मिलने आये और अपने ऑफिस में चलने के लिए कहा। वे बोले, "हम आपका सब इंतजाम कर देंगे।"

वाद में तो यह 'नेताजी' बने और विदेशों में भारत की आजादी के लिए बहुत काम किया।

३८१. सुभाषबाबू का सेवक

एक बार सुभाषबाबू किसी कारणवश वर्धा में कहीं दूसरी जगह ठहर गये। सरदार वल्लभभाई ने कहा, "सुभाषबाबू चाहे कहीं उतरें, उनका नौकर तो बजाजवाड़ी की पंगत में ही आयेगा—मक्खन, रोटी खाने के लिए।"

३८२. कमलनयन बजाज

बजाज-घराने में बच्छराजजी के यहां 'ओछत' थी, याने संतान का अभाव था। कई पीढ़ियों से दत्तक ही लेते आये थे। उसी तरह जमनालालजी को भी गोद लाये थे। इसलिए आशा तो किसी को नहीं थी कि इनके बच्चे होंगे, पर पहले कमला हुई, बाद में २३ वर्ष की उम्र में कमल पैदा हुआ। तब गांधी चौक में बंदूकें छूटी थीं। अब तो क्या से क्या हो गया!

जिस दिन कमल का स्वर्गवास हुआ, मैं लोगों को गोपुरी में गोशाला दिखाते हुए पैदल घूम रही थी। एकदम बुलावा आया, "विनोबाजी बुला रहे हैं।" मैंने सोचा—"विनोबाजी मुझे क्यों बुलावेंगे? वे तो भगवान को भी कब बुलाते हैं? लेकिन अगर बुलाया है तो दाल में कुछ काला है। इस तरह अजीब-सा तो लगा, पर मोटर आई थी तो सहज ही पवनार पहुंच गई। उस समय विनोबाजी और वहाँ का वातावरण बहुत गंभीर था। मैं विनोबाजी के कमरे में उनके तख्त के पास चुपचाप बैठ गई। कुछ देर बाद विनोबाजी धीरे से बोले, "बात तो बहुत कठोर है, पर कहनी पड़ेगी।" सुनकर मै आश्चर्यचकित हो गई कि ऐसी क्या बात होगी? इतने में विनोबाजी ने कहा, "अहमदाबाद के राजभवन से श्रीमन्‌जी का फोन आया है कि 'कमलनयन देवलोक को गया," सुनकर मैं तो सन्न रह गई।

सभी लोगों को कमल के जाने का बहुत धक्का लगा है। वह लोगों के दिल में समाया हुआ था। सब लोगों को ऐसा महसूस होता है, जैसे हमारा ही कुछ गुम

गया। पर भगवान् की कृपा ही है कि उसकी शांतिपूर्वक मृत्यु हुई और उसने किसी को तकलीफ नहीं दी। बापू के साबरमती का तट पाया। किसी की सेवा लिए बगैर ब्रह्मलोक चला गया। वह योगिराज था। वैसे तो जन्म भर तपा-ही-तपा। पीछे भी किसी की सेवा नहीं ली और सारे परिवार को हरा-भरा छोड़ गया।

३८३. सावित्री बजाज

कमलनयन बजाज की पत्नी। लोगों ने कहा कि कहां इनकी रहनी-करनी, कहां आश्रम की सादगी! इनकी जोड़ी कैसे निभेगी? लेकिन दोनों ने खूब निभाया। जमनालालजी के जाने के बाद सावित्री मेरे पास गोपुरी की झोपड़ी में रही, बापू के पास सेवाग्राम आश्रम में भी रही और जेल-महल में भी रहकर आई।

३८४. रामकृष्ण बजाज

यह छोटा था तभी हम साबरमती आश्रम में रहने लगे थे। एक दफे इसको बुखार हो गया। मैं इसको बंद करके आश्रम की गोशाला में दूध लेने चली गई। मैंने कहा, "तू अंदर से बंद कर लेना। मैं आवाज दूं और मेरी आवाज को पहचाने तभी दरवाजा खोलना।" वह चुपचाप अंदर अकेले ही लेटा रहता। अभी भी वह बड़ा सरल है।

बचपन में बजाजवाड़ी में 'घनचक्कर समाज' बनाया था। अब दुनिया भर में चक्कर लगाता है।

व्यक्तिगत सत्याग्रह के समय १८ साल से कम था, फिर भी बापूजी से इजाजत ले ही ली। उन्होंने इसकी ओर से बयान भी लिखकर दिया और यह कई साल जेल में रहा। वहीं काकाजी और विनोबाजी का अधिक सत्संग और संस्कार इसने पाया।

३८५. विमला बजाज

रामकृष्ण की पत्नी। विमला छोटी थी तब वर्धा आई थी। जमनालालजी ने गोद में लेकर कहा, "लड़की बहुत होशियार है।" आज भी वह बड़ी होशियार और कलाकार है। संगीत की बड़ी प्रेमी है। मेरी सेवा में उसका वर्धा में भी मन लग जाता है।

३८६. राहुल बजाज

कमलनयन का बड़ा बेटा। लोग तारीफ करते हैं कि राहुल अपने काम में कुशल है और सबसे स्नेह रखता है। यह सुनकर 'बाप से बेटा सवाया' की बात याद आती है।

राहुल की पत्नी रूपा। यह अपना घर बड़ी कुशलता से और शांति से चलाती है। कमलनयन भी इसका मान करता था। इनके राजीव, संजीव दो बेटे हैं। मैंने शुरू में इन्हें देखा तो लगा कि ये तो राम-लक्ष्मण की जोड़ी है। छोटी बच्ची सुनयना को जब देखा तो अपनेपन से झट मेरी गोद में आ गई।

३८७. शिशिर बजाज

कमलनयन का छोटा बेटा। बचपन से ही शरीर नाजुक, पर और सब तरह से मेहनती है। कस्तूरबाग्राम इंदौर में विनोबाजी के स्त्री-शक्ति पर सात दिन तक सुबह करीब साढ़े तीन बजे प्रवचन होते थे, तब नियमित जल्दी उठकर हमारे साथ बड़े ध्यान से प्रवचन सुनता था। अब व्यापार में लग गया है।

शिशिर की पत्नी मीनाक्षी कलकत्ते के खानदानी जालान घराने की संस्कारी लड़की है। इसका भी वर्धा में खूब मन लगता है।

३८८. शेखर बजाज

रामकृष्ण का बड़ा बेटा। मस्त लड़का है। सुना है, व्यापार संभालने में भी अच्छी समझ है। शेखर की पत्नी किरण वृंदावन के धानुका-परिवार की लड़की है। किरण के दादा जमनालालजी के मित्र थे। अच्छा संस्कारी घराना है। लड़की भी बड़ी विचारवान है। विनोबाजी से अच्छे प्रश्न पूछती है।

३८९. मधुर बजाज

रामकृष्ण का मंझला बेटा। जैसा नाम वैसा ही स्वभाव। विमला की तरह इसे भी कला और संगीत का शौक है। इसने अपनी बिटिया का लाड़-प्यार का नाम 'सरगम' रखा है। मधुर के विवाह पर विनोबाजी ने आशीर्वाद लिखकर दिये थे, "सत्य, संयम, सेवा=गृहस्थाश्रम।"

मधुर की बहू कुमुद। कलकत्ते के बागलों की बेटी है। जब विनोबाजी से मिलाने ले गये तो उन्होंने 'विष्णु-सहस्रनाम' के इस अंश पर निशान लगा दिया—"कुमुदः कुंदरः कुंदः।"

३९०. नीरज बजाज

रामकृष्ण का छोटा बेटा। मैं बंबई जाती हूं तो इसको चंडु उड़ाते (टेबल टेनिस खेलते) हुए ही देखती हूं। मैं कहती हूं—यह भी कोई काम है। अंग्रेजी अखबार से चंडु उड़ाने में इसका नाम आता है और पढ़ने में भी मन लगता है।

अब तो चंडू उड़ानेवाले खेल में दुनिया भर में नीरज का नाम और तस्वीर अखबार में आती है। टेलिविजन पर भी दिखाई देता है। नीरज को इस छोटी उम्र में राष्ट्रपति ने 'अर्जुन' की पदवी दी है।

३९१. सुमन जैन

कमलनयन की वेटी। इसका विवाह दिल्ली के जैन-परिवार में हुआ है। ये रहती है वंबई में, पर वर्धा इसको बहुत पसंद है। अपने ससुराल में जैन धर्म के नीति-नियम भी अच्छी तरह पालती है।

सुमन के पति नरेश दिल्ली के एक प्रतिष्ठित जैन घराने के हैं। उनका और परिवार के सभी लोगों का स्वभाव वड़ा सरल है और सभी धार्मिक वृत्ति के हैं।

३९२. राधाकृष्ण बजाज

जमनालालजी के वड़े भाई माधोजी का वेटा। इसके मन में उदारता है। यदि यह चाहता तो व्यापार बढ़ा सकता था, लेकिन सेवा के नाते गोसेवा और समग्र-सेवा में लग गया। विनोबाजी के कहने से सर्वोदय साहित्य का प्रकाशन और प्रचार भी कई साल तक करता रहा।

३९३. अनसूया बजाज

श्रीकृष्णदासजी जाजू की वेटी। राधाकिसन की पत्नी। जमनालालजी ने ही यह संवंध कराया था। राधाकिसन के साथ अनसूया भी समाज-सेवा में लगी रहती है। विनोबाजी के पास ही पढ़ी है। बच्चों को अच्छी शिक्षा और संस्कार दिये हैं।

३९४. गौतम बजाज

राधाकिसन का वेटा। जव यह जन्मा, इसके माथे पर लाल नसों का तिलक-सा लगता था। मैं कहती—यह विष्णु का अवतारी है। विनोबाजी के पास रहता है। अच्छा संस्कारी है।

३६५. रामेश्वर बजाज

गोरीलालजी और भगवानदासजी दोनों भाइयों के बीच में यह एक ही बेटा हुआ। बच्छराजजी के गोद लाये रामधनजी के परिवार का है। रामेश्वर व्यापार करने में होशियार है और समाज-सेवा भी करता है। शांत स्वभाव का और सात्विक विचार का है।

३६६. बनारसीदास बजाज

बनारस के हैं। इनके पिता विदेश में बहुत समय रहे थे। इनकी पत्नी रुक्मणी मगनलाल गांधी की बेटी है। गुजराती और मारवाड़ी की शादी करवाकर समाज में जमनालालजी ने जाति-भेद मिटाने का उदाहरण पेश किया।

३६७. नागरमल बजाज

जमनालालजी का चचेरा भाई। सीकर जिले के 'कासी का बास' गांव में ये सब रहते थे। नागरमल बचपन से बड़ा निडर और बहादुर था। एक बार गांव के पास एक पेड़ के नीचे शेर को बैठा देखकर और सब साथी डरकर भाग गये, नागर अकेला शेर के पास गया और जोर से उस पर लोटा फेंककर मारा। शेर नागर पर झपटा और उसे घायल करते हुए आगे निकल गया। खून से लथपथ होकर वह घर लौट आया। मां से कहा, "घबराओ नहीं, उस गीदड़ के मारे मैं थोड़े ही मरूंगा।" पर वह बच नहीं सका। जमनालालजी ने उसकी बहादुरी की याद में वह लोटा सीकर के संग्रहालय में रखवा दिया था।

३९८. गंगाबिसनजी बजाज

जमनालालजी के चचेरे भाई। जमनालालजी तो अकसर जेल में रहते थे। ये दुकान का काम चलाते थे। बोलते कम हैं। सरल स्वभाव के हैं। अच्छी सलाह देते हैं।

पहले तो वर्धा में ही रहते थे, अब ज्यादातर नागपुर में रहने लगे हैं।

३९९. लक्ष्मीबाई बजाज

गंगाबिसनजी की पत्नी। यह शादी करके मेरे पास आई और साथ ही रही। तबसे मैं इसको अभी तक 'बिनणी' कहती हूं। इनकी छोटी बहुएं कहती हैं "माताजी, आप इनको 'बिनणी' कहेंगी तो हमें क्या कहेंगी ?" मैं कहती हूं, "छोटी बिनणी तुम हो, बूढ़ी बिनणी यह है ना ?"

४००. बबलभाई मेहता

गुजरात के निष्ठावान, खादीधारी, रचनात्मक कार्यकर्त्ता। बालक-बालिकाओं से बड़ा स्नेह रखते हैं। शिक्षण-संस्थाओं में विद्यार्थियों से इनकी मित्रता हो जाती है। रविशंकर महाराज और जुगतरामभाई के ये साथी हैं।

४०१. जेठालाल जोशी

अहमदाबाद की राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के स्तंभ। अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के समारोहों में वर्धा आते हैं तब मुझसे भी मिलते हैं। बापू-विनोबा के प्रति गहरी श्रद्धा रखते हैं। जमनालालजी का इन पर बड़ा स्नेह था।

४०२. महर्षि कर्वे

पूना में इनकी बहुत बड़ी महिला-संस्था देखने जमनालालजी हमको ले गए थे। बच्चे भी साथ में थे। घंटों ज्ञान की बातें करते रहे। मुझे उनकी बातें बहुत अच्छी लगीं। कर्वेजी और उनकी पत्नी ने जीवन-भर कन्या-शिक्षण का काम किया और महिलाओं का समाज में बहुत मान बढ़ाया। इन्होंने १०१ साल की उम्र पाई और 'पूर्ण है यह पूर्ण है वह, पूर्ण से निष्पन्न होता पूर्ण है', ईशावास्योपनिषद् की इस भावना को उन्होंने अपने जीवन में चरितार्थ कर दिखाया।

४०३. लाला अचिन्तरामजी

दिल्ली में पार्लियामेंट के मेम्बर थे। पुरुषोत्तमदासजी टंडन इनके यहां ही रहा करते थे। सारा परिवार खादी पहननेवाला था। उनका घर रचनात्मक कार्यों की एक संस्था के जैसा ही लगता था। इनकी पत्नी बड़ी सेवा-भावी हैं।

४०४. माणक (इंगले)

हमारी सेवा ईमानदारी से करता था। इसे अगर कोई काम बता देते तो जब-तक पूरा न कर ले, करता ही रहता था। इसलिए मैं इसे खास कोई काम नहीं बताती थी।

बजाजवाड़ी से आते समय दूसरे को ट्रक से बचाने दौड़ा तो बिजली के खम्भे के नीचे दबकर घायल हो गया। बहुत इलाज किया, पर बच न सका।

माणक का बेटा अशोक मेरे पास आता है। बजाजवाड़ी में ही रहता है और कॉलेज में पढ़ाता है।

४०५. केशु

जापानी नौजवान, जो करीव एक साल पवनार आश्रम में रहा। थोड़े समय में अच्छी हिंदी सीख गया। साफ-सफाई और वगीचे में वड़ी मेहनत से काम करता था। अव श्रीलंका में वौद्ध-भिक्षु वन गया है। वड़े मीठे स्वभाव का है।

४०६. बलदेवदासजी बिड़ला

घनश्यामदासजी के पिताजी। मैं इनके यहां वनारस गई थी। श्रद्धावान मार-वाड़ी रीति के थे। मैं जाकर इनके पांव पड़ी। तव घनश्यामदासजी की माताजी वोलीं, 'वहू, वस्त्रालंकार पहनकर रहना सौभाग्य के लक्षण होते हैं।" मैं तो जैसी थी वैसी ही चली गई थी। वे सदा सौभाग्य का पूरा शृंगार किये रहती थीं। रोज गंगा नहाने जाया करती थीं।

४०७. जुगलकिशोरजी बिड़ला

घनश्यामदासजी के वड़े भाई। वड़े दानी थे। मैं इनके पास कूपदान लेने गई, तव जलाशयों के लिए ग्यारह सौ रुपये दिये। दिल्ली के बिड़ला मंदिर की सारी तस्वीरें और श्लोक इन्होंने मुझे श्रद्धा और प्रेम के साथ दिखाये थे और कहा कि इस मंदिर में अछूत भी दर्शन के लिए आते हैं।

४०८. रामेश्वरदासजी बिड़ला

ये वहुत वर्षों तक वच्छराज कंपनी के चेयरमैन रहे। इनका सदा वंबई में ही रहना हुआ। इनकी पत्नी शारदावाई के साथ मेरा गहरा स्नेह था।

४०९. शारदादेवी बिड़ला

रामेश्वरजी बिड़ला की पत्नी। इनका-मेरा घनिष्ठ प्रेम था। मैं उनकी बीमारी में डाक्टर लोगों के रोकने के बावजूद उनके पास चली जाती थी। पर उनकी अंतिम बीमारी में बंबई से कमल और राम का फोन आया, "शारदादेवी को दिल का दौरा पड़ा है। मिलने आ जाओ।" उस समय मैं जा नहीं सकी। उनके जाने के बाद फिर फोन आया, "अब आ जाओ।" तब मैंने कहा, "मैं शारददेवी को ही मिलने बंबई आती थी। अब क्या आऊं?"

४१०. घनश्यामदासजी बिड़ला

इनसे बचपन में जमनालालजी की पहचान हुई और घनिष्ठता बढ़ती ही गई। सन् १९२९ से बापूजी हर साल कांग्रेस में जाने के पहले वर्धा के सत्याग्रह आश्रम में एक महीना रहते थे। तब घनश्यामदासजी का तंबू भी शिक्षा मंडल के कुएं के पास लग जाता था और वे यहीं रहते थे। बाद में जब बापूजी सेवाग्राम रहने लगे तब भी इनका आना-जाना बराबर रहा।

घनश्यामदासजी सेवाग्राम में सूत कातते थे। उससे खादी बनवाई थी। उसमें से शारदाबाई ने मुझे साड़ी दी और जमनालालजी को टोपी का कपड़ा।

आखिरी दिन उनकी बीमारी की खबर अचानक ओम ने गांधी चौक से सेवाग्राम बापूजी के पास भेजी, तब घनश्यामदासजी भी उनके पास ही बैठे थे। बापू को चिंतित देखकर वे बोले, "बापूजी, अपन वर्धा पहुंचेंगे तबतक तो जमनालालजी अपने को हँसते हुए मिलेंगे। ऐसे ही कुछ चक्कर आ गया होगा।" पर विधि-विधान के आगे किसकी चलती? पीछे तो घनश्यामदासजी ने भाईजी की याद में बड़ी भावना भरी एक किताब ही छपा दी। प्रसिद्ध उद्योगपति। कई किताबें लिखी हैं।

४११. बृजमोहनजी बिड़ला

इनका सुखी परिवार है। कलकत्ता में रहते हैं। इनके पास मैं कूपदान के लिए गई थी। तव इन्होंने यह भी कहा, "कलकत्ते की सड़कों में गायें फिरती हैं और सफाई की वहुत जरूरत है।"

४१२. गोपीबाई बिड़ला

जमनालालजी इन्हें वेटी की तरह मानते थे। वर्धा की पंगत के लिए फल सुधार देती थीं। ये जवलपुर के सेठ गोविंददासजी के घराने की बेटी हैं। अव बंवई में विड़ला वालिका विद्यालय चला रही हैं।

४१३. सन्तबालजी

संत। एक बार वर्धा आये थे। लक्ष्मीनारायणमंदिर के पीछे उन्हें उतारा था। गांव में भिक्षा मांगने जाते तब मैं भी उनके साथ भिक्षा ला कर खाती थी। सारा सामान लेकर जब जाने लगे तब मैंने कहा, "संतवालजी, पांव में कुछ पहन लिया करो, कंकर-पत्थर चुभ जायेंगे।" कहने लगे, "मैं कपड़े के जूते पहन लेता हूं, आप चिंता न करें।" मदालसा के साथ मैं इनके आश्रम में चिंचणी गई थी। गोसेवा के बारे में बहुत चर्चा हुई।

४१४. कमला

इनकी बहन गोदावरी और यह रेवाड़ी आश्रम में रहती हैं। मदालसा इनके साथ रही है। इनकी मौसी भूदान में विनोबाजी के साथ पैदल चलती थीं। दोनों बहनें बड़ी श्रद्धावान और सेवाभावी हैं। जमनालालजी के बुलाने पर कई बार वर्धा आईं। इनके पिता भगतजी कृष्ण भगवान् के भक्त थे। 'मोरपंखवाले' कहलाते थे।

४१५. बदामीबाई

ये रेवाड़ी आश्रम में रहती थीं। कमला, गोदावरी की तरह मदालसा भी इनको 'भुआजी' कहती थी। बच्चियों को बहुत प्यार करती थीं। सारा जीवन भगवद्भक्ति आश्रम में ही बिता दिया।

४१६. बलवन्तसिंहजी

सेवाग्राम की गोशाला में बापू के पास रहते थे। एक दिन गाय के बछड़े को लेकर बापू की कुटिया में दिखाने आये। बापू ने बछड़े को कान पकड़कर प्यार किया। बलवंतसिंहजी बछड़े का वजन करके लाये और बापू को बताया कि इतना वजन है। ये अब राजस्थान में गोसेवा का काम करते हैं। इन्होंने 'बापू की छाया में' अच्छी किताब लिखी है।

४१७. शंकरलाल बैंकर

खादी के प्राण रहे। इन पर जमनालालजी का बहुत स्नेह था। वर्धा में घर के जैसे रहते थे। जीवन-भर खादी का ही काम और खादी से गरीबी कैसे दूर हो, यही चिंतन, यही प्रयत्न करते रहे।

४१८. रत्नम्मा

रत्नमयी बहन महिलाश्रम में शिक्षिका थीं। नागपुर जेल में २१ दिन तक पानी पर उपवास में रहने पर भी बराबर काम करती थीं। इनके पति सीताचरण दीक्षित महिलाश्रम में शिक्षक का काम करते थे। ये मद्रासी बाई हैं। दिल्ली में काकासाहब के काम में मदद देती हैं। हिंदी के प्रचार के लिए दक्षिण अमरीका गई थीं।

४१९. माया बनर्जी

कलकत्ते में विनोबाजी को गंगासागर ले गईं—अपने राजकीय अधिकार से। बरसात में बहुत कीचड़ थी। उसी में से हम गये। विनोबाजी समुद्र में जहाज के ऊपर के भाग में बैठ गये। उनके पास मैं खड़ी रही और नाचने लगी। विनोबाजी ने कहा, तुम मीराबाई हो तो मुझे और जोश आ गया। बाद में माया हमें बंगले पर ले गई। तब बता रही थी, "संक्रांत के दिन कपिलदेव दीखते हैं तो उस दिन लाखों लोग दर्शन के लिए आते हैं।" पर हम गए, उस दिन अधिक भीड़ नहीं थी।

४२०. पेमा बलाई

यह हरिजन था। कनीरामजी के पास छोटेपन से ही सीकर में रहता था। बाजार का काम बहुत होशियारी से करता था। इस पर सबका भरोसा था। बाजे की पेटी पर भजन भी बहुत अच्छे गाता था।

४२१. सागरमलजी बियाणी

काकाजी इनको सीकर से ले आये और बजाजवाड़ी की व्यवस्था देखने के लिए रखा था। बाद में बंबई में बच्चों के पास भी काफी रहे। बड़े रईसी तबीयत के थे।

४२२. बृजलालजी बियाणी

अकोला में मारवाड़ी समाज के नामी नेता थे। जमनालालजी और गांधीजी को मिलने वर्धा आया करते थे। हम सभी से बड़ा स्नेह मानते थे। शानदार,

नाजुक प्रकृति के, पर भाषण देने में बड़े कुशल थे।

काकाजी ने इनकी बेटी सरला का व्याह घनश्यामदासजी बिड़ला के बेटे वसंतकुमार से पक्का कराया तब दोनों को वर्धा बुलाया था। पवनार से सुरगांव पैदल लिवा गये थे।

४२३. भूरेलाल बया

वर्धा में अपनी दुकान में काम करते थे। बाद में राजस्थान में रहे, तब जेलों में खादी और चर्खे का खूब प्रचार किया। अब उदयपुर में रहते हैं। मैं इनके घर गई थी। अच्छे समाज-सेवक हैं। इनकी पत्नी मोहनदेवी भी सेवाभावी थीं।

४२४. खुशालचन्दजी खजानची

चांदा के रहनेवाले व्यापारी थे। जमनालालजी के साथ देश-सेवा में लगे रहे।

४२५. अटटबिहारी बाजपेयी

इंदौर के हैं। गोरक्षा में रुचि रखते हैं। इंदौर से गायों की निकासी बंद करने के बारे में मैं इनसे मिलनेवाली थी। पर इनका आना हुआ नहीं और मिलना रह गया। अब ये पार्लियामेंट के मेम्बर हैं।

४२६. पांडे गुरूजी

ये श्रीमन्‌जी को सेवाग्राम आश्रम के कार्य में मदद देते हैं। पहले बहुत वर्षों

तक नई तालीम विद्यालय में शिक्षक रहे और बच्चों को बड़े प्रेम से पढ़ाते थे। सेवाग्राम आश्रम देखने जो भाई-बहन आते हैं, उन्हें वे बड़े प्रेम से बा और बापू की कुटिया दिखाते हैं और समझाते हैं।

४२७. चिरंजीलालजी बड़जाते

ये दत्तक आये थे। जमनालालजी ने इनको जिम्मेदारी के साथ संभाला। अपनी दुकान पर विश्वासपात्र बनकर काम किया। दुकान संबंधी लेना-देना, मुकदमा वगैरह का काम देखते थे। राजेंद्रबाबू और जवाहरलालजी आदि का कारोबार भी संभालने जाते थे।

चिरंजीलालजी की मां सगुणीबाई ने इनको गोद लिया था और बड़ी श्रद्धा से प्यार करती थीं। मिठाई बनाकर खिलाती थीं। वे भी अपनी मां का बहुत आदर करते थे। उन्होंने अपनी मां के नाम से जैन मंदिर में एक पुस्तकालय भी खोला है। मां के समान ये मेरा भी सदा बहुत मान करते थे।

४२८. प्रमिलादेवी बड़जाते

चिरंजीलालजी की पत्नी। बड़ी होशियार हैं। जैन धर्म के नाते शाम को छः बजे खाना-पीना बंद। चिरंजीलालजी शाम को मेहमान लेकर आते, दाल का शीरा, और भी कई चीजें बनाने को कहते। तब यह बेचारी हैरान हो जाती। आखिर, वे बाजार से मिठाई मंगाकर मेहमानों को खिलाते थे।

४२९. प्रताप बड़जाते

चिरंजीलालजी का पुत्र। उदयपुर सेवाश्रम की व्यवस्था जमाने के लिए भेजा था। बाद में सपरिवार वर्धा में रहने लगे। इनके परिवार के सब लोग सज्जन हैं।

जैन धर्म को माननेवाले हैं।

कमलनयन की तरह इसका भी दिल के दौरे से निधन हो गया। तबसे घर में दुःख छा गया।

४३०. पूनमचन्द बांठिया

बीकानेर के थे। वर्धा में अपनी दुकान में छोटेपन से काम करते थे। रहनी-करनी बड़ी साफ-सुथरी थी। बड़े सद्‌भावी। शुरू में नागपुर बैंक का काम इन्होंने जमाया था।

४३१. बापूजी सेठ

बच्छराजजी और ये आमने-सामने रहते थे। दोनों जोर-जोर से बोलनेवाले थे। बालाजी के मंदिर के सामने जब दोनों जोर से बोलते तो लोग जमा हो जाते थे।

इनके बेटे सत्यनारायण बजाज का समाज में मान है। सत्यनारायण की विनोबाजी पर भक्ति है।

४३२. कुंदर दिवाण

जमनालालजी की मृत्यु के बाद उनके निमित्त भागवत कथा कराने का मैंने संकल्प किया था। विनोबाजी की प्रेरणा से उनके शिष्य कुंदर दिवाण ने लक्ष्मी-नारायण के मंदिर में भागवत सप्ताह की कथा की। मैं रोज जाती थी। इनके उच्चारण बहुत शुद्ध हैं। कथा अच्छी तरह समझाते थे। विनोबाजी पर अच्छी किताब लिखी है।

४३३. दिलीप बजाज

राधाकृष्ण का छोटा वेटा। अव तो वड़ा डाक्टर वन गया है।

४३४. उषा तामसकर

दादा धर्माधिकारी की वेटी। ओम् की सहेली। उसके साथ मदनापल्ली पढ़ने गई थी। बजाजवाड़ी से ही इसकी शादी हुई।

४३५. विनोबाजी

जमनालालजी ने बापू से कहा, "साबरमती आश्रम की एक शाखा वर्धा में खोलिये।" बापू ने उत्तर दिया, "एक आश्रम साबरमती में है। उसको चलाने में इतनी कठिनाई है। वर्धा का आश्रम कौन देखेगा?" फिर बड़े आग्रह करने पर उन्होंने जमनालालजी की बात मान ली और विनोबाजी को वर्धा भेज दिया। पहले इन्हें बगीचे में उतारा, जहां अब मगनवाड़ी है। बाद में बजाजवाड़ी के अंदर घास के बंगले में रहे। मैं इनके आश्रम में जाती तो वहां केशू गांधी, कृष्णदास गांधी चावल बीनते या कुछ काम करते दिखाई देते। मैं सोचती, "ये कैसी पढ़ाई करते होंगे!" बाद में तो कमलनयन, मदालसा, उमा सबको पढ़ने के लिए वहीं भेज दिया। राधाकिसन तो इनके पास बहुत रहा।

जमनालालजी कहते थे, "लोग संतों को ढूंढने जंगलों में जाते हैं। हमें तो विनोबा ही संत मिल गये हैं और हमें पूरा संतोष है। जमनालालजी ने बापूजी को पिता और विनोबाजी को गुरु मान लिया था।

विनोबाजी मुझसे तीन साल छोटे हैं। इसलिए, मैं तो इन्हें 'मेरे प्यारे छोटे भैया' कहकर ही हँसी-विनोद करती रहती हूं।

४३६. बालकोबाजी

विनोबाजी के भाई। वर्धा आश्रम में रसोई बनाते थे। वहां कमलनयन भी रहता था। एक मिनट में पांच-छः फुलके बना देते। आटे का लोया तोलते थे, अंदाज में ठीक निकलता था। विनोबाजी सब विद्यार्थियों को खाना परोसते थे। दाल-सब्जी में नमक नहीं डालते थे। जिसे लेना होता, ऊपर से ले लेता।

बालकोबाजी अब छः महीने पवनार में रहते हैं और छः महीने पूना के पास उरुलीकांचन में। साबरमती आश्रम में विद्यार्थियों को सितार सिखाते थे, तब मैं भी सीखने जाती थी। १९३५ में वर्धा के महिलाश्रम में एक साल इनकी सेवा में रहकर ओम् ने भी सितार सीखा था।

४३७. शिवाजी

विनोबजी के छोटे भाई। संस्कृत के बड़े विद्वान हैं। भूगोल और खगोल के अच्छे जानकार हैं। नक्शे बनाते थे और बनाकर फाड़ देते थे। कमलनयन ने पूछा, "नक्शे बना-बनाकर क्यों फाड़ देते हो?" कहने लगे, "मगज में रख लिया, अब रखने से क्या फायदा?" तीनों भाई साबरमती आश्रम में बापू के पास आये थे। तीनों बाल-ब्रह्मचारी हैं। ये अब ज्यादातर धुलिया के तत्व-ज्ञान मंदिर में शास्त्राध्ययन करते हैं और विद्यार्थियों को पढ़ाते भी हैं। बीच-बीच में पवनार आश्रम में भी आते रहे हैं।

कोई पंद्रह साल पहले मेरे मन में जीते-जी अपना श्राद्ध मना लेने की बात पक्की हो गई, तब शिवाजी को खास धुलिया से बुलवाया था। दस दिन तक सारा परिवार वर्धा में बजाजवाड़ी के अपने बंगले पर एक-साथ रहा। तब शिवाजी का सबको खूब सत्संग मिला।

४३८. भणसालीभाई

प्रोफेसर थे। घरवालों ने इनकी जबरदस्ती सगाई कर दी तो भागकर गांधीजी के पास साबरमती आ गये। बड़े हठयोगी थे। बापू ने इन्हें कर्मयोगी बनाया।

'भारत छोड़ो' आंदोलन के समय आष्टी-चिमूर में बहनों के ऊपर बहुत अत्याचार किये गए। उसके विरुद्ध इन्होंने ६८ दिन के उपवास किये थे, तब अपने बंगले पर ही रहे थे। उस समय देश-भर से दर्शनों के लिए इतने लोग आते रहे कि बजाजवाड़ी में बड़ा मेला-सा लगने लगा था। चारों ओर खूब चिंता छा गई थी। तब कमलनयन ने सारी जिम्मेदारी संभाली। भणसाली काका को समझाता। उनके उपवास छुड़ाने के लिए कन्हैयालाल मुंशी रोज बंबई से आते। आखिर सरकार को झुकना पड़ा, तभी भणसालीभाई ने उपवास छोड़े।

४३९. पुष्पा

बंबई से भागकर गांधीजी के पास आ गई थी। तभी से भणसालीभाई की सेवा करती है। नागपुर के पास टाकली में सुंदर आश्रम चला रही है।

४४०. रामकुमार भुवालका

कलकत्ते के मारवाड़ियों में अच्छे प्रतिष्ठित माने जाते हैं। सेवाग्राम के रास्ते में इन्होंने छायादार पेड़ लगवाये हैं। कलकत्ते में जमनालालजी जाते, तब ये अपने परिवार की तरह आवभगत करते थे। अब भी हम सबसे उसी तरह मिलते हैं।

४४१. मातादीन भगेरिया

मारवाड़ी समाज के थे। 'गांधी-मानस' लिखा। जमनालालजी को दिखाने

के लिए लाये थे। महिलाश्रम में रात को सबके सामने पढ़कर सुनाया। तब जमनालालजी ने भी सुना। दूसरे दिन बच्छराज भवन में जमनालालजी का स्वर्गवास हो गया।

४४२. भिडे मास्टर

अपनी दुकान के सामनेवाले मकान में रहते थे। रोज मारवाड़ी बोर्डिंग में जाजूजी के साथ पैदल जाते थे। विद्यार्थियों को अच्छे संस्कार देते थे। वर्धा का स्वावलंबी विद्यालय उन्हीं का शुरू किया हुआ है।

४४३. चन्दनसिंहजी भरकतिया

इंदौर के हैं। कस्तूरबाग्राम में बहुत काम करते हैं। कस्तूरबा ट्रस्ट के ट्रस्टी हैं। जहां भी ट्रस्ट की बैठक होती है, आ जाते हैं। सेवाभावी कार्यकर्ताओं का मान करते हैं। वर्धा के अपने शिक्षा-मंडल के कार्यों में भी शुरू से रस लेते रहे हैं।

४४४. भूरेखानजी

जावरा के दाढ़ीवाले मुसलमान थे। अपनी दुकान पर रहते थे। हमारे घर में उनकी इतनी चलती थी कि जो वे कहते, वही होता। उनका धर्म अलग है, इसका वे बहुत ख्याल रखते थे। मेरी मां उन्हें पत्तल में खाना और चांदी के गिलास में पानी देती थीं।

४४५. भोगीलालजी

अविवाहित हैं। खादीधारी और अपने सिद्धांत के पक्के हैं। सात्विक वृत्ति के,

नाजुक और संतोषी हैं।

४४६. नानाभाई भट्ट

दक्षिणामूर्ति भावनगर के आचार्य थे। शारदाबहन चोखावाला की शादी में सेवाग्राम आये थे। उनके लिए जमनालालजी के मन में बड़ा मान था।

४४७. सरदार भगतसिंह

प्रसिद्ध क्रांतिकारी। बड़े बहादुर थे। हर तरह से उनकी परीक्षा भगवान ने ली और अंत में उनका बलिदान हुआ। इनको फांसी होने की खबर हम सबने करांची कांग्रेस में सुनी थी। वहां सरकार के प्रति घोर असंतोष छा गया था। जमनालालजी को बहुत रंज हुआ और वे उनके घर भी गये थे।

४४८. भगतसिंह की मां

कभी-कभी मिल जाती थीं। इंदौर में एक बार आई थीं। दादीजी की तरह सबको बहुत प्यार करती थीं। अहमदाबाद के राजभवन में श्रीमन्जी और मदालसा ने इनका सम्मान किया था।

उन्हें 'पंजाब की माता' भी कहते थे। उनके लिए जनता में गहरा आदर था।

४४९. भगतसिंहजी की बहन

मां के साथ सब जगह जाती थीं। सब तरह से उनकी संभाल रखती थीं।

अपने छोटे भाई भगतसिंह के बचपन की बातें बड़े प्यार से सुनाती थीं।

४५०. गीता भारती

अहमदाबाद में भगवद्‌गीता पर इनके प्रवचन हो रहे थे। मैं बीमार थी, पानी खूब बरस रहा था, फिर भी मैं और कमला रोज सुनने जाती थीं। इनके भाषण में, रंग-रूप और तेज में बड़ा आकर्षण है।

एक दिन हम भाषण सुन रही थी। एक छिपकली हमारे पास से गुजरकर इनके मंच पर पहुंची। छिपकली को देखकर इतनी उछलीं कि उतरकर सीढ़ी पर आ गईं। कहती थीं, "मुझे छिपकली से बहुत डर लगता है। जिस घर में रहती हूं वहां छिपकली आ जाय तो रहना मुश्किल हो जाता है।"

४५१. लाला भरतराम

लाला श्रीरामजी के बड़े बेटे। कमलनयन के मित्र। इनसे पुराना पारिवारिक संबंध चला आ रहा है।

४५२. रामकिसन भाटे

बच्छराजजी के पास मित्र के नाते आते थे। छुटपन में एक दिन जमनालाल-जी साधु होकर चले गये थे तब ये ही उन्हें वापस बुला लाये थे।

४५३. भंडारी—जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट

बापू आगाखां महल की जेल में गये। महादेवभाई ने सुना, "बापू की खबर

बाहर जाती नहीं और बाहर से कोई खबर बापू को मिलती नहीं, यहां तक कि अखबार भी बापू को नहीं दिये जाते हैं। यदि अखबार बापू को न मिलें, तो कैसे चलेगा ?" भंडारी से यह सूचना पाकर महादेवभाई इतने व्याकुल हो गये कि छठे दिन ही हृदय-गति रुक जाने से उनका देहांत हो गया। बापू का अपना एक अनन्य सेवक भक्त ही भगवान ने उठा लिया।

४५४. भागवतजी

अपने लक्ष्मीनारायण मंदिर के बड़े श्रद्धावान् पुजारी थे। नियमित खादी पहनते और जेल भी गये थे। भागवत शास्त्री ने अपने घर के कई विवाह करवाये। वे ब्राह्मण थे और विद्वान पंडित भी।

४५५. मूलचंद भैया

भैया परिवार में सभी भले हैं। पहले ये वर्धा में ही रहते थे। बाद में उज्जैन रहने लगे। इनकी मां मेरे साथ जेल में थीं।

४५६. मूलचंद भैया की दादी

बच्छराजजी इन्हें धर्मबहन मानते थे। इस नाते घरेलू संबंध रहा। इनसे मुझे और बच्चों को बहुत स्नेह, सहारा मिला।

४५७. मूलचंद भैया की मां

मेरे साथ नागपुर जेल में थीं। पहले घूंघट में रहती थीं। मेरे भाषण के

आकर्षण से ये घूंघट के वाहर निकलीं और जेल में 'सी' क्लास में रहीं। मैं जेल में 'ए' क्लास में थी। मैं जब जेल में बीमार हुई तो मैंने सेवा के लिए इनको ही मांगा। इन्होंने वहुत प्रेम से मेरी सेवा की। तबसे घनिष्ठता और भी वढ़ गई। बाद में इनका पांव काटना पड़ा था, तब अस्पताल में जमनालालजी भी परिवार के नाते देखने जाते थे।

४५८. गोकुलभाई भट्ट

राजस्थान के सर्वोदय नेता। 'गोसेवा संघ' में रहे और 'सर्वसेवा संघ' में भी। अब नशाबंदी में जी-जान से लगे हैं। राजस्थानी भाषा में सुंदर कविता लिखते हैं। जमनालालजी के पुराने साथी रहे हैं और कुटुंबीजन की तरह सबसे प्रेम से मिलते हैं। हम सभी को खुशी होती है। मिठाई के शौकीन हैं।

४५९. गोपीचंदजी भार्गव

कांग्रेस वर्किंग कमेटी में गांधीजी के पास कई बार वर्धा आते थे। ज़मनालाल-जी से इतना घनिष्ठ संबंध था कि वे जेल में रहते हुए भी इनकी लड़कियों के लिए संबंध ढूंढ़ते थे। इन्होंने वाल-विवाह को रोकने की कोशिश की थी।

वाद में तो पंजाब के मुख्यमंत्री रहे। खादी का भी वहुत काम किया।

४६०. बाबाजी मोघे

विनोवाजी पहले-पहल वर्धा आये तब बड़ौदा के सहपाठियों के साथ आने-वालों में से मोघेजी थे। वहुत वर्ष आश्रम में पढ़ाने का काम किया। विनोवाजी के साथ पवनार आश्रम में रहे।

४६१. मणिलाल देसाई

उरुलीकांचन में गोशाला चलाते हैं। इनकी गोशाला ने विदेशियों को भी

आकर्षित किया है। इन्होंने बापूजी से कहा था—गोसेवा करना है तो आजन्म ब्रह्मचारी रहूंगा। तबसे श्रद्धापूर्वक इसी काम में लगे हैं। सादा खाना खाते हैं, पर मुंह पर बहुत तेज है।

४६२. मीरा बहन

इनका घर का नाम था 'मिस स्लेड'। विदेश के एक ऊंचे घराने की बहन होते हुए हिंदुस्तान में आकर सचमुच मीरा बन गईं। साबरमती में बापू के 'हृदय कुंज' के सामने नदी के किनारे एक छोटी-सी कोठरी में रहती थीं। नियमित सूत कातने और खादी पहनने लगी थीं। आश्रम की लड़कियों को तकली पर सूत कातना सिखलातीं और बहुत-सी बातें समझाती थीं।

नमक-सत्याग्रह के बाद जेल से छूटकर बापूजी सन् १९३३ से वर्धा रहने लगे। यहीं से साल-भर का हरिजन-प्रवास चला। तबतक महिलाश्रम के प्रार्थना मंदिर के ऊपर रहे। बाद में मगनवाड़ी रहने चले गये। एक दिन मीराबहन ने बात उठाई, "बापूजी, आप गांवों में जाकर सेवा करने की बात कहते हैं, और आप तो यहां वर्धा में रहते हैं। यह तो शहर है।"

बस, तुरंत बापू ने कहा, "जाओ, तुम ही मेरे लिए गांव ढूंढो।" इस पर मीराबहन ने घोड़े पर सवार होकर कई गांवों के चक्कर लगाये। आखिर सेगांव पसंद आ गया। वहीं बापू की साधना का धाम 'सेवाग्राम' प्रसिद्ध हो गया। वहां की 'बापू कुटी' कच्ची ईंटें, बांस और मिट्टी से मीराबहन की ही बनाई हुई है।

वहां रहते हुए मीराबहन ने बापूजी की तन-मन से दिन-रात खूब सेवा की। अब वियना में शांत, निवृत्त जीवन बिता रही हैं।

४६३. सरदार पृथ्वीसिंह

पुराने क्रांतिकारी, जिन्होंने सेवाग्राम में आकर बापूजी को आत्मसमर्पण किया। अब गुजरात में युवकों के बीच काम कर रहे हैं।

४६४. किशोरलालभाई मश्रुवाला

पूरा खानदान खादी-भक्त और गांधी-भक्त। इनके बड़े भाई बालुभाई मश्रुवाला बंबई में रहते थे। तभी से जमनालालजी के साथ परिचय हुआ, वह दिनोंदिन गहरा होता ही गया। एक नानाभाई अकोला में रहते थे। उनकी बड़ी बेटी सुशीला का विवाह बापूजी के दूसरे बेटे मणिलालभाई से हुआ। तबसे हमारी पारिवारिक घनिष्ठता और भी बढ़ गई। बाद में साबरमती आश्रम में हम रहे तब किशोरलालभाई और उनकी पत्नी गोमतीबहन से ऐसा स्नेह जुड़ा कि जब बापूजी वर्धा आकर मगनवाड़ी में रहे तब जमनालालजी ने किशोरलालभाई को बजाजवाड़ी के अतिथि-गृह में बुलवा लिया। वहीं से वे बापूजी के 'हरिजन' का संपादन करते रहे। जब बापूजी सेवाग्राम में रहने लग गये तब किशोरलालभाई के लिए वहां पक्का मकान बनवा दिया गया। कारण उनको दमा था। वह मकान अब भी 'किशोर-निवास' कहलाता है।

४६५. गोमतीबहन मश्रुवाला

किशोरलालभाई की पत्नी। अत्यंत श्रद्धावान् बहन। इनका गोरा-सा रंग, छोटा-सा नाजुक कद। शुद्ध सफेद खादी के वस्त्रों में सती-साध्वी का-सा मोहक रूप। तपस्वियों-सा संयमी जीवन। जमनालालजी का इन पर बहन का-सा स्नेह था।

गोमतीबहन प्यार करने में उदार थीं, पर सेवा लेने में सदा अनुदार रहीं। पंद्रह दिन किशोरलाभाई बीमार रहते तो गोमतीबहन उनकी सेवा करतीं। फिर सेवा करते-करते गोमतीबहन बीमार हो जातीं तब किशोरलालभाई सेवा करते। केदारनाथजी महाराज को ये अपना गुरु मानते थे।

४६६. बालुभाई मश्रुवाला

जमनालालजी की बंबई दुकान के सलाहकार थे। जमनालालजी ने जब बापू

से कहा कि इस व्यापार से मुझे हटाओ, तब बालुभाई ने जमनालालजी को समझाया, "सेवा-कार्यों के लिए दान मांगने के बजाय व्यापार करते-करते जो नफा हो, उसे दान में दे दें। व्यापार क्यों छोड़ें ?"

बालुभाई की पुत्रवधू पुष्पाबहन जो सारा कुटुम्ब श्रद्धापूर्वक चला रही हैं।

४६७. ताराबहन मश्रुवाला

बालुभाई के छोटे भाई नानाभाई जो अकोला में रहते थे—उनकी बेटी। कुमारिका हैं। माधान में कस्तूरबा आश्रम बड़ी श्रद्धा से चला रही हैं। दादाभाई पंडित सदा इनके साथ रहे। उनके पास संस्कृत में शास्त्रों का अध्ययन करती थीं। इन्हें जमनालालजी बेटी के समान प्यार करते थे।

४६८. नीलुभाई

पुष्पाबहन के पति। शरीर से बहुत नाजुक हैं। बच्छराज कंपनी में वर्षों काम करते रहे हैं। सिद्धांत के पक्के हैं। सादा, सरल जीवन है।

४६९. स्वामी शरणानंदजी

चक्षुहीन थे। भाषण बहुत अच्छा देते थे। जमनालालजी की समाधि के पास गोपुरी में राधाकिसन ने इनका भाषण कराया। बड़े विद्वान थे।

४७०. महादेवी ताई

विनोबाजी के साथ रहती हैं। 'तेरी मेरी बने नहीं, तेरे बिना सरे नहीं' ऐसा हम दोनों का हाल है। कर्नाटक से जमनालालजी वर्धा ले आये थे। यहां आकर सेवा में तल्लीन हो गईं। बाल-विधवा थीं, पर कुमारिका के समान ही

हैं। शुरू में देहरादून पढ़ने भेजा था। बाद में विनोबाजी की भूदान पद-यात्रा में बराबर साथ रहीं। व्यवस्था में बड़ी कुशल हैं।

४७१. मनोहरजी दिवाण

विनोबाजी के साथी। दत्तपुर में कुष्ठ-रोगियों की बड़ी श्रद्धा से सेवा की। कम खर्च में ज्यादा रोगियों का इलाज करते थे। विनोबाजी की सलाह से ये काम करते रहे हैं। सरकार आश्चर्य करती कि कम खर्च में इतना अच्छा प्रबंध कैसे रखते हैं। बापूजी इनकी संस्था देखने आये थे, तब किताब में लिखा, "लोग मुझे 'महात्मा' कहते हैं, पर सच्चा 'महात्मा' तो यह है, जिसने महारोगियों की ऐसी अद्भुत सेवा की है।"

४७२. मनोहरजी दिवाण की मां

इन्हें सब 'बाई' कहते हैं। पूरा नाम है कृष्णाबाई दिवाण। विनोबाजी की बड़ी श्रद्धावान भक्त हैं। मनोहरजी के साथ पवनार आश्रम में रहती थीं। अब दत्तपुर में रह रही हैं।

४७३. रामगोपालजी मोहता

बीकानेर के बड़े कर्ताधर्ता। समाज-सेवी। इनके यहां विनोबाजी, जाजूजी और मैं गये थे।

४७४. रतनबाई मोहता

रामगोपालजी की दोहित्री हैं। बीकानेर में महिलाश्रम चलाती हैं। मेरा

भाषण भी कराया था। अपने राधाकिसन के पुत्र दिलीप को इनकी लड़की सरोज ब्याही है। यह पहले वेटी थी, अव वहू वन गई है। वर्धा आती है तो विनोवाजी के पास परमधाम आश्रम में भी रहती है। गोद में वच्ची है 'श्रुति'।

४७५. मोहनबहन

वर्धा के महिलाश्रम में लड़कियों की देखभाल करती थीं। अब वनस्थली विद्यापीठ में रहती हैं। इनकी वेटी सज्जन भी वनस्थली में काम करती है। दोनों के जैसे नाम हैं, वैसा ही स्वभाव है।

४७६. मथुरादासजी मोहता

ये हिंगणघाट के बड़े सेठ थे। 'मारवाड़ी शिक्षा मंडल' में जमनालालजी के साथ ट्रस्टी थे। इनकी पत्नी का मेरे साथ बहुत प्रेम रहा।

४७७. डा० माउस्कर

गोपुरी में जमनालालजी की समाधि के पास प्राकृतिक चिकित्सालय चलाते हैं। लोगों की लगन से सेवा करते हैं। वहां की जलवायु से बीमार लोग जल्दी ठीक हो जाते हैं और औषधियों से बच जाते हैं। यह जमनालालजी का ही पुण्य प्रताप है, ऐसी माउस्कर की श्रद्धा है।

४७८. दामोदरदास मूंदड़ा

जमनालालजी के बहुत वर्षों तक सेक्रेटरी थे। सरदार वल्लभभाई इनको

'दरजी' के नाम से पुकारते थे। विनोबाजी की भूदान पद-यात्रा में कई वर्षों तक साथ रहे। अब खानदेश के आदिवासी क्षेत्रों में काम करते हैं।

४७९. डा० जगन्नाथ महोदय

सब संस्थाओं में प्रेम से सेवा करते हैं। एलोपैथी के जानकार हैं, इसलिए सुई लगा देते हैं। विनोबाजी के पास रोज सुबह सूखी मालिश करने पवनार जाते हैं। 'विनय-पत्रिका' के पाठ में शामिल होते हैं। हम सबसे पारिवारिक स्नेह रखते हैं।

४८०. मृत्युंजयबाबू

राजेन्द्रबाबू के बड़े बेटे। सीधे-सादे भले हैं। साबरमती आश्रम में बहनों का क्लास लेते थे। मैं बहुत प्रश्न करती थी। ये एक दिन बोले, "आप बाल की खाल निकालती हैं।" तब मेरा बोलना कुछ कम हुआ।

४८१. रमणिकलालभाई मोदी

बापूजी के कहने पर साबरमती आश्रम से वर्धा का आश्रम चलाने के लिए आये थे। तब आश्रम अपने 'बगीचे' में था, जिसे अब मगनवाड़ी कहते हैं। थोड़े दिन वर्धा रहे। फिर वापस साबरमती चले गये। तबसे वहीं हैं।

४८२. ताराबहन मोदी

रमणिकलालभाई की पत्नी। पति के साथ सेवामय आश्रम-जीवन बिताया।

पर अब कई वर्षों से ये चल-फिर नहीं सकती थीं। तब रमणिकलालभाई इनकी सेवा करते थे। अब दोनों संभल-संभलकर एक-दूसरे की सेवा करते हैं और बापूजी की याद में आत्म-साधना में लगे हैं।

४८३. मालतीदेवी चौधरी

उड़ीसा के मुख्यमंत्री नवकृष्णबाबू की पत्नी। बड़ी सिद्धांतवाली, पक्की सेवाभावी। इनकी दृढ़ता से ही नवबाबू ने मंत्री पद छोड़ा। ये 'कस्तूरबा ट्रस्ट' में बहुत काम करती हैं। सारा परिवार सर्वोदय के कार्य में श्रद्धापूर्वक लगा हुआ है। इनकी बेटी उत्तरा से महादेवभाई के बेटे नारायण की शादी हुई है।

४८४. शांतिकुमार मोरारजी

कमलनयन कहता, "मैंने अपनी मां को दान कर दिया।" शांतिकुमार ने कहा, "मैं मां को दत्तक लेता हूं।" गांधीजी ने इनको 'गोसेवा संघ' का उपाध्यक्ष बनाया था। वे बंबई, जुहू में इनके यहां भी ठहरे थे। जमनालालजी के संबंध से अभी भी शांति बेटा हम सबके साथ प्रेम निभाता है। मेरे संबंध से इन्होंने 'मां-बेटे की कंपनी' के कार्ड छपाये थे।

शांतिकुमार अभी तक बहुत श्रद्धा से अपनी दादी मां की पूजा निभाते हैं। जिस प्रकार दादीमां पूजा करती थीं, उसी प्रकार घर में कोसे का कपड़ा पहनकर तीन घंटे तक पूजा करते हैं। बाद में दफ्तर में ठाठ-बाट से जाते हैं। शुरू से 'कस्तूरबा ट्रस्ट' में हैं। इनका घर कस्तूरबा और बापूजी की याद से भरा है।

४८५. नरोत्तम मोरारजी

बंबई के व्यापारियों में मुख्य माने जाते थे। एक बार उनको एक करोड़ का

नुकसान लगा। इसी बीच उनकी महाबलेश्वर की पहाड़ियों पर कार से गिरकर मृत्यु हो गई। इनके बेटे शांतिकुमार तब छोटे थे। इसलिए गांधीजी ने तुरंत जमनालालजी को देखभाल करने के लिए बंबई भेजा था।

४८६. सुमतिबहन मोरारजी

शांतिकुमारजी की पत्नी। जवाहरलालजी कहते थे कि विदेशों में ये व्यापार में दूसरे नंबर पर गिनी जाती हैं। बंबई में समुद्री व्यापार करती हैं। इनकी सिंधिया कंपनी प्रसिद्ध है।

४८७. चि० राणु

कमला के बेटे सुशील की बेटी। अपने पिता जैसी ही सुशील और सरल स्वभाव की है।

४८८. मुन्नालाल शाह

सेवाग्राम में बापूजी के पास रहते थे। बाद में वर्धा में रहने लगे। बापूजी के सिद्धांतों का जीवन-भर श्रद्धापूर्वक पालन किया।

४८९. कंचनबहन शाह

मुन्नालाल शाह की पत्नी। सेवाग्राम में बापू के पास कई वर्षों तक रहीं। संतोषी हैं। बड़ी हिफाजत से कम खर्चे में घर चलाती हैं। कस्तूरबा का इन पर अधिक स्नेह था।

४६०. तुलसी मेहर

सावरमती आश्रम में वहनों को पढ़ाते थे। वापू ने इनको नेपाल में खादी का काम करने भेजा तो नेपाल को 'खादीमय' वना दिया। जमनालालजी चंपारन तक गये। वहुत इच्छा होते हुए भी नेपाल न जा सके, क्योंकि गांधीजी के भक्त होने के कारण राजा लोग डर गये। श्रीमन्जी और मदालसा जव नेपाल में थे तो मैं नेपाल गई थी। वहां मेहरजी की वजह से कई संस्थायें चल रही हैं। ये खुद भी नेपाल के ही हैं। नेपाल में करीव ६०-७० लड़कियों को वर्धा के महिलाश्रम में वड़ी जिम्मेदारी से लाकर सुशिक्षित करवाया। वे अच्छा काम कर रही हैं। अव ये कुछ दिन सेवाग्राम आश्रम में शुद्ध, सात्विक जीवन विताकर नेपाल चले गये हैं।

४६१. मेहरताज

खानसाहव की वेटी। वजाजवाड़ी अतिथि-गृह में रहती थी। ओम् के साथ खाते-खाते पापड़ हाथ में लेकर मेरे कमरे में आती तो मुझे देखकर मेरे डर से कमरे से बाहर भाग जाती थी। फिर जमनालालजी को देखकर उसको जोश आ जाता था। दोनों खानसाहव और लाली मेहरताज के साथ ओम् ने भी पूरे रोजे रखे थे।

४६२. कन्हैयालाल मुंशी

सन् १६४२ में 'भारत छोड़ो' आंदोलन के समय, आष्टी-चिमूर कांड के सिलसिले में भणसालीभाई के उपवास के दिनों में, ये बंवई से सुवह वर्धा आते और शाम को वापस वंबई चले जाते थे। इनके और कमलनयन के प्रयत्नों से ही भणसालीभाई का ६८ दिन का उपवास छूटा था। केंद्रीय मंत्री और राज्यपाल

रहे। गुजराती के विख्यात लेखक।

४६३. लीलावती मुंशी

कन्हैयालाल मुंशी की पत्नी। स्त्रियों में बहुत काम किया है। मैं बंबई गई थी तब भारतीय विद्या भवन में मेरा भाषण करवाया था। वर्धा आती-जाती रही हैं। पिछली बड़ी लड़ाई के समय अन्न बचाने के लिए इन्होंने 'अन्नपूर्णा' का आंदोलन जगह-जगह चलाया था।

४६४. माखनलाल चतुर्वेदी

बड़े कवि और लेखक। खंडवा से 'कर्मवीर' अखबार चलाते। जमनालालजी से मिलने के लिए कई बार वर्धा आये। इनकी बहन मेरे साथ नागपुर जेल में थीं। हम दोनों को जेल में 'ए' क्लास मिला था।

४६५. मदनमोहनजी मालवीय

बहुत साल पहले ये एक बार जमनालालजी के आग्रह पर दुकान के ऊपर बच्छराज भवन में अपने साथ ही ठहरे थे। छोटी-सी लंगोटी लगाये प्रातः ३ बजे से छत पर घूमते थे। लेकिन बाहर जाते समय धोती, कुर्ता; अंगरखा, दुपट्टा, फेंटा लगाकर ही जाते और घर में उन कपड़ों को अलग संभालकर रख देते। गांधी चौक में इनका हिंदी में बहुत जोरदार भाषण हुआ था।

४६६. कृष्णकांत मालवीय

मालवीयजी के पुत्र। जमनालालजी के मित्र के नाते उनसे मिलना होता

रहता था। अच्छे लेखक और नामी पत्रकार थे।

४६७. मुकुंदकांत मालवीय

मालवीयजी के छोटे पुत्र। इनका जमनालालजी के साथ विशेष स्नेह था। तब तो मैं घूंघट में रहती थी। बाद में दिल्ली में श्रीमन्जी के बंगले पर इन्होंने भागवत सप्ताह किया था। उस समय हमने रातोंरात कथा की तैयारी की थी। बहुत अच्छी कथा करते थे।

४६८. नानजीभाई कालिदास मेहता

पोरबंदर के निवासी। इन्होंने बड़े साहस से पूर्व अफ्रीका में भारी व्यापार जमाया था। इनकी बेटी सविता दीदी पोरबंदर में अपने पिता की स्मृति में बहुत बड़ा कन्या गुरुकुल चलाती हैं। वह स्वयं बड़ी भक्तिमान और कलाकार हैं।

पोरबंदर में बापूजी के जन्म-स्थान पर नानजीभाई ने एक विशाल 'कीर्ति मंदिर' बनवा दिया है।

४६६. भानीराम रसोइया

बच्छराजजी के समय बादाम का हलवा बनाते, खिलाते थे। मेरी सगाई हुई तब ये मुझे देखने के लिए आये थे।

५००. पन्ना पोद्दार

कलकत्ता के सीतारामजी सेकसरिया की बेटी। मेरी ननद के बड़े लड़के

प्रह्लाद को ब्याही है। सीयारामजी सेकसरिया ने मुझे धर्म की बहन माना है। कलकत्ता में विलायती कपड़ों की होली में मेरा साथ दिया था।

पन्ना सुंदर थी और मिलनसार भी। इसलिए सभी उसका लाड़ करते थे। ये दोनों मुझसे मिलने वर्धा आते रहते हैं।

५०१. दुर्गाप्रसाद मारवाड़ी

मैं कूपदान के लिए इनके घर गई थी। इनके यहां पूजा-पाठ बहुत होता था। ब्राह्मण-भोजन कराते थे। ये घड़ी देखकर 'राम-राम' जपते जाते थे।

५०२. धीरेंद्रभाई मजुमदार

गांधीजी के कट्टर भक्त हैं। सेवाग्राम में बापू के पास आते-जाते थे। सर्वोदय का काम करते हैं। बिहार में इनका 'खादीग्राम' आश्रम है। वहां छोटे-छोटे आदर्श घर बना रखे हैं। 'सर्व सेवा संघ' के ये कई साल अध्यक्ष रहे। इन्हीं की अध्यक्षता के समय चांडिल में ग्रामदान सम्मेलन हुआ था। उसमें राजेंद्रबाबू और जवाहरलालजी भी शामिल हुए थे।

५०३. ग. वा. मावलंकरजी

ये अहमदाबाद से पूज्य बापूजी और जमनालालजी से मिलने कई बार वर्धा आये थे। स्वराज्य मिलने के बाद दिल्ली में लोकसभा के कई साल अध्यक्ष रहे। इनकी पत्नी सुशीलाबाई बड़ी निष्ठावान माता हैं। उनके सभी बेटे और बहुएं बहुत संस्कारी हैं और समाज-सेवा का अच्छा कार्य कर रहे हैं।

५०४. केदारनाथजी

ये 'नाथजी' महाराज कहलाते हैं। किशोरलालभाई मश्रुवाला इन्हें गुरु मानते थे। इन्हीं की प्रेरणा से साबरमती आश्रम में रहते हुए किशोरलालभाई ने एकांतवास किया था। गांधीजी और केदारनाथजी रोज उन्हें देखने जाते। डिब्बे में जो पर्ची लिखकर आती, वही खाना बनाकर गोमतीबहन भेज देती थी। नाथजी महाराज अब बंबई में रहते हैं। इनके भक्त इनकी बड़ी आवभगत करना चाहते हैं, पर ये सेवा लेते ही कहां हैं? समाज में आचार-विचार और व्यवहार-शुद्धि के संस्कार देते रहते हैं। कई पुस्तकें लिखी हैं।

५०५. कृष्णा मेहता

जम्मू की हैं। इनके पति काश्मीर में जिलाध्यक्ष थे। काश्मीर पर पाकिस्तानी हमला हुआ था तब वे बलिदान हो गये। उस समय बड़ी हिम्मत से ये बच्चों को लेकर दिल्ली आईं। पंडित जवाहरलालजी ने इनको बहन मान लिया। उनकी छत्रछाया में बच्चों का अच्छा विकास हुआ है। पारिवारिक भावना बढ़ी है।

एक बार ये वर्धा आई थीं और कई दिन बजाजवाड़ी के बंगले में हमारे साथ रहीं। काश्मीर की लड़ाई के किस्से सुनाया करती थीं। मदालसा के आग्रह पर इन्होंने 'काश्मीर पर हमला' नाम की बड़ी रोमांचकारी किताब लिखी है।

ये लोक सभा की सदस्या रहीं। जम्मू-काश्मीर में रचनात्मक कार्य भी करती हैं।

५०६. तहसीलदारसिंह

मानसिंह डाकू का लड़का। नाम तो बहुत सुन रखा था। उन्होंने चम्बल घाटी में विनोबाजी के सामने आत्मसमर्पण किया। १७ वर्ष बाद सजा भुगतकर

हाल ही में विनोबाजी के पास पवनार आश्रम में आये थे। वर्धा में भाषण भी हुआ। ऐसे-ऐसे अद्‌भुत आदमी हमारे देश में हैं !

५०७. मौनीबाबा

हनुमानप्रसादजी पोद्दार के पास रहते थे। दिल्ली में जयदयालजी डालमिया के घर आते रहते हैं। वहीं इनसे मिलने का मौका मिला। इन लोगों को अपने शरीर का तो भान ही कहां है ! जयदयालजी डालमिया की बहू आदि इन्हें मुंह में कुछ खाने को देती हैं तो खा लेते हैं। कई वर्षों से काष्ठवत् मौन रखते हैं।

५०८. नंदकिशोरजी

रेवाड़ी आश्रम में रहते थे। पगड़ी में मोरपंख लगाते थे। इसलिए इन्हें मोरपंखवाले भगतजी कहते थे। इन्होंने गायों के लिए बहुत काम किया। चक्षु-यज्ञ भी करवाते थे। इनके परिवार से मदालसा की घनिष्ठता रही है।

५०९. मालीराम मित्तल

बंबई में इमारत बनाने का काम बहुत होशियारी से करते हैं। शुरू में जमनालालजी ने इन्हें बच्छराज कंपनी में रखा था। इनका सारा परिवार एक साथ रहता है, यह विशेष बात है। शांताबाई रानीवाला के मुनीमजी का यह बेटा है। अब खूब तरक्की कर ली है।

५१०. राधा मोहता

रामेश्वरदासजी बिड़ला की बेटी। बड़ी सरल और मिलनसार है। इंदौर में

ब्याही है। सास-ससुर रईसी रहन-सहन के हैं। इनकी सास मुझे इंदौर में गाय दिखाने ले गई थीं। राधाबाई के बेटे से कमलाबाई के देवर बालकिसनजी की बेटी ब्याही है।

५११. मणिबेन नाणावटी

बंबई के बड़े गुजराती व्यापारी और खानदानी घर की हैं। खादी के काम में जेराजाणीजी के साथ दिल लगाकर बहुत वर्षों तक काम करती रहीं। अब भी खादी के काम में दिन-रात बड़ी लगन से लगी हैं। अपने देश में कहीं भी दुःख-संकट आता है तो राहत-कार्यों में तन-मन से लग जाती हैं।

५१२. वसंतलालजी मुरारका

कलकत्ते के नामी समाज-सेवक थे। सीतारामजी सेकसरिया, प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका, वसंतलालजी मुरारका और भागीरथजी कानोडिया—इनमें बड़ी दोस्ती थी। जमनालालजी से इन सभी का बहुत निकट का संबंध रहा।

५१३. बैजनाथजी महोदय

इंदौर में रहते हैं। वर्धा आते रहे हैं। सर्वोदय क्षेत्र के अच्छे लेखक हैं। वर्धा के अपने डाक्टर महोदय के ये बड़े भाई हैं। बिना खर्च के अपनी लोकप्रियता से पार्लियामेंट के मेंबर हुए थे।

५१४. राधाकृष्णजी मोहता

इंदौर के बड़े सेठ। रामेश्वरदासजी बिड़ला की बेटी इनके बेटे से ब्याही है।

मैं इंदौर में इनकी दुकान पर गई थी। मैंने इनसे कहा, "इंदौर से जो निकासी गायों की होती है वह वंद होनी चाहिए।" इन्होंने जवाव दिया, "यह ऊपर से करने की वात है, तभी हो सकता है।"

५१५. राधाकृष्णजी माखरिया

बंवई के अच्छे व्यापारी। इनकी पत्नी त्रिवेणीवाई से विमला की गहरी मित्रता रही। एक दिन उन्होंने कहा, "कुएंवाली मां हमसे कुआं नहीं मांगती हैं क्या ?" फिर उन्होंने अपनी सास के नाम से कूपदान दे दिया। तवसे मैं उन्हें 'कुएंवाली बहू' कहती थी।

सवकी भलाई का ख्याल करते-करते हाल ही में वे भगवान के पास पहुंच गई हैं।

५१६. मोदीजी

ये जावरा के थे। अनाज की दुकान पर पालथी मारकर गणेशजी-जैसे बैठे रहते थे। आने-जानेवालों के साथ वहुत प्रेम से व्यवहार करते थे। इनकी बेटी मेरे भतीजे हरनारायण जाजोदिया के साथ इन्दौर में व्याही है।

५१७. दाऊजी मेहरोत्रा

लालजीभाई के छोटे भाई। वड़े अच्छे व्यापारी माने जाते थे। इनकी पूना से आते हुए मोटर-दुर्घटना में मृत्यु हो गई। सुनकर धक्का लगा। मैं इनके घर गई। इनके वच्चे रो-रोकर विलख रहे थे, "यदि पिताजी जीते-जी घर आते तो हम जी भर सेवा तो कर लेते।" इनकी माता और पत्नी की ओर तो देखना भी कठिन था।

५१८. अनुसूया मेघे

जमनालालजी ने इसे महिलाश्रम में रखा था। शुरू में खादी और चर्खे के प्रचार में हमारे साथ शहर में घूमती थी। हम हर शनिवार को कभी कहीं, कभी कहीं, सभाएं किया करते थे। नागपुर में गांधीजी ने कहा था, "हम सब संयम से सेवा में लगे रहें तो साल भर में स्वराज्य मिल सकता है।" यह सुनकर मुझे तो ऐसी धुन लगी कि स्वराज्य पाने के लिए गांधीजी जो भी कहें, वह करना ही है।

५१९. सेठ बच्छराजजी

जमनालालजी के दादाजी। इन्हें अक्षरों का ज्ञान कम था। हीरालाल रामगोपाल फतेहपुर के सेठ का पैसा और अपने दिमाग से इन्होंने लाखों का व्यापार निःस्वार्थ भाव से किया। स्वभाव से क्रोधी थे, लेकिन अपने रिश्तेदारों और मुनीम-गुमाश्तों का बहुत ख्याल रखते थे। "मेरी गाली घी की नाली" ऐसा कहा करते थे।

बच्छराजजी ने रामधनदासजी को गोद लिया था। सीकर में अचानक उनका देहांत हो जाने पर अपनी विधवा पुत्रवधू वसंतीबाई की गोद में साढ़े चार बरस के बालक जमनालालजी को लेकर ही वर्धा आये थे।

५२०. मोरारजीभाई देसाई

बापू से मिलने के लिए वर्धा कई बार आये हैं। जमनालालजी से भाई जैसा स्नेह था। बजाजवाड़ी के बंगले की पंगत में सरदार वल्लभभाई, पंडित जवाहरलालजी, राजेन्द्रबाबू, मौलानासाहब आदि इन सबके साथ रंगत आ जाती थी।

बंबई के मुख्यमंत्री रहे। जब दिल्ली में मंत्री हुए तब एक बार इनकी पत्नी गजराबहन ने कहा था, "इतनी बड़ी कोठी में इधर-से-उधर चले जायें तो हमारी भूल-भुलैया की-सी हालत हो जाती है।"

५२१. बलवंतराय मेहता

दिल्ली में श्रीमन्‌जी के साथ कांग्रेस के सेक्रेटरी थे। देसी रियासतों के आंदोलन में कमलनयन ने इनके साथ काफी काम किया। बाद में ये गुजरात के मुख्यमंत्री बने। तभी पाकिस्तान की लड़ाई में सीमा पर जाते हुए इनके हवाई जहाज को गोली से गिरा दिया था। उसीमें इनका और इनकी पत्नी का एक साथ बलिदान हो गया।

५२२. लाला मुकुंदलालजी

लाहौर में इनका लोहे का कारखाना था। पाकिस्तान बनने से यह काम वहां बंद हो गया। जमनालालजी का इनसे घरेलू संबंध था। अभी भी इनके नाम से बंबई में कारखाना अच्छी तरह चल रहा है। मैं कूपदान के सिलसिले में इनके घर गई थी, तब इन्होंने बढ़ा आदर-सत्कार किया।

५२३. जगदीशचंद्र बोस

ये बंगाल के बड़े वैज्ञानिक थे। जमनालालजी मुझे इनके यहां ले गये थे। वैज्ञानिक अनुसंधानशाला को भी दिखाया था। उनका सादा जीवन गरीबों जैसा था। एक पुराने कपड़ों की गद्दी पर बैठते थे। वे जमनालालजी से अपने बेटे के समान प्रेम रखते थे।

५२४. राजाजी

कांग्रेस वर्किंग कमेटी के समय हमेशा वर्धा आया करते और बजाजवाड़ी में ही ठहरते। 'चारपाणी' (रसम) कैसे बनाना, यह रसोई में घर की तरह से आकर रसोइये को खुद समझाते थे। झंडा-सत्याग्रह में जमनालालजी पकड़े गये, तब गांधी चौक में भाषण देते हुए इन्होंने कहा था, "आज वर्धा में राम-वनवास हो गया है।" जमनालालजी और इन्होंने खादी के प्रचार के लिए कई बार देश का दौरा किया। हमारे पूरे परिवार के साथ वे घर-जैसा संबंध रखते थे। कमला पर इनका विशेष प्यार था। इनकी लड़की लक्ष्मीबहन की शादी देवदास गांधी-से 'पर्णकुटी' पूना में हुई, तब हम सभी उसमें शामिल हुए थे। भारत सरकार के मंत्री और स्वराज्य मिलने के बाद भारत के गवर्नर जनरल रहे। कई पुस्तकों के लेखक।

५२५. पट्टाभि सीतारमैया

वर्किंग कमेटी के लिए बराबर वर्धा आते थे। जमनालालजी से बड़ी घनिष्ठ मित्रता थी। बजाजवाड़ी में ही ठहरते और पंगत की रंगत में मिल जाते थे। उनका सबके साथ प्रेम था। कांग्रेस के अध्यक्ष बने और फिर नागपुर में गवर्नर भी। इनकी पुस्तक 'कांग्रेस का इतिहास' बहुत प्रसिद्ध है।

५२६. शांताबाई रानीवाला

जमनालालजी ने इनको सदा बेटी के समान ही माना। इनके बारे में मैंने यह कविता बनाई थी :

"बड़े बाप की प्यारी बेटी लाड़-प्यार से पाली थी
सूरजमलजी पिता धनी मानी तू वैभवशाली थी।

बचपन से गुण शीलवान संस्कारवान महिमा थारी
शांत सुभाव स्वरूप नाम शांताबाई धीरज धारी
चाचा जमनालाल मिले जीवनधारा पलटी सारी
बेटी डरती शरमा जाती छुपकर रहती थी न्यारी!
चाचाजी ने सोचा जीवन धन्य बने बेटी प्यारी
सदा हमें समझाकर कहते सुनो बात तुम सुखकारी
यह देवी है शुद्ध पवित्र महान नम्र अनुपम अपवाद
मंगलमय शुभ अवसर पर सब लेवो इनसे आशीर्वाद।"

जमनालालजी ने शांताबाई के लिए वर्धा में 'महिला सेवा मंडल' की स्थापना की। उसके द्वारा महिलाश्रम खूब अच्छी तरह चल रहा है। यहां कस्तूरबा, बापूजी, विनोबाजी, बादशाह खां साहब आकर रहे हैं। हाल ही में इस संस्था की स्वर्ण-जयंती खूब उत्साह से मनाई गई।

५२७. सूरजमलजी रुइया

शांताबाई रानीवाला के पिता। इनके चार बेटियां ही थीं। इन्होंने श्रीनिवास को बचपन में गोद ले लिया था। 'भारत छोड़ो' आंदोलन में रामकृष्ण के साथ श्रीनिवास भी जेल गया था। जमनालालजी की प्रेरणा से सूरजमलजी की तीन बेटियों ने करीब तीन लाख रुपये दान में दे दिए। उसी से 'महिला सेवा मंडल' का ट्रस्ट बना। शांताबाई तो अपना सारा जीवन ही वर्धा के महिलाश्रम में बिता रही हैं।

५२८. रमा रुइया

जमनालालजी के चचेरे भाई गंगाबिसनजी बजाज की छोटी बेटी। इसका विवाह जमनालालजी ने सूरजमलजी रुइया के बेटे श्रीनिवास से करवाया, तब बंबई से सुव्रताबहन भी वर्धा आई थीं। करीब बीस साल से रमा महिलाश्रम,

वर्धा की तन, मन, धन से सेवा करती हैं। शिक्षा-प्रेमी है। वह शांताबाई की साधना को सुशोभित कर रही है।

५२९. सुव्रतादेवी रुइया

बंबई के धनी-मानी सेठ रामनारायणजी की पत्नी। पहले इनका नाम 'सुवटा' बाई था। जमनालालजी ने 'सुव्रता' रख दिया। इन्हें धर्मबहन मान लिया था। ये बड़ी बुद्धिमान और नीति-निपुण थीं। रहन-सहन रुआबदार रहा। पति से काफी छोटी उम्र की थीं। उनकी बीमारी में बड़ी सतर्कता से सेवा की। पति के बाद सारा घर-व्यवहार संभाला। कठिनाई का अवसर आया तब जमनालालजी ने केदारनाथजी महाराज को इनके यहां रहने का अनुरोध किया। सभी ने उनकी बड़े भक्तिभाव से सेवा की और लाभ उठाया।

जमनालालजी की सुव्रताबहन पर गहरी निष्ठा थी। इनके बड़े बेटे रामनिवासजी व्यापार में बड़े कुशल हैं। इनसे छोटे तीन भाई हैं—मदनमोहन, राधाकृष्ण और सुशील। सभी पर जमनालालजी का प्यार था।

रामनिवासजी की बहू सौ० कमला रुइया कलकत्ते के ऊंचे खानदान की बेटी है। बड़ी समझदार और मिलनसार है।

५३०. लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार

कलकत्ता के मारवाड़ियों में खास रहे हैं। उनकी लड़की सावित्री को मैं देखने गई थी। वह बहुत नाजुक और सुंदर है। मैंने सोचा, यह कमलनयन के साथ कैसे रहेगी, क्योंकि कमलनयन को तो आश्रम के संस्कार मिले थे। परंतु काकाजी ने ब्याह करा ही दिया। हम ब्याह में सिर्फ १३ लोग गये—छः स्त्रियां, छः पुरुष और एक वर राजा।

५३१. पुरुषोत्तमजी जाजोदिया

काफी वर्ष वर्धा में 'वेंकटेश भंडार' के नाम से दुकान चलाई। ये मेरे छोटे भाई थे। पढ़े-लिखे कम थे। जमनालालजी जिस काम में लगाते, उसी में लग जाते।

५३२. नारायणी देवी

पुरुषोत्तमजी की पत्नी और मेरी भाभी। नीमच के ऊँचे खानदान की बेटी। बड़ी सेवाभावी और कामकाज में कुशल।

५३३. कुंजीलाल जाजोदिया

पुरुषोत्तमजी का वेटा। वर्धा में ही व्यापार संभालता है। शांत स्वभाव का है, पर काम में होशियार है। सवकी तवियत का ध्यान रखता है।

कुंजीलाल जाजोदिया की पत्नी—भगवतीदेवी। इनके घर में लड़के-लड़की सभी होशियार हैं। ये खुद भी घर के कामकाज में चतुर हैं।

५३४. गोवर्धन जाजोदिया

मेरे बड़े भाई चिरंजीलालजी का वड़ा वेटा। इसने कई साल वजाजवाड़ी में मैनेजर का काम किया। आजकल इन्दौर में व्यापार करता है।

५३५. सावित्रीबहन पारेख

अहमदाबाद के इन्द्रजीतभाई पारेख की पत्नी। इनका घर-घराना अच्छा

संस्कारी और नामी है। ये बड़ी धार्मिक और कलावान है। इनकी बेटी अमला मां आनंदमयी मां की भक्त है। उन्हीं के आशीर्वाद से रजत का संबंध अमला से हुआ है। जमनालालजी के संबंध से श्रीमां सभी बच्चों को दादी-पड़दादी की तरह प्यार करती हैं।

५३६. रमण महर्षि

रमण महर्षि के आश्रम में राजगोपालाचार्यजी, राजेन्द्रबाबू और जमनालालजी के साथ मैं भी गई थी। आश्रम में सुबह नाश्ते में बहुत स्वादिष्ट इडली मिलती थी। स्वयं रमण महर्षि नाश्ते में साथ बैठे थे। उन्होंने नाश्ते के बाद अपने डिब्बे में से पान अपने आप निकाल कर खाया था।

रमण महर्षिजी अपने कमरे में बाघंबर पर चुपचाप बैठते थे। सामने शिष्य बैठे रहते। जमनालालजी ने कुछ प्रश्न किये और महर्षि ने बहुत थोड़े शब्दों में उत्तर दे दिया। लोग कहते थे, वहां बैठे-बैठे कई प्रश्नों का उत्तर खुद ही मिल जाता था।

५३७. हीरालालजी शास्त्री

त्यागी और विद्वान थे। जमनालालजी इनके लिए कहते थे कि ये अपनी ऐंठ के पक्के हैं। ये और इनकी पत्नी रतनदेवी शास्त्री वनस्थली विद्यापीठ चलाते हैं। उसके द्वारा राजस्थान की बहू-बेटियों का अच्छा विकास हुआ है। यह व द्या-पीठ इनकी स्व० बेटी शान्ता के नाम से खुली है। इसलिए हीरालालजी और रतनदेवीजी का सब कन्याओं पर बहुत प्यार रहा।

हीरालालजी राजस्थान के मुख्यमंत्री भी रहे थे। पंडित जवाहरलालजी भी इनका मान करते थे। पिछले दिनों हीरालालजी का निधन हो गया।

५३८. रतनजी शास्त्री

इन्दौर की वेटी है। हीरालालजी शास्त्री के साथ विवाह करके जमनालाल-जी के पास वर्धा आई थी और कुछ दिन यहां रही थी। गांधीजी उन दिनों महिलाश्रम में 'प्रार्थना मंदिर' के ऊपर रहते थे। वाद में तो हीरालालजी का काम बहुत बढ़ गया। पति-पत्नी दोनों वनस्थली विद्यापीठ चलाते रहे, जहां गांधी-विचारों के अनुरूप शिक्षा दी जाती है। हीरालालजी के जाने के वाद अव रतनजी पूरा काम संभाल रही हैं। अभी 'महिला सेवा मंडल' की स्वर्ण जयंती पर अध्यक्षा होकर वर्धा आईं तव पुरानी वातों की याद से गला भर आया।

५३९. रविशंकर महाराज

गुजरात के वड़े संत। वीस-वीस मील की पद-यात्रा करते रहे हैं। इन्होंने चोर-डाकुओं का वड़ा उद्धार किया। गुजरात में श्रीमन्नारायणजी और मदालसा की वजह से मुझे भी इनके साथ रहने, घूमने का मौका मिला। अकाल-दुकाल के गांवों में बड़ी लगन से सेवा करते हैं। ये गुजरात के 'महाराज' कहलाते हैं। लोग इन्हें घर आकर लाखों का दान दे जाते हैं। गुजरात राज्य का उद्घाटन इन्हींके हाथों हुआ था।

५४०. सुशीला राजेन्द्रलाल

सुव्रतावाई रुइया की वेटी। वड़े लाड़-प्यार में पली है। मनमौजी और मीठे स्वभाव की है। हम लोगों से कहती है—"आप हँसना भी जानते हैं क्या ?"

५४१. राजेन्द्रलाल

सर शादीलालजी के बेटे। बहुत सीधे और सरल। सुशीलाजी के मनमौजी स्वभाव को खुशी से निभाते हैं। यह बड़ी बात है।

५४२. डा० विधानचन्द्र राय

कलकत्ते के नामी डाक्टर थे। बापू के उपवासों के समय पूना की 'पर्णकुटी' और सेवाग्राम में रहे थे। बजाजवाड़ी में रामकृष्ण के 'घनचक्कर क्लब' में सब नेता लोग खेलते थे। एक बार शंकररावजी को चोट लगी तो विधानबाबू ने खुद मरहम-पट्टी की थी। कमलनयन के बेटे राहुल को कलकत्ता में इनके पास ले गये थे। इन्होंने देखकर कहा, "आप तो मारवाड़ी हैं, दवा लेना नहीं चाहते। इसलिए हरी हल्दी की पांच-चार बूंद पानी के साथ दे देना।"

५४३. डा० रानडे

कस्तूरबा अस्पताल में रोगियों की सेवा करते हैं। मैंने इनसे कहा, यहां सेवाग्राम में प्राकृतिक, होमियोपैथिक इलाज भी चलने चाहिए। इन्होंने कहा, "आपका सुझाव अच्छा है। हमने यहां की पोशाक खादी की बना दी है।" यह सुनकर मुझे खुशी हुई।

५४४. रामादीन

इसके तांगे में कनीराम दादाजी रोज शाम को बच्चों के साथ घूमने जाया करते थे। बाद में जमनालालजी और हम सभी बहुत साल तक रामादीन के तांगे

में बैठते रहे। इसकी घोड़ी शादी-व्याह में भी मांगी जाती। घोड़ी का जेवर यहीं रहता और वह यहीं से सजकर जाती थी। घोड़ी का नाम 'लक्ष्मी' था। उसके गुजर जाने पर रामादीन ने तांगा चलाना ही छोड़ दिया। अब पेंशन पाता है।

५४५. बाबा राघवदास

भूदान में काम करते थे। इन्होंने कहा था, जवाहरलालजी से कुआं कौन लावेगा ? मैं इसके लिए तैयार हुई और जवाहरलालजी से मिलने गई। मैं उनके कमरे में जाने लगी तो वे कमरे से बाहर आ रहे थे। मुझे देखकर रुक गये। मैंने कहा, आज आपको खूब हँसना पड़ेगा। जैसे भीष्मपितामह को अर्जुन ने जमीन पर तीर मारकर पानी पिलाया था, उसी प्रकार आपको मुझे भी एक कुआं देना पड़ेगा। जवाहरलालजी ने हँसते हुए कहा, "हां, ठीक है।" रामेश्वरीजी नेहरू और ओम् मेरे साथ थीं। मेरी झोली में जेवर था। रामेश्वरी नेहरू ने हँसते हुए कहा, "ये कूपदान के लिए बहनों से जेवर भी लेती हैं।"

५४६. डा० राधाकृष्णन्

बड़े विद्वान थे। राष्ट्रपति बनने के बाद वर्धा आये तो भीड़भाड़ के संकोच-वश सरकारी विश्राम-गृह में ठहर गये होंगे। लोगों के फोन आने लगे कि पहले तो सभी नेता बजाजवाड़ी में ही ठहरते थे। फिर मैं स्वयं इनके पास गई और बजाजवाड़ी आने की याद दिलाई। तब उन्होंने कहा, "भोजन के लिए तो वहीं आऊंगा।"

५४७. गोविन्द रेड्डीजी

आंध्र के कार्यकर्ता थे। सेवाग्राम आश्रम में कई वर्षों तक रहे। आश्रम की खेती संभालते थे।

५४८. पूनमचन्दजी रांका

कांग्रेस के बड़े नेता थे। नागपुर जेल में कई बार उपवास किये। जेल से निकले तो काली कमली और खड़ा झाड़ू लेकर सफाई में जुट गये। नागपुर में हरिजनों के साथ सफाई करने निकल जाते थे। सारा जीवन इसी तरह बिता दिया।

५४९. धनीबाई रांका

पूनमचन्दजी की पत्नी। घर की लक्ष्मी थीं। जो भी आता-जाता, उन्हें रसोई बहुत अच्छी बनाकर खिलाती थीं। जमनालालजी कहते, "जितना शुद्ध और स्वादिष्ट भोजन धनीबाई के हाथ का होता है और कहीं मिलना मुश्किल है।" महात्मा भगवानदीनजी इनके घर पर ही रहते थे। निःसंतान होते हुए सबको मां-बहन की तरह प्रेम से खिलाती थीं। बजाजवाड़ी के बंगले पर हमारे साथ भी बहन-बेटी की तरह आकर रह जाती थीं।

५५०. महात्मा भगवानदीन

रामकृष्ण छोटा-सा था तब १९२३-२४ में जमनालालजी ने इन्हें वर्धा में अपने पास बहुत दिन रखा था। तब हम सब लक्ष्मीनारायण मंदिर के पास गांधी चौक में दुकान के ऊपर ही रहते थे। भगवानदीनजी दाढ़ी रखते। ये बच्चों को बहुत प्यार करते थे। हमको मारवाड़ी समाज में सुधार करना सिखाते और बहनों का घूंघट और जेवर छुड़ाते थे। बड़े अच्छे लेखक थे। कई पुस्तकें निकली हैं।

५५१. कन्हैयालालजी राठी

अपने मुनीम थे। इनके बहुत लड़के-लड़कियां थीं। बच्छराजजी शादी के लिए इन्हें पैसा दिया करते थे।

५५२. रामेश्वरजी टांटिया

राजस्थान के व्यापारी। जमनालालजी से इनका काफी स्नेह रहा। कई वर्ष पार्लियामेंट के मेंबर रहे। गायों के काम में काफी दिलचस्पी लेते हैं। कूपदान के लिए मुझे मदद दी थी।

५५३. राधारमणजी

दिल्ली के नेता और महानगर परिषद् के मुख्य कार्यकारी पार्षद हैं। श्रीमन्जी के पास काफी आते-जाते थे। इन्होंने मेरे कूपदान-यज्ञ में भी बहुत मदद दी थी। सभी सामाजिक संस्थाओं से संबंध रखते हैं।

५५४. सौन्दरम् रामचन्द्रन

ये बड़ी अच्छी महिला हैं। 'कस्तूरबा ट्रस्ट' में बहुत काम किया है। जमनालालजी के साथ मैं भी इनके घर गई थी। सौन्दरम् तो पुरुषों से भी अच्छा काम करती हैं। दक्षिण भारत में मदुराई के पास 'गांधीग्राम' में महिलाओं और बच्चों की संस्थाएं चलाती हैं।

५५५. जी० रामचन्द्रन

बापू ने इनकी शादी सौन्दरम्‌जी के साथ करवाई। सेवाग्राम और मगनवाड़ी में काफी वर्षों तक रहे। बाद में दिल्ली में 'गांधी स्मारक निधि' में काम किया और खादी कमीशन के अध्यक्ष भी रहे।

५५६. रविशंकरजी शुक्ल

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री थे। जब भी बजाजवाड़ी में पान मंगाये जाते थे तब हम समझ लेते कि शुक्लजी आनेवाले हैं। बापूजी और जमनालालजी को बहुत मानते थे। रविशंकरजी शुक्ल और ख्यालीरामजी दोनों सफेद मूंछवाले संबंधी थे। ख्यालीरामजी की बेटी शुक्लजी के बेटे से ब्याही गई है। इनके यहां हमारा घर के जैसा ही आना-जाना था। एक बार नागपुर से दिल्ली मदालसा को फोन किया, "बेटी, मैं आ रहा हूं और तुम्हारे पास ही ठहरूंगा।" इतना स्नेह रखते थे।

५५७. रुडमलजी जोशी

सीकर के थे। वर्धा में भी हमारे घर के पुरोहित रहे। खादी पहनते थे। जब मैंने घूंघट खोला तो कहते, "सेठानी मेरे सामने आ जायेंगी तो मैं कुएं में पड़ जाऊंगा।" पर मैं तो उनका मान ही रखती थी। इनकी पत्नी जोसणजी सदा मेरे पास आती रहती थीं।

५५८. रामेश्वरीजी नेहरू

जवाहरलालजी की भाभी। दिल्ली में 'कस्तूरबा ट्रस्ट' तथा दूसरी संस्थाओं

में बहुत काम किया था। सेवाग्राम में बापूजी के पास आती-जाती थीं। मेरे कूपदान में इनकी बहुत मदद मिली।

'हरिजन सेवक संघ' दिल्ली की कई वर्ष अध्यक्षा रही थीं।

५५९. रामदासभाई

पहले गोपुरी की गोशाला में काम करते थे। बापू की भस्मी के साथ चारों धाम जाने के बाद उन्होंने गंगोत्री से गोमुख तक जाने की हिम्मत की थी।

आजकल महिला आश्रम के पास खेती और गोशाला के काम में लगे हैं।

५६०. राजेन्द्रप्रसादजी

राजेन्द्रबाबू बिहार के बहुत बड़े कार्यकर्ता थे। जब पहली बार वर्धा आये तब काली बगल-दण्डी पहने हुए थे। जमनालालजी ने कहा, "बाबूजी, खादी के कुर्ते सिलवाते हैं।" बोले, "भाई, कौन साबुन से धोयेगा।" टोपी तो सिर पर ऐसे रखते कि लगती थी, अभी गिर जायगी। बजाजवाड़ी में अपने परिवार की तरह रहते थे। वे बैठते तो आगे को झुक जाते। मैंने कहा, "बाबूजी, गांधीजी कहते हैं, सीधा बैठना। हँसने से शरीर सुधरता है।" सहज बोलते, "अब क्या आदत सुधरेगी !"

राजेन्द्रबाबू स्वतंत्र भारत के लगातार बारह साल राष्ट्रपति रहे।

राजेन्द्रबाबू के बेटे जनार्दन की बहू को गांधीजी और जमनालालजी बहुत प्यार करते थे। उनके दो लड़के हुए, पर दोनों मर गये। इससे गांधीजी और जमनालालजी अधिक ख्याल रखते थे। राजेन्द्रबाबू के सब लड़कों के बेटियां ही हुईं।

५६१. राजवंशी देवी

राजेन्द्रबाबू की पत्नी। बजाजवाड़ी, वर्धा गेस्ट हाउस में बहुत रहीं। खान-

पान में अपनी ही शुद्धता निभाती थीं। बिहार के इनके घर पर हम गये थे। राष्ट्रपति भवन में भी उसी सादगी से रहीं।

५६२. मथुरा बाबू

राजेन्द्रबाबू के सेक्रेटरी। राजेन्द्रबाबू को जब 'गोसेवा संघ' का अध्यक्ष बनाया तब राधाकिसन ने नियम दिया कि अब आपको गाय का घी, दूध लेना होगा। बापू ने कहा, "राजेन्द्रबाबू, यह नियम आपसे पालना मुश्किल होगा।" मैंने हँसी में कहा, "गाय के घी में बनी थाली आयेगी तो मथुराबाबू खा जायेंगे, और मथुराबाबू की थाली राजेन्द्रबाबू खा लेंगे।"

५६३. चक्रधरजी

राजेन्द्रबाबू के सेक्रेटरी। जब राजेन्द्रबाबू राष्ट्रपति हुए तब चक्रधरबाबू बोले, "अब राजेन्द्रबाबू वर्धा आयेंगे तो आपके यहां नहीं ठहर सकेंगे। उनके साथ बहुत स्टाफ होगा।" मैंने राजेन्द्रबाबू से पूछा तो उन्होंने कहा, "और कहां ठहरूंगा ?" उन्हें तो बजाजवाड़ी ही पसंद था।

५६४. शंकरभाई पटेल

साबरमती आश्रम के दफ्तर में काम करते थे। उनकी चार लड़कियां थीं। चारों आश्रम में पलीं और पढ़ीं। सभी सिद्धांतों की पक्की रही हैं।

सबसे बड़ी कमु जेराजाणी की सेक्रेटरी रही। दूसरी शांता पटेल ने अल्मोड़ा में खादी, ऊन का बहुत वर्षों तक अच्छा काम किया। तीसरी मंगला ने गृहस्थाश्रम की जिम्मेदारी अच्छी तरह निभाई। साथ ही सर्वोदय और भूदान का भी काम करती रही। अब संन्यास-वृत्ति से ब्रह्म विद्या मंदिर में अधिकतर रहती है और वेदोपनिषद् का अध्ययन करती है।

सबसे छोटी पुष्पा अहमदाबाद में अपनी गृहस्थी चलाते हुए समाज-सेवा का काम भी करती है।

शंकरभाई ने अपनी सभी बेटियों को अच्छे संस्कार दिये हैं।

५६५. डा० लीलावती

बापू के पास सेवाग्राम में रहती थी। बापू की इनी-गिनी बेटियों में इसकी भी गिनती है। डा० सुशीला नायर की देखादेखी वह भी डाक्टर बन गई।

५६६. शंकररावजी लोंढे

मेरे बच्चों को पढ़ाते थे। मैं जेल में थी। प्रथमा के फार्म भरने थे। कमलनयन नहीं भरता था। मैं जब जेल से आई तब लोंढेजी ने कहा, "माताजी, सबने फार्म भर दिये। पर कमलनयन ने नहीं भरा है। आप भर दो तो शर्म से वह भी भर देगा।" मैंने फार्म तो भर दिया। परीक्षा के १५ दिन पहले कमलनयन ने भी फार्म भरकर दिया। वह तो पास हो गया और मैं रह गई।

आजकल लोंढेजी वर्धा में 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' के सेक्रेटरी का काम कर रहे हैं।

५६७. लक्ष्मी

साबरमती आश्रम में लक्ष्मी, हरिजन कन्या, ६ महीने की बच्ची, उसका बाप (दुधाभाई) बापूजी के पास आया और कहने लगा, "बापू, आप हरिजन को अपनाने की बात करते हो। मेरी लड़की को आप आश्रम में रख सकोगे?" बापू क्या जवाब देते! बापू ने कस्तूरबा से कहा कि इस लड़की को मनु की तरह रखना और बापू ने उस लड़की का नाम लक्ष्मी रख दिया। बा नहलाती, जुएं निकालतीं, पर रसोई के लिए क्या करतीं? सन्त लोगों की परीक्षा होती है।

जव श्रीमन्जी गुजरात में थे तव मदालसा इन्हें अकसर राजभवन के कार्य-क्रमों में बुलाती रहती थी।

५६८. लहानुजी महाराज

मोझरी आश्रम में रहते थे। टाकड़खेड़ू गांव के थे। सन्त तुकड़ोजी महाराज के साथ कभी-कभी आते थे। मोझरी आश्रम गई थी, वहां भी मिले थे।

५६९. वल्लभस्वामी

छोटेपन से ही विनोबाजी के पास रहते थे। विनोबाजी उन्हें पुत्र के समान शिक्षा देते थे। वल्लभस्वामी के मरने के बाद कभी विनोबाजी उनके बारे में बोलते हैं तो सुननेवालों को भी रोना आ जाता है। इन संतों के मन में भी अपने शिष्यों के प्रति कितना आकर्षण होता है।

५७०. वासिमकर

वर्धा में सत्याग्रह में ये सबसे आगे रहते थे। कई बार जेल गये। विनोबाजी के साथ भूदान पद-यात्रा में भी साथ रहे। बजाजवाड़ी में कई साल रहे हैं। अब पेंशन पाते हैं।

५७१. डा० वारदेकर

सेवाग्राम में डाक्टरी करते थे। बापूजी के पास कई वर्षों तक रहे। बाद में कुष्ठ रोगियों की सेवा और कुष्ठ की रोकथाम के प्रयोग किये। अब पूना चले गये हैं। इनकी स्त्री भी सुयोग्य डाक्टर है। दोनों सेवा के साथ आत्मचिंतन करते हैं।

५७२. सत्यदेवजी विद्यालंकार

जमनालालजी के साथ वर्धा में रहते थे। कई साल तक दैनिक हिंदुस्तान के संपादक रहे। अच्छे लेखक थे। कई पुस्तकें निकलीं। आविद अली और ये दोनों भाई की तरह रहा करते थे।

५७३. सुभद्रा

सत्यदेवजी विद्यालंकार की पत्नी सुभद्रा जव रामकृष्ण छोटा था, उसके लिए छोटी-छोटी गुदड़ियां बनाकर देती थीं। जमनालालजी इन्हें वेटी की तरह मानते थे। समाज-सेवा का बहुत काम किया। महात्मा भगवानदीनजी का इस परिवार पर वड़ा प्यार था। पं० सुंदरलालजी की भी इन्होंने वड़ी सेवा की है।

५७४. माणिकलालजी वर्मा

राजस्थान के वड़े कार्यकर्ता थे। गांधीजी के पास वर्धा आते रहते थे। जमनालालजी से वड़ा घनिष्ठ संवंध था। एक वार गर्मी के दिनों में हम सव चिकल्दा में साथ रहे। तव ये वड़े चाव से मारवाड़ी में गीत सुनाते थे। इन्होंने राजस्थान के भीलों में और गाड़ोदिया लुहारों के जीवन में वहुत सुधार किया। मैं उन्हें 'भीलों के राजा' कहती थी।

माणिकलालजी वर्मा की पत्नी नारायणीदेवी उदयपुर में कई महिला संस्थायें चलाती हैं। मैं उदयपुर गई थी तव मुझे अपनी संस्थायें दिखाने ले गई थीं। खेती भी संभालती हैं और अव पार्लियामेंट की मेंवर हैं।

५७५. बाबा विरुलकर

वर्धा जिले में विरुलकर इनके गांव का नाम है। जमनालालजी के प्रति इनकी

बड़ी श्रद्धा थी। हम लोग भी इनके घर जाते थे। कांग्रेस के नामी कार्यकर्ता थे।

५७६. डा० वेंकटराव

हैदराबाद में प्राकृतिक चिकित्सालय चलाते हैं। इनकी पत्नी विजयालक्ष्मी भी डाक्टर है। पति-पत्नी दोनों बड़ी भावना से और गांधीजी के आदर्शों के अनुसार प्राकृतिक उपचार करते हैं। मैं कुछ दिन इनके चिकित्सालय में रही हूं।

५७७. बारदानावाले

जामनगर के रहनेवाले ये गायों के भक्त हैं। गोशाला में भी सेवा करते हैं और घर में भी गायें रखते हैं। कोई भी आये, अपने घर पर खाना खिलाते हैं। मैं बाहर का नहीं खाती हूं, फिर भी इनके घर जाने पर अपने आप खाने को मन करता है, इतनी शुद्धता है। ये गायों को बहुत प्यार करते हैं, उनके नाम भी रखते हैं। गायें भी इनके आगे सिर हिला-हिलाकर प्यार करती हैं।

५७८. सूरजी वल्लभदास

बंबई के नामी व्यापारी। विलेपार्ले में रहते थे। इनकी बहुत अच्छी गोशाला थी। बड़े धार्मिक थे। हम जुहू में रहते थे तब इनके यहां से गाय का दूध हांडे भरकर आता और जमनालालजी के पास गिलास भर-भर कर दूध पीते-पिलाते थे। इनके घर पर शुद्ध गाय के घी का भोजन करने का मौका जमनालालजी के साथ मुझे भी मिला। अभी इनकी किराने की दुकान है। कमलाबाई और मैं इनकी दुकान से ही सामान लेते थे, क्योंकि इनके यहां सामान अच्छा मिलता था। इन्होंने अपनी बेटियों का बेटों की तरह जनेऊ संस्कार करवाया, तब बड़ा उत्सव मनाया था। उसमें बच्चों के साथ मैं भी शामिल हुई थी।

५७९. वैष्णव जेलर

मैं नागपुर जेल में थी। ये जेलर थे। मैं बीमार हो गई। वहां पर गाय का दूध तो मिल जाता, पर दही मिलना मुश्किल था। इन्होंने कहा कि इनके घर गाय का दूध आता है। ये दही की व्यवस्था कर देंगे। मैंने कहा; "दही में तो भैंस का दूध भी मिल जायगा।" तब इन्होंने तार देकर वर्धा से गाय का दही हांडी में मंगाया था।

५८०. बसुमतीबहन

बापूजी के साथ साबरमती आश्रम में रहती थीं। शरीर से बड़ी नाजुक थीं। बापूजी के सिद्धांतों का पालन करती थीं और प्रचार भी करती थीं।

५८१. वी० वी० गिरि

अहमदाबाद राजभवन में श्रीमन्जी के साथ मैं इनसे मिली थी। खाने पर एक ही मेज पर बैठे थे। तब ये उपराष्ट्रपति थे। बाद में राष्ट्रपति बने। उस समय बंगलादेश में भयानक नर-संहार हो रहा था। उसकी खबरें सुन-सुनकर मेरा जी बहुत बेचैन हो उठा और मैंने इनको पत्र लिखा, "याहियाखां एक नर है। उसको इतना भारी नर-संहार करने का अधिकार कैसे, कहां से मिला ? उस अधिकार को छीन लेने का अधिकार किसी के पास तो होना ही चाहिए तथा उसके द्वारा यह नर-संहार तुरंत बंद हो जाना चाहिए।"

५८२. कमला श्रोत्रिय

उदयपुर में बहनों की संस्थाओं का संचालन करती हैं। भूदान-पद-यात्रा में

विनोवाजी इनकी संस्थाओं में गये थे। ये मुझे उदयपुर अपनी संस्थाएं दिखाने ले गईं और मेरा भाषण भी करवाया था।

दयाशंकरजी श्रोत्रिय—कमला श्रोत्रिय के पति। वर्षों से ये दोनों रचनात्मक और शिक्षण के काम में लगे हुए हैं।

५८३. मामासाहव फड़के

महाराष्ट्र के थे। सावरमती आश्रम में शुरू से रहे। विनोबाजी का छुटपन का नाम 'विनायक' था। मामासाहव ने उन्हें 'विनोवा' कहना शुरू किया, तो फिर वापूजी भी उन्हें इसी नाम से पुकारने लगे।

५८४. परचुरे शास्त्री

ये सेवाग्राम में वापूजी की कुटिया के पास आकर वोले थे, "मैं तो यहीं मरूंगा।" कुष्ठ रोगी थे। वापू इनकी मालिश करते थे। इनके लिए आश्रम में ही एक अलग कुटिया बनवा दी थी। कुछ अच्छा होने पर उनके द्वारा सेवाग्राम आश्रम से वापूजी ने कई शादियां करवाईं। ये संस्कृत के वड़े पंडित थे।

५८५. लालबहादुर शास्त्री

प्रधान-मंत्री बनने के वाद वजाजवाड़ी आकर रहे और विनोबाजी से एक छोटे-से देहात में जाकर मिले थे। उनकी सादगी, सरलता और नम्रता की हम सभी पर गहरी छाप थी। पं० जवाहरलालजी के वाद इन्होंने देश की वागडोर वड़ी कुशलता और दृढ़ता से संभाली।

५८६. ललितादेवी शास्त्री

लालबहादुर शास्त्रीजी की पत्नी। बड़ी धार्मिक, सीधी-सादी, रुआवदार

महिला हैं। अब शास्त्रीजी के नाम से ग्राम-सेवा की एक संस्था चलाती हैं।

५८७. पुरी के जगद्गुरु शंकराचार्यजी

'गोसेवा संघ' के जयपुर सम्मेलन में आये थे। कह रहे थे, "गोहत्या-बंदी के बारे में इंदिराजी से दो शब्द का कानून करा दीजिये। फिर हम सब अपनी शक्ति लगायेंगे।" मैंने कहा, "आपको गोहत्या बंद करनी हो तो कायदे को ही लेकर क्यों बैठे हो ? बिना कायदे का ही कायदा हो, वह ज्यादा प्रभावकारी होगा। कायदा कर देने मात्र से गोहत्या बंद थोड़े ही हो सकती है। धार्मिक चीज तो जनता की भावना से ही चलेगी।"

५८८. डा० मा० म० शाह

अपने कॉमर्स कॉलिज, वर्धा के प्रिंसिपल रहे हैं। अब 'शिक्षामंडल' के प्रधान मंत्री हैं। विद्यार्थी ही देश की शक्ति हैं। शिक्षक आदर्श से रहें तो विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ता है।

५८९. नर्मदाबहन

बापू के पास सेवाग्राम में रही थी। वर्धा के महिलाश्रम में पढ़ी है। मदालसा के पास अहमदाबाद में आती थी। एक बार वहां मुझे अपनी संस्था दिखाने ले गई थी। गांधीनगर जाते हुए रास्ते में अडालज गांव में इन्दुमतिबहन सेठ की माताजी के नाम पर बहनों की सुंदर संस्था चलाती है।

५९०. शंकरलालजी

जमनालालजी के सेक्रेटरी रहे थे। बहुत भले और सीधे हैं। इनका विवाह

कु० मनु गांधी की बड़ी बहन उमिया के साथ साबरमती आश्रम में कराया था।

५९१. पंडित नारायण मोरेश्वर खरे

सपरिवार साबरमती आश्रम में रहते थे। दोनों समय की प्रार्थना करवाते थे। संगीत सिखाते थे। आश्रम भजनावली के भजनों की राग इन्हीं की बिठाई हुई है। ये दांडी-कूच में बापू के ८० साथियों में शामिल थे।

५९२. लक्ष्मीबेन खरे

पंडित खरेजी की पत्नी लक्ष्मीबेन साबरमती आश्रम की छात्राओं के साथ वर्धा के महिलाश्रम में आकर रही थीं। अब साबरमती आश्रम में ही रह रही हैं। इनकी बेटी मथुरी अहमदाबाद में संगीत के वर्ग चलाती हैं और समारोहों में बड़े भक्तिभाव से भजन गाती हैं। बापू के सिद्धांतों पर चलती हैं।

५९३. मोती रसोइया

यह छोटेपन से बजाजवाड़ी में रसोई का काम करता रहा है। जाति का सोनार है। इसके लड़के सरकारी नौकरी में लग गये हैं। अब भी कभी-कभी हमारे यहां रसोई बनाने के लिए आ जाता है।

५९४. विट्ठल

जब जमनालालजी जयपुर के कर्णावतों के बाग में नजरबंद थे तब उनके नौकर के रूप में इसे सरकार ने साथ में रख दिया था। आखिर तक वह काकाजी की बहुत सेवा करता रहा। आजकल वर्धा में ही किसी बैंक में काम करता है।

५६५. सुरजू नाई

सुरजू नाई की मां हमारे यहां नहलाना-धुलाना, चोटी करना आदि का काम करती थी। वह बहुत रुआबी थी। बड़ी सेठानियों के उतारे कपड़े पहनती थी। पर गहने चांदी के पहनती थी। इसका लड़का सुरजूनाई हड्डी जोड़ने का काम भी करता रहा। इसे बजाजवाड़ी में सभी बड़े नेताओं की हजामत करने का मौका मिला। लेकिन काकाजी के कहे मुताबिक वह किसी से कुछ लेता नहीं था। यह बात भुलाभाई को बड़ी खटकती थी।

५६६. श्यामचरणजी शुक्ल

पंडित रविशंकरजी शुक्ल के पुत्र। शुक्लजी के साथ वर्धा आते थे। कई साल मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री रहे और अब फिर हैं। 'ग्राम-स्वराज्य कोष' के उत्सव में सेवाग्राम आये थे। विनोबाजी से मिलते रहे हैं।

५६७. श्यामलालजी

कस्तूरबा ट्रस्ट इंदौर के मंत्री रहे हैं। कस्तूरबाग्राम में रहकर कई वर्षों से सेवा करते हैं। लेडी ठाकरसी के यहां 'पर्णकुटी' में आते-जाते रहे हैं। पहले 'गांधी सेवा संघ' का दफ्तर बजाजवाड़ी में था तब यहां कई वर्ष काम किया। अब 'अखिल भारत 'हरिजन सेवक संघ' के अध्यक्ष बने हैं।

५६८. महादेवलाल सराफ

जमनालालजी के सेक्रेटरी थे। विदेश से पढ़कर आये थे। हिंदुस्तानी महिलाओं का मजाक उड़ाते थे। एक दिन किसी ने पूछा, "हम सेठानीजी से मिलना

चाहते हैं।" बोले, "अंदर चले जाओ। जो सबसे 'कुरूप' हो उन्हें सेठानीजी समझ लेना।" इनका विवाह हो जाने के बाद पति-पत्नी दोनों ने एक-दूसरे की खूब सेवा की।

५९९. कमला सराफ

अमरावती के अच्छे खानदानी सेठ की बेटी। बड़ी उत्साही महिला हैं। इनके पति द्वारकादासजी सराफ अच्छे व्यापारी हैं।

६००. कृष्णाताई

ये वर्धा सूतिका-गृह में अच्छी देखरेख और सेवा का कार्य करती हैं। ये सबको मां जैसी लगती हैं। मदालसा के बेटे भरत और रजत का जन्म इन्हीं के हाथ से हुआ था। विनोबाजी भी बच्चे को देखने सूतिका-गृह गये थे।

६०१. श्यामाबहन

जयपुर के हंसराजजी की पत्नी। जमनालालजी जयपुर-सत्याग्रह में जेल गये तब इन्होंने बहुत काम किया। जमनालालजी इन्हें बेटी की तरह मानते थे। हंसराजजी जमनालालजी के सेक्रेटरी भी थे।

६०२. गोविंदरावजी देशपांडे

सर्वोदय कार्यकर्ता हैं। विनोबाजी के साथ भूदान पदयात्रा में रहे। दादा धर्माधिकारी के साथ कभी उरुलीकांचन में भी रहे। अब ज्यादातर बंबई में रहने लगे हैं।

६०३. शशि

गोविंदलालजी पित्ती की बेटी। सरस्वतीबाई गाड़ोदिया के पुत्र गोपाल को ब्याही है। इनकी शादी में मैं बंबई गई थी। अभी सब दिल्ली में सुख, संतोष से रहते हैं।

६०४. शिवनारायणजी

बच्छराजजी के मुनीम थे। वर्धा में उनका अच्छा मान था।

६०५. सोफिया

बंबई के खोजा खानदान की बेटी। कांग्रेस के महिला सेवा दल की लीडर रही। जमनालालजी ने इसका ब्याह डा० खानसाहब के बेटे सादुल्ला से कराया था। दोनों की जोड़ी बहुत अच्छी रही। गांधीजी ने जमनालालजी से कहा कि यह जोड़ी मिलाने में तो तुमने कमाल कर दिया।

६०६. बीबी अमतुस्सलाम

सेवाग्राम में बापूजी का खाना-पीना संभालती थीं। शरीर से नाजुक हैं। बापूजी इनका बहुत ध्यान रखते थे। अभी राजपुरा (पंजाब) में कस्तूरबा आश्रम चलाती हैं। बड़ी हिम्मतवाली हैं। अपनी जान को खतरे में डालती रहती हैं।

६०७. चिमनलालभाई शाह

साबरमती आश्रम में बहुत पहले से बापू के साथ रहे। फिर सेवाग्राम में भी

वापू के साथ आये। बापू ने कहा, "चिमनलाल, तुमको सेवाग्राम में ही मरना है।" बस, तबसे बराबर सेवाग्राम आश्रम में ही रहते हैं।

एक बार मैंने बापूजी से पूछा कि चिमनलालभाई भी आगाखां महल में आपको मिलने आयें क्या? बापू ने कहा, "वे तो सेवाग्राम में ही मरनेवाले हैं।" पहले सेवाग्राम में मलेरिया की शिकायत थी, इसलिए गोपुरी के पानी का अनुभव करने कुछ दिन के लिए इन्हें आग्रहपूर्वक गोपुरी की शांतिकुटीर में लाये थे। वैसे ये सदा सेवाग्राम में ही रहे हैं और अब भी वे आश्रम के प्राण हैं।

६०८. शकरीबहन

चिमनलालभाई की पत्नी। साबरमती आश्रम से ही बापूजी के साथ रहीं। अभी चिमनलालभाई के साथ सेवाग्राम में रहती हैं। चिमनलालभाई शरीर से नाजुक हैं। इनकी लड़की शारदा भी नाजुक है। इसलिए शकरीबहन को कभी-कभी लड़की के पास सूरत भी जाना पड़ता है।

६०९. मोहनलाल सुखाड़िया

राजस्थान के बड़े नेता हैं। जमनालालजी पर बड़ी श्रद्धा रखते थे। कमलनयन के भी मित्र थे। अभी आंध्र के गवर्नर हैं। मोहनलालजी सुखाड़िया की पत्नी इंदुबाई बड़ी होशियार महिला हैं। रात-दिन खेती के काम में लगी रहती हैं। इनकी खेती आदर्श मानी जाती है।

६१०. बोरकर

कमलनयन के घनिष्ठ मित्र, मराठी के नामी कवि और साहित्यिक। गोवा के रहनेवाले। बापू और विनोबाजी के विचारों का गहरा अध्ययन किया है।

६११. वियोगी हरि

दिल्ली में हरिजन कालोनी में रहते थे। संत साहित्य का इन्होंने अध्ययन किया है। इसका लाभ उनको मिला होगा।

६१२. सीतारामजी सेकसरिया

मेरे धर्म के भाई बने हैं। जमनालालजी के समय वर्धा आते थे। जमनालालजी कहते थे, "सीतारामजी नवाब हैं और जानकीदेवी नवाबों के गांव की है। इसलिए इनकी ज्यादा बनती है।" मैं कलकत्ता में महीनों इनके घर में रही हूं और वहीं रहकर मैंने नशाबंदी, खादी, कूपदान, पर्दा-निवारण, गोसेवा आदि समाज-सुधार के काम किये हैं। सीतारामजी ने कलकत्ता में 'शिक्षायतन' कन्या-विद्यालय स्थापित किया। उससे मारवाड़ी समाज में बहुत सुधार हुए हैं।

६१३. भगवान देवीजी

सीतारामजी की पत्नी भगवानदेवी रसोई अपने हाथ से बनाती थीं। आटा खुद पीसकर सीतारामजी को नरम और गरम फुलके खिलाती थीं। जमनालालजी और हमको घी के टिकड़िये बनाकर खिलातीं। जमनालालजी कहते थे, "इनके हाथ का खाना स्वादिष्ट तो बहुत होता है, पर इतना घी पचेगा कैसे ?"

६१४. नागगिरि

राजाजी की बड़ी बेटी 'पापा'। ये बाल-विधवा हैं। काकाजी मद्रास गये थे तब वहां इनको एक घर ले दिया था। जमनालालजी ने इन्हें धर्म की लड़की माना था। पापा नागगिरि अभी भी उसी मकान में रहती हैं। अपने पिता राजाजी की

अंत तक वड़ी लगन से सेवा करती रहीं।

६१५. सतीशबाबू

कलकत्ता में सोदपुर के 'खादी प्रतिष्ठान' में रहते थे। कमलनयन की शादी के लिए हम कलकत्ता गये थे। उन लोगों को पता चला कि हम लोग गाय के घी के नियमवाले हैं, तब सतीशबावू ने सोदपुर से गाय का घी भेजा था। लक्ष्मण-प्रसादजी ने कहा, "सारा घी गाय का ही मंगा लो।"

सतीशवावू को मैं 'छत्तीसवावू' ही कहा करती थी। ये वर्धा बहुत आये हैं। मगनवाड़ी में भी रहे हैं। जीवन-भर खादी और चर्खा चलाते रहे हैं। अव ६८ वर्ष के लगभग उनकी उम्र है। फिर भी दिन-रात काम में लगे रहते हैं। इनकी पत्नी वड़ी निष्ठावान थीं।

६१६. सावजी महाराज

महाराष्ट्र के नामी संत। श्रीराम टिवड़ीवालेजी अपने पिताजी की पुण्य-तिथि पर इनका रात-भर कीर्तन-भजन और भोजन का कार्यक्रम करवाते हैं। कमल-नयन के प्रेम-भरे आग्रह से ये हमारे साथ पंढरपुर भी गये थे। वड़े भक्तिभावना वाले हैं।

६१७. अम्बालालजी साराभाई

अहमदावाद के शाही वाग में इनका महल जैसा बंगला है। वड़े-वड़े छायादार और घटादार वृक्षों से घिरा हुआ सुंदर बगीचा है। इनकी कपड़े की वड़ी मिलें हैं।

वापूजी और जमनालालजी से इनकी घनिष्ठता थी। ये 'कस्तूरबा ट्रस्ट' में ट्रस्टी थे। सभाओं में अंग्रेजी बोलते थे। मैं कहती, "हिंदी सीखिये।" कहते, "आप ही अंग्रेजी सीखिये न !"

६१८. सरलाबहन साराभाई

अम्बालालभाई की पत्नी सरलावहन ने बहुत सालों तक बड़ी लगन से 'कस्तूरवा ट्रस्ट' में काम किया। अहमदाबाद के पास 'कोवा' गांव में वहनों के लिए वहुत सुंदर संस्था चलाई। माता कस्तूरवा के साथ वहुत रही थीं। वड़ी श्रद्धालु और आदर्श वहन थीं।

६१९. गंगाबेन झवेरी

साबरमती आश्रम में वापूजी जो काम इन्हें सौंपते, बड़ी योग्यता से करती थीं। बाल-विधवा थीं। इसलिए उनका जीवन तपस्या से भरा था। अव भी बड़ी उम्र में सेवा के कार्यों में लगी रहती हैं।

६२०. मृदुलाबेन साराभाई

सरलाबेन साराभाई की सबसे बड़ी बेटी। सेवाग्राम में बापू के पास आती थीं। बजाजवाड़ी में जमनालालजी के पास भी आती रहती थीं। गरीब बहनों में बहुत अच्छा काम करती थीं। अविवाहिता थीं। देश के बंटवारे के बाद शरणार्थियों की बड़ी लगन से सेवा की।

६२१. विक्रम साराभाई

अम्बालाल साराभाई के पुत्र। अपने देश के बड़े वैज्ञानिक थे। इनकी मृत्यु अकस्मात हुई। वैसे ही कमलनयन की भी हुई। तब सरलाबहन ने कहा, "विक्रम और कमल मेरी दो आंखें थीं। भगवान् ने दोनों छीन लीं।"

६२२. गौतम साराभाई

अपने साथ बम्बई में जुहू पर रहे थे। कमलनयन से कहते, "या तो तुम अपनी बहन हमें दो या हमारी बहन तुम लो।" मतलब साराभाई और बजाज-परिवार का संबंध हो। मुझसे कहते, "पहले घर जमाना, फिर शादी करना।" मैं कहती, "बहू तो घर में ही आयगी न ?" ये फिर कहते, "शादी मां-बाप के लिए थोड़े ही करते हैं !" इस तरह इनसे हँसी-विनोद चलता रहता था।

अब तो अहमदाबाद में केलीको मिल और दूसरे कारखानों का काम देखते हैं।

६२३. मनोरमाबेन साराभाई

अम्बालालजी के बड़े लड़के सुहृद की बहू। कमलनयन के पास बम्बई आती थीं। कमलनयन को भाई के समान मानती थीं।

६२४. भारतीबेन साराभाई

अम्बालाल साराभाई की बेटी। बड़ी शौकीन और सुंदर है। बजाजवाड़ी में आई थी। एक बार मैं कमलनयन को विलायत जाते समय छोड़ने के लिए बंबई हवाई अड्डे पर गई थी। ये भी वहां खड़ी थीं। सारे आभूषण चांदी के पहन रखे थे। मैंने पूछा, "हमारे यहां तो चांदी के जेवर छाछ बेचनेवाली पहनती है।" वे बोली, "हम तो सभी चीजों का शौक करते हैं, चाहे हीरा हो या लाख हो।"

६२५. मृणालिनी साराभाई

विक्रम साराभाई की पत्नी। नृत्य-कला में बड़ी प्रवीण। मातृभाषा तामिल है।

साराभाई-परिवार के सभी सदस्यों से कमलनयन की गहरी मित्रता थी।

६२६. रिषभदासजी रांका

जमनालालजी के सेक्रेटरी का काम करते थे। 'मेरी जीवन यात्रा' पुस्तक में इन्होंने वहुत मदद की। अच्छे लेखक हैं। जमनालालजी इनसे सलाह भी लेते थे। अव धार्मिक साधना में लगे हैं। वहुत वर्षों तक गायों की भी खूब सेवा की है।

६२७. सत्यनारायणजी

पहले अपनी वजाजवाड़ी में रहते थे। राष्ट्रभाषा प्रचार के काम से मद्रास चले गये। एक वार जमनालालजी राष्ट्रभाषा के अध्यक्ष के नाते मद्रास गये थे। तव मैं भी उनके साथ थी। मैं वहां वैठी-वैठी हिंदी में टूटी-फूटी कविता गुनगुनाती रहती थी। सुनकर सत्यनारायणजी खुश होते थे।

६२८. गोविन्दरामजी सेकसरिया

वंवई के वड़े व्यापारी और दानी थे। जमनालालजी के कहने पर वर्धा के कॉमर्स कॉलिज के लिए एक लाख का दान दिया। इनका करोड़ों का व्यापार चलता था, पर ये चटाई पर वैठे रहते थे। मैं बंवई में इनके घर गायों के काम के लिए गई थी। गोविन्दरामजी ने लड़की के नाम से बंवई में 'भगवती भवन' बनाया है। चौथे माले में रहती हैं। तीसरे माले में कमलनयन रहता था। ये भी अपनी मां की तरह सीधी और भली हैं।

६२९. कूड़ीलालजी सेकसरिया

गोविन्दरामजी के पुत्र। राजस्थान में जब बहुत लड़कियों के वाद लड़का होता है तव उसका नाम हल्का-सा रख देते हैं। कूड़ीलालजी की मां कहती थीं, जव हम अपने देश में सव काम हाथ से करते थे तव सुख की रोटी खाते थे। अब कूड़ीलाल के पिताजी करोड़ों रुपया छोड़ गए हैं और ५० आदमी का चौका चलता है, लेकिन कूड़ीलाल को सुख से पानी पीना मुश्किल है।

६३०. अब्बासभाई

१९२५ से १९२९ तक हम सपरिवार सावरमती आश्रम में रहे तव अब्बास-भाई वहां विद्यार्थियों को कातना-पींजना सिखाते थे। वे बच्चों को बड़े धीरज से और प्यार से वातें समझाते थे। इसलिए अपने बच्चे भी उनके पास बड़ी खुशी से जाते थे।

वे आज भी साबरमती आश्रम में रहते हैं और वहां का इतिहास उनमें भरा है।

६३१. गजाधरजी सोमाणी

बंबई में मारवाड़ी समाज के बड़े व्यापारी थे। गाय के भक्त रहे। साधु-संतों की बड़ी सेवा करते थे। विनोवाजी पदयात्रा में राजस्थान घूमते थे तव गजाधरजी के घर गये थे।

राजस्थानी लोग सोचते थे कि विनोवाजी छठा हिस्सा मांगते हैं। यदि नहीं देंगे तो श्राप दे देंगे। व्यापारी लोग छठा हिस्सा देने में डरते थे और इस डर से पास में कम आते थे। मैंने विनोवाजी के साथ गजाधरजी सोमाणी का परिचय कराया तो उस दिन विनोवाजी ने व्यापारियों पर ही भाषण दे दिया।

६३२. प्रो० बद्रीनारायणजी

श्रीमन्‌जी के छोटे चाचाजी। इन्हें रामायण पढ़ने-सुनाने का बड़ा अभ्यास रहा। एक बार मुझे भी बड़े प्रेम से रामायण सुनाई थी। ग्वालियर और उज्जैन में प्रोफेसर रहे। फिर बनारस में शिक्षा का काम करते रहे।

६३३. डा० सूर्यनारायणजी

आंध्र के हैं। आंखों के डाक्टर हैं। बापूजी के पास भी आते थे। कभी-कभी विनोबाजी के पास आते रहते हैं। पति-पत्नी दोनों सेवाभावी हैं। निःस्वार्थ भाव से सेवा करते हैं। इनके घर पर भी रोगी आते रहते हैं।

६३४. सुमित्रा कुलकर्णी

रामदास गांधी की लड़की। इसके साथ अपनी बेटी का जैसा ही रिश्ता है। दिल्ली में ओम् के पास बहन के जैसे आती रहती है। अब पार्लियामेंट की मेम्बर हो गई है।

६३५. अन्नासाहब सहस्रबुद्धे

सर्वोदय के मुख्य कार्यकर्ता। इनके सिर के बीच में एक लसण है, जो बहुत शुभ माना जाता है। मैंने विनोबाजी को बताया, "इनका नाम तो सहस्रबुद्धे है, पर काम क्या करते हैं, राम जाने?"

पवनार में खुदाई करते हुए श्रीविष्णु की मूर्ति निकली थी। जमनालालजी ने वह मगन संग्रहालय को दे दी थी। विनोबाजी चाहते थे कि वह मूर्ति पवनार

आश्रम में रहे तो अच्छा है। मैंने सहस्रबुद्धजी को कहा तो उन्होंने अगले दिन सुबह ५ बजे ही वह मूर्ति पवनार आश्रम में पहुंचा दी।

६३६. मुनि सुशीलकुमारजी

जैन मुनि हैं। दिल्ली में इनसे कई बार मिलना हुआ। एक दफे मदालसा ने पतली लकड़ी के कुछ 'पात्र' मंगाये थे। इन्होंने ६० रुपये में कई पात्र ला दिये, जो अभी भी रखे हैं। बड़े कुशल वक्ता हैं। हाल ही में भगवान महावीर के सिद्धांतों का प्रचार करते हुए विदेशों में घूम आये हैं और अब फिर विदेश चले गए हैं।

६३७. सत सांईबाबा

इनको बंबई में कई बार देखा है। एक बार मैं इन्हें देखने के लिए एक सभा में गई थी। इन्होंने मुझे भस्मी की एक पुड़िया दी थी। मैंने वह रख तो ली, लेकिन उसका क्या प्रभाव हुआ, यह मैं नहीं कह सकती।

६३८. शान्ता दीक्षित

इसकी शादी विनोबाजी ने पवनार आश्रम में कराई थी और कन्यादान दिया था। अब यह अपने पति मंगलसिंह के साथ दिल्ली की हरिजन कालोनी में रहती है। इसकी बेटी हरिकृपा का लालन-पालन अधिकतर पवनार आश्रम में हुआ है।

६३९. जवाहरलालजी रोहतगी

ये कानपुर के डाक्टर थे। इनकी दाढ़ी छोटी लेकिन रौबदार थी। इनके

घराने ने कांग्रेस का बहुत काम किया। इनकी बड़ी बेटी चन्द्रकान्ता डाक्टर है। सर्वोदय में श्रद्धा रखती है। कुमारिका हैं। माता-पिता की दिन-रात बड़ी सेवा करती है। इस पर जमनालालजी का गहरा स्नेह था। गये साल स्त्री-शक्ति सम्मेलन में वर्धा आई थी।

६४०. मेवाबहन जमनादास गांधी

छोटी उम्र में ही भगवान को प्यारी हो गईं। मैंने अहमदावाद कांग्रेस में देखी थीं। घुंघराले बाल, छोटा-सा मीठा-मीठा मुंह। अभी भी मेरी आंखों के सामने फिरती हैं। जमनादासभाई का हाल तो भगवान ही जाने ! उन्होंने दूसरी शादी नहीं की।

६४१. 'सूरदासजी' महोदय

डा० महोदय के बड़े भाई। अपने लक्ष्मीनारायण मंदिर में दोनों समय ठीक वक्त पर भजन करते थे। मंदिर के पीछे ही रहते थे। उनके शिष्य पकड़कर लाते-ले जाते थे। मंदिर में बैठे-बैठे आरती के समय नमन करते हुए उनकी मृत्यु हुई। अंत समय में किसी की सेवा लेने से बच गए। वे लक्ष्मीनारायण मंदिर के कुएं से खुद पानी निकालकर नहाते थे और कपड़े धोते थे। बाद में पानी की बाल्टी भर कर खुद ही ले जाते थे।

६४२. सालिगरामजी

धुलियावाले। बड़े सज्जन हैं। आने-जानेवालों की बड़ी आवभगत करते हैं। सारे धुलियावाले ही विनोबाजी के भक्त हैं। ये नागरी लिपि सम्मेलन में पवनार आये थे।

६४३. सुकाभाऊ

खानदेश के हैं। अब वर्धा के साटोड़ा गांव में खेती करते हैं। विनोबाजी के भक्त। अपने बगीचे के संतरे बालकोबाजी जब तक पवनार में रहते हैं उनके सामने बिछा देते हैं। उनमें से पके हुए चुन-चुनकर बालकोबाजी खाते रहते हैं और ऊपर से कपड़ा ढक देते हैं।

६४४. सुरेन्द्रजी

साबरमती आश्रम में बापूजी के साथ रहते थे। कभी-कभी हम बहनों का वर्ग भी लेते थे। बहुत वर्षों तक गंगाबहन के साथ (गुजरात में) बोचासण में रहे हैं। बीच में कई साल बोधगया के समन्वय आश्रम में भी रहे। कभी कौसानी भी जाकर रहते हैं। बड़े आध्यात्मिक हैं।

६४५. भोलानाथ सांड

बंबई में आया था। सांडवाला बोलता था, "जो पूछो यह बतायेगा।" वर्किंग कमेटी से उठे और बाहर आकर जमनालालजी ने प्रश्न किया, "बापू का प्यारा कौन है?" सांड जवाहरलालजी के पास जाकर सिर हिलाने लगा। अब यह बात बापू को कैसे बतायें? वर्धा आकर जमनालालजी ने बंबई शान्तिकुमारजी को तार भेजा कि सांड को जल्दी वर्धा भेजो। जिस सरियत से आ सके, उस सरियत से भेजो। तब महादेवभाई बोले, "जमनालालजी को तो वर्धा में सब-कुछ चाहिए। मनुष्यों में बापू मिले, और जानवरों में यह भोलानाथ सांड मिल गया!"

६४६. सरलाबहन

अंग्रेज महिला हैं। बहुत सालों तक सेवाग्राम आश्रम में रहीं। इन्होंने आशा-बहन और आर्यनायकम्‌जी के साथ नयी तालीम का काम किया। कुछ समय वर्धा के नवभारत विद्यालय में भी पढ़ाती थीं। बाद में उन्होंने उत्तर प्रदेश के हिमालय-क्षेत्र के गांवों में बड़े परिश्रम से खादी-ग्रामोद्योग का काम किया। अल्मोड़ा जिले के कौसानी गांव में बहनों का एक आश्रम भी शुरू किया, जो अब भी अच्छी तरह चल रहा है।

सरलाबहन अविवाहित हैं और अब तो भारतीय नागरिक बन गई हैं। उनका रहन-सहन बिलकुल सादा रहा है।

६४७. गजाननजी वैद्य

बंबई के बड़े नामी वैद्य थे। राजस्थान के नाते बंबई में पित्तियों में इनका आना-जाना बहुत था। मारवाड़ी लोग श्रद्धा से इनका इलाज करवाते थे।

६४८. प्रताप सेठ

जमनालालजी के पास बड़ी श्रद्धा से आते-जाते थे। वे भी इनका बड़े भाई के समान आदर करते थे। ये अमलनेर के रहनेवाले थे। तुकाराम के अभंग (भजन) उन्हें बड़े प्रिय लगते थे।

६४९. हरिहर शर्मा

बापूजी के पास आते रहते थे और सेवाग्राम आश्रम में रहे थे। राष्ट्रभाषा

प्रचार में खूब काम किया। जमनालालजी उन्हें भाई की तरह मानते थे। इन्हें सब 'अण्णा' कहते थे। इनकी पत्नी शारदाबहन भी बड़ी सेवाभावी, साहित्यिक और राष्ट्रभाषा की प्रेमी हैं।

६५०. लाला हरदेव सहायजी

हरियाणा में गायों के बड़े भक्त थे। हरदम यहां की गोशालाओं में आते-जाते रहते थे। हरियाणा की गायों को भी इधर-उधर की गोशालाओं में भेजते थे।

६५१. डा० सम्पूर्णानन्दजी

वर्धा बापू के पास आते थे। बड़े साहित्यिक और विद्वान थे। सभी के प्रति श्रद्धा रखते थे। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे। बाद में राजस्थान के गवर्नर भी बने।

६५२. पं० सुन्दरलालजी

वर्धा बहुत आते रहते थे। इनका भाषण बड़ा जोरदार होता था। इनकी पुस्तक 'भारत में अंग्रेजी राज्य' बहुत लोकप्रिय हुई थी।

आजकल दिल्ली में रहते हैं। उम्र लगभग ८८ वर्ष की है, फिर भी काफी कामों में लगे रहते हैं।

६५३. बद्रीनारायण सोढाणी

सीकर के 'बजाज भवन' में रहते हैं। कुओं, गायों का बहुत काम करते हैं।

'हर्ष' की पहाड़ी पर जीप गाड़ी जाने का रास्ता वनवा दिया। राधाकिसनजी के घनिष्ठ मित्र हैं। जल-योजना के सिलसिले में राज्य सरकार से भी मिलते रहते हैं। जमनालालजी की बहुत याद करते हैं। भगवान् के भरोसे सीकर में 'कल्याण आरोग्य सदन' की वड़ी संस्था खड़ी कर दी है।

६५४. सूरदासजी दाड़ीवाले

नेत्रहीन किंतु वहुत विद्वतापूर्ण भाषण देते थे। गोसेवा सम्मेलन में गोपुरी आये थे। उनके चेले उनकी वड़ी भक्ति से सेवा करते और उन्हें अच्छी तरह ले जाते थे।

६५५. पदमपतजी सिंघानिया

मारवाड़ी समाज में इनकी वहुत मान्यता है। जमनालालजी के साथ घनिष्ठता थी। मारवाड़ी समाज द्वारा समाज-सेवा का कार्य करते हैं। कानपुर में रहते हैं। वहां अपनी मां की याद में बहुत वड़ा सुंदर मंदिर वनवा दिया है।

६५६. द्रौपदीबाई

विनोबाजी के साथ पदयात्रा में थी, तव मैं एक जगह गिर गई और मेरा पांव सूज गया था। उस समय बांकुड़ा में मैं इनके घर पर ठहरी थी। ये मेरे पांव में मालिश करतीं और मुझे वादाम का हलवा खिलाती थीं। इन्होंने मुझे कूपदान भी दिया था। वर्धा के सत्यनारायण वजाज की ये वहन हैं।

६५७. जयदयालजी गोयनका

हनुमानप्रसादजी पोद्दार के श्रद्धेय गुरुतुल्य थे। मारवाड़ी समाज में बड़ी

मान्यता थी। 'कल्याण' पत्रिका बहुत अच्छी निकालते थे। बजाजवाड़ी आये तब गंगाजल से बनाई रोटी साथ लाये थे। हरिद्वार में इनके घर की दीवारों पर राम नाम और रघुपति राघव राजा राम लिखा रहता था। ये गीता पर प्रवचन भी करते थे।

६५८. पार्वतीबाई डिडवानिया

मारवाड़ी समाज में बड़े घर की बेटी। घूंघट, पर्दे में पली होकर भी बड़ी बहादुर थीं। वर्धा बहुत आती-जाती थीं। जमनालालजी इन्हें बेटी की तरह मानते थे। 'अंडर ग्राउंड' काम करने में भी बड़ी निडर थीं। खूब समाज-सेवा की।

६५९. सोनी

कई साल से मेरी सेवा में रहती है। सभी काम होशियारी से कर लेती है। पर है मनमौजी।

६६०. सुभद्राकुमारी चौहान

जबलपुर की बहुत बड़ी लेखिका थीं और बड़ी नामी कवयित्री भी। इनमें राष्ट्रीय भावना भरी थी।

६६१. कृष्णा हठीसिंग

पं० जवाहरलालजी की छोटी बहन। उन्हीं के साथ कई बार वर्धा आई और अपने बजाजवाड़ी के बंगले में रही। एक समय की बात है। गर्मियों के दिन थे।

हम लोग बंबई में जुहू पर समुद्र के किनारे 'जानकी कुटीर' में रह रहे थे। शाम के समय समुद्र-तट की रेती पर हम लोग घूम रहे थे। तब एक जगह रेती पर कुछ बिछाकर कृष्णा बैठी हुई बच्चों के साथ खेल रही थी। उसे देखकर मैं भी वहीं बैठ गई। बात-बात में मैंने उससे पूंछा, "यह बताओ, कृष्णा, तुमने हठीसिंग को कैसे पसंद किया ?" बोलीं, "इनकी लंबी अंगुलियां मुझे बहुत पसंद आईं।" हे राम!

६६२. राजा हठीसिंग

जवाहरलालजी के बहनोई। कृष्णा के पति। ये पान ज्यादा खाते थे। इससे इनके दांत लाल रहते थे। जमनालालजी का दोनों पर बहुत प्यार था। इससे इनका भी वर्धा में आना-जाना होता रहता था।

६६३. प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका

कलकत्ता में इनका बड़ा मान और प्रतिष्ठा है। कई साल तक पार्लियामेंट के मेम्बर भी रहे। इनकी जमनालालजी के साथ घनिष्ठ मित्रता थी। वर्धा आते तो जमनालालजी के पास ठहरते और जमनालालजी जाते तो इनके यहां ठहरते थे। विलायती कपड़ों के बहिष्कार के समय हम इनके घर दुमका गये थे।

६६४. गजाननजी हिम्मतसिंहका

प्रभुदयालजी के पुत्र। अपनी केशरबाई की बेटी नर्मदा इन्हें ब्याही थी। होशियार और सरल स्वभाव के हैं। घर में परिवार की स्त्रियां सामान लेने के लिए इन्हें बाजार भेज देती थीं। यह नर्मदा को अच्छा नहीं लगता था। कुछ सवारी मिली तो ठीक, नहीं तो पैदल ही चले जाते थे। निष्ठापूर्वक खादी पहनते हैं।

६६५. दे० ज० हातेकर

पिपरी (वर्धा) में ग्रामीण महाविद्यालय के आचार्य हैं। बहुत आदर्श काम करते हैं। पहले नवभारत विद्यालय और कॉमर्स कॉलिज में प्रोफेसर थे। इन्होंने ख़ादी महाविद्यालय भी अच्छा चलाया था।

६६६. कमलाताई होस्पेट

बहुत वर्ष पहले इन्होंने वर्धा में सूतिका-गृह की स्थापना की। इसी तरह अपने प्रांत में जगह-जगह अनेक सूतिका-गृह स्थापित किये। उन सबका अब नागपुर में 'मातृ सेवा संघ' बन गया है। इसके द्वारा समाज-सेवा के बहुत काम हो रहे हैं। कमलाताई बड़ी सेवाभावी हैं। गरीब-अमीर सबकी वे मां हैं। उनमें राष्ट्रीय भावना भरी है।

६६७. हरिभाई

सेवाग्राम आश्रम में बापूजी, महादेवभाई और दुर्गाबहन के पास काम करता था। अब वहां 'बापू कुटी' की देखभाल करता है। दर्शनार्थियों को सब समझाता है। सच्चे अर्थ में 'हरिजन' ही है।

६६८. नवाबसाहब महदीनवाज जंग

जब मैं हैदराबाद में थी तब एक दिन बिरधीचन्दजी के यहां कोई पार्टी थी। वहां नवाबसाहब से भेंट हुई। घंटों बातें हुईं। हम उनके घर पर भी गये थे। बड़ा सादा और सुंदर घर देखकर खुशी हुई। ये गुजरात के पहले गवर्नर हुए थे।

६६९. सेठ हुकमचंदजी

इन्होंने इंदौर में कांच का जैन मंदिर बनवाया। ये जैन समाज के बड़े कर्ता-धर्ता थे। जैन साधु इनके यहां खूब आते थे। इंदौर में इनका कांच का हवामहल देखने लायक है।

हुकमचंदजी की पत्नी से मैंने पूछा था कि जैन धर्म में जीवों की बड़ी रक्षा करते हैं तो बारह महीने अनाज कैसे रखते हैं ? वे बोलीं, "साबुत मूंग को गाय का गोबर लगाकर सुखा देते हैं। कीड़े पड़ने से बचाते हैं।" फिर उन्होंने मुझे अपना कोठार ले जाकर बताया। बड़ी भक्तिमान महिला थीं।

६७०. अनुसूयाबाई काले

नागपुर की बड़ी लोकप्रिय और उत्साही कार्यकर्त्री थीं। कांग्रेस के सभा-सम्मेलनों में इनसे मिलना होता रहता था।

६७१. डा० दास

सेवाग्राम में बापू को देखने के लिए आते थे। मुझे भी एक बार पानी के इलाज पर रखा था। जमनालालजी को भी नागपुर जेल में उपवास कराया था। भरत होने के पहले मदालसा को सेवाग्राम में रखकर बापूजी ने इन्हीं का इलाज कराया था।

६७२. मांगीबाई

हीरालालजी की पत्नी। धुलिया के रामेश्वरजी पोद्दार की बहन। बड़े सीधे

संत जनों का परिवार है। सभी विनोबाजी के परम भक्त हैं। आने-जानेवालें की ये वड़ी आवभगत करती हैं और विनोबाजी के छोटे भाई शिवाजी के खान-पान की व्यवस्था संभालने में गंगाबाई की मदद करती हैं।

६७३. हरिभाऊजी उपाध्याय

सावरमती आश्रम में अपने माता-पिता के साथ रहते थे। वड़े लेखक, विद्वान और त्यागी थे। जमनालालजी इनका वहुत आदर करते। परस्पर गहरी आत्मीयता थी। वजाजवाड़ी में आते थे। वाद में अजमेर के निकट हटूंडी में गांधी आश्रम खोलकर वहीं रहने लगे। शरीर से नाजुक हो गये थे। अजमेर के मुख्य-मंत्री रहे थे और राजस्थान के शिक्षा-मंत्री।

६७४. भागीरथीबहन

हरिभाऊजी की पत्नी। अपने महिलाश्रम में ये सपरिवार कई साल रहे। जमनालालजी ने उनको वहां रखा था। हरिभाऊजी की नाजुक तवियत को वड़ी सावधानी से संभालती थीं। अव हटूंडी आश्रम को संभाल रही हैं।

६७५. मार्तण्ड उपाध्याय

हरिभाऊजी के छोटे भाई। सावरमती आश्रम में छोटेपन से रहते थे। वाद के वहुत से वर्षों में 'सस्ता साहित्य मंडल' का काम वड़ी लगन से संभाला।

इनकी पत्नी लक्ष्मी उपाध्याय आने-जानेवालों की सेवा, खानपान खूब श्रद्धा से करती हैं। ये वास्तव में लक्ष्मी ही हैं। महिलाश्रम में भी रही थीं।

६७६. मुकुल उपाध्याय

मार्तण्डजी का लड़का। वंबई में अपनी संस्थाओं में ही काम करता है। वर्धा

आया था। बापूजी तथा जमनालालजी की पुस्तकों को सुधारने, लिखने का काम करता रहता है। होशियार लड़का है।

६७७. हनुमानप्रसादजी नेवटिया

रामेश्वरजी नेवटिया के चाचाजी। बड़े सज्जन और मिलनसार। पुलगांव में इनकी कपड़े की मिल है। मिल की ओर से हर साल गणपति उत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है।

६७८. हरिकिसन राठी

अपने मुनीम राठीजी का पुत्र। इनकी मां की मृत्यु हुई तब ये बहुत छोटे थे। अपनी दुकानों में काम करते हैं।

६७९. वालुंजकरजी

बापू ने इनको गोपुरी में चर्मालय का काम सौंपा था। बहुत वर्षों तक उसी काम पर तल्लीन रहे। जिस काम पर लग जाते हैं, श्रद्धापूर्वक करते हैं। अपने लक्ष्मीनारायण मंदिर के ट्रस्टी हैं।

६८०. रं० रा० दिवाकरजी

वर्धा आते थे। जमनालालजी से अच्छा परिचय था। 'गांधी ज्ञान मंदिर' में इनका अच्छा भाषण हुआ था। 'गांधी निधि' के कई वर्ष अध्यक्ष रहे। बिहार के गवर्नर भी रहे थे।

६८१. देवेंद्रकुमार गुप्त

दिल्ली राजघाट प्रार्थना में आते हैं। मैंने इनसे कहा, "बापू की समाधि पर फूल की जगह सूत की माला चढ़ानी चाहिए। फूल वेचनेवाली चर्खा कातकर सूत की मालाएं वनायें। विदेशों से जो दर्शनार्थी आते हैं, ये १०८ आंटियों की वड़ी माला चढ़ा सकते हैं। इससे सूत काम आयेगा और एक भावना पैदा होगी। फूल तो वेकार हो जाते हैं।" इन्हें मेरी यह वात जँच गई। सरकार से लिखा-पढ़ी की। विनोवाजी के परम भक्त हैं। पवनार, सेवाग्राम आते-जाते रहते हैं। 'गांधी स्मारक निधि' के मंत्री रहे हैं। अव विनोवाजी के पास हैं।

६८२. मणिमालावहन चौधरी

सेवाग्राम में कस्तूरवा अस्पताल का काम देखती हैं। सुशीलावहन नायर के साथ कई वार आती हैं। वड़ी सेवाभावी हैं।

६८३. स्वामी मनुवर्यजी

अहमदावाद में मदालसा के यहां वहुत आते थे। इनका योगाश्रम अच्छा चलता है। मैंने एक दिन इनसे पूछा कि श्वासोच्छ्वास का लाभ कैसे लेना चाहिए ? इन्होंने कहा, "यह तो धीरज से वताने और समझने की वात है। फिर कभी समझाऊंगा।" फिर तो मैं वर्धा आ गई।

६८४. सोनाली

व्रह्म विद्या मंदिर, पवनार में रहती है। विष्णुसहस्रनाम-संकीर्तन के समय दोनों हाथ जोड़कर वड़े भक्ति-भाव से प्रार्थना करती है। आश्रम के वगीचे में

भी बड़ी मेहनत से काम करती रहती है ।

उसके साथ रेखा, जयलक्ष्मी, हेमा और कलावती बहनों के नाम भी यहां जोड़ देती हूं ।

६८५. डा० प्रमुखभाई पटेल

होमियोपैथी के अच्छे डाक्टर हैं । बंबई में और अहमदाबाद में दवाखाना है । मैं अहमदाबाद में बीमार पड़ गई थी तो इनके होमियोपैथी इलाज से ठीक हो गई ।

६८६. डा० कैलासनाथ काटजू

जावरे के थे । मैं छोटेपन में पिताजी के साथ इनको देखती थी । जावरे के नाते ये मुझे बहन मानते थे । वर्धा में गांधीजी और जमनालालजी के पास आते-जाते रहते थे । बाद में दिल्ली में बड़े मंत्री बन गये । तब भी घर का-सा संबंध रखते थे । मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री रहे ।

६८७. निर्मला देशपांडे

ब्रह्म विद्या मंदिर, पवनार में रही हैं । जीवन-दानियों में हैं । अच्छी पढ़ी-लिखी हैं और देश भर में घूमकर सर्वोदय पर भाषण देती हैं ।

६८८. गोपीकिसनजी बजाज

नागपुर में रामचंद्रजी, हंसराजजी और बच्छराजजी रहते थे । गोपीकिसनजी

हंसराजजी के गोद आये थे और सदा नागपुर में ही रहे। वच्छराजजी वर्धा आ गये। इन्होंने रामधनदासजी को गोद लिया।

६८९. सोनीबाई बजाज

गोपीकिसनजी की पत्नी। उम्र में छोटी हैं, फिर भी मेरी, काकाजी और बच्चों की दादीजी हैं। अब भी वर्धा आकर साथ में रहती हैं तो हम सभी को बहुत अच्छा लगता है।

६९०. सद्दीबाई

इन्होने जमनालालजी को गोद लिया। दादाजी वच्छराजजी की पत्नी। आर्वी की बेटी थीं। उस जमाने की होकर भी वेदांत की गहरी जानकार थीं। भक्ति-भाव तो उनमें भरा हुआ ही था। साधु-संतों को बड़े शौक़ से खाना खिलातीं। उसके बिना वे खुद खाना नहीं खाती थीं। सद्दीबाई ही जमनालालजी को दत्तक लाई थीं। जमनालालजी की सगी दादी को गए दो-तीन महीने ही हुए थे, तभी सद्दीबाई आईं। दोनों ही सुंदर, गोरी थीं। ये "दादी आई, दादी आई," कहकर उनकी गोद में बैठ गये और सचमुच उनके ही हो गये। सद्दीबाई गांव के परिवार के लोगों की बेटियों की शादी अपनी बेटी के जैसे ही करवाती थीं।

६९१. वसंतोबाई

वच्छराजजी के गोद के बेटे रामधनदासजी की पत्नी। मेरी सास। ये विरदीचंदजी मामाजी के पोद्दार घराने की बेटी थीं। मेरी शादी के बाद सासजी ने ही कहा था कि गनगौर पुजाना है। इसलिए पीहर से मुझे जल्दी बुला लिया। गनगौर पंद्रह दिन पूजी जाती है। पर उस समय बड़ा तारा अस्त हुआ था।

इसलिए बहू-वेटी अपने पीहर नहीं जा सकती थीं। तव वर्धा में मुझे अपनी सास के पास ढाई महीने रुक जाना पड़ा। मैं सिलाई करती, गोटे की टिकिया गोल-गोल मोड़कर अंगियों में चिपकाती। यह देखकर सासूजी खुश होकर कहतीं कि वहू कितनी छोटी है, पर काम सभी जानती है। शादी के समय से उनका स्नेह मुझे वहुत ही अच्छी तरह मिला था। लेकिन स्नेह का वह सिंचन मुझे ज्यादा दिन तक नहीं मिल पाया। मेरी शादी के १० महीने वाद ही प्लेग से 'मगनवाड़ी' के अपने वगीचे में वसंतीवाई का देहांत हो गया। इससे जमनालालजी भी मातृ-स्नेह से वंचित हो गये।

६९२. नारायणदास बाजोरिया

वृन्दावन में कई सालों से रहते थे। जमनालालजी के मित्र थे। कलकत्ता में इनका वड़ा व्यवसाय था। धार्मिक विचार के थे। अपने समाज में उनका मान था।

६९३. डा० मथुरादास

आंख के डाक्टर थे। वर्धा में चक्षुदान-यज्ञ किया था। तव इन्होंने ७०० आदमियों का एकसाथ ऑपरेशन किया था। वाद में मैंने इनसे ही सीकर में हमारे कमरे में, जिसे आज 'वजाज भवन' कहते हैं, चक्षुदान-यज्ञ कराया था। सीकर में रावराजा भी देखने के लिए आये थे। लोग वड़े प्रभावित होकर इनसे चक्षुदान-यज्ञ करवाने लगे। जिन लोगों का इन्होंने ऑपरेशन किया, वे अपनी आंखों की पट्टी खुलते ही कहते कि हमें जानकी मां के दर्शन कराओ। मैं उन रोगियों की खाटों के आसपास घूमती रहती थी। जमनालालजी वड़े उत्साह से इस काम में मदद करते थे। इसके साथ ही गोसेवा सम्मेलन हुआ था।

६९४. पांचलगांवकर

सांप का प्रयोग करते थे। जमनालालजी ने एक बार अपने हाथ पर कटवाया था। सेवाग्राम में बापू के पास भी गये थे। कहते थे कि हमारा सांप कटवा लेने से जहरीले सांप के काटने से जहर चढ़ना असंभव है। जमनालजी ने तो कटवा लिया, क्योंकि वे विश्वासपात्र थे। मैं तो डरती थी। इसलिए मैंने नहीं कटवाया। जमनालालजी को वर्धा आकर तीन डिग्री बुखार चढ़ा। लोगों ने घबराकर उनका जहर निकलवा दिया।

६९५. दामू

कमलनयन का काफी साल सेवक रहा। अब भी दुकान में काम करता है।

जब बादशाह खां गांधी शताब्दी के अवसर पर वर्धा आये थे तब विनोबाजी कुछ समय उनके साथ सेवाग्राम में रहने के बाद कमलनयन के आग्रह पर काफी दिनों तक गोपुरी में शांति कुटीर पर रहे थे। उस समय दामू ने विनोबाजी के साथियों की लगन से सेवा की।

६९६. रामलाल पारीख

ये रामकृष्ण के घनिष्ठ मित्रों में हैं। कमलनयन से भी इनकी अच्छी मित्रता थी। मदालसा के यहां आते-जाते रहते हैं। मदालसा ने कहा था कि कमलनयन की अंतिम व्यवस्था अहमदाबाद में इन्होंने करवाई थी। इनके साथ कनु गांधी भी थे। गुजरात विद्यापीठ के उपकुलपति भी रहे हैं।

६९७. मोहनसिंहजी मेहता

उदयपुर में बड़ी-बड़ी संस्थाएं चलाते हैं। मुझे वहां 'भारतीय भवन' आदि

अपनी संस्थाएं दिखाने ले गये थे। स्कूल-कॉलेज खोल रखे हैं। अच्छे विद्वान कार्यकर्ता हैं। राजस्थान विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर रहे हैं।

६९८. सोहनलालजी सांगी

इंदौर के रहनेवाले बड़े खानदानी रईस थे। इनका वहुत बड़ा कारोवार है। परिवार के सभी अपने सगे-संवंधियों से वहुत अच्छा व्यवहार रखते हैं। इनकी वेटी अपने शरद नेवटिया से व्याही है।

६९९. शरद नेवटिया

अपनी कमलावाई का छोटा वेटा। व्यापार में होशियार है। अभी उदयपुर में सीमेंट की फैक्टरी देखता है। कम-से-कम वोलता है। सबके साथ अच्छा व्यवहार रखता है।

७००. सुशील नेवटिया

कमलावाई का वड़ा लड़का। ये दोनों भाई बोलने में वड़े सुशील हैं। वरावर समय में अपना काम कर लेते हैं। व्यापार में होशियार हैं।

७०१. मृदुला

कमलाबाई की लड़की। यह १५ अगस्त, १९४७ को पैदा हुई थी। इसलिए बचपन में इसका नाम 'आजादी' रखा था। वड़े सरल स्वभाव की है।

७०२. नर्मदा

मेरी ननद केसरवाई की वेटी। अपने यहीं वड़े लाड़-चाव से पली। बड़ी

होने पर जमनालालजी ने पूछा कि तेरे लिए कैसा घर-वर देखें। बोली, "जैसा कमलाबाई के लिए देखा।"

काकाजी ने कलकत्ते के प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका के बेटे गजाननजी के साथ नर्मदा का विवाह १९३७ में बजाजवाड़ी के अपने बंगले में ही सम्पन्न किया।

७०३. रुचिरा

अपनी छोटी बेटी ओम् की लड़की। गांधी चौक के ऊपर ही इसका जन्म हुआ था। उस समय मैं कुंदर दिवाणजी से मंदिर में भागवत सप्ताह की कथा सुन रही थी। डा० सुशीला नायर आई थीं। बापूजी भी इसे देखने आये थे। उनके बाद कस्तूरबा अपने हाथ सूत का झबला सिलवाकर लाईं। तभी बच्ची को देखा। बड़ी होकर रुचिरा अमरीका भी रहकर आई। अब शादी होकर जयपुर में रहती है। ससुराल में शोभा पा रही है। इसके पांच साल के बेटे का नाम 'अंशुल' है।

उसके पति जगतसिंह राजस्थान के हैं। इनके दादाजी को 'सिंह' की पदवी अलवर के महाराजा से मिली हुई है। यह दिल्ली का पुराना नामी खानदान है।

७०४. तोतारामजी

हम सब साबरमती आश्रम में रहे थे तब यह सनाढ्य-परिवार भी वहां रहता था। बापूजी के प्रति इनकी गहरी श्रद्धा थी। इनका जीवन सादा, सरल और प्रेमल था। यह फीजी में इक्कीस वर्ष रहे और गिरमिट प्रथा को मिटाने के लिए इन्होंने बड़ी कोशिश की।

इनकी पत्नी गंगाबहन भी बड़ी सेवाभावी और हिम्मतवाली थी। इनका जीवन आश्रम में ही समा गया।

"इन्हें धरती प्यारी थी और खेती में इनके प्राण बसते थे," ऐसा बापूजी ने तोतारामजी के बारे में लिखा था।

७०५. जगराणीजी

जगतसिंहजी की माताजी। इनको घर में सब 'भावोजी' कहते हैं। इनकी हिम्मत और सब बातें ही गजब की हैं। नाम भी कैसा अनोखा है।

७०६. विदुला

ओम् की छोटी लड़की। बड़ी नाजुक और भावनाशील है। जैसा देखती है, वैसी बन जाती है। वर्धा में विनोबाजी के पास परंधाम के 'ब्रह्म विद्या मंदिर' में विदुला का बहुत मन लगता है।

७०७. सोपान

ओम् का बेटा। दोनों बहनों से छोटा। पढ़ने में होशियार। अब व्यापारी बन रहा है। खादी और गांधी में भक्ति रही है। विनोबाजी के साथ शतरंज खेला है। उसका लालच रहता है।

७०८. रामेश्वरजी दुबे

'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' के बहुत पुराने कार्यकर्ता हैं। जमनालालजी से अच्छा संबंध था। अपने यहां बराबर आते-जाते हैं। मैं एक दिन 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' में गई। एक छोटे से कमरे में दुनिया भर के हिंदी के पते लिखे हैं। मैं हैरान हो गई कि हिंदी का इतना बड़ा काम यहां कैसे चल रहा है !

७०९. मोहनलालजी भट्ट

राष्ट्रभाषा प्रचार के प्रमुख कार्यकर्ता हैं। सभी राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में बड़ी

सेवा की है। अव इनकी उम्र ज्यादा हो गई है। इसलिए राष्ट्रभाषा का काम देखने के लिए अमरावती से श्री शंकरराव लोंढेजी आये हैं। फिर भी ये वहीं रहते हैं और सारे काम में पूरा सहयोग देते हैं। कितावें भी लिखते हैं।

७१०. श्रीनिवासजी जाजोदिया

मेरे ताऊजी के वेटे। मेरे पिताजी गिरधारीलालजी तो योगी जैसे थे। व्यापार का सारा कामकाज श्रीनिवासजी ही संभालते थे। कोर्ट-कचहरी तथा नवावों आदि से मिलने का काम भी वे ही करते थे।

ये मुसलमानों की वड़ी मदद करते थे। उन्होंने कई वार जमनालालजी से उधार लिया, दस-दस हजार रुपये। रुपये तो वापस नहीं किये, किंतु इस रकम से वे गरीव मुसलमानों की हर तरह से मदद करते थे। जावरे में मुसलमान धोवियों को काम देने के लिए अपने कपड़े धोने के लिए तो देते थे, लेकिन उनकी धुली हुई और इस्त्री की हुई अंगरखी पानी में डुवोकर और दोनों वांहें वांस में डालकर सीधी टांगा देते थे, ताकि सलवटें न पड़ें। उसी अंगरखी को पहनकर कचहरी जाते थे। जैनियों की तरह राख से वाल नोंचकर दाढ़ी वनाते थे।

७११. बंसीधरजी जाजोदिया

श्रीनिवासजी के छोटे भाई। इनकी हवेली और मेरे मां-वाप की हवेली दोनों के वीच में सिर्फ एक दीवार थी। वाहर सामने का वरामदा एक ही था। मैं पूजा-पाठ करती थी, तो मेरी देखादेखी वंसीधरजी की वेटी चांदूवाई भी पूजा करने लगी।

७१२. उमाशंकर शुक्ल

वर्धा के प्रमुख पत्रकार। 'जागरण' निकालते हैं। जब बापू को गोली लगी

थी तब गोपुरी में इन्होंने मुझसे मेरी राय पूछी थी। मैंने यही कहा, "बच्चों के पिता आज गये।" यही शब्द बंबई में कमलनयन के मुंह से भी उस समय अनायास निकले थे।

७१३. मानकरजी

बंबई में 'जीव-दया-मंडल' वाले हैं। गायों का काम भी भक्तिपूर्वक करते हैं। अच्छे सिद्धांतिक और श्रद्धालु कार्यकर्त्ता हैं। 'गोसेवा संघ' की बैठकों में हमेशा वर्धा आते रहते हैं।

७१४. जुगतरामभाई दवे

वेड़छी में वर्षों से गांधी आश्रम चलाते थे। अब गांधी विद्यापीठ का काम भी संभालते हैं। श्रीमन्जी और मदालसा के साथ मैं इनके आश्रम में गई थी। इन्होंने बताया कि चर्खा जयंती के दिन संस्था में बहुत-सी बहनें और हजारों बालक आसपास के गांव से चर्खा कातने आते हैं। इन्होंने 'हलपती' जाति के किसानों की बहुत सेवा की है।

७१५. दिलखुशभाई दिवाणजी

विलेपार्ले छावनी में रहते थे। स्वतंत्रता-सैनिकों में बहुत काम करते थे। इनका नाम लेने से ही दिल खुश हो जाता है। ये इतने मीठे कार्यकर्ता हैं। अब भी गुजरात में कई संस्थाएं चलाते हैं। दांडी के पास कराडी ग्राम में इनका आश्रम है।

७१६. हर्षदाबहन

दिलखुशभाई की भाभी। गांधीजी की परम भक्त। घर में रोज ६४० तार की गुंडी कातती हैं। सभी राष्ट्र-नेताओं की पुण्य-तिथियों को अनेक बहनों से सूत कतवाकर सेवाग्राम और विनोवाजी के पास भिजवाती हैं। हम सब पर बहुत स्नेह रखती हैं।

७१७. कृष्णचंदजी

पहले सेवाग्राम आश्रम में रहते थे। अविवाहित हैं। अब उरुलीकांचन आश्रम में व्यवस्था का काम देखते हैं। प्राकृतिक जीवन बिताते हैं।

७१८. होशियारीबहन

उरुलीकांचन में बड़ी श्रद्धा से सबकी सेवा करती हैं। विनोवाजी के पास आती हैं। एक दिन महिलाश्रम में आकर सिर के बाल कटवा डाले। मैं कटे बालों की रस्सी बनाकर उन्हें दे आई। बालकोबाजी की सेवा में रहकर संगीत और ब्रह्म-सूत्र भी सीखती हैं।

७१९. रामनाथजी पोद्दार

बंबई के मारवाड़ियों में प्रमुख व्यापारी हैं। कमलनयन को भाई की तरह मानते थे। इन्होंने जयपुर में लक्ष्मीनारायणजी का मंदिर बनवाया है।

७२०. नवनीतभाई पारेख

अल्मोड़ा में 'खाली' जागीर में रहते हैं। 'गोवर्धन' नाम रखा है। पिछली

वार हम इनके यहां गये थे। ये पति-पत्नी दोनों सेवाभावी हैं। पहले खाली जागीर में आर. एस. पंडित रहते थे। हम तब भी वहां रहे थे और उन्होंने हमारे हाथ से वहां संतरे के पेड़ लगवाये थे। इन्होंने हमारी बहुत खातिरदारी की। उमा, मदालसा को वहन की तरह मानते हैं। राखी बंधवाते हैं।

७२१. आनन्द हिंगोरानी

सेवाग्राम आश्रम में वापू के पास रोज एक आशीर्वाद लिखवाते थे। उनका संग्रह वापूजी के हस्ताक्षरों में ही छपा है। आजकल इलाहावाद रहते हैं। वापूजी की पुस्तकें छपाने का काम करते हैं।

७२२. सत्यभक्तजी

वर्धा के हैं। सर्व-धर्म-समभावी मंदिर वनवाया है। अपनी धुन के अलवेले हैं। वड़े अच्छे वक्ता हैं।

७२३. इंदिरा भावे

विनोवाजी की चचेरी भाभी हैं। उन्हें पढ़ना तो आता है, लेकिन लिखने की आदत नहीं है। मैंने कहा, "पढ़ना तो आपको आता ही है। अब ६० वर्ष की उम्र में लिखना सीखने से क्या फायदा?" वोलीं, "विनोवाजी को सुनाई नहीं देता है। इसलिए शुद्ध लिखना सीख रही हूं।"

७२४. बापूराव देशमुख

सेवाग्राम के अंदर सेगांव के रहनेवाले हैं। सारा कुटुंब अच्छा है। विनोवाजी

के पास पवनार आते रहते हैं। कांग्रेस के निष्ठावान कार्यकर्ता हैं। वर्धा जिले में कई स्कूल, कॉलिज भी चला रहे हैं।

७२५. ठाकुरदास बंग

पहले कॉमर्स कॉलिज में प्रोफेसर थे। अव 'सर्व सेवा संघ' के मंत्री हैं। दोनों पति-पत्नी सर्वोदय-प्रचार में दिन-रात लगे रहते हैं।

सुमन वंग—ठाकुरदास वंग की पत्नी। कार्यकर्ताओं की स्त्रियों को सूली पर टंगे रहना पड़ता है। सर्वोदय की वैठकों में सदा सब जगह आती-जाती हैं। प्राकृतिक चिकित्सा करती हैं।

७२६. यशपाल जैन

ये मार्तण्डजी के साथ 'सस्ता साहित्य मंडल' में बहुत साल से काम करते रहे हैं। अव 'मंडल' के मंत्री हैं। अच्छे साहित्यिक हैं। वहुत-सी कितावें लिखी हैं। देश-विदेश में खूव घूमे हैं। विनोवाजी की भूदान-यात्राओं में बहुत बार साथ रहे हैं। हाल ही में इन्होंने विनोवाजी के हाथ से लिखा 'विष्णुसहस्रनाम' प्रकाशित किया है। अव 'जानकी-सहस्रनाम' देखें, कैसा छापते हैं। विनोवाजी भी तो उसे पढ़ेंगे।

इनकी पत्नी का नाम है आदर्श। जैसा नाम वैसा ही इनका आदर्श जीवन है। ये भी वड़ी साहित्यिक हैं और हँसमुख भी हैं। दिल्ली में कालेज में पढ़ाती हैं।

७२७. मारुति

गोपुरी में रहता है। वजाजवाड़ी में टूट-फूट, चर्खा, कांच इत्यादि की मरम्मत का काम करता है। कई वर्षों से जमनालालजी की समाधि के मौलसिरी वृक्ष को यही संभालता है।

७२८. जगन्नाथन्

दक्षिण भारत के श्रद्धावान कार्यकर्ता हैं। विनोवाजी के बड़े भक्त हैं। भूदान में वहुत काम किया है।

वे 'सर्व सेवा संघ' के अध्यक्ष भी रहे हैं।

७२९. चारुचंद्र भंडारी

ये सर्वोदय क्षेत्र में 'चारुवावू' कहलाते हैं। विनोवाजी की वंगाल भूदान पदयात्रा में साथ रहे थे। अब भी सर्वोदय प्रचार का काम करते हैं।

७३०. मनसुखरामभाई जोबनपुत्रा

शारदाग्राम संस्था चलाते थे। शारदाग्राम में गायों का दूध तो होता ही है, वहां सुवह-शाम प्रार्थना के समय जो शहनाई वजती है, वह गायों के खूंटों पर भी सुनाई देती है। गाय संगीत-प्रेमी होने से संगीत से दूध ज्यादा देती है, यह प्रयोग वहां है। वहां की सफाई और विद्यार्थियों की शिस्टता देखने योग्य है। पानी का तालाव वड़ा सुंदर है। गायों की अच्छी सेवा होती है। गायों का घी, दूध, मक्खन खूव मिलता है।

७३१. श्रीकृष्ण अग्रवाल

अहमदावाद में 'राजस्थान सेवा समिति' के अध्यक्ष हैं। अच्छे श्रद्धावान मारवाड़ी व्यापारी हैं। जमनालालजी के वड़े भक्त हैं। वर्धा के अपने विद्यालय में ही पढ़े हैं।

७३२. वैजनाथबाबू चौधरी

राजेन्द्रबाबू और जमनालालजी के साथी। बिहार के प्रमुख कार्यकर्ता। विनोबाजी के साथ भूदान में बहुत रहे। अभी भी बिहार में ग्रामदान का कार्य करते हैं।

७३३. जगजीवनरामजी

भारत सरकार के मंत्री। कांग्रेस के मशहूर हरिजन नेता। अनेक संस्थाओं से संबद्ध। गांधीजी के पास आते थे। इनकी स्त्री मुझे मिली थी। बड़ी सुन्दर, रुआबदार है।

७३४. बनारसीदासजी चतुर्वेदी

अच्छे लेखक हैं। जमनालालजी के साथ अच्छा भाईचारे का संबंध था। गुजरात विद्यापीठ में अध्यापक रहे। श्रीमन्जी की मां के जन्म-स्थान फीरोजाबाद के हैं। इनकी कई पुस्तकें निकली हैं।

७३५. वैकुण्ठलालभाई मेहता

खादी के प्राण थे। गांधीजी के पास सेवाग्राम आते थे। शरीर से कमजोर थे, लेकिन बड़े चुस्त कार्यकर्ता थे। खादी कमीशन के कई साल अध्यक्ष रहे।

७३६. दामोदरदासजी लण्डेलवाल

ये बनारस के थे। जमनालालजी इनका स्नेह-भाव से आदर करते थे। वे इनके लड़के-लड़कियों का संबंध अच्छे संस्कारी घरों में कराने की फिक्र में रहते

थे। अपने यहां इनका आना-जाना बहुत था।

७३७. पूर्णचन्द्र जैन

राजस्थान के हैं। 'सर्व सेवा संघ' में हैं। राधाकिसन के साथ अच्छी मित्रता है। 'गोसेवा संघ' की बैठकों में आते रहते हैं।

७३८. जवाहिरलाल जैन

अजमेर के हैं। विहार में मैं कूपदान के लिए जेवर इकट्ठा करती थी। इन्होंने कहा, "मेरी स्त्री के पास एक नथ है। वह ले लीजियेगा।" पर लोगों ने कहा, "नथ तो स्त्रियों का सौभाग्य है।"

७३९. लादूरामजी जोशी

राजस्थान के नेता। घासीरामजी के जुड़वां भाई। दोनों भाई एक साथ रहते तो पहचानना मुश्किल होता था। घासीरामजी अपने मंदिर में पुजारी थे।

७४०. रजबली पटेल

वंबई के वड़े नामी डाक्टर थे। जमनालालजी का गहरा स्नेह और विश्वास था। एक वार विनोवाजी के भाई वालकोवाजी भावे वहुत बीमार हो गये थे तब जमनालालजी ने रजबली डाक्टर को वंबई से वर्धा बुलाया था। उनके इलाज से वालकोवाजी को फायदा हुआ।

इनकी पत्नी जैनावहन वड़ी धार्मिक और श्रद्धावान हैं। आज भी वे हम सब से वहुत स्नेह मानती हैं।

७४१. छोटेलालजी

अपने बगीचे के कुएं में (मगनवाड़ी में) आत्मसमर्पण कर दिया था। ये विनोबाजी के पास रहते थे। पहले बापूजी की बहुत सेवा की थी।

७४२. शोभालाल गुप्त

बजाजवाड़ी में बराबर आते थे। अपने परिवार से घनिष्ठता थी। पुराने पत्रकार हैं। बहुत साल तक दैनिक हिंदुस्तान में काम किया। अच्छे लेखक हैं।

७४३. प्यारेलालजी

गांधीजी के सेक्रेटरी थे। सरदार पटेल कहते थे, "ये सेक्रेटरी लोग गांधीजी का दिमाग खराब करनेवाले हैं।" कई वर्षों तक ये सेवाग्राम में रहे। बापूजी के आखिरी जीवन पर अंग्रेजी में बड़ी किताब लिखी है।

७४४. अम्बुजम्मा

'कस्तूरबा ट्रस्ट' में काम करती थीं। बजाजवाड़ी में बराबर आती-जाती थीं। छोटी बेटी ओम् को मद्रास में विद्योदया स्कूल में पढ़ने भेजा था। तब ये ही उसको मां की तरह संभालती थीं।

७४५. च्यांगकाई शेक

चीन के बड़े नेता। फरवरी १९४२ में ये वर्धा आनेवाले थे। इनकी व्यवस्था

में जमनालालजी लगे थे। उसी दिन इनके इंतजाम के लिए वजाजवाड़ी में कुछ निर्देश देकर गांधी चौक, बच्छराज भवन आये और वहीं उनका स्वर्गवास हो गया। बाद में इनका भी वर्धा आना रुक गया। जमनालालजी महादेवभाई से मजाक करते थे, "तुम ऐसे मेहमानों को बुलाते हो और खुद निश्चित हो जाते हो !"

७४६. 'आन्टी' वकील

इनका पूना में स्कूल था। इंदिरा गांधी और कमलनयन उसमें साथ-साथ पढ़ते थे। बाद में ओम् भी इन्हीं के पास रहकर पढ़ी थी। इंदिराजी जवाहरलालजी के साथ वजाजवाड़ी आती रहती थीं और काकाजी के साथ बैलगाड़ी में सेवाग्राम जाती थीं।

७४७. डालूराम चौबे

डालूराम, गजानन और सीताराम, ये तीन भाई थे। जैसे राम के हनुमान सेवक थे, वैसे ही इन्होंने मेरी और बच्चों की जी-जान से सेवा की थी।

जब डालूराम इन्फ्लूएन्जा से बहुत बीमार था तब जमनालालजी ने उससे पूछा कि क्या तुझे कुछ कहना है। वह इशारे से बोला, "मेरे भाइयों का तो आप जानों। लेकिन कमला, कमलनयन और मदालसा मंदिर के कुएं के पास खेलते रहते हैं। गंगा नौकरानी से कह देना कि बच्चे कहीं कुएं में न गिर जायं।"

७४८. रामभाऊ

हमारी दुकान में काफी वर्षों से सेवा करता रहा है। मेरा काम भी सावधानी से करता रहता है। खादी के कपड़े प्रेम से पहनता है।

७४९. सीताराम चौबे

गजानन चौबे का छोटा भाई। बड़ा नटखट था। सबसे खूब हँसता-हँसाता, नाचता-गाता था। जमनालालजी के साथ मुसाफिरी में साथ जाया करता था। एक बार नासिक में एक भिखारी आया और कहने लगा, "तीन दिन से भूखा हूं। मुझे चटनी और भाखरी दे।" सीताराम और अन्य नौकर उसे पकड़कर ले गये। पर वह गाना गाता रहा। अगले बंगले में जाने तक उसकी मृत्यु हो गयी। हमें बहुत बुरा लगा और हम सबने एकादशी का व्रत लेकर प्रायश्चित किया।

७५०. नेकीरामजी पंडित

साबरमती आश्रम में कमला की शादी में आये थे। वर्धा में भी आते थे।

७५१. भाऊ पानसे

गोपुरी में रहते हैं और विनोबाजी के पास ही बड़े हुए हैं। बहुत वर्षों तक 'ग्राम सेवा मंडल' का काम संभालते रहे, खासकर चर्खा सरंजाम बनाने का। आजकल पवनार आश्रम में रहते हैं।

७५२. भूपबाबू

गया में विनोबाजी के भूदान आंदोलन में बहुत काम किया। मैं भी साथ में थी। घर में ठाकुरजी की बड़ी पूजा है। देश-विदेश जहां भी जाते, ठाकुरजी को साथ ले जाते और उनका अलग टिकिट कटवाते। कहते, "इनकी प्राण-प्रतिष्ठा हो चुकी है ना !"

भूमबाबू की पत्नी ने मेरे साथ कूपदान में बहुत काम किया। इनके साथ हमारा संबंध भी है। गयाजी में जब विनोबाजी के साथ पदयात्रा में थी तब मैं इनके बगीचे में ठहरी थी।

७५३. सुरेन्द्र नारायण

श्रीमन्‌जी के छोटे भाई। इनके घर में सब नारायण ही नारायण हैं। जब मैं मदालसा के पास दिल्ली में रहती थी तब ये पिताजी से मिलने आते थे। लंबे, पतले, सुंदर हैं।

७५४. भूरीबाई

केशरबाई की दत्तक सास। फतेहपुर की थीं। जमनालालजी को इनके खातिर खूब तपना पड़ा था। केशरबाई जमनालालजी की बहन हैं।

७५५. रामधनदासजी

इन्हें बच्छराजजी दादाजी ने गोद लिया था। इनकी शादी बसंतीबाई के साथ बड़ी धूमधाम से हुई थी। बाद में सारा परिवार सती माता की पूजा के लिए सीकर गया। वहीं अचानक रामधनदासजी का स्वर्गवास हो गया। इन्होंने पहले ही कह दिया था कि मेरा ब्याह करोगे तो पछताओगे। वही हुआ। बच्छराजजी पर तो मानो दुःख का पहाड़ ही टूट पड़ा। गांव के लोगों ने खूब समझाया-बुझाया। तब दुःखी विधवा बहू बसंतीबाई की गोद में पांच साल के जमनालालजी को लेकर ही बच्छराजजी वर्धा लौटकर आ पाये।

७५६. बालजीभाई गोविन्दजी देसाई

साबरमती आश्रम की 'सात खोलियों' में सपरिवार कई साल रहे। बापूजी ने इनको एक बार गर्मियों में नैनीताल भेजा था। वहां ये 'ताकुला' में रहे। तब इनके पास अंग्रेजी पढ़ने के लिए कमलनयन को बापूजी ने भिजवाया था। कई साल बाद बालजीभाई से पूना में ओम् की लड़की रुचिरा भी पढ़ी थी। ये बच्चों को बहुत प्यार करते, पर अभ्यास बड़ी सख्ती से कराते थे।

७५७. रफ़ी अहमद किदवई

कांग्रेस कमेटी में आते थे। बजाजवाड़ी में ही ठहरते थे। स्वराज्य मिल जाने के बाद दिल्ली में भारत सरकार के अनाज बढ़ाने और खेती सुधारने के मंत्री बने थे। उन दिनों की लोग बहुत श्रद्धा और प्रेम से याद करते हैं।

७५८. द्वारकाप्रसादजी मिश्र

जब बजाजवाड़ी आते थे तब इनके लिए पान भी आते थे। मैंने सोचा कि जमनालालजी को पान देंगे तो वे भी खा लेंगे। लेकिन उन्होंने पान ले तो लिया, पर एकदम मुंह में रखकर गिटक गये, क्योंकि बाहर मोटरें और मेहमान खड़े थे। मैंने कहा, "हे भगवान् ! इन लोगों को पान खिलाना भी आसान है क्या ?"

७५९. पंडित गिरिजाशंकर अग्निहोत्री

बजाजवाड़ी में आते थे। खूब हँसते-हँसाते थे। इनका नाम हमने 'हँसनेवाले' रखा था।

७६०. भवानीप्रसाद मिश्र

महिलाश्रम, वर्धा में शिक्षक थे। अच्छे विद्वान कवि हैं। कई बार जेल भी गये हैं। आजकल 'गांधी स्मारक निधि' की कालोनी में दिल्ली रहते हैं। 'गांधी-मार्ग' का संपादन करते हैं।

७६१. एन. वी. गाडगिल

कांग्रेस वर्किंग कमेटी में आते थे। वजाजवाड़ी में भी कई वार आये। जमनालालजी से घनिष्ठ संवंध रखते थे। वाद में दिल्ली में मंत्री भी रहे। श्रीमन्‌जी के साथ पूरा सहयोग रखते थे। पूना में इनका घर है।

७६२. भीकूलालजी चांडक

जमनालालजी के पास सेक्रेटरी का काम करते थे। फिर पार्लियामेंट के सदस्य भी रहे। काटोल के रहनेवाले थे।

७६३. डा० राममनोहर लोहिया

घर के जैसे परिचित थे। जिस दिन जमनालालजी की मृत्यु हुई, उस दिन अकस्मात ये भी आये हुए थे। जमनालालजी के साथ टमटम में वजाजवाड़ी से दुकान पर आये। रास्ते में जमनालालजी इनकी पीठ ठोंकते थे। मैं भी टमटम में साथ बैठी थी। मेज पर एकादशी का फलाहार भी साथ में किया।

जव ये यहां आये तव जमनालालजी इनके साथ ताश भी खेले, तो डा० राममनोहरजी लोहिया वोले, "काकाजी, आपको ताश भी खेलना आता है!" इस पर जमनालालजी ने कहा, "हमको सव-कुछ आता है।"

७६४. श्रीकृष्णदत्त पालीवाल

आगरा के मशहूर कांग्रेस लीडर। वजाजवाड़ी, वर्धा आते थे। जमनालालजी से घनिष्ठ प्रेम था। स्वभाव जरा तेज था। उत्तर प्रदेश में बहुत साल तक मंत्री रहे। आगरा से 'सैनिक' अखवार निकालते थे।

७६५. चन्द्रभानुजी गुप्त

उत्तर-प्रदेश के कांग्रेस नेता। वहां मुख्यमंत्री भी रहे। रामेश्वरजी नेवटिया के वड़े प्रेमी मित्र हैं। कमलनयन से गहरा स्नेह था।

७६६. सीतारामजी जैपुरिया

कानपुर के श्री मंगतूरामजी जैपुरिया के वेटे। रामेश्वरजी के घनिष्ठ मित्र। उनकी वेटियों के संबंध भी जैपुरियाजी ने ही करवाये हैं। आज ये पार्लियामेंट के मेंवर हैं।

७६७. अक्का

विनोबाजी के पवनार आश्रम में बहुत वर्षों से रहती है। मैं जब कभी आश्रम में रहने जाती हूं तव उसकी बहुत मदद मिलती है। उसका जीवन बहुत सादा और सेवामय है।

७६८. पुरुषोत्तमदासजी टण्डन

जमनालालजी इन्हें गुरु के समान मानते थे। राष्ट्रभाषा समिति में वर्धा आये

थे, तब कहते थे, "जहां हम पहले जमनालालजी के जमाने में उतरते थे, वहीं रहेंगे।" वैसे राष्ट्रभाषा की तरफ से इनके रहने का प्रबंध और किसी जगह किया था, पर ये बजाजवाड़ी ही रहे। केले के पत्तों पर सोते थे और केले के पत्ते ओढ़कर सूर्य-स्नान करते थे।

७६९. मिश्रीलालजी गंगवाल

इंदौर के नेता हैं। मैं इनके घर पर गई हूं। मध्य भारत के मुख्यमंत्री रहे हैं। अच्छा स्वभाव है। समाज-सेवा के कामों में इनका बड़ा हाथ है।

७७०. रुक्मणीदेवी

इंदौर की बड़ी कार्यकर्त्री हैं। सफेद खादी की साड़ी पहनकर गांव-गांव फिरती थीं। बहनों में खादी का, पर्दा-निवारण और देश-सेवा का प्रचार करती थीं।

७७१. मेहरचन्द खन्ना

कांग्रेस कमेटी में वर्धा आते-जाते थे। दिल्ली में इनका बड़ा नाम सुनाई देता था। शरणार्थियों को बसाने के लिए इन्होंने बहुत मेहनत की। भारत सरकार में मंत्री रहे।

७७२. नवकृष्णबाबू चौधरी

गांधीजी के पास आते रहते थे। अपने बंगले में ही ठहरते थे। अब विनोबा के बड़े भक्त और मित्र बन गये हैं। उड़ीसा के मुख्यमंत्री भी रहे हैं।

नवकृष्णबाबू की पत्नी मालतीदेवी चौधरी सर्वोदय का कार्य करती हैं। इनकी लड़की उत्तरा नारायण देसाई को ब्याही है। ये उत्कल में समाज-कल्याण की कई संस्था चला रही हैं। अकाल-दुकाल में गांव-गांव में जाकर राहत का बहुत काम किया है।

७७३. अर्जुनलालजी

ये झरिया के प्रतिष्ठित अग्रवाल समाज के हैं। जब मैं बिहार में कूपदान के लिए फिरती थी तब इनके यहां भी गई थी। इन्होंने अपनी स्त्रियों के पास मुझे अंदर भेज दिया और कहा कि इनकी खूब खातिर करो और कूपदान में मदद करो। मुझे काफी दिनों बाद गाय के दही की कढ़ी खाने को मिली। स्त्रियों ने कुंओं के लिए पांच सौ-पांच सौ रुपये या उतने का ही सोना दिया। मैं एक कुएं के लिए पांच सौ रुपये ही मांगती थी। बिहार में पानी तो ऊंचा है, लेकिन कुंओं का मुंह बांधने के लिए सीमेंट लगाना जरूरी है, नहीं तो बरसात में कुएं ढह जाते हैं।

७७४. श्रीराम टिबडीवाल

वर्धा के पुराने व्यापारी हैं। श्री सावजी महाराज के अकसर कीर्तन कराते रहते हैं। इन्होंने कमलनयन की तरफ से पंढरपुर में भी भजन-कीर्तन का एक बड़ा कार्यक्रम किया था। ये पहले राजनीति में दिलचस्पी लेते थे, लेकिन अब पूरी तरह धार्मिक भावना में डूबे रहते हैं।

७७५. राधाकृष्णजी नेवटिया

प्राकृतिक चिकित्सा के प्रेमी हैं। कलकत्ता में मैं कूपदान का काम करती थी और सीतारामजी सेकसरिया के यहां ठहरती थी। ये वहां मिलने आते रहते थे। इनके और हमारे विचार समान होने से अच्छा लगता था।

७७६. धर्मचन्दजी सरावगी

कलकत्ता के व्यापारी। प्राकृतिक चिकित्सा में गहरी दिलचस्पी है। मैं इनके

घर गई थी। इनके घर का सादा खाना-पीना और रहना अच्छा लगा।

७७७. महादेवराव ठाकरे

वर्धा के कांग्रेसी कार्यकर्त्ता। जमनालालजी के समय से ही कमलनयन के पास आते-जाते रहते थे।

७७८. किसनदासजी राठी

ये हिंगणघाट से अपने यहां आया करते थे। अच्छे पत्रकार भी थे।

७७९. जनरल आवारी

लाल कुर्ता पहनते थे। रोटी को धूप में सुखाकर खाते थे। वर्धा कई बार आये। जमनालालजी इनका मान करते थे। ये नागपुर के नामी कांग्रेसी लीडर थे।

७८०. शान्तिशीलाबहन

नागपुर के पुराने कांग्रेस कार्यकर्ता सालवेसाहब की बेटी हैं। ये और इनके पति सत्यनाथन काफी साल आशाबहन के साथ सेवाग्राम में बुनियादी तालीम का काम करते रहे।

अब ये वर्धा के यशवंत कॉलिज में संगीत सिखाती हैं। बड़ी मीठी आवाज है। कई जलसों में भजन गाने के लिए बुलाई जाती हैं।

७८१. दीनदयालजी

बच्छराजजी के साले फूलचंदजी के बेटे थे। इनको 'बंगालीजी' भी कहते थे। व्यायाम के बड़े शौकीन थे। अपने लड़के को ५०० तक दंड-बैठक करवाने लगे और इससे नुकसान ही हुआ।

७८२. द्वारकादासजी भैया

कुछ वर्ष अपनी दुकान में मुनीम थे। इनकी माता का नाम काशीबाई था। वे सबको दवाई देती थीं। आंखों का अंजन बना-बनाकर बांटती थीं। बहुत व्यवहार-कुशल थीं। बहू-बेटियों को अच्छी शिक्षा और अच्छे संस्कार देती थीं।

द्वारकादासजी के छोटे भाई कन्हैयालालजी की टायर-ट्यूब की दुकान थी। उनकी पत्नी सत्यवती बहुत पढ़ी-लिखी साहित्यिक बहन हैं। काकाजी उनका सदा उत्साह बढ़ाते थे। भैया परिवार पर जमनालालजी का गहरा स्नेह था।

७८३. कमलाताई लेले

पहले महिलाश्रम में थीं। अब सूतिका-गृह वर्धा का काम देखती हैं। काकाजी ने ही शादी करवाई और वर्धा ले आये।

७८४. वल्लभनारायणजी दाणी

बंबई में वल्लभनारायणजी दाणी को जमनालालजी बहुत चाहते थे। उनकी पत्नी को भी धर्मबहन मानते थे। इनके घर पर जमनालालजी एक बार सख्त बीमार पड़े। लोगों ने घबराकर आठ डाक्टर बुला लिये। जमनालालजी का

चेहरा सांवला पड़ गया था। ये दोनों हाथ जोड़कर आनेवालों से प्रणाम करना चाहते थे। दूसरे लोगों को लगता कि ये इतने बीमार होते हुए उठकर प्रणाम करने की कोशिश क्यों करते हैं। उन्होंने मुझे वहां बुला लिया। मैं तो घूंघट में रहती थी। मैं उनके पलंग के नीचे बैठ गई। जमनालालजी ने डालूरामजी से कहा कि कमलनयन को तुम देखना। क्या जाने, भगवान् क्या करता है ! बड़े प्रसिद्ध डा० रजबअली ने कहा, एनीमा देना चाहिए। मुझे सुनते ही ऐसे लगा कि ये इतने संकोची हैं कि एनीमा से तो इनका हार्ट फेल हो जायगा। ये संकोची थे और दवाइयों से बचना चाहते थे।

७८५. ध्वजाप्रसादजी साहू

ध्वजाबाबू बिहार के प्रमुख खादी कार्यकर्ता हैं। 'सर्व सेवा संघ' में शुरू से हैं।

७८६. लक्ष्मीबाबू

बिहार के नेता थे। १९३० में मुझे बिहार में खूब घुमाया था। भूदान में बहुत काम करते थे। मेरे कूपदान-यज्ञ में भी बड़ी सहायता की। ये सीधे, सरल स्वभाव के थे। बजाजवाड़ी में आते रहते थे। जमनालालजी इनसे बहुत प्रेम करते थे। बिहार के लोग सीधे-भले होते हैं, जैसे—राजेन्द्रबाबू, मथुराबाबू। मैं पर्दा-निवारण के लिए स्त्रियों को जबरदस्ती बाहर निकालती तो पुरुष पहले ही पसीना-पसीना हो जाते थे।

७८७. एक आंखवाले साधु

मसूरी में आते थे। एक दिन मोटी-मोटी रोटियां घी डालकर खिलाईं।

बिड़लाजी के यहां गये वहां मोटी वाटियां बनवाईं। पेट को हवा भरकर फुलाते थे। कसरत करते और करके बताते थे। ये दस वर्ष तक पेड़ पर ही रहे थे। लोग इन्हें नीचे से खाना और मिठाई दिखाते, पर ये नीचे नहीं उतरते थे।

७८८. फिरोदियाजी

रिषभदासजी रांका के संबंधी हैं। गायों के बड़े भक्त हैं। व्यापार में कुशल हैं। कमलनयन के सहयोगी थे। अब स्वतंत्र हो गये हैं।

७८९. छगनलालजीभाई जोशी

साबरमती आश्रम में रहते थे। बापूजी के साथ कई वर्षों तक रहे। अब राजकोट में खादी का कार्य करते हैं। अपने आश्रम-जीवन के अनुभव लिखते रहते हैं। इनकी पत्नी रमाबहन बड़ी सरल, सीधे स्वभाव की हैं।

७९०. डा० निगम

सेवाग्राम मेडीकल कॉलिज में प्रोफेसर। होशियार माने जाते हैं। सेवा-भाव से काम करते हैं। बीमारी में मेरी भी काफी सेवा की है।

७९१. चिन्तामणि शास्त्री

वर्धा से रोज सेवाग्राम आश्रम आते थे। प्रार्थना के बाद गीता सिखाते थे।

७९२. बालभाई

छोटेपन से विनोबाजी के पास रहते हैं। अखंड सेवा करते हैं। इनकी मां 'आई', महादेवी 'ताई' और मनोहरजी की मां 'बाई' तीनों दत्तात्रेय की अवतार हैं।

७९३. जयदेवभाई

विनोबाजी की बड़ी भक्ति से सेवा करते हैं। जगत् के देव ही हैं। इनकी वयोवृद्ध मां मुझे बंगलोर में मिली थी। उनका जीवन देखकर तो मुझे आश्चर्य होता है।

७९४. चन्द्रभागा

अपने बजाजवाड़ी के बगीचे के पेड़ों का ठेका लेती रहती हैं। बड़ी सज्जन बाई है। फल बेचने आती है।

७९५. रणछोड़जी महाराज

नाथद्वारा मंदिर के महन्त। शांतिकुमारजी इनको बहुत मानते हैं। नाथद्वारा में बहुत बड़ी गोशाला भी है।

७९६. वनमाला

नरहरिभाई पारीख की बेटी। बालजीभाई के लड़के महेंद्र को ब्याही है।

साबरमती आश्रम में पालन-पोषण और पढ़ाई हुई। बड़ी सुशील है।

७९७. रवीन्द्र वर्मा

वर्धा में अपनी बजाजवाड़ी में गांधी विचार परिषद् के मंत्री थे। कमलनयन और रामकृष्ण दोनों से अच्छी मित्रता रही। बंबई आते रहते हैं।

७९८. सेठ रामगोपालजी

इनके यहां बच्छराजजी नौकरी करते थे। उनके बाद जमनालालजी ने एक बार बंबई में मारवाड़ी विद्यालय के लिए दस हजार का चंदा दे दिया तो सेठ रामगोपालजी नाराज हो गये। कारखाने से उन्होंने जमनालालजी का साझा अलग कर दिया। मुनीम-गुमाश्तों ने उनकी अकल बिगाड़ दी और धीरे-धीरे उनका धंधा खत्म हो गया। बाद में जमनालालजी ने उनके बच्चों की मदद की।

७९९. भवानीदयाल संन्यासी

नागपुर कांग्रेस अधिवेशन के समय वर्धा आये थे। उनको न पहचानने से कुछ कार्यकर्ताओं ने उनकी ठीक तरह से आवभगत नहीं की। बाद में जमनालालजी को जब पता लगा तो उन्हें बहुत बुरा लगा और उन्होंने संन्यासीजी की अच्छी व्यवस्था की। दक्षिण अफ्रीका में इन्होंने प्रवासी भारतीयों के लिए अच्छा काम किया। अजमेर में 'प्रवासी भवन' बनाया।

८००. मथुरादासभाई त्रिकमजी

बापूजी के भानजे थे। बंबई में जमनालालजी इनके यहां बहुत आते-जाते थे

और इनको भाई की तरह मानते थे।

८०१. आनन्दीलालजी पोद्दार

बंबई के मारवाड़ी समाज में प्रमुख थे। शुरू से जमनालालजी पर इनका गहरा स्नेह रहा। बंबई में इनके नाम से कई संस्थाएं चल रही हैं।

८०२. रबेलाजी

वर्धा में क्रिश्चियन मास्टर थे। इनकी स्त्री भी मेरे पास बच्चों को सिखाने के लिए आती थी। ये गायों की एक डेरी बड़े परिश्रम से चलाते थे। खेती भी करते थे।

८०३. केदार वकील

बच्छराजजी के जमाने से अपने वकील रहे थे। वर्धा में इनका बड़ा नाम था। इनके पास मकान और जमीन बहुत थी, जिसमें वह समाज के लाभ का कुछ काम करना चाहते थे।

८०४. शिवशर्माजी

आयुर्वेद के मशहूर वैद्य। सेवाग्राम आते रहते थे। एक बार बापू को तेज खांसी में बादाम का हलवा खिला दिया। उससे बापू को बहुत तकलीफ हो गई थी। आगाखां महल में इन्होंने कस्तूरबा का भी इलाज किया था।

८०५. व्यासजी वैद्य

अपने मंदिर के दवाखाने में रहते थे। गरीबों की शादियां भी करवा देते थे। उनके वेटे की वहू सत्यप्रभा भी दवाखाने में काम करती थी। अव रतलाम में रहती है। स्त्रियों का इलाज वड़ी श्रद्धा और प्रेम से करती है।

८०६. डा० बापट

होमियोपैथी की दवा देते थे। अपने घर में आते रहते थे। दो रुपये फीस में आते और थोड़ी दवाइयां लिख जाते थे, जवकि सिविल सर्जन सोलह रुपये फीस में आते, और वहुत दवा वताते थे। मैं तो दवाई से बचना चाहती थी, इसलिए डा० वापट को ही बुलाती थी। इनकी स्त्री खादी और चर्खा के प्रचार में खूव काम करती थी।

८०७. बाबासाहब देशमुख

सेगांव पहले इनका था और अपने कर्जे में था। इनकी मृत्यु के वाद जमनालालजी ने इनकी विधवा पत्नी से कर्जे की वसूली ठीक नहीं समझी और कर्जा छोड़ देना चाहा था। पर इनकी स्त्री को मंजूर नहीं हुई और सेगांव लिखवा दिया। वाद में गांधीजी वहां रहने लगे तब उनका नाम सेवाग्राम हो गया। मगनवाड़ी का वगीचा देने के तीसरे दिन वाद ही यह गांव जमनालालजी को मिल गया था।

८०८. प्राणलाल कापड़िया

खादी के अच्छे कार्यकर्त्ता रहे हैं। वंवई में खादी भंडारों के प्राण थे। कई साल तक खादी कमीशन के सेक्रेटरी भी रहे।

८०९. विट्ठलभाई जेराजाणी

खादी के प्रमुख कार्यकर्ता। यरवदा जेल में गांधीजी और जमनालालजी थे तब जेराजाणीजी से जमनालालजी ने कहा था, "मैं बंबई आऊं तब मेरे लिये जेल की जैसी चड्डी, कुर्ता बनवाकर रखना।" मैंने बापूजी से कहा, "इतने लंबे-चौड़े मारवाड़ी व्यापारी बाहर भी ऐसी पोशाक में कैसे रहेंगे ?" तब गांधीजी के कहने पर जमनालालजी ने अपनी जिद्द छोड़ी।

८१०. वैद्यभूषण शास्त्री

नासिक के अच्छे वैद्य थे। कमलनयन को काढ़ा दिया करते थे, जिससे मलेरिया में फायदा हुआ था। अभी भी उनके काढ़े पर हमारी श्रद्धा है।

८११. नागरमलजी पोद्दार

बिरधीचन्दजी मामाजी के चचेरे भाई। नागपुर कपड़े की मिल में व्यवस्थापक थे।

८१२. रामधारीसिंह दिनकरजी

हिंदी के बहुत बड़े कवि थे। इनकी कविताएं कई बार मैंने सुनी थीं। बहुत पसंद आती थीं। कमलनयन के ये बहुत अच्छे दोस्त थे। जब कभी मैं इनकी कविता सुनती तो मेरे मन में भी कविता करने का विचार उठता। एक-दो लाइनें जोड़ती भी थी, परंतु संकोचवश तथा कमलनयन की वजह से बोल नहीं पाती थी।

८१३. बनारसीप्रसादजी झुनझुनवाले

नासिक में जमनालालजी थे तबसे अपने यहां आते-जाते थे। इन्होंने कई शक्कर के कारखाने भी चलाये। कलकत्ता में मैंने कूपदान के लिए ६०-७० हजार रुपये एकत्र करके खादी भंडार में रखे थे और इनको मैंने मंत्री वनाया था। उसमें से चालीस हजार रुपये इनसे 'सर्व सेवा संघ' ने मुझे पूछे विना ही ले लिये। वहुत सीधे हैं।

वाद में तो ये पार्लियामेंट के भी कई वर्ष मेम्वर रहे। इनकी पत्नी लीलावतीजी सीधी-सादी महिला हैं। नासिक में हमारे साथ रहती थीं।

८१४. आचार्य नरेन्द्रदेव

मशहूर समाजवादी नेता। सेवाग्राम में वापू के पास आते थे। एक वार वीमार पड़ गये तो वापू ने इन्हें अपने संडास के वाजू की कुटिया में रखा था, ताकि हर रोज वहां उन्हें देख सकें।

८१५. वल्लभदास जाजू

श्रीकृष्णदासजी जाजू के वड़े भाई के पुत्र। आर्वी के हैं। कई साल जुहू पर अपनी जमीन-जायदाद की देखभाल करते और वहीं रहते भी थे। अब आर्वी की खेती पर रहते हैं। इनका बेटा गिरधर एक गोशाला भी चलाता है।

८१६. रामसिंह वैद्य

लक्ष्मीनारायण मंदिर में व्यासजी की जगह काम करते हैं। सेवाभाव से

वैदिक दवाइयां देते हैं। उनका एक लड़का 'बौना' है। इसलिए मैं उसे 'वावन भगवान्' कहती हूं। मुझे रोज शाम को मंदिर से तुलसीदल और पान ला देता है।

८१७. लछमनदासजी अग्रवाल

दिल्ली में मदालसा के पास आते-जाते थे। मिठाइयों के आर्डर ले जाते थे। मेरे कूपदान में भी इन्होंने वहुत काम किया। दिल्ली में गोरक्षा का काम भी करते थे। वड़े सेवाभावी थे।

८१८. कृष्णदासजी चितलिया

वंवई के विलेपार्ले में सव जगह इनका प्रवेश था। महिलाओं के कार्यक्रम आयोजित करते थे। मुझे कई सभाओं में भाषण करने ले जाते थे।

८१९. गंगाबाई

चितलियाजी के साथ काम करती थीं। वे कहती थीं कि अनार खाकर थूकना नहीं चाहिए, क्योंकि इससे हवा के साथ अनार की शक्ति चली जाती है। यह वात मुझे वहुत जंची थी और अव भी याद रहती है।

८२०. पं० सुखलालजी

अहमदावाद में रहते हैं। प्रज्ञाचक्षु हैं, पर अंतर-दृष्टि से सवको पहचानते हैं, सवकी याद करते हैं। गांधी-विचार में ओतप्रोत रहते हैं। वहुत-सी पुस्तकें लिखी हैं। वड़े सुंदर वक्ता हैं।

८२१. बीबीजी (स्वरूपरानीजी की बहन)

इनको सब 'मौसी' कहते थे। इन दोनों बहनों में एक का दूसरे को आधार था। घर में शुद्धता से खाना बनाती थीं। ऐसा कहते थे कि स्वरूपरानीजी की अंतिम क्रिया करके सब लोग जब घर लौटे तो इनको मृत पाया। इस प्रकार दोनों बहनों की जोड़ी एक ही साथ रही, एक ही साथ गई।

८२२. बृजमोहनजी गोयनका

शांताबाई रानीवाला की बहन कृष्णा इन्हें ब्याही थी। इनकी बेटी सुशीला को शांताबाई ने पाला है। वर्धा आते रहते हैं। ये अकोला के हैं। पर अब बंबई में माटुंगा में रहने लगे हैं।

८२३. जेठमलजी भैया

इनका छोटी उम्र में ही देहांत हो गया था। इनकी पत्नी भैया-परिवार में सुख से रहती थीं। मैं उन्हें जोश दिलाकर जेल ले गई। उन्हें 'सी' क्लास में रखा गया। मैं 'ए' क्लास में थी। जेल के अधिकारियों ने उन्हें मेरे पास भेज दिया, पर उन्होंने खाना 'सी' क्लास का ही खाया।

८२४. खुशालचन्दजी जाजू

श्रीकृष्णदासजी जाजू के बड़े भाई। महिलाश्रम में रहते थे। इनके मरने की खबर सुनकर इनकी स्त्री सोलह शृंगार सजकर महिलाश्रम के पास कुएं में गिर कर पति के साथ सती हो गई। मैंने अंतिम स्नान करवाया था।

८२५. महावीरजी केड़िया

कलकत्ते में मुझे कूपदान के काम में काफी सहायता दी। विनोवाजी के भक्त हैं। ट्रस्टीशिप के विचार को पसंद करते हैं। बीच-बीच में पवनार आश्रम आते रहते हैं।

८२६. वनमाली मास्टर

वंबई में कालकादेवी में चौथे माले में हम रहते थे। इनसे काफी परिचय था। नीचे ओटले में इनकी पुस्तकों की दुकान थी, जहां सूर्य की किरणें पहुंचना भी मुश्किल था।

८२७. जोरावाई नर्स

वंबई में बालकेश्वर में दाणीजी के बंगले में हम रहते थे। पड़ोस में एक नर्स रहती थी। उसकी मां को टी० वी० हो गई थी तो मैंने मदद की। वह नर्स मुझे फोटो खिचाने को कहती और मैं मना करती थी। एक दिन वह मुझे जवरदस्ती ले गई और फोटो खिचवा ली। पहले तो उसने छोटी फोटो दिखलाई, पर बाद में छः फोटो वड़ी-वड़ी दे दीं। पंद्रह साल तक मैंने उनको चौथे माले में छिपाकर रखा। वाद में वर्धा ले आई। उन्हें देखकर वच्चों को ताज्जुव होता है।

८२८. लाल्या मोची

अपने घर में वच्छराजजी के समय से जूते सीने का काम करता था। वड़ा ईमानदार था।

८२९. रंगलालजी जाजोदिया

कलकत्ता के मारवाड़ी समाज में प्रमुख माने जाते थे। इनके बेटे गयाजी में रहते थे। भूदान पदयात्रा के समय गयाजी में मिले थे। ये कूपदान में मदद करते थे और विनोबाजी के पास भी आते थे।

८३०. अमरचन्दजी पुगलिया

जमनालालजी के सेक्रेटरी थे। ये कई वर्षों तक काम पर रहे। इनकी पत्नी गुजर गई थी तब बजाजवाड़ी में जहां पहले घास के बंगले में विनोबाजी का आश्रम था उसी चबूतरे पर जमनालालजी ने समाज-सुधार की दृष्टि से इनका एक अच्छी गुण-शीलवान विधवा बहन से विवाह करा दिया था।

८३१. हिरवेजी

ये दक्षिण भारत के थे। जमनालालजी के सेक्रेटरी थे। अंग्रेजी का काम करते थे। इनसे अंग्रेजी में बोलने से अंग्रेजी का अभ्यास भी हो जाता था। जमनालालजी ने अंग्रेजी सीखने के लिए ही इनको रखा था।

८३२. लालजी मेहरोत्रा

जमनालालजी के सेक्रेटरी थे। बंबई में रामेश्वरजी नेवटिया के पास कई वर्ष रहे हैं। अच्छे सज्जन हैं। इनका सारा परिवार अपने घर जैसा है। ये रंगून में भारत के राजदूत थे तब अपने बहू-बेटे, नाती-पोते इनके पास रहकर आये थे। व्यवसाय में भी साथ रहा है।

लालजीभाई की पत्नी सरोजबहन बंबई में रहती थी तब मैं इनके घर गई थी। इनके बेटे-बहू सब बंबई में रहते हैं।

८३३. हैदरभाई

ये भाई सेवाग्राम आश्रम में बापू-कुटी की देखभाल करते हैं। शाम की प्रार्थना में कुरान की आयत ऊंचे स्वर से गाते हैं। सरल और सेवाभावी हैं।

८३४. गणेशनारायणजी जोगाणी

वर्धा में पंचायती गोशाला देखते हैं। मारवाड़ी समाज के प्रमुख सज्जन हैं।

८३५. रामदेवजी जाजोदिया

सेलू गांव वाले हैं। बच्छराजजी के जमाने से दुकान पर इनका आना-जाना रहता है।

८३६. बंसीलालजी

बच्छराजजी के समय से पुलगांव के मुनीम थे। इनके हाथ से घाटा ही लगता रहा।

८३७. गौरीशंकरजी भार्गव

जमनालालजी के पास बहुत आते-जाते थे। मारवाड़ी समाज में इनका मान था।

८३८. ईश्वरदासजी राठी

अजमेर के मारवाड़ी नेता। ये दाढ़ी रखते और पगड़ी बांधते थे। जमनालालजी के परम मित्र। अपने सिद्धांत के बड़े कट्टर थे। जमनालालजी इनको समाज में आदर्श मानते थे।

८३९. चम्पालालजी रानीवाला

शान्तावाई रानीवाला के ससुर थे। व्यावर में कपड़े के बड़े व्यापारी थे। जमानालालजी के साथ घनिष्ठ मित्रता थी। वह शान्तावाई को अपने परिवार का लड़का गोप देना चाहते थे, लेकिन जमनालालजी ने कहा कि इस तरह तो यह फिर फँस जायगी और उसके नाम से महिलाश्रम खोलकर सौ लड़कियां रख दीं और शान्तावाई को उनकी मां वना दिया।

८४०. लक्ष्मीनारायण पीपलिया

वर्धा में अपने पोद्दारों के यहां रसोई बनाने का काम करते थे। जमनालालजी के साथ अच्छा परिचय था।

८४१. अत्रे वकील

अपने लक्ष्मीनारायण मंदिर के सामने रहते थे। इनके घर की महिलायें मंदिर में आती थीं और मैं उनसे स्त्रियों की सभा बुलवाती थी और घर-घर चर्खा का प्रचार कराती थी।

८४२. भगवताचार्य

अहमदाबाद में रहते हैं। संस्कृत के बड़े विद्वान हैं। इन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी हैं। गुजरात में इनकी शताब्दी बड़ी धूमधाम से मनाई गई। यह बात मुझे बड़ी आकर्षक लगी। अपने जीते-जी जो कुछ देखने को मिल जाय उसीमें आनंद मिलता है।

८४३. अबदुल्ला सेठ

नमक सत्याग्रह संग्राम के समय जमनालालजी ने विलेपार्ले में सत्याग्रही स्वयंसेवकों के लिए एक छावनी कायम की थी। जमनालालजी के पकड़े जाने के बाद मैं और मदालसा वहीं रहे।

जहां-जहां नमक लूटने का सत्याग्रह होता था, वहां-वहां स्वयंसेवक यहीं से भेजे जाते थे। तब एक टुकड़ी आबिदअलीभाई के साथ भेजी गई, एक अब्दुल्ला सेठ के साथ। दोनों घायल होकर लौटे थे।

उनको देखकर स्वयंसेवकों में और भी जोश भर गया। धारासणा के रण-क्षेत्र में स्वयंसेवकों की एक के बाद एक टोलियां विलेपार्ले की छावनी से हम बराबर रवाना करते गये और नमक कानून भंग का संग्राम आगे बढ़ता चला गया।

अपने देश के ऐसे अहिंसक नौजवानों की हिम्मत देखकर आखिर जुल्म करनेवालों को ही झुकना पड़ा। विजय हमारे वीर स्वयंसेवकों की हुई और नमक सत्याग्रह सफल हो गया।

८४४. देवयानी बहन

बंबई के पास विलेपार्ले में रहने वाली यह व्यवहारिक बड़ी अच्छी बहन

थीं। १९३० के नमक-सत्याग्रह के समय विलेपार्ले की अपनी सत्याग्रह छावनी में आया करती थीं। सत्याग्रहियों के जेल जाने पर सामान आदि पहुंचाना, उनके घरवालों को संभालना, हमारी सभाओं में भाषण आदि की व्यवस्था करना, सभी में बहुत मदद करती थीं। हमारे साथ धरना देने में भी जाया करती थीं। उसीमें जेल में भी जा पहुंचीं। वहीं इनकी लड़की का जन्म हुआ। इसलिए उसका नाम 'भारती' रखा गया।

८४५. चोइथरामजी गिडवानी

गुजरात विद्यापीठ में काम करते थे। उन दिनों रामेश्वरजी नेवटिया वहीं पढ़ते थे। इनकी पत्नी गंगादेवी मिलनसार स्वभाव की थीं। आबू में हम सब साथ घूमे-फिरे थे। इनके बच्चे धम्मा, गुल्ली अपने बच्चों के साथ खूब घुल-मिल गये थे। आबू में रोज सुबह से शाम तक पैदल चलकर गुरु शिखर, अचलगढ़ आदि तीर्थ-स्थानों की यात्रा में हम सब साथ थे। रास्ते में बच्चों के साथ जमनालालजी कई तरह के खेल खेलते थे।

८४६. गोपीनाथ पुरोहित

सीकर के थे। जमनालालजी सीकर गये थे, तब इनसे बड़े प्रेम से मिले थे। वे राज-पुरोहित थे।

८४७. जीतमलजी लूणिया

अच्छे श्रद्धावान कार्यकर्ता हैं। जमनालालजी के पास बहुत आते थे। मेरे कूपदान में भी इन्होंने बहुत काम किया और अपनी पत्नी की नथ दे दी थी। ये 'सस्ता साहित्य मंडल' के संस्थापकों में रहे हैं। इन्होंने गांधी, विनोबा और नेहरूजी

की 'चित्रावली' छपाई थी।

८४८. गिरधारी बजाज

अपने बजाज परिवार के थे। वर्धा में बजाजवाड़ी के अपने अतिथि-गृह में कई साल रहे। अचानक उनका छोटी उम्र में देहांत हो गया।

गिरधारी की पत्नी गीता जयपुर में बहुत अच्छा बाल मंदिर चलाती हैं।

८४९. अगाथा हैरिसन

एक सेवाभावी अंग्रेज बहन। इंग्लैंड में गरीबों के बीच में रहती थीं। 'गोल मेज परिषद' के समय बापूजी की बड़ी मदद की थी। बाद में बापूजी से मिलने वर्धा आईं तब बजाजवाड़ी में मेरे पास ही ठहरीं। घर-परिवार की तरह बरामदे में पैड़ियों पर हमारे साथ बैठ जातीं और खूब बात करना चाहतीं, पर उनकी बोली मैं कैसे समझती? इशारों से ही हमारी बातें होतीं।

८५०. भवानीप्रसाद तिवारी

अच्छे साहित्यिक हैं। कांग्रेस के कार्यकर्त्ता भी। जबलपुर में विनोबाजी इनके यहां ठहरे थे।

८५१. हरिकिसनजी मुरारका

मारवाड़ियों में पुराने गृहस्थ थे। इनके यहां जमनालालजी का आना-जाना था। बच्छराजजी के जमाने से इनसे संबंध रहा है।

८५२. टिकेकरजी

नागपुर में कांग्रेस के पुराने नामी कार्यकर्ता थे। १९४२ में 'भारत छोड़ो' आंदोलन के समय बजाजवाड़ी के अपने बंगले पर भणसालीभाई के उपवासों में वर्धा आकर मदद करते थे।

८५३. खाडिलकरजी

जमनालालजी के अच्छे मित्र थे। बंबई में जब भी गये, इनके घर आना-जाना होता था।

८५४. सर शादीलालजी

लाहौर के प्रख्यात घराने के थे। रामनारायणजी रुइया की बेटी सुशीला का संबंध इनके परिवार में राजेंद्रलालजी के साथ जमनालालजी ने कराया था। लाहौर में जमनालालजी इनके घर पर भी गये थे।

८५५. मीठूबहन पेटीट

मरोली आश्रम में बहुत काम करती थीं। कस्तूरबा के साथ धरना देते हुए हम इनके आश्रम में (सूरत) गये। ३०० कार्यकर्ता थे। सबके खाने-रहने का इंतजाम इन्होंने कराया था। वहां खाने के बाद मुझे पता लगा कि सब्जी में प्याज डाली थी, तो मुझे बहुत उल्टी हुई, क्योंकि श्री विष्णु सम्प्रदाय में प्याज, लहसन का परहेज रहता है। फिर शाम को उपवास किया। मैं अपना पानी अलग रखती थी। कस्तूरबा अन्य कार्यकर्ताओं से कहती, जानकीबहन का पानी मत छूना।

८५६. अमलप्रभा दास

आसाम की प्रमुख महिला कार्यकर्त्ता। जब विनोबाजी भूदान-यात्रा में आसाम गये थे तब इन्होंने उनकी यात्रा का सारा प्रबंध किया था। गोहाटी में 'शरणिया आश्रम' का संचालन करती हैं। मुझे भी अपने आश्रम को दिखाने ले गई थीं। इन्होंने कस्तूरबा ट्रस्ट का काम भी बहुत सालों तक किया है।

८५७. मणिलालभाई नाणावटी

जुहू पर बंगला है। गांधी, जमनालालजी के बड़े प्रेमी भक्त थे। एक बार जुहू में घूमते हुए इन्होंने जमनालालजी से किसी बात में 'कमाल' शब्द का प्रयोग किया। जमनालालजी को यह शब्द बहुत पसंद आ गया और इस शब्द को पकड़ लिया।

८५८. हरभगतजी

जमनालालजी के पिता कनीरामजी के भाई थे। इनके सभी बेटों को जमनालालजी ने राजस्थान से वर्धा अपने पास बुला लिया था। सबसे बड़े गंगा-बिसनजी बजाज अब नागपुर में ही बस गये हैं।

८५९. नन्दजी

कासीकेबांस में इनका राजपूत परिवार था। कन्हईरामजी के साथ इनकी घनिष्ठता थी। जमनालालजी को भी इस परिवार से बहुत प्रेम था।

८६०. वेंकटलाल पित्ती

बम्बई के गोविन्दलालजी पित्ती के पुत्र। इन पर काकाजी का बहुत प्यार था। वर्सोवा और जुहू पर समुद्र में नहाने के लिए बहुत आते थे। हमारे बच्चों के साथ एक बार डूबते हुए बच गये थे।

८६१. चन्द्रावती

गोविंदलालजी और शांतिबाई पित्ती की बेटी। 'पीलीभीत की रानी' कही जाती हैं। इन्होंने गोसेवा के बारे में एक बड़ी पुस्तक भी लिखी है। अच्छी समाज-सेवी महिला हैं। काकाजी का बड़ा स्नेह था।

चंद्रावती से छोटी सुलभा बनारस में शिवप्रसादजी गुप्त के बेटे ज्योतिभूषण से ब्याही थी। पहले ये गंगा किनारे सेवा कुटी में रहते थे, बाद में शहर में मोती-झील में रहने लगे।

८६२. पद्मा

शांतिबाई पित्ती की तीसरी बेटी। बनारस में रहती है। प्राकृतिक चिकित्सा में अच्छा रस लेती है। भक्त मीरा पर कई ग्रंथ लिखे हैं।

८६३. ऋता

फ्रांस से आई हुई ऊंचे कद और गोरे रंग की बहन, जो कई महीने पवनार आश्रम में रहीं। बापू के इटेलियन भक्त शांतिदास के आश्रम से आई थीं। बड़ी श्रद्धा से ब्रह्मविद्या मंदिर में सभी तरह का काम करती थीं।

८६४. विमला

मुकुंदलाल पित्ती की बेटी। सुव्रताबाई के पुत्र सुशील रुइया को ब्याही है। बहुत बड़ा परिवार है। इनकी मां राजकुमारीबाई साधु-संतों में बड़ी श्रद्धा रखती है और गायों की भी बड़ी भक्त हैं।

८६५. जगन्नाथप्रसादजी 'मिलिंद'

हिंदी के अच्छे कवि। हमारे बच्चों को वर्धा में साहित्य पढ़ाते थे। अब कई वर्षों से ग्वालियर में ही रहते हैं। इनका स्वभाव मिलनसार है।

८६६. कस्तूरचन्दजी जोशी

जमनालालजी के सेक्रेटरी थे। पगड़ी बांधते थे। बड़ा अदब-कायदा रखते थे।

८६७. छोटी बाई

नागपुर में मिस अंडरसन नाम की एक अंग्रेज महिला सिविल सर्जन थी। उसे दिखाने के लिए जमनालालजी मुझे नागपुर लिवा गये। उस समय कमलनयन होनेवाला था। इसलिए मिस अंडरसन ने अपनी छोटी बाई नर्स को हमारे साथ वर्धा भेज दिया और कहा कि इसे मेरे जैसी ही समझना। कमलनयन हुआ तब छोटी बाई दो महीने मेरे पास रही। वह बहुत समझदार नर्स थी।

८६८. मंजुला

तारावहन मश्रुवाला की वहन। अविवाहित डाक्टर हैं। केवल केला और दही खाती थीं। अपने विस्तर को किसीको नहीं छूने देती थीं। इन्होंने अपने हाथ धो-धोकर सफेद कर दिये थे। गोमतीवहन के साथ वारडोली आश्रम में बहुत साल रहीं। अव अकोला में अपने भाई-वहनों के साथ रहती हैं। गोमतीवहन भी वहीं हैं।

८६९. कस्तूरभाई लालभाई

अहमदावाद में बहुत वड़े व्यापारी। 'कस्तूरबा ट्रस्ट' की बैठकों में आते थे। गांधीजी, जमनालालजी से बहुत घनिष्ठ संवंध था। कई रचनात्मक काम करने-वाली संस्थाओं में ट्रस्टी हैं। गुजरात में कई जैन मंदिरों का वड़ी सावधानी से जीर्णोद्धार किया है।

८७०. शन्नोदेवी

पंजाव की बहुत बड़ी कार्यकर्ता वहन थीं। लंबी, चौड़ी और बहुत रौबदार चेहरा था। आंदोलन में कई बार जेल गईं। सेवाग्राम में बापू के पास आती थीं। इनको 'पंजाव की शेरनी' कहते थे। कलकत्ता में सीतारामजी सेकसरिया के यहां भी रही थीं। जमनालालजी पर भाई के समान स्नेह था। एक बार १९३७ में जालंधर के अपने कन्या गुरुकुल के उत्सव पर मुझे बुलाया था।

८७१. दुखायलजी

'सर्व सेवा संघ' की सभाओं और अधिवेशनों में हर जगह अपनी ढपली लेकर

पहुंच जाते और भूमिदान के खूब गीत गाते। सुनकर लोगों में वड़ा उत्साह आ जाता और ज्यादा भूदान मिलता।

८७२. नारायण महाराज

जमनालालजी के मामा बिरधीचंदजी पोद्दार के वेदांती गुरु थे। अपने यहां भी आया करते थे।

८७३. विट्ठलदास मोदी

गोरखपुर में प्राकृतिक चिकित्सालय चलाते हैं। १९४९ की साल में मैं भी कुछ दिन इनके चिकित्सालय में रही थी। इन्होंने मुझे दही के प्रयोग पर रखा था। उन दिनों पूर्णान्न वाले आप्पा भागवत भी वहीं थे। 'आरोग्य' मासिक पत्रिका के सम्पादक। प्राकृतिक चिकित्सा के संबंध में कई पुस्तकें लिखी हैं।

८७४. डा० पटवर्धन

अमरावती के डाक्टर। पीला फेंटा बांधकर आते हैं। वड़े रुआवदार लगते हैं। तन-मन-धन से बच्चों के समान प्रेम से महारोगियों की सेवा करते हैं। उनके आश्रम का नाम 'तपोवन' है।

डा० पटवर्धन की पत्नी पार्वतीवाई नागपुर जेल में मेरे साथ थीं। वड़ी भली महिला हैं। बहुत सीधी और सेवाभावी।

८७५. सोमणजी

सावरमती आश्रम के विद्यालय में बालकों को पढ़ाते थे। इनकी माता जानकीबाई बड़ी हिम्मतवान और सूझ-बूझवाली थीं। इनकी पत्नी गीता वर्धा के अपने महिलाश्रम में पढ़ी हुई है।

८७६. कुसुमबहन देसाई

सावरमती आश्रम में बा बापूजी के पास बहुत साल रही हैं। बापूजी के सेक्रेट्री का काम भी बहुत अच्छी तरह करती थीं। बा का बड़ा स्नेह था। राजभवन में मदालसा के पास आती रहती थीं। मिलकर पुरानी आश्रम की बहुत बातें याद आ जाती थीं।

८७७. देवांबाई

भैया बंधु की बहन। मूलचंद भैया की फूफी। वर्धा में महिलाओं के बीच में काम करनेवाली अच्छी संस्कारी बहन थीं। सेगांव में इनकी बड़ी जमीन, जायदाद और बड़ा सुंदर बंगला था। बड़ी सात्विकता से रहती थीं। एक जन्म-जात बच्ची तारा को गोद में पाल-पोसकर बड़ा किया। बेटे की तरह धूमधाम से उसकी शादी की।

८७८. कपीन्द्रजी

दिल्ली में रामायण की कथा करते हैं। डालमिया परिवार से इनका बड़ा निकट का संबंध है। अच्छे पंडित हैं। पुरी में इनका और मेरा गायों की रक्षा के बारे में जोरदार भाषण हुआ था।

८७९. विष्णुदेवजी

अहमदावाद में मदालसा के यहां मुझे संस्कृत सिखाते थे। अच्छे विद्वान पंडित हैं। वेद और उपनिषदों का गहरा अध्ययन कर रहे हैं।

८८०. स्वामी अखंडानन्दजी

वृन्दावन के निवासी। बम्बई में भागवत सप्ताह करते हैं। मैं इनसे वहुत दफे मिली हूं। मैंने इनसे कहा, "महाराज, इतना करते हो, गोहत्या वंद करने में भारत साधु समाजवाले वहुत काम कर सकते हैं। कुछ रास्ता बिठाओ।" 'भारत साधु समाज' के अध्यक्ष भी रहे हैं।

८८१. गंगेश्वरानन्दजी महाराज

इनसे मैं अहमदावाद में मदालसा के साथ मिली थी। वंगला देश के शरणार्थियों के बारे में सभा में आये थे। बाद में गुजरात के रविशंकर महाराज के साथ हम इनके पास वेद भवन में गये थे। तब मेरे मन में एक भावना जागी थी, "मानव संरक्षण मानव मात्र का स्वयं-सिद्ध अधिकार है। इसलिए वंगला देश का नर-संहार अव जल्दी-से-जल्दी वंद होना ही चाहिए।" इस मंत्र को वैदिक मंत्रों से गंगेश्वरानंदजी ने उसी समय सिद्ध कर दिया। फिर कलकत्ते में इसका बहुत प्रचार हुआ। इनसे गायों के बारे में खूब बातें हुईं। अहमदावाद के राज-भवन में इन्होंने वेदों की स्थापना की।

८८२. पुष्पाबहन मेहता

गुजरात की प्रमुख कार्यकर्त्ता। खादी की काली साढ़ी पहनती हैं। गुजरात भर में कई बाल-मंदिर और महिला संस्थायें चलाती हैं। मुझे अपनी संस्थायें दिखाने ले गई थीं। बापू के पास वर्धा आई थीं, तब सेवा का संकल्प लिया था।

उसी तरह रात-दिन दीन-दुखियों की सेवा में लगी रहती हैं। इनका सेवाभावी वहनों का भारी संगठन है।

८८३. वीणाशाह

अपनी कमलावाई की लड़की। वड़ी संतोषी है। हैदरावाद में प्राकृतिक चिकित्सालय में मेरे साथ रही थी। जो कुछ बताया, बड़ी श्रद्धा से ग्रहण करती थी। तब अपने घर में भी उसी तरह से आहार-विहार जमा लिया है। खुश रहती है। वड़ी सेवाभावी है।

उसके पति सीताराम शाह बड़े सात्विक विचार के हैं। बोलते कम हैं, पर उद्योग-व्यापार जिम्मेवारी से करते हैं।

८८४. चन्द त्यागीजी

साबरमती आश्रम के पुराने आश्रमवासी। वर्षों तक कच्चा भिगोया अनाज खातें रहे।

कुछ दिन वर्धा आकर सेवाग्राम और काकावाड़ी में भी रहे थे। भरत, रजत को वहुत प्यार करते थे और कहानियां सुनाया करते थे।

उर्दू में कविताएं लिखते हैं। गुजरात के राजभवन में मदालसा के पास आकर रहे थे, तब बहुत सत्संग जमता था। अब तो सुनती हूं कि वे उत्तर प्रदेश में कहीं मतवाली नगरी में बापू के रचनात्मक कामों में बड़ी अलमस्ती से लगे रहते हैं।

८८५. उमा नेवटिया

कमलाबाई के बड़े वेटे सुशील की पत्नी। पीलीभीत के 'राजा' की वेटी है। सेवाभावी और संस्कारवान है।

८८६. नन्दलाल मेहता

बापू के बड़े भक्त हैं। बापू जब दिल्ली में रहते थे, ये उनकी देखभाल करते थे और बा तथा बापू के लिए खाने की चीजें, फूल वगैरा लाते थे। उनकी प्रार्थना में सम्मिलित होते थे। अब भी राजघाट की प्रार्थना में आते हैं।

८८७. कपूरचन्द पाटणी

जयपुर की लड़ाई में हमेशा जमनालालजी को अपने घर ले जाकर बाजरे की खिचड़ी में घी डालकर खिलाते थे। जमनालालजी के घनिष्ठ प्रेमी थे। पूरा परिवार संस्कारी है। मैं भी इनके घर पर गई हुई हूं। राजस्थान के प्रसिद्ध समाज-सेवी थे।

८८८. मंगलसिंह राजपूत

सीकर के पास के जमींदार थे। दाढ़ी और बाल रखते थे। मैं उनसे कहती, "आपका जडूला उतारना होगा।" वे बिचारे हँस देते थे। बड़े उत्साही थे। वर्धा भी कई बार आये थे। इनके घर पर ऐसी गाय थी, जो ३० किलो तक दूध देती थी। जमीन पर बाल्टी गाड़कर दूध निकालते थे।

८८९. ईश्वरदास रांका

रिषभदासजी का भाई। नागपुर में रहता है। इसको फिरोदियाजी की बेटी ब्याही है। मैं नागपुर में इनके घर गई थी। घर के पास बच्चों के नहाने-खेलने के लिए बावड़ी बनाई है। उसके नीचे हरी काई लगी थी। मैंने कहा, एक बार पानी सुखाकर चारों तरफ चूना लगा दो तो साफ रहेगा। अब वे हमेशा याद रखते हैं। सदा के लिए बहुत आराम हो गया।

८९०. रमणलाल शाह

किशोरलालभाई के सेक्रेटरी। वजाजवाड़ी में रहते थे। अब मगनवाड़ी के पास किराणा की दुकान चलाते हैं।

८९१. मीरा शाह

रमणलाल की पत्नी। रामटेक वाले चिंतामणरावजी तिड़के की बेटी। अच्छी सात्विक विचारों की है। शरावबंदी के काम में वर्षों से लगी रही।

८९२. पथिकजी

वर्धा आये थे। हम लोगों को देश के काम में उत्साहित करते थे। जमनालाल-जी का इनसे भाई के समान प्रेम था। समाज की बुरी रूढ़ियों को दूर करने के लिए हर शनिवार को सभा कराते थे।

८९३. जानकीप्रसाद मारु

सीकर के थे। अपने मारवाड़ी समाज के सुप्रसिद्ध सज्जन हैं। सीकर में बजाज भवन के सामने इनकी हवेली है।

८९४. वैद्य गुणे शास्त्री

आयुर्वेद के बड़े विद्वान थे। आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य थे। आयुर्वेद में

एलोपैथी का 'रोगी के रोग का निदान' शुरू किया और आयुर्वेदिक फार्मेसी आरंभ की है।

८९५. नानीबहन गज्जर

बंवई में महिला समाज में वहुत काम करती थीं। बड़ी श्रद्धावान और उत्साही बहन।

८९६. शिवनारायण

नासिक के रहनेवाले थे। ये जमनालालजी के परम मित्र थे। वर्धा आते-जाते थे। जमनालालजी भी नासिक में इनके पास जाते थे।

८९७. स्वामी आनन्द

जमनालालजी के दादा बच्छराजजी का स्वर्गवास हो जाने के बाद उनके निमित्त मैंने बदरीनाथ की यात्रा करवाने का संकल्प किया था। बरसों बाद बापूजी के पुराने साथी स्वामी आनंद जब बदरीनाथ जाने लगे तो मैंने सहज कहा कि आप ठीक समझें तो मेरे निमित्त यह यात्रा कीजिये। उन्होंने अपनी सहज उदारता से यह स्वीकार कर लिया और मेरा संकल्प पूरा हो गया।

स्वामी आनंद बड़े विद्वान और संस्कारी थे। जीवन-भर बापूजी के विचारों के अनुसार जीवन बिताते रहे।

८९८. रामकृष्ण धूत

हैदराबाद में मारवाड़ी समाज में खादी-कार्य और आंदोलन में अग्रणी रहे।

शिवरामपल्ली का सर्वोदय केंद्र स्थापित किया। मैं इन्हें 'भूत' कहती थी। उतना ही अधिक ये मेरा मान करते थे। अब तो गांधीजी के भक्त 'सूरदासजी' बन गये हैं।

रामकृष्णजी की पत्नी पार्वतीबाई हर काम में उनके साथ रही। शिवराम-पल्ली केंद्र में भी दस साल तक साथ रहीं। इनका केंद्र सर्वोदय सेवकों के लिये तो सेवाधाम ही था।

८९९. हरीशचन्द्रजी हेड़ा

हैदराबाद के कांग्रेस आंदोलन के नवयुवक कार्यकर्त्ता। बड़े उत्साही। कई बार जेल गये। इनकी पत्नी ज्ञान हेड़ा ने हैदराबाद में 'कस्तूरबा ट्रस्ट' का बहुत काम किया। इन दोनों की शादी जमनालालजी ने ही कराई थी। इसलिए बेटी के समान ही सदा काकाजी के पास वर्धा आना-जाना रहा।

९००. डा० ओमप्रकाश गुप्त

वर्धा में गांधीजी के पास रहे। बाद में दिल्ली में 'गांधी शांति प्रतिष्ठान' के कार्यकर्त्ता रहे। अब हैदराबाद के पास देहात में रचनात्मक कार्य करते हैं।

इनकी पत्नी विद्याबहन तेलगू हैं। वर्धा आश्रम में रही हैं। बहुत अच्छा गाना गाती हैं। हैदराबाद में 'कस्तूरबा ट्रस्ट' में काम करती थीं।

९०१. गोपी

दिल्ली का रहनेवाला। जमनालालजी के परिचित मारवाड़ी घराने का

लड़का। वे ही इसे अपने साथ ले आये थे और अपना सेक्रेटरी बना लिया था। अच्छा सुंदर मोहक-सा था। जमनालालजी के अंतिम दिनों में गोपुरी की घासफूस की झोंपड़ी में उनके पास गोपी ही रहा। बड़ा सरल और विनयशील स्वभाव का था।

९०२. जमनादासजी पोद्दार

जमनालालजी के मामा बिरदीचंदजी के ताऊजी नागपुर में रहते थे। इन्होंने नागरमलजी को गोद लिया था। इनके छोटे भाई जीवराजजी हिंगनघाट रहते थे। उनकी दस संतान में छः बेटे और चार बेटी थीं। उन्हीं में बिरदीचंदजी भी थे।

९०३. वेंकटलाल बद्रुका

हैदराबाद के सुप्रसिद्ध व्यापारी थे। राष्ट्रीय कामों में मदद करते थे। इनके बेटे हरिप्रसाद बद्रुका गोसेवा के बहुत प्रेमी हैं।

९०४. लक्ष्मीनारायण गनेरीवाल

हैदराबाद के प्रसिद्ध व्यापारी हैं। सीताराम बाग और पुष्करराज मंदिर के ट्रस्टी हैं। ये भी रामानुजाचार्य संप्रदाय के श्रीविष्णु हैं। इस नाते मैं इनको अपने भाइयों की तरह मानती हूं।

९०५. सुगनचन्दजी लुणावत

धामणगांव के व्यापारी हैं। इनकी गोशाला में मैं गई थी। राष्ट्रीय कामों में

खूब मदद करते थे। कांग्रेस के सदस्य भी रहे। वर्धा के अपने शिक्षा मंडल के सदस्य के नाते बैठकों में आया करते हैं। अब धामणगांव में भी कॉलेज खोला है।

९०६. राजमलजी ललवाणी

जामनेर के बड़े व्यवसायी हैं। लोकप्रिय कार्यकर्त्ता हैं। सेवाग्राम में बापूजी के पास आते थे। खादी का अच्छा काम किया।

९०७. रामचन्द्रराव गोरा

आंध्र के पुराने कार्यकर्त्ता थे। बापू के साथ सेवाग्राम आश्रम में रहते थे। राष्ट्रीय आंदोलन में कई बार जेल में रहे। अपने-आपको 'नास्तिक' कहते थे। उनके बेटे लवणम् ने भूदान में बड़ी लगन से काम किया है।

९०८. गजानन्द काबरा

खादी पहननेवाले नवयुवक कार्यकर्त्ता हैं। हैदराबाद में प्राकृतिक चिकित्सालय में मिले थे। गोसेवा का काम भी करते हैं।

९०९. संगम लक्ष्मीबाई

तेलंगाना की प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता हैं। राष्ट्रीय आंदोलन में कई बार जेल गईं। सेवाग्राम में बापू के पास आती थीं। हैदराबाद में अभी महिला संस्थाएं चलाती हैं। विनोबाजी की पहली भूदान पदयात्रा में गांव-गांव में अलख जगाया। मंचिरियाल में विनोबाजी को सूत के तुलादान में तोला था। तब कहते हैं, "विनोबाजी के तराजू में 'गीता प्रवचन' रखने से तौल बराबर हुआ था।"

६१०. राजरूपजी झवेरी

जयपुर में मैं और राधाकिसन इनके घर खाने पर गये थे। बहुत बड़े गोसेवक हैं। गाय का घी, दूध प्रयोग करते हैं। खादी के भी अच्छे कार्यकर्त्ता हैं। घर में भी गाय रखते हैं।

६११. रूपनारायण तिपाठी

सीकर के थे। जमनालालजी से बहुत मिलते-जुलते थे।

६१२. शकुन्तला पाठक

हरिभाऊजी उपाध्याय की लड़की। अजमेर में सर्वोदय का कार्य करती थी। हटुंडी आश्रम के काम में पूरा सहयोग देती है।

६१३. जयाबहन

विलेपार्ले छावनी में बहुत आती-जाती थीं। मुझे भी बहनों की कई सभाओं में ले जाकर भाषण करवाती थीं।

६१४. छगनलालभाई दिवावाला

विलेपार्ले छावनी में मुझे प्रचार के लिये दिन मैं सात-सात सभाओं में ले जाकर भाषण करवाते थे। मुझे भाषण देना इन्होंने ही सिखाया। ये केवल सूरण (जमीकंद) और दही खाते थे।

९१५. अवन्तिकाबाई गोखले

वंबई में महिला समाज की नेता थीं। इनकी पत्रिका अब भी आती रहती है। इनकी जीवनी प्रकाशित हुई है। यह वापू के साथ चम्पारण में रही थीं और वहां शिक्षण आदि का काम किया था।

९१६. डा० अम्बेडकर

वापूजी और जमनालालजी के पास आते थे। राष्ट्रीय कामों में हमेशा आगे रहते थे। अव वर्धा में 'अम्बेडकर मार्ग' भी वन गया है। देश का संविधान वनाने में इन्होंने वहुत परिश्रम किया था।

९१७. प्रयागजीभाई

एक वार हम नासिक में रहे थे। इनकी वहां आदर्श गोशाला थी। वहीं से हम दूध लाया करते थे। ये वहां 'गोशालावाले' कहे जाते थे।

९१८. भगवानदासजी केला

बड़े साहित्यिक थे। समाज-सुधार और वालकों के लिए वहुत पुस्तकें लिखी हैं।

९१९. गुलाबचन्दजी नागोरी

औरंगाबाद के थे। वर्धा बरावर आते रहते थे। जाजूजी के घनिष्ठ मित्र थे।

वहीं ठहरते थे। स्वतंत्रता-आंदोलन के बड़े कार्यकर्त्ता थे। पाखाना सफाई के काम में बहुत दिलचस्पी लेते थे। हमारा घूंघट खुलवाने में हिम्मत दिलवाते थे। इनका बड़ा विनोदी स्वभाव था।

९२०. मगनभाई देसाई

सावरमती आश्रम में शिक्षक थे। बापूजी बहनों का वर्ग लेते थे। उसमें इनकी पत्नी डाहीबहन भी हमारे साथ आती थीं। नमक सत्याग्रह के समय वहां का कन्या आश्रम वर्धा के महिलाश्रम में शामिल हुआ तब मगनभाई सपरिवार यहां कई साल रहे। बाद गुजरात विद्यापीठ के संचालक बने।

९२१. चवड़े महाराज

सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। सभा-बैठकों में यहां आते रहते हैं। सफेद फेंटा बांधते हैं। वर्धा में गोरक्षण पर इन्होंने एक बार बड़ा जोरदार भाषण दिया था।

९२२. सीताबाई राठी

इनकी मां कहती थीं कि यदि जमनालालजी से पहले संबंध होता तो घर की यह दशा न होती। जमनालालजी इन्हें अपनी बेटियों की तरह मानते थे। ये महिलाश्रम में पढ़ीं, वहीं शिक्षिका और गृह-व्यवस्थापिका रही हैं। काकाजी इन्हें प्यार से 'महाराणी' कहते थे।

९२३. सरबतीबाई व्यास

विधवा ब्राह्मणी बहन। इनको पढ़ाने के लिये जमनालालजी महिलाश्रम में

लाये थे। महिलाश्रम में अच्छी कार्यकर्त्ता वन गईं। नाम के अनुसार इनका स्वभाव भी मीठा है

६२४. शीला

गयाजी के भूपवावू की वेटी। गयाजी में मेरे साथ कूपदान के लिये फिरती थी। भूपवावू वहां के वड़े भावनावाले जमींदार थे। बाद में विनोबाजी के वड़े भक्त वन गये।

६२५. गौरीशंकरजी डालमिया

जसीडीह में रहते हैं। साधु-संतों के वड़े भक्त हैं। मैं कूपदान के लिये वहां फिरती थी तव इन्होंने दस तोला सोना दिया था।

आजकल कुछ रोगियों की वड़ी लगन से सेवा कर रहे हैं।

६२६. रामभाऊ म्हसकर

कई वर्षों से पवनार में प्रेस का काम देखते हैं। विनोवाजी का साहित्य छापते हैं। अच्छे सर्वोदयी भावनाशील कार्यकर्त्ता हैं। सर्वोदय साहित्य का प्रचार और वितरण करते हैं। अव 'गीता' और 'गीताई' के प्रचार में लगे हैं।

६२७. मोहनलालजी गोयनका

विहार से वंगाल प्रदेश में विनोवाजी के साथ हम वांकुरा पहुंचे। मैंने अपनी कूपदान यज्ञ की सभा में कहा कि बांकुरे से १०८ कुएं लेने हैं। मोहनलालजी ने

कहा, "१०८ तो मैं अकेले वनवा दूंगा। पर अपने जिले वांकुरेमें ही वनवाऊंगा।"... धार्मिक भावना के व्यक्ति थे।

९२८. पन्नालाल देवड़िया

नागपुर के थे। राष्ट्रीय आंदोलनों में वहुत भाग लिया। इनके साथ इनकी पत्नी विद्यावती भी आती थीं। अभी इनके नाम से नागपुर में देवड़िया हाई स्कूल चलाती हैं। दोनों का जमनालालजी से घनिष्ठ संवंध था। कांग्रेस के अच्छे कार्यकर्त्ता थे। इनकी पत्नी भी कांग्रेस की अच्छी कार्यकर्त्ता हैं और सरकार में मंत्री भी रही हैं। इन्होंने अधिकांश सम्पत्ति विद्यावती देवड़िया स्कूल में दे दी है। शम्भुजी के जंवाई और लड़कियां इसी स्कूल में काम करते हैं।

९२९. डा० सय्यद महमूद

विहार के वड़े नेता थे। कांग्रेस वर्किंग कमेटी में आते थे। हमेशा वजाजवाड़ी में ही ठहरते। सन् १९४४ में जेल से छूटने के वाद कई महीने वापू के पास सेवाग्राम में रहे थे। पटना में इनका गंगा के किनारे वड़ा वंगला था, वहां १९४५ में वापूजी काफी दिन रहे थे। उस समय विहार में हिंदू-मुसलमानों के दंगे हो रहे थे।

९३०. कुन्टे

वर्धा में मजिस्ट्रेट थे। विनोवाजी, जमनालालजी सभी सत्याग्रहियों को सजा सुनाते थे, अच्छे मीठे स्वभाव के थे। घर-परिवार का-सा व्यवहार करते थे।

६३१. राव

नागपुर में पुलिस कमिश्नर थे। उस समय हिंदुस्तानी अफसर गिने-चुने होते थे। नागपुर जेल में जमनालालजी जाते तो ये वड़ी आत्मीयता से व्यवहार करते थे।

६३२. बालु धर्माधिकारी

दादा धर्माधिकारी का वड़ा वेटा। वजाजवाड़ी में रहता था। रामकृष्ण के 'घनचक्कर क्लव' का प्रमुख सदस्य था। मुझसे विनोद में कहता, "व्यापारी लोगों का खून चूसते हैं।" मैं कहती, "तुम्हारे वाप-दादों ने कभी गायों के पीने के लिये एक पानी का कुआं भी खुदवाया है ? व्यापारी मिट्टी से सोना बनाता है, कमाता है; तो दान भी करता है। तुम लोगों में विद्वता है, सरस्वती प्यारी है, पर लक्ष्मी तो दूर ही रहती है।"

६३३. सरला बिड़ला

वृजलालजी वियाणी की बेटी। घनश्यामदासजी बिड़ला के पुत्र बसंतकुमार को ब्याही है। इनका संबंध जमनालालजी ने ही कराया था। जैसा नाम वैसी ही सरल है। ओम् की बड़ी अच्छी मित्रता है। धार्मिक स्वभाव की है।

६३४. महेशदत्त मिश्र

यह नौजवान सेवाग्राम में मेरे पास वहुत आता था। मुझे खाना बनाना सिखाता और सब्जी छौंककर बताता था। सब कामों में बहुत होशियार और सब

चीज में बचत करके उपयोग करनेवाला था। साहित्यिक भी है। अब जबलपुर में बड़ा प्रोफेसर है।

६३५. सुशीला जोशी

महिलाश्रम में सिलाई की शिक्षिका थीं। बाद में ताराबहन मश्रुवाला के साथ माधान में कार्य करती थीं। अब वापस वर्धा में रहने लगी हैं।

६३६. रामेश्वरजी सर्राफ

वर्धा के प्रमुख व्यापारियों में से हैं। राष्ट्रीय और सामाजिक कामों में मदद करते हैं। इनकी बेटी शांताबाई के देवर के बेटे सुरेन्द्रकुमार रानीवाला को ब्याही है।

६३७. हकीम अजमलखां

कांग्रेस के बड़े नेता थे। गांधीजी, जमनालालजी से मिलते रहते थे। राष्ट्रीय आंदोलन में प्रमुख थे। दिल्ली में रहते थे। ये कभी-कभी गांधीजी का स्वास्थ्य देखने के लिये आते थे।

६३८. प्रागनारायणजी

बेटी उमा के पति राजनारायणजी के पिता। आगरा के प्रसिद्ध वकील और नामी उद्योगपति। जमनालालजी कहते थे, "नामी वकील होते हुए कलाकार, हीरों के और घोड़ों के पारखी, संगीतज्ञ, आयुर्वेद के जानकार, टेनिस के खिलाड़ी,

बेटियों को रसोई और सिलाई भी सिखानेवाले, ऐसा सर्वगुणसम्पन्न आदमी मैंने देखा नहीं।"

९३९. डा० सुखरामदास

वर्धा में कई वर्षों तक रहे। अब जयपुर में प्राकृतिक चिकित्सालय का काम संभालते हैं। अच्छे अनुभवी चिकित्सक हैं।

९४०. माणकचन्द बोहरा

दुर्गापुरा गोशाला में बलवंतसिंहजी के साथ काम करते हैं। जयपुर में भी गोरस भंडार चलाते हैं। गायों की अच्छी सेवा करते हैं।

९४१. गुलाटीजी

मारवाड़ी समाज में विवाह तथा समाज-सुधार के अन्य कामों में सलाह-मशविरा के लिये जमनालालजी के पास आते थे।

९४२. मीरा मूंदड़ा

दामोदरजी मूंदड़ा की पत्नी। वर्धा में बाल-मंदिर चलाती हैं। इन्होंने बाल-मंदिर के लिये एक लाख का चंदा एकत्र किया था। दामोदरदासजी काकाजी के सेक्रेटरी थे। मीरा हमेशा हँसमुख रहती है। सामाजिक कार्य भी करती है। इसकी सभी पुत्रियां सुशिक्षित परिवार में ब्याही हैं।

६४३. प्रो० एन० आर० मलकानी

बहुत विद्वान थे। गांधीजी और जमनालालजी से मिलने वर्धा आते थे। इन्हें अपने कॉमर्स कॉलिज में प्रिंसिपल रखने का आदेश जमनालालजी ने सोचा था, पर वाद में ये दिल्ली में ही ज्यादा रहे।

६४४. उर्मिला राठौर

महिलाश्रम में रहती थी। जमनालालजी लाये थे। उत्तर प्रदेश की वहन थी। आश्रम की शिक्षा और संस्कारों का सदा गुण मानती रही।

६४५. उषा गोकाणी

रामदास गांधी की छोटी वेटी। वंवई में अच्छे घर में व्याही है। समाज-सेवा के काम में रस लेती है।

उषा के पति हरीश गोकाणी वंवई में रामकृष्ण के पास आते रहते हैं। अच्छा उत्साही नवयुवक है।

६४६. कनू गांधी

रामदास गांधी का लड़का। वापूजी का पोता। जव छोटा था तव कस्तूरवा के साथ सेवाग्राम में रहता था। वापूजी घूमने जाते तव उनकी लकड़ी पकड़कर आगे-आगे चलता था। अव विदेश में रहता है।

६४७. शरद गांधी

कृष्णदास गांधी का लड़का। एक ही लड़का है। सेवाग्राम में अपनी दादी काशी वा के पास रहता था। अब अमेरिका में है। इसकी पत्नी वीणा डाक्टर है। दोनों अमेरिका में काम करते हैं। वड़े सेवाभावी हैं।

६४८. मंगला देसाई

वंवई में शांताक्रुज, जुहू में सर्वोदय का काम करती थीं। विनोवाजी की विचारधारा की हैं। भूदान में भी कई जगह साफ रही थीं। सहर्षा जिले में खूब काम किया। अब संन्यासी होकर व्रह्म विद्या मंदिर में रहती हैं। संस्कृत पढ़ती हैं। अभी कुछ समय के लिये स्वास्थ्य सुधारने की दृष्टि से पूना के पास उरुलीकांचन के निसर्गोपचार आश्रम में गई हैं।

६४९. प्रकाशचन्द झुनझुनवाला

कमलाबाई की लड़की आरती के पति। भगवान का दीवा लगाते समय आरती की साड़ी ने आग पकड़ ली और उसी में उसका देहांत हो गया। उसके दो प्यारे वच्चे हैं—पंकज और शैलजा। भगवान् उनको सुखी रखे।

६५०. राधाकृष्ण

पहले नई तालीम में आशादेवी आर्यनायकम् के साथ थे। सेवाग्राम में कई वर्षों तक रहे। 'सर्व सेवा संघ' में बहुत काम किया। अब 'गांधी शांति प्रतिष्ठान' के मंत्री हैं।

९५१. वासन्ती

महिलाश्रम, वर्धा में सुयोग्य कार्यकर्त्ता थी। वहीं गृह-व्यवस्थापिका बनी। जमनालालजी बेटी की तरह मानते थे। अभी भी कभी-कभी महिलाश्रम आती हैं। बिहार के सिंहभूम जिले के आदिवासी क्षेत्र में 'लोकसेवायतन' नाम की संस्था निमडीह गांव में चलाती हैं। अभी महिलाश्रम की सुवर्ण जयंती पर वर्धा आई थीं।

९५२. सुबोध राय

वासन्ती के पति। पहले महिलाश्रम में शिक्षक का काम करते थे। अच्छे चित्रकार हैं। विनोबाजी चांडील से पदयात्रा करते हुए निमडीह में इनके आश्रम में एक दिन रहे, तब बहुत प्रसन्न हुए - सुबह की प्रार्थना के बाद प्रवचन में कहा कि ऐसे आश्रम अपने देश के कोने-कोने में होने चाहिए।

९५३. गणपतिबाई

ये जमनालालजी की जन्मदाता मां बिरदीदेवीजी के भाई की बेटी हैं। अभी भी बजाजवाड़ी में ही रहती हैं। इनका बेटा रामजीवन वर्धा के अपने 'रेडियो लैम्प' में काम करता है।

गणपतिबाई के बड़े भाई भैरोंलाल ने व्यवसाय में अच्छी उन्नति की। वर्धा में ही रहे।

९५४. बुधसेन

गणपतिबाई का छोटा भाई। नालवाड़ी में विनोबाजी के पास रहकर सेवा

करता था। कमल के साथ विद्यार्थी के रूप में पढ़ता था। कमल इन्हें 'दरवार' कहकर चिढ़ाता था। पर अव तो वह 'दरवार' ही कहलाने लग गया। यह वड़ा साहसी था। देश-सेवा के कार्य के लिये कई वार जेल भी गया। वाद जमनालाल-जी ने ज्ञानवती के साथ शादी करवा दी। ज्ञान ने राजेन्द्रवावू की वहुत सेवा की। उसने कई कितावें लिखी हैं।

६५५. रामगोपालजी वैद्य

वंवई के प्रसिद्ध वैद्य थे। जमनालालजी के साथ वर्धा आये थे।

६५६. स्वामी रंगनाथानन्द

नयी दिल्ली के रामकृष्ण मिशन में इन्होंने स्वामी रामकृष्ण परमहंस का सुंदर मंदिर बनवाया है। वहां इनके गीता पर प्रवचन होते थे। वड़ी भीड़ रहती थी। श्रीमन्‌जी के पिताजी के साथ कई वार मैं भी इनके व्याख्यान सुनने गई। वोलते तो अंग्रेजी में थे, लेकिन इनका समझाने का ढंग अच्छा लगता था।

६५७. श्रीबाबू

बिहार के बहुत वर्षों मुख्यमंत्री रहे। बदन के भारी थे। मुस्कराते रहते थे। जमनालालजी से प्रेम का संवंध रहा। विनोबाजी की भूदान-यात्रा में उन्होंने बहुत दिलचस्पी ली। जब चांडिल में विनोबाजी मलेरिया से सख्त बीमार हुए तब इन्होंने हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि बाबा कुनैन ले लें। कुनैन लेने पर बुखार उतर भी गया।

९५८. अशोक मेहता

पुराने समाजवादी कार्यकर्त्ता। कमलनयन के चुनाव के दिनों में वर्धा आये थे। अपने बजाजवाड़ी में ठहरे थे। अच्छे उत्साही एवं विद्वान हैं।

आजकल संगठन कांग्रेस के अध्यक्ष हैं।

९५९. पद्मिनीदेवी पटवर्द्धन

सांगली की रानी, बापू से मिलने सेवाग्राम आई थीं। अपने बजाजवाड़ी में ठहरी थीं। तब सेवाग्राम जाने के लिए मोटर का रास्ता नहीं था। इसलिए जमनालालजी ने इन्हें बैलगाड़ी से सेवाग्राम भेजा। रास्ते में वर्षा होने से खूब कीचड़ हो गया था और बैलगाड़ी के फँस जाने से रानीजी को पैदल ही सेवाग्राम तक जाना पड़ा। सेवाग्राम में बापू ने मीराबहन के खादी के कपड़े मंगाकर इन्हें पहनाये। तब ये कहतीं, "अगर मैं महल में होती तो पंद्रह दिन तक पलंग में पड़ी रहती। पर यहां तो कल फिर बापूजी से मिलने जाना पड़ेगा।"

९६०. लक्ष्मीनिवास नेवटिया

हनुमानप्रसादजी नेवटिया के लड़के। पुलगांव के अच्छे व्यापारी हैं। घरेलू संबंध भी होने से वर्धा आते रहते हैं। पुलगांव में गणेश उत्सव बहुत जोर से मनाते हैं। मिल का काम देखते हैं। ये बड़े उत्साही हैं और धार्मिक कामों में सक्रिय हिस्सा लेते हैं।

९६१. बंसीलाल पाटणी

वर्धा में कमलनयन के पास बहुत आते-जाते रहे हैं। अच्छे व्यापारी हैं। इनके लिये तो कमलनयन के जाने से वर्धा ही सूना हो गया है। ये कांग्रेस के कामों में हमेशा भाग लेते हैं।

९६२. घनश्याम बजाज

मेरे देवर लक्ष्मीनारायणजी बजाज का लड़का। व्यापार में अच्छा होशियार है। वर्धा में रहता है। धार्मिक उत्सवों में भाग लेता है। कपास के व्यापार में भी अच्छी उन्नति कर रहा है।

९६३. रामकुमारजी केजड़ीवाल

कलकत्ता के धनीमानी व्यापारी। कमलनयन, रामकृष्ण से अच्छी घनिष्ठता रही। खूब हँसी-मजाक करते और सबको खुश कर देते।

९६४. अर्की

ये चेकोस्लावाकिया के भाई थे, जो करीब एक साल विनोबाजी के पवनार आश्रम में रहे। सभी काम बड़ी मेहनत से करते थे। विदेशी होते हुए भी 'विष्णु-सहस्रनाम-संकीर्तन' बड़े शुद्ध उच्चारण के साथ करते थे। बडे सरल स्वभाव के थे।

९६५. डा० नीलकंठ राव

ये लेप्रसी फाउंडेशन, वर्धा में काम करते हैं। इनकी पत्नी मेरे नाम से जो वर्धा में ही विज्ञान महाविद्यालय है, उसमें प्रोफेसर हैं। दोनों सेवाभावी हैं।

९६६. कालिंदी

पवनार आश्रम में विनोबाजी के पास रहती है। मेरे पीहर जावरा (इंदौर) की है। 'मैत्री' पत्रिका की संपादिका है।

९६७. कुसुम

विनोबाजी के पास आनेवालों की जो चर्चायें होती हैं, उन्हें लिखती रहती है। खूब बड़ी-बड़ी आंखें हैं। सीधी, भली हैं और विनोबाजी के पास स्वाध्याय भी खूब करती है। विनोबाजी ने मौन लिया तब कई दिनों तक बड़ी बेचैन रही। मैंने समझाया, "विनोबाजी ने मौन लिया तो अच्छा हुआ। वे बोलते तो ह्रस्व, दीर्घ पर झगड़े बढ़ जाते।" यह सुनकर उसे हँसी आ गई तो मेरा भी मन हल्का हो गया।

९६८. सुशीला अग्रवाल

बहुत पहले से पवनार आश्रम में रहती है। 'मैत्री' पत्रिका में संपादिका है। सभी 'सुशीला दीदी' कहते हैं। बहुत पढ़ी-लिखी, विचारवान और सेवाभावी है। विनोबाजी के पास आने से पहले दिल्ली के इंद्रप्रस्थ कॉलेज में पढ़ाती थीं।

९६९. लक्ष्मी

'विष्णुसहस्रनाम' के पाठ के समय पवनार में बाबा के सामने बैठती है। खूब अच्छी तरह पाठ करती है। बाग-बगीचे में काम करती है। आंखें टिमटिमाती रहती है।

९७०. पद्‌मा

'विष्णुसहस्रनाम' के पाठ में हाथ से घुटने पर बजाकर स्वताल देती है। शिवाजी की सेवा बड़ी सावधानी से करती है। पढ़ती-लिखती भी है। यह कच्छ की है। अब हिंदी, संस्कृत अच्छा सीख गई है।

९७१. जया

'विष्णुसहस्रनाम' पाठ में सामने बैठती है और ध्यानावस्थित होकर खूब जोर-जोर से पाठ बोलती है। उच्चारण बहुत अच्छा लगता है। 'विनय पत्रिका' का पाठ भी खूब अच्छी तरह करती थी।

९७२. सरोजा

जया की जोड़ीदार है। ध्यानावस्थित होकर दोनों जोर-जोर से 'विष्णु-सहस्रनाम' पाठ बोलती हैं। जया-सरोजा दोनों बहनें हैं।

९७३. उषा

'मैत्री' में कालिंदी के साथ काम करती है। पवनार में मेहमानों की सेवा करती है।

९७४. शांति

सब काम शांति से कर लेती है। बहुत पहले से पवनार आश्रम में रहती है।

९७५. निर्मला

शांति और निर्मला दोनों वहनों की जोड़ी है। रसोई में परोसने का काम वहुत अच्छा संभालती हैं।

९७६. वीणा

आसाम की है। बावा की बात पर वहुत हँसती है। कृष्ण की तस्वीर और मूर्ति के साथ दोस्ती जमा रखी है।

९७७. विजया

धुलिया की है। सिर में दर्द रहता है तो हर समय हरी साड़ी पहनती है, जिससे आंखों में ठंडक पहुंचती है।

९७८. रमा

धुलिया की धूल के कण-कण में भावना भरी है। रमा-विजया दोनों वहनों की जोड़ी है। सूरजमल 'मामा' की ये वड़ी सेवाभावी संस्कारी बेटियां हैं।

९७९. करुणा

छोटी लड़की स्कर्ट पहनती थी। बिंदी की लड़की है। ब्रह्म विद्या मंदिर में ही पली है। वहीं पढ़ती है। चेहरे पर चमक है।

९८०. बिन्दी

दिन-रात खेती-बागवानी में रमी रहती है। रसोड़े का साग-भाजी का भंडार भरा रखती है।

९८१. शीला

बाल छोटे रखती है। सिर में काले और सफेद बालों की गंगा-जमना बहती है। गुजरात की दुबली-पतली बड़ी नाजुक-सी लगती है, पर काम करने में पक्की है। फुलके खूब बड़े, पतले और मुलायम बनाना सबको सिखा दिया है।

९८२. गीता

इसके कटे हुए बालों की रस्सी बनाने के लिए मैं लाई थी; पर इतनी सुंदर चोटी थी कि मैंने कांच की बरनी में सांप की तरह भर ली और बाबा को भी दिखाई।

९८३. श्रद्धा

जर्मनी की यह बहन श्रद्धा से भरी है। ब्रह्म विद्या मंदिर की बहनों में खूब घुल-मिल गई है।

९८४. चन्नम्मा

आंध्र की बहन। आक्का की रसोई में मशगूल रहती थीं। भरत-राम मंदिर

में एकादशी पर भजन-कीर्तन में मगन हो जाती थीं। अब बड़ी लगन से नागरी लिपि के प्रचार का काम कर रही हैं।

६८५. मीरा

आधुनिक मीरा। तानपुरा की शौकीन। 'विश्वनीडम्' बंगलोर में काफी दिन रही। अब देहात में संस्था चला रही है।

६८६. श्यामा

उड़ीसा की बहन। ऊपर से श्याम रंग, अंदर से गौर वर्ण। सबमें सवर्ण और गुण में सुवर्ण है।

६८७. सूरजमलजी

पवनार आश्रम के 'मामाजी'। विनोबा-साहित्य बेचते हैं। उन्हीं के विचारों में रंगे हैं। धुलिया के हैं।

६८८. गिरधरभाई

बाजार से सामान खरीदने में मस्त। गले में सूत की मोती माला चमकती रहती है।

६८९. अच्युतभाई

हर समय ज्ञान की गंगा बहाते रहते हैं। सब धर्मों का मान बढ़ाते हैं।

९९०. 'माई' लक्ष्मीबाई टेंभेकर

विनोबाजी की सेवा में आठों पहर हाजिर रहनेवाले बालभाई की मां। लक्ष्मीबाई बड़ी प्रेमल, धार्मिक और श्रद्धावान थीं। ब्रह्म विद्या मंदिर में ही रहती थीं। वहां के सभी भाई-बहन उनको 'माई' कहते, मैं उनको 'आई' कहती और वे मुझे 'माताजी' कहतीं। वे कुछ खास चीज बनातीं तो मुझे खिलातीं। मैं भी कुछ-न-कुछ उनके लिए ले जाती। ऐसी हमारी मित्रता थी। अब उन्हींके घर में 'मैत्री' का काम बहनें चलाती हैं।

बालभाई के पिता (भाऊसाहब)और माता दोनों ने श्रद्धा, भक्तिपूर्वक अपना जीवन परंधाम में ही समर्पण कर दिया।

९९१. अनुसूयाबेन साराभाई

अम्बालालजी साराभाई की बड़ी बहन। इन्हें परिवार के सभी लोग 'मोटा बेन' नाम से पुकारते थे। उन्होंने अहमदाबाद के मिल-मजदूरों की भलाई के लिए बहुत वर्षों तक शंकरलालभाई बैंकर और गुलजारीलालजी नन्दा के साथ काम किया।

९९२. रलियात बहन

फईबा। बापूजी की बुआजी। बड़ी सात्विक और प्रेमल स्वभाव की थीं। सदा राजकोट में ही रहीं। हम एक बार मिलने गये तब बापूजी के बचपन की बहुत बातें सुनाई थीं। उन्होंने बताया था कि बापूजी को बचपन में 'पूरण पोली' का बहुत शौक था। घर में जब भी बनती, तब फईबा से कहते कि मेरे लिए संभालकर रखना; और चार-पांच दिन तक खाया करते।

बापूजी के आग्रह से फईबा एक बार साबरमती आश्रम में रहने आई थीं,

पर हरिजन कन्या को बापू ने गोद लिया तब से फिर वे वापस राजकोट ही चली गईं।

९९३. भक्ति बा

सौराष्ट्र के दरबार गोपालदासजी की पत्नी। बड़ी भक्तिमान, सेवाभावी, सात्विक विचारों की, खादी-प्रेमी हैं। ढेवरभाई के साथ ही ज्यादातर रहती हैं। इनकी कई रचनात्मक संस्थाएं अच्छी चल रही हैं।

९९४. गंगाबेन वैद्य

साबरमती आश्रम में हम सबको आयुर्वेदिक दवाएं बड़े प्रेम से देती रहती थीं। बाद में रविशंकर महाराज के साथ बोचासन आश्रम में रहने लगी हैं। गायों की भी अच्छी सेवा करती हैं। सदा बापू की अनन्य भक्त रही हैं।

९९५. रुक्मणीदेवी अरंडेल

अभी आचार्य सम्मेलन में वर्धा आई थीं तब अपने बंगले पर ही ठहरी थीं। 'ब्रह्म विद्या मंदिर' की सफाई के साथ सेवा-भक्ति और ज्ञानमय साधना का वातावरण देखकर बहुत खुश हुईं। मद्रास के अड्यार में इनका कलाक्षेत्र बहुत अच्छा चलता है। ये थियोसोफिकल सोसायटी में भी प्रमुख कार्यकर्त्री रही हैं।

९९६. भद्रा नेपाली

अपने महिलाश्रम में पढ़ी है। अभी महिला सेवा मंडल की सुवर्ण जयंती पर

वर्धा आई थी, तब आश्रम के परिवार-सम्मेलन में इसने नेपाल के अपने क़ाम की जो जानकारी दी, सुनकर सभी को खुशी हुई।

९९७. लोकयात्री बहनें

पंद्रह साल से लगातार भारत-भर में पैदल यात्रा कर रही हैं और माताओं का मान बढ़ा रही हैं। इन चारों को तो धन्यवाद ही है। इनकी हिम्मत और इनकी शक्ति की जितनी तारीफ की जाय, थोड़ी है। न लेती हैं पैसा, न किसी पर इनका भार। जनता का प्यार और उसी का सहारा। जैसे 'मालो भूमि हरी-भरी, डग-डग रोटी, पग-पग पानी।' ऐसे पैदल यात्रियों को खिलाना-पिलाना और उनका मान करना, यह अपने हिन्दुस्तान की भी विशेषता है। इन बहनों में एक है हेम (भराली), बड़ी निर्भय और तेजस्वीं। **लक्ष्मी फूकन** आसामी, सदा खुश रहने वाली। निर्मल (वेद) बड़ी भावुक और प्रेमल। **सरलदेवी** का जैसा नाम वैसी सरल और स्वस्थ। ये सभी बहनें जनता-जनार्दन की भक्ति में घूमती हैं, तो इनको भी लोगों का मान मिलता है। इसीसे उत्साह बढ़ता है।

९९८. श्री नरहरिरावजी भावे

पूज्य विनोबाजी के पिता। बड़े त्यागी, तपस्वी ब्राह्मण थे। रंगशास्त्र और संगीत का उन्हें शौक था। सिद्धांत के बड़े पक्के और कड़े थे। विनोबाजी सुनाया करते हैं कि उनके पिताजी अकसर उन्हें मारा करते थे। एक बार लगातार कई दिनों तक मारा नहीं तो विनोबाजी ने घबराकर अपनी मां से पूछा, "मां, क्या बाबा मुझसे नाराज हैं ?" मां ने पूछकर कहा, "अब तुम्हें सोलहवां साल शुरू हो गया है, इसीसे अब उन्होंने मारना छोड़ दिया है।"

एक बार जमनालालजी के आग्रह से वे वर्धा भी आये थे। काकाजी सबकी संगत का फायदा लेते और हरेक के गुण ही देखते। वे गुणग्राही थे।

९९९. मां रुक्मणीदेवी

विनोवाजी की बड़ी भक्तिमान, सेवाभावी माता। उन्हीं की स्मृति में विनोवाजी ने 'गीताई माउली' लिखी। अपनी मां का विनोवाजी पर गहरा प्रभाव है। उनकी याद करते हैं तो अब भी आंखों में आंसू भर जाते हैं। मां के गुजर जाने पर उनकी साड़ी अपने साथ साबरमती आश्रम में ले आये थे। उसको सिर-हाने रखकर सोते थे। खादी पहनना शुरू हुआ तो नदी में समर्पित कर दी।

अपनी मां की पूजा की। 'अन्नपूर्णादेवी' को भी वे साथ में ले आये थे। प्रभुदास गांधी की माता काशीवहन बड़े भक्तिभाव से पूजा करतीं,तब कई बार विनोवाजी वहां आसन पर बैठ जाते थे।

१०००. जानकी

अपने विषय में क्या कहूं !कहने को है भी क्या ! गांधी की आंधी में जमना-लालजी के पीछे-पीछे मेरी जीवन-धारा बहती चली और अब भी विनोवा के गुरुत्वाकर्षण में हम अपने आप खिंचे जा रहे हैं।

न मैं पढ़ी, न लिखी। फिर भी मैंने इन दो महापुरुषों की संगत से एक जनम में सात जनमों का अनुभव पाया है। उसकी याद करके मन गद्‌गद् हो उठता है, अंतर में आनंद का सागर हिलोरें लेने लगता है।

विनोवा के पास जाती हूं तो अपने आप हँस पड़ती हूं, विनोवा मुझे देखते हैं तो वे हँस पड़ते हैं। कहते हैं, माताजी तो बाल-वृद्धा हैं या तो वृद्ध-बाला हैं। यह सुनकर मेरा जीने का उत्साह बढ़ जाता है।

इसी तरह हँसी-हँसी में एक दिन बाबा ने कहा, "माताजी, आप अपना 'जानकी-सहस्रनाम' लिखो। जिनकी याद आती जाय, उनके नाम लिखो, उनका परिचय लिखो।"

इस वात को वार-वार कहकर वावा ने मेरे मन में ऐसी धुन लगा दी कि दिन-रात यही चिन्तन चलने लगा। जिस दिन 'जानकी-सहस्रनाम' पूरा हुआ, उस दिन 'विष्णु-सहस्रनाम' का पाठ पूरा होने के बाद सब आश्रमवासियों के सामने वावा ने वड़ी गंभीरता से जाहिर किया, "आज एक वड़ी महत्व की घटना घटित हुई है। माताजी का 'जानकी-सहस्रनाम' आज पूरा हो गया। यह आज की महत्वपूर्ण घटना है।"

वावा के ये उद्गार सुनकर मुझे वड़ा संतोष हुआ।

'विष्णु-सहस्रनाम' के हजार नामों को तो मैंने वचपन में ही कंठस्थ कर लिया था। तव से वरावर पाठ चलता रहता है। अव वावा ने 'जानकी-सहस्रनाम' लिखवा कर मानसिक रूप से दुवारा मेरी जीवन-यात्रा का चक्कर चला दिया, जमनालालजी और उनके साथियों के सत्संग का लाभ दे दिया, और कमलनयन के जाने के वाद मन में जो सूनापन आ गया था, उसकी जगह सम्पन्नता भर दी।

१००१. भगवान लक्ष्मीनारायण

वच्छराजजी की पत्नी, जमनालालजी की दादी, सद्दीवाई की अंतिम इच्छा के अनुसार वर्धा में लक्ष्मीनारायण मंदिर वनवाया गया। इसमें भगवान् की खड़ी संगमरमर की मूर्ति मकराना, राजस्थान से वनवाकर मंगवाई गई थी। भगवान के लिए शुरू में सभी गहने जानकी मां ने अपने पास से ही दे दिये थे।

गांधीजी के वर्धा आने के समय से घर-परिवार के सव लोगों के साथ भगवान् भी खादीधारी हो गये। उनकी पहली खादी की पोशाक विनोवाजी के हाथ-कते सूत की वनी थी।

देश भर में यह पहला ही मंदिर है, जो १९२८ में विनोवाजी के हाथों हरिजनों के लिए खोला गया। जव वर्धा में 'गोसेवा संघ' बना तव भगवान् भी गो-व्रतधारी वन गये। तवसे मंदिर में गाय के घी-दूध का ही उपयोग हो रहा है।

एक वार एक दाढ़ीवाला आदमी दर्जी वनकर भगवान् की पोशाक सीने के

बहाने मंदिर में आया और सोने के गहने चोरी करके ले गया। तब गांधीजी ने कहा, अब भगवान को स्वर्ण से मुक्ति दे दो। तबसे भगवान् कांचन-मुक्त हो गये।

इस तरह हरिजनों का प्रेमी, खादी-गोव्रतधारी, कांचन-मुक्त और राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत यह मंदिर है। यह सभी धर्मों के लोगों के लिए खुला है।

भगवान् लक्ष्मीनारायण की मूर्ति इतनी सुंदर और मोहक है कि सड़क से भी कोई खड़ा होकर देखे तो ऐसा लगता है, मानो भगवान् की आंखें उसी की ओर देख रही हैं और भगवान् अभी बोल उठेंगे।

"सबको सन्मति दे भगवान् !
सबको सन्मति दे भगवान् !"

• • •

'विनोबाजी की हस्तलिपि में विष्णुसहस्रनाम' के अंतर्गत जानकीदेवीजी-विषयक उल्लेख

इस पुस्तक में सुपरिचित सुजनों का स्मरण किया गया है। ११ फरवरी १९५१ के प्रार्थना-प्रवचन में विनोबाजी ने सुहृदजनों के स्मरण के संबंध में एक दृष्टांत देकर समझाया था :

"जमनालालजी जैसे हमारे सुहृदजनों ने अपना शरीर चंदन की तरह खपाया। जो शक्ति उन्हें भगवान ने दी थी, उसका उन्होंने सेवा में, परमार्थ में, उपयोग किया। वैसे ही हमें भी करना चाहिए। हमारी जीवन-ज्योति भी उसी तरह भगवान के मंदिर में जलनी चाहिए। हमारी कृति की सुगंध भी वैसे ही भगवान के शरीर को समर्पण हो जानी चाहिए। ऐसी कुछ प्रेरणा सुहृदजनों के स्मरण से होती है।"

ऋषि विनोवा के आश्रम में प्रतिदिन सवेरे साढ़े दस बजे सामूहिक रूप से विष्णुसहस्रनाम का पाठ वर्षों से सतत चल रहा है। उस समय माताजी जानकी देवी वर्षों से वहां पहुंच जाती हैं। गत वर्ष उनका यह क्रम अखंड चला। वह आत्मचिंतन की दृष्टि से श्रीविष्णु के सहस्रनामों में से एक नाम बाबा से अपनी कापी में रोज लिखवाने लगीं। उनकी तीव्र भक्ति-भावना और लगन देख-कर धीरे-धीरे विनोबाजी श्रीविष्णु के नामों को चित्रांकित भी करने लगे। उसी-में माताजी के प्रति कहीं हिंदी में तो कहीं मारवाड़ी में विविध भाव व्यक्त होते रहे। वे भाव सभी के लिए रोचक और उद्बोधक हैं।

विष्णुसहस्रनाम के चित्रांकन के साथ-ही-साथ 'जानकी-सहस्रनाम' का लेखन भी संपन्न हुआ। इसी तरह विनोवाजी के साथ माताजी की गहरी घनिष्टता है। १० जनवरी १९७६ के दिन वर्धा के महिलाश्रम का सुवर्ण महोत्सव आरंभ हुआ। उसका उद्घाटन विनोबाजी के द्वारा संपन्न हुआ। अपने भाषण के आरंभ में उन्होंने माताजी का स्मरण करते हुए कहा :

"क्षेत्र-संन्यास के बावजूद बाबा यहां आया। आपको याद होगा कि इसके पहले भी एक बार बाबा ने क्षेत्र-संन्यास तोड़ा था। माता जानकीदेवी बीमार थीं। उनके पास पहुंच गया, क्योंकि वे मरण-शैया पर थीं। उनके साथ बाबा का 'कांट्रेक्ट' है कि वह मर जायंगी तो बाबा भी साथ जायगा। आश्चर्य है कि चंद मिनट बाबा उनके पास बैठा। आंख मिल गई और माताजी का और बाबा का मरना टल गया।"...

माताजी भी दिन-रात मनाती रहती हैं कि विनोबाजी सवा सौ बरस जीयें। इसी साल ७ जून की बात है। माताजी सदा की तरह बाबा के पास जाकर बैठीं तो बाबा उनसे कहने लगे, "अब तो उपवास करके मरणो पड़सी, माताजी।" और फिर ताली बजाकर गाने लगे :

"अनशन करशां,
परंधाम की कुंज गली में गोविंद लीला गास्यां,
म्हें तो गोविंद लीला गास्यां !
ठीक है न, माताजी !"

माताजी की ओर हाथ बढ़ाकर बाबा ने यह कहा तो माताजी एकदम बोल पड़ीं, "क्यों ? गाय को जिलाना है तो आपको जीना है, हमको भी जीना है और सबको सुख से रहना है।"

'विष्णुसहस्रनाम' में विनोबाजी की लेखनी से ऐसे ही भाव प्रकट हुए हैं। उनमें से कुछ आगे के पृष्ठों में दिये जा रहे हैं।

मदालसा नारायण

विनोबाजी के मनोभाव

नियम : भगवान् की सृष्टि में सूर्य, चंद्र, ग्रह, नक्षत्र, सब अत्यंत नियमपूर्वक चलते हैं।

माताजी को भी वैसे ही नियमपूर्वक चलनो पडसी ! !

(१७२)

मधु : भगवान बहुत मीठे हैं। जैसे शहद, जैसे गुड़, जैसे गाय का दूध—
माताजी के लिए।

(१७६)

गोविंद : खोई हुई गायों को खोज निकालनेवाला।
माताजी का दोस्त।

(१८८)

हिरण्य-नाभ : जिसके नाभि में कोटि कोटि कोटि...तोले सुवरण है।
माताजी ? आपको जितना चाहिए ले लीजिये।

(२०५)

शास्ता : यानी शासन करने वाला। 'शासन' के दो अर्थ होते हैं :
१. शिक्षा करना, २. शिक्षण देना। भगवान दोनों करता है, जिसको जिसकी जरूरत।

माताजी को क्या जरूरत है ?"

(२१७)

संवृत : भगवान माया से ढँका हुआ है। माया का आवरण निकालना पड़ेगा। तब भगवान के दर्शन होंगे।

उसके लिए माताजी ? बहुत परिश्रम करणो पडसी।

(२४१)

धरणी-धर : भगवान पहाड़-पर्वत-टीले भी बनता है। फिर उसमें से नदियां बहना शुरू होता है। फिर, अनाज की कमी नहीं रहेगी। लेकिन श्रम करणो पडसी।

माताजी तैयारी है ?

(२४६)

वर्धन : बढ़ानेवाला। सबको भगवान बढ़ाता जाता है। पेड़ों को, पक्षियों को, पशुओं को, मनुष्यों को।

और माताजी को भी।

(२७२)

शिपि-विष्ट : शिपि-किरण। भगवान ने अपने को ढांकने के लिए किरण ओढ़ लिये ? लेकिन ढँकने के बजाय वह सबकी आंखों के सामने प्रगट हो गया।

फिर भी माताजी, वह ढँका ही हुआ है न ?

(२८४)

स्पष्टाक्षर: ॐ : स्पष्ट उच्चारण करके—ऊंचे से बोला जाने वाला—ओंकार भगवान का रूप है।

इसीलिए माताजी की एक लड़की का नाम 'ओम्' रखा है न ?

(२९०)

भानु : सर्वत्र भासभान होनेवाले। लेकिन हम अंधे देखते ही नहीं।

माताजी, क्या किया जाय ?

(२९५)

अनंत जित् : भगवान के अनंत भक्त हैं। उनके साथ वह अनंत खेल खेलता है। और सब खेलों में उसी की जीत होती है।

कभी माताजी के साथ भी खेलता है। तो माताजी गिर पड़ती हैं। फिर माताजी को वह उठाता है और माताजी को भी जीत लेता है। जय ! अनंत-जित्।

(३२०)

वृक्ष : वर्षाव करनेवाला भगवान। भक्त जो चाहता है भगवान ऊपर से वह बरसाता है।

माताजी ! मांग लो—चाहे मोटर, चाहे स्कूटर, चाहे स्वेटर, चाहे दूध-घी।

(३२६)

क्रोध-कृत-कर्ता : क्रोध करनेवाले दुरजनों को भगवान काटते हैं।

माताजी को तो क्रोध आता ही नहीं है। इसलिए निर्भय निद्रा लेती हैं।

(३२८)

अच्युत : न गिरने वाला। भगवान कभी गिरते नहीं।

लेकिन माताजी बार-बार गिरती हैं। अच्युत का स्मरण करो तो गिरेंगी नहीं या, गिरेंगी तो भी झट उठेंगी।

(३३१)

वरद : भगवान भक्तों को वरदान देता है। कुंती ने भगवान से वर मांगा— "विपदः संतु नः शश्वत्।" हे भगवान, हमें तू हमेशा आपत्ति दे। क्यों? जिससे आपका स्मरण निरंतर बना रहेगा।

माताजी ! आप कौन-सा वरदान मांगेंगी ?

(३४३)

वायु वाहन : वायु को वहाने वाले। भगवान अपना पंखा चला करके वायु को गति देता है। फिर, पेड़ वगैरा सब हिलने लगते हैं।

फिर, माताजी भी पंखा चलाती हैं और माताजी की मोटर भी दौड़ती है।

(३४४)

शरीर भृत : शरीर का भरण-पोषण करनेवाले भगवान। वे परजन्य-वृष्टि करते हैं। उससे शरीर-पोषण के लिए अन्न मिलता है। लेकिन, हमको खेत में अनाज बो करके खेती करनी होगी। तब शरीर पोषण के लिए अन्न मिलेगा, नहीं तो, केवल परजन्य-वृष्टि से घास ही उगेगा।

लेकिन माताजी का तो, घास का रस-सेवन करके भी, शरीर-पोषण होता है न ?

(३६२)

ऋद्ध : भरा हुआ। भगवान महानिधि है। परंतु वह गुप्त धन है, जैसे खानें होती हैं। उस गुप्त धन को बाहर निकालने के लिए खोदना पड़ेगा।

खोदने के लिए क्या, माताजी आप तैयार हैं ?

(३६४)

वृद्धात्मा : सबसे बूढ़ा, या बूढ़ी, भगवान। माताजी की माता की माता की माता की माता। माताजी के पिता के पिता के पिता के पिता। राम-हरि ! राम-हरि ! राम-हरि !

(३६५)

अनुक्रमणिका

नाम	नामांक	नाम	नामांक
मनसुखरामभाई जोवनपुत्रा	७३०	मामासाहव फड़के	५८३
मनुवर्यजी स्वामी	६८३	मीया वनर्जी	४१९
मनोरमावहन साराभाई	६२३	(डा.) मा. म. शाह	५८८
मलकानी प्रो. एन. आर.	९४३	मारुति	७२७
मल्लीवावू डालमिया	३२०	मालतीदेवी चौधरी	४८३
मर्हषि कर्वे	४०२	मालीराम मित्तल	५०९
महात्मा भगवानदीन	५५०	मावलंकरजी	५०३
महादेवभाई देसाई	२६२	(डा.) माउस्कर	४७७
महावीर त्यागी	२४१	मिश्रीलालजी गंगवाल	७६९
महावीरप्रसादजी पोद्दार	३५१	मीठूवहन पेटीट	८५५
महादेवीताई	४७०	मीरा	९८५
महाराजा महेंद्र नेपाल नरेश	३१७	मीरावहन	४६२
महारानी रत्ना	३१८	मीरा मूंदड़ा	९४२
महादेवराव ठाकरे	७७७	मीरा शाह	८९१
महादेवलाल सर्राफ	५९८	मुकुंदकांत मालवीय	४९७
(डा.) महोदय	४७९	मुकुंदलालजी लाला	५२२
महेशदत्त मिश्र	९३४	मुकुल उपाध्याय	६७६
महावीरजी केड़िया	८२५	मुखालालजी, खेतान	१९२
माखनलालजी चतुर्वेदी	४९४	मुन्नालाल शाह	४८८
मागीबाई	६७२	मुरलीधर पटवारी	३५७
माणक इंगले	४०४	मुहम्मदअली मौलाना	६०
माणकचंद वोहरा	९४०	मूलचंद भैया	४५५
माणकवाई डाक्टर	१७५	मूलचंद भैया की मां	४५७
माणिकलालजी वर्मा	५७४	मूलचंद भैया की दादी	४५६
मार्जरी साइक	१४८	मेवावहन जमनादास गांधी	६४०
मार्तण्ड उपाध्याय	६७५	मेहरताज	४९१
मातादीन भगेरिया	४४१	मेहरचंद खन्ना	७७१
मानकरजी	७१३	मैथिलीशरणजी गुप्त	११८

• • •